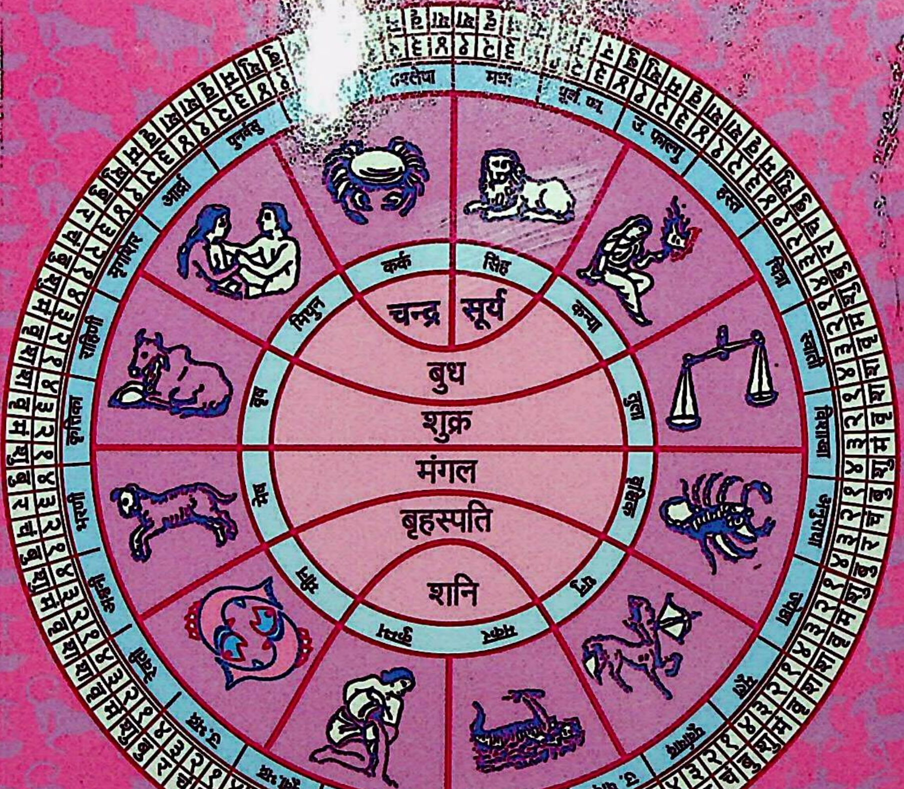
ॐ

।। श्री गणपतये नमः ।।

बालबोध ज्योतिषम्

वर- नक्षत्र एवं

था सहि



सम्पादक एवं संकलन

श्री हरिहरदत्त दीक्षित

।। गं गणपतये नमः ।।

बालबोध-ज्योतिषम्

वर-कन्या नक्षत्र मेलापक एवं व्यवस्था सहितम्

सम्पादक एवं अनुवादक
श्री हरिहरदत्त दीक्षित

प्रकाशक

राज्यश्री प्रकाशन मन्दिर

द्वितीय संस्करण - सन् २०१५ ई.।

प्राप्ति स्थान :
वाणीविलास प्रकाशन
कचौड़ी गली, वाराणसी

द्वितीय संस्करण :
संवत - २०७२

तिरुपति कम्प्यूटर
नईबस्ती, पाण्डेयपुर - वाराणसी

मुद्रक :
श्री जी प्रिन्टर्स
नाटी इमली, वाराणसी

वक्तव्य

वेदस्य निर्मलं चक्षु .र्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।
विनैतदखिलं श्रौत स्मार्त कर्म न सिद्ध्यति।।

श्रौत स्मार्त कर्मो और नैमित्यक व्यवहारिक कार्यो की सिद्धि इसी ज्योतिःशास्त्र पर निर्भर है। वेदों, शास्त्रों, पुराणों पर अटल श्रद्धा रखने वाले सनातन धर्मावलम्बी सज्जनों के नैत्यिक कार्यों का निर्वाह बिना इस शास्त्र के एक दिन भी नहीं चल सकता। धार्मिक जनता इसी शास्त्र के आदेशानुसार तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, लग्नशुद्धि और अनेक योगों के सम्बन्ध से निश्चित मुहूर्तों में ही दर्श-पौर्णमास इष्टि वैदिक कर्मो को एकादशी, प्रदोष, शिवरात्रि, रामनवमी, कृष्णाष्टमी इत्यादि स्मार्त-वैष्णव पौराणिक व्रतों, गर्भाधानादि, विवाहान्त संस्कारों, यात्रा, कृषिकर्म, लेन-देन, वस्त्राभूषणधारण, जलाशयनिर्माण, जलोत्सर्ग, गृहनिर्माण इत्यादि सम्पूर्ण कार्यों को करती है। जैसे हमारे जीवन और स्वास्थ्य पर जल स्थल वन-उपवन पर्वत आदि तथा सामयिक जलवायु एवं परस्थितियों का प्रभाव प्रत्यह पड़ता रहता है उसी भांति आकाशस्थ चन्द्र-सूर्य आदि अनेकों पिण्डों के सान्निध्य, दूरत्व, भाग-परिवर्तन आदि का भी प्रभाव पूर्णरूप से पड़ता रहता है। उसी को हमारे पूर्वजों ने नक्षत्र-योग आदि एवं स्पष्टग्रह के उच्च, नीच, उदय, अस्त, वक्री मार्गी इत्यादि रूप से सरल कर बताया है। अतएव वैज्ञानिक सिद्धांतो के रहस्यों से परिपूर्ण ज्यौतिष शास्त्र पर सनातन धर्मावलम्बी जनता पूर्ण विश्वास रखती है। अपनी अनभिज्ञता का परिचय न देकर इस विषय पर गंभीर अन्वेषण की आवश्यकता है। अतः किस मुहूर्तो में किन-किन कार्यों का करना उचित या अनुचित होगा इसका ज्ञान प्रत्येक भारतीयों का प्रधान कर्त्तव्य है। परन्तु आज तक किसी ने ऐसी उपयोगी पुस्तक नहीं तैयार किया कि केवल एक ही पुस्तक से साधारणतः समस्त व्यावहारिक विषयों का परिचय भलीभाँति हो जाय। कुछ दिन पूर्व मुझे एक जीर्ण शीर्ण पुस्तक प्राप्त हुई जो कि अंशतः मेरे विचारानुकूल थी परन्तु उसमें विशेष अशुद्धियां थीं, अतः उस पुस्तक का कुछ सहयोग प्राप्त कर वर्तमान स्वरूप में उपर्युक्त उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये मैने इस लघुकाय ***'बालबोध ज्यौतिषम् एवं वर-कन्या नक्षत्र मेलापक एवं व्यवस्था'*** नामक छोटी पुस्तक का संग्रह किया है। इसमे मैंने ६ प्रकरण रखे हैं। जो इस प्रकार है -

१. संज्ञाप्रकरणम् में - काल-परिभाषा, तिथि-वार-नक्षत्र-योग-करणादिकों के नाम तथा उनकी विशेष संज्ञाये एवं तिथिवारनक्षत्रों के संबंध से उत्पन्न नाना प्रकार के योग-कुयोग-संयोग का वर्णन.... इत्यादि।

२. मुहूर्तप्रकरणम् में - कृषि (हलजोजना, बीजबोना, सस्य रोपना, काटना, धान्यमर्दन, धान्यस्थिति इत्यादि) कर्म के मुहूर्त, लेन-देन, क्रय-विक्रय, जलाशय-गेहारम्भ और देव कार्य प्रतिष्ठा इत्यादि अनेकों नित्य व्यवहारों के मुहूर्त।

३. संक्रान्ति-गोचनप्रकरणम् में - संक्रान्तियों के पुण्यकालादिकों का निर्णयादि, जन्मराश्यादिगत

ग्रहों के फल, ग्रहण फल और उसके अरिष्टशान्त्यर्थ उपाय।

४. ***संस्कारप्रकरणम् में*** – रजस्वलास्नान, गर्भाधानादि.... उपनयनसंस्कारों के मुहूर्त।

५. ***विवाहप्रकरणम् में*** – वर-कन्या विवाहकाल और उनके लक्षण, राशि मेलापक, ग्रहमेलापक, सांगविवाहमुहूर्त, वधूप्रवेश-द्विरागमन-द्व्यंगयात्रा के मुहूर्त तथा इनके विषय में आधुनिकों द्वारा किये गये मतभेद पर विशद विचार और आधुनिक निराकरण पूर्वक शास्त्रानुसार निर्णय इत्यादि पुस्तक के परिशिष्ट में वर-कन्या नक्षत्र मेलापक का भी समावेश पुस्तक के अन्त में किया है।

६. ***यात्राप्रकरणम् में*** – यात्रा मुहूर्त, युद्धयात्रा के राजयोग, सर्वघात तिथिचक्र, यात्रा करने की विधि, यात्रा में शुभाशुभ शकुनादि।

७. ***जातकप्रकरणम् में*** – ग्रहस्पष्ट, लग्नस्पष्ट, द्वादशभावानयन, नैसर्गिक-तात्कालिक ग्रहमैत्री, विंशोत्तरीय योगिनीदशान्तर्दशाओं के बनाने के प्रकार, जैमिनिमुनिमतानुसार संक्षेप से आयुर्दायानयन विंशोत्तरीमहादशा-अन्तर्दशा-प्रत्यन्तर्दशा चक्र इत्यादि।

८. ***ताजिकप्रकरणम् में*** – वर्षेष्ट, द्वादशवर्गी, पञ्चवर्गीबल, वर्षेश निर्णय, मुन्थानयन, मुद्दानयन, मुद्दादशा, त्रिपताकिचक्र का विचार इत्यादि।

९. ***प्रकीर्णप्रकरणम् में*** – केरलीय प्रश्न, प्रश्नलग्नवशात् पित्रादिदोषविचार, अंगस्फुरण, नेत्रस्फुरण, पल्लीपतन, सरटारोहण इत्यादि अनेक फुटकर विषयों का सन्निवेश किया गया है।

आवश्यकतानुसार तत्तत्स्थलों पर उदाहरण भी दे दिया है। व्यावहारिक विषयों में जहाँ कहीं पण्डितों के मतभेद पाये जाते हैं या किसी विषय में किसी ने अपना अपूर्व पाण्डित्यप्रकाशन करने के लिए दुराग्रह से मतभेद खड़ा कर दिया वहाँ पण्डितों का चित्त उस ओर आकर्षित करने के अभिप्राय से टीका या टिप्पणी में ऊहापोह पूर्वक आर्षसिद्धांत भी दिया गया है, ताकि विज्ञवृन्द पक्षपातरहित होकर अपनी सारासारपरिशीलनी बुद्धि से विचार करें।

इस संग्रह में मैंने जहाँ से जो वचन मिले हैं शीर्षक के सामने उस ग्रन्थ का नाम लिख देने का प्रयत्न किया है। और इसमें संगृहीत विषयों में से जहाँ किसी विषय की पुनरावृत्ति की आवश्यकता पड़ी है वहाँ उसका संकेत भी कर दिया है। विशेष सौकर्य के लिए कोष्टक में वहीं पर उस विषय का सन्निवेश कर दिया है। वर-कन्या नक्षत्र मेलापक में श्री चांदरतन लढ़ा ने पूर्ण सहयोग किया है, अतः विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

इस पुस्तक के विषय में मुझे इससे अधिक परिचय कराने की आवश्यकता नहीं है। इस संग्रह से यदि विद्वजनों का कुछ भी उपकार हो सका तो मै अपने परिश्रम को सार्थक समझूंगा, और आगे भी इसी प्रकार से सेवा करने में कृतयत्न रहूँगा।

अन्त में विज्ञजनों से सानुनय अभ्यर्थना है कि मेरे अज्ञान अथवा दृष्टि दोष वश इसमें जो त्रुटियाँ रह गई हों उन्हे सुधार लेने की कृपा करें और दूसरी आवृत्ति में सुधारने के लिए मुझे सूचित करने की कृपा करें।

विद्वजनानुरागी -

हरिहरदत्त दीक्षित

दो शब्द

आदरणीय महोदय मै ज्योतिषशास्त्र का स्नातक नही हूँ और न मैने इसका विधिवत् अध्ययन ही किया है। जीवन के प्रारम्भिक चरणों से ही ज्योतिष के विद्वानों के सानिध्य में बैठने का अवसर मिलता रहा। जिससे इस विषय की चर्चा सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। कुछ ज्ञान इस विषय का उनके वार्ता से हुआ है। इधर ६-७ वर्ष पूर्व अपने बच्चों के विवाह के लिये विवाह सहयोग केन्द्र में काम देखना पड़ा वहाँ पर मिलापक व्यवस्था की समस्या व विद्वानों में मतभेद से इस विषय के ग्रन्थों को देखना पड़ा। मैने विचार किया कि एक संग्रह तैयार किया जाये जिससे विद्वानों को मिलापक व्यवस्था के लिये विभिन्न ग्रन्थों को न खोजना पड़े। मैंने अपना विचार अपने अग्रज **श्री मदनलाल जी भरानी** को बताया। सुनकर उन्होंने सहजभाव से प्रसन्नता पूर्वक अनुमति दे दी और सहयोग का भी आस्वासन दिया। इस सम्बन्ध में अनेक विद्वानों से सम्पर्क कर (वर-कन्या मिलापक) इस संग्रह को **सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय** के ज्योतिष विभाग में **आचार्य डॉ० श्री इन्दुनाथ जी शर्मा** को दिखाया। इस संकलन को देख प्रसन्नता व्यक्त की और संक्षेप रूप में कुछ सुधार कर इसे मुद्रित कराने की व्यवस्था दी तथा अपने मित्र **श्री हरिहर दत्त दीक्षित** को आद्यान्त सम्पादन को कहा। श्री दीक्षित जी का परिचय मुझे बचपन से ही रहा है। वो मेरे पड़ोस में ही रहते थे, परन्तु उनकी प्रतिभा का ज्ञान न था। इनकी प्रतिभा पैत्रिक देन है। इनके पिता **आचार्य प्रवर पंडित स्वर्गीय रामसहाय जी दीक्षित** के द्वारा विरासत में प्राप्त हुई वे (ज्योतिष-तन्त्र-इतिहास-पुराण-व्याकरण-धर्मशास्त्र-आयुर्वेद) विविध विषयों के उपाधि प्राप्त प्रकाण्ड विद्वान थे।

श्री दीक्षित जी का इतिहास पुराण, ज्योतिष और व्याकरणादि विषयों में अच्छा अधिकार है, **सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय** में अनेक पदों पर कार्य कर सेवानिवृत्त हो, माँ भगवती की उपासना में समय-यापन कर रहे हैं। उनकी कृपा दृष्टि व सहयोग से ग्रन्थ पूर्ण कर आप लोगों के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस संकलन को उनके द्वारा सम्पादित **'बालबोध ज्योतिषम्'** के अन्तर्गत मुद्रित कर रहा हूँ। आप सभी प्रबुद्धजनों से अनुरोध है कि इसनें जो कमी या त्रुटि हो सुधार कर अवगत कराने की कृपा करें।

आपका कृपानुरागी
चाँदरतन लढ़ा

विषयानुक्रमणिका

।। श्री गुरवः शरणम् ।।

ॐ

।। श्री गोपीवल्लभो जयति ।।

बालबोध–ज्यौतिषम्

संज्ञाप्रकरणम् १।।

त्वदाज्ञया भान्ति ग्रहाश्च सर्वे नक्षत्ररूपाणि विभान्ति खे वै।
आधार हीनानि त्वया धृतानि तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।१।।
रत्नसिंहासनासीनां गोपीमण्डल नायिकाम्।
कृष्णप्राणाधिकां वेद बोधितां परमेश्वरीम्।।

ज्योतिःशास्त्रस्यावश्यकत्वम् (ज्योतिर्निबन्धे नारदः) –

सिद्धान्त–संहिता–होरा–रूपस्कन्धत्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम्।।२।।
विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्तं कर्म न सिद्ध्यति।
तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।
अत एव द्विजै–रेतदध्येतव्यं प्रयत्नतः।।३।।

वेद का निर्मल चक्षु (नेत्र), सिद्धान्त, संहिता और जातक नाम के ३ स्कन्ध वाला ज्यौतिषशास्त्र है। बिना इसके श्रौत–स्मार्त कोई कर्म सिद्ध नहीं हो सकते, इसलिये संसार के कल्याणार्थ ब्रह्मा ने पहले इसको वनाया। अतः इसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों को प्रयत्न पूर्वक पढ़ना चाहिये।।२–३।।

सूर्यः पितामहो व्यासः वसिष्ठोऽत्रिः पराशरः,
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिः मनुरङ्गिरा।
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः,
शौनकोऽष्टादशाश्चैते ज्योतिश्शास्त्र प्रवर्तकाः।।४।। (कश्यप संहिता)

सूर्य, ब्रह्मा, व्यास, वसिष्ठ, अत्रि, पराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अंगिरा, लोमश, रावण, व्यवन्य, यवन, भृगु और शौनक ये आचार्य ज्योतिष शास्त्र के १८ प्रवर्तक है।

काल–मान (सूर्य सिद्धान्ते) –

प्राणादिकथितो मूर्तस्त्र्युट्याद्यो ऽमूर्तसंज्ञकः।
सूच्या भिन्ने पद्मपत्रे त्रुटिरित्यभिधीयते।।५।।
तत्षष्ट्या च भवेद्रेणुः रेणुषष्ठ्या लवं स्मृतम्।
तत्षष्ट्या लेशकं प्रोक्तं तत्षष्ट्या प्राणमुच्यते।।६।।
षष्टिप्राणैः विनाडीस्यात्तत्षष्ट्या नाडिका स्मृता।
नाडीषष्ट्या तु नाक्षत्रमहोरात्रं प्रकीर्तितम्।।७।।

तात्रिंशता भवेन्मासः सावनोऽर्कोदयैस्तथा ।
एन्दवस्तिथिभिस्तद्वत्सङ्क्रान्त्या सौरउच्यते ।।८।।

स्वस्थ पुरुष सुखपूर्वक एक श्वास लेता है उतने ही काल को (असु) प्राणसंज्ञक अमूर्त काल कहते है, कमल-पत्र में सुई वेधन करने में जितना समय लगता है उसे त्रुटि कहते है। ६० त्रुटि का एक रेणु, ६० रेणु का एक लव, ६० लव का लेशक, ६० लेशक का एक प्राण होता है। ६० प्राण का एक (पल) विनाडी, ६० पल (विनाडी) का एक घटी (नाड़ी) और ६० घटी का एक नक्षत्र अहोरात्र दिन होता है। तीस अहोरात्र दिन का एक नाक्षत्र मास होता है। एक सावन दिन प्रथम सूर्योदय से द्वितीय सूर्योदय के पूर्व तक होता है इस प्रकार तीस सावन दिनों का एक सावन मास होता है। प्रथम संक्रान्ति से दूसरी संक्रान्ति के पूर्व तक को सौर मास कहते है।।५-८।।

दिग्भिःस्याद्गुरुवर्णकैरसुरसोः षड्भिः पलं तत्खषट्,
नाडी तद्युगलक्षणोऽत्रखगुणैस्तैः स्यादहर्यामिनी ।
पक्षस्तत्तिथिभिश्च पक्षयुगलो मासोऽऋतुस्तद्द्वयं
तद्रामैरयनं किलायनयुगं वर्षं भचक्रोन्मितम् ।।९।।

१० गुरु अक्षरों का १ प्राण, ६ प्राणों का एक पल (विघटी), ६० पलों (विघटी या विनाड़ी का एक घटी) (नाड़ी), २ घटी का एक क्षण (मुहूर्त), ३० मुहूर्तों का अहोरात्र (एक दिन), १५ अहोरात्र का एक पक्ष, २ पक्षों का एक (सावन) मास, २ मासों की एक ऋतु, ३ ऋतुओं का एक अयन, २ अयनों का एक भचक्रवर्ष होता है।।९।।

[1]अयने (सूर्य सिद्धान्त) –

भानोर्मकरसंक्रान्तेः षण्मासा उत्तरायणम् ।
कर्क्यादिस्तु तथैव स्यात् षण्मासा दक्षिणायनम् ।।१०।।

सूर्य की मकर संक्रान्ति से ६ मास तक उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति से ६ मास तक दक्षिणयन कहलाता है।

(संक्रान्ति के निरयन और सायन दो भेद होते हैं। जिस दिन सायन मकर संक्रान्ति होती है, उसी दिन से सूर्य का उत्तरायण प्रारम्भ हो जाता है। वही दिन आज बड़ा दिन के नाम से पुकारा जाता है। किन्तु यह समय कालान्तर में आगे पीछे हटा करता है, इसलिये भारतीय ज्योतिषियों ने प्रत्येक शुभ कार्यो में निरयन से ही शुभाशुभ कार्यो के करने का विधान या निर्देश किया है)।।१०।।

अयनकृत्यम् (रत्नमालायाम्)

गृहप्रवेश–त्रिदश–प्रतिष्ठा–विवाह–चौल–व्रतबन्ध–दीक्षाः ।
सौम्यायने कर्म शुभं विधेयं यद् गर्हितं तत्खलु दक्षिणे स्यात् ।।११।।

गृहप्रवेश, देवप्रतिष्ठा, विवाह, मुण्डन, व्रतबन्ध, दीक्षा-ग्रहण इत्यादि कर्म सौम्यायन में, इससे अतिरिक्त कार्य दक्षिणायन में शुभ होते हैं।।११।।

ऋतव (मुहूर्त गणपति) :-

मीन–मेषगते सूर्ये वसन्तः परिकीर्तितः ।
वृषभे मिथुने ग्रीष्मो वर्षा सिंहेऽथ कर्कटे ।।१२।।

---

१. अयनाचार - वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात् (सि० शिरोमणि)
वर्ष, अयन, ऋतु और युग का ज्ञान सूर्य के द्वादशराशि पर संक्रमण से प्राप्त होता है।

कन्यायां च तुलायां च शरदृतुरुदाहृतः ।
हेमन्तो वृश्चिकद्वन्द्वे शिशिरो मृगकुम्भयोः ।।१३।।

मीन-मेष के सूर्य में वसन्त, वृष-मिथुन के सूर्य में ग्रीष्म, कर्क-सिंह के सूर्य में वर्षा, कन्या-तुला में शरद्, वृश्चिक-धनु के सूर्य मे हेमन्त और मकर कुम्भ के सूर्य में शिशिर ऋतु होती है।।१२-१३।।

'मासनामानि (मुहूर्त गणपति) :-

मासश्चैत्रोऽथ वैशाखो ज्येष्ठश्चाषाढसंज्ञकः ।
ततस्तु श्रावणो भाद्रपदोऽथाश्विनसंज्ञकः ।।१४।।
कार्तिको मार्गशीर्षश्च पौषो माघोऽथ फाल्गुनः ।
एते चन्द्रमसो मासाः कीर्तिता गणकोत्तमैः ।।१५।।

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, अगहन (मार्गशीर्ष), पौष, माघ और फाल्गुन ये १२ (चान्द्र) मास पूर्वाचार्यो ने कहे हैं।।१४-१५।।

वर्षारम्भ होने के बाद पहले पहल जब चन्द्रमा पूर्णविम्ब दिखाई पड़ता है अर्थात् कृष्णादि चान्द्रमास गणना से मास पूर्ति (पूर्णिमा) होती है, उस दिन चित्रा नक्षत्र पर चन्द्रमा आकाश में दिखाई पड़ता है अतः उसे चैत्री पूर्णिमा एवं उस मास को चैत्र मास कहते हैं। एवं उसके बाद वाली पूर्णिमा को विशाखा नक्षत्र पर चन्द्रमा के रहने के कारण उसे वैशाखी पूर्णिमा और उस मास को वैशाख कहा गया है। इसी भाँति ज्येष्ठा नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा को ज्येष्ठी पूर्णिमा एवं ज्येष्ठी पूर्णिमा वाले मास को ज्येष्ठमास कहते हैं। इसी प्रकार बारहों मासों के नाम निर्देश आचार्यो ने किये है।

मासभेदा -

दर्शावधिं मासमुशन्ति चान्द्रं सौरं तथा भास्करराशिभोगात् ।
त्रिंशद्दिनं सावनसंज्ञमार्या नाक्षत्रमिन्दोर्भगणभ्रमाच्च।।१६।।

अमावास्यान्त से अमावस्या तक चन्द्रमास, संक्रान्ति से संक्रान्ति तक सौर मास, ३० दिनों का सावनमास और चन्द्रमा के भगण भोगकाल का नक्षत्र मास होता है

(पूर्णिमान्त से पूर्णिमान्त तक भी चान्द्रमास होता है। नर्मदा के उत्तरीय प्रदेशों में सर्वत्र इसी कृष्णादि चान्द्रमास का प्रचार है।।१६।।

कस्मिन्कर्मणि कः ग्राह्यः (ज्योतिर्निबन्धे)

विवाहादौ स्मृतः सौरो यज्ञादौ सावनः स्मृतः।
वार्षिके पितृकार्ये च मासश्चान्द्रोऽभिधीयते ।।१७।।

विवाह, उपनयन आदि संस्कारों में सौर मास, यज्ञादि, कर्मो में सावन मास, वार्षिक श्राद्ध, पितृकार्य इत्यादि में चान्द्रमास ग्रहण करना चाहिये।

अधिमास-क्षयमासौ -

असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटः स्याद्
द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित् ।
क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्या-
त्तदा वर्षमध्येऽधिमास-द्वयं च ।।१८।।

जिस चान्द्रमास में स्पष्टसूर्य की संक्रान्ति न हो उसे अधिमास और जिस चन्द्रमास में दो बार स्पष्ट सूर्य की संक्रान्ति हो उसे क्षयमास कहते हैं। यह क्षयमास कार्तिकादि ३ महीनों में ही होता है। जिस वर्ष में क्षयमास होता है उस साल दो अधिमास होते हैं।।१८।।

तत्र विहितकार्याणि –

गर्भे वार्धुषिके भृत्ये प्रेतकर्मणि मासिके ।
सपिण्डीकरणे नित्ये नाधिमासं विवर्जयेत् ।।१६।।

गर्भाधान में, ब्याज खोरी के समय, नौकर रखने में, प्रेत कर्म में, मासिक कर्म में, सपिण्डन में नित्यकर्म में अधिमास वर्जित नहीं है। (अर्थात् इन कार्यो मे अधिमास को भी गिन लेना चाहिये)।।१६।।

सति क्षयमासे मासनिर्णयः –

तिथ्यर्धे प्रथमे पूर्वः परस्मिन्नपरस्तथा ।
मासाविति बुधैश्चिन्त्यो क्षयमासस्य मध्यगौ ।।२०।।

क्षयमास में तिथि के पूर्वार्ध में जननादि हो तो पूर्व मास, उत्तरार्ध में जन्म इत्यादि हो तो परमास (अगला महीना) समझना चाहिये।।२०।।

प्रसंगाज्जन्ममासनिर्णयः (नारदः) –

आरभ्य जन्मदिवसं यावत्त्रिंशद्दिनं भवेत् ।
जन्ममासः स विज्ञेयो गर्हितः सर्वकर्मसु ।।२१।।

जन्म दिन से ३० (सावन) दिन पर्यन्त जन्ममास होता है, यह शुभ कार्यो में निन्दित कहा गया है।

मतान्तरेण –

यस्मिंश्चन्द्रमसो मासे जन्म कृष्णादिके भवेत् ।
जन्ममासः स विज्ञेयस्तत्र चौलादिकं त्यजेत् ।।२२।।

जिस चान्द्रमास में जन्म हो उसको जन्ममास कहते हैं। जन्म मास चौलादि शुभकार्यो में वर्जित है।।२२।।

जन्ममासे विहितकर्माणि –

स्नानं दानं तपो विद्या मांगल्यं हर्षवर्धनम् ।
उद्वाहश्च कुमारीणां जन्ममासे न वर्जयेत् ।।२३।।

स्नान, दान, तप, विद्याध्ययन, मांगलिक-कार्य, आनन्ददायक-कर्म तथा कन्या का विवाह जन्ममास में वर्जित नहीं हैं।।२३।।

पक्षः –

सूर्येन्दुसंगमस्यैव विश्लेषसमयाद् बुधैः ।
शुक्लपक्षोऽथ राकान्तस्तदग्रे कृष्णपक्षकः ।।२४।।

सूर्य-चन्द्रमा के योग से आगे पूर्णिमा तक शुक्लपक्ष, उसके बाद अमावस्या तक कृष्ण पक्ष होता है।

(जिस पक्ष में चन्द्रमा की कला प्रतिदिन बढ़ती जाती है उसको शुक्ल पक्ष और जिसमें चन्द्रमा की कला प्रतिदिन घटती जाती है उसको कृष्णपक्ष कहते हैं)।।२४।।

शुभाशुभकर्मजातानां मुहूर्तविचारे पञ्चांगशुद्धेरावश्यकत्वात्तावत्पञ्चांगानि निरूप्यन्ते –

तिथिवारर्क्षयोगानां करणस्य च मेलनम् ।
पञ्चांगमस्य शुद्धिः पञ्चांगशुद्धिरुदाहृता ।।
यस्मिन् पञ्चांगशुद्धिः स्यात्तस्मिन् लग्नं निरर्थकम् ।।२५।।

तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, इनके मेलन को पञ्चांग कहते हैं। इनकी शुद्धि का नाम पञ्चांग शुद्धि है। जिस दिन पञ्चांगशुद्धि बनती हो उस दिन लग्नशुद्धि देखना व्यर्थ है।।२५।।

(१) तिथयः -

प्रतिपच्च द्वितीया च तृतीया च ततः परम् ।
चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी ततः ।।२६।।
नवमी दशमी चैवैकादशी द्वादशी तथा
त्रयोदशी ततो ज्ञेया ततो ज्ञेया चतुर्दशी ।
शुक्ले पञ्चदशी सद्भिः पूर्णिमा समुदीर्यते
कृष्णपक्षे च विबुधैरमावस्या प्रकीर्तिता ।।२७।।

१,२,३... १५ पूर्णिमा तक शुक्लपक्ष में, कृष्णपक्ष मे ये तिथियाँ ३० अमावस्या पण्डितों ने कही है। *(सूर्य और चन्द्रमा अपने-अपने मार्ग पर चलते-चलते जब एक सीध में होते हैं अर्थात् दोनों के भोग-भाग समान हो जाते हैं तब अमावस्या का अन्त होता है, उसके बाद सूर्य और चन्द्रमा दोनों आगे बढ़ते हैं। किन्तु सूर्य की गति की अपेक्षा चन्द्रमा की गति तीव्र होने के कारण जब दोनों में १२° का अन्तर हो जाता है अर्थात् सूर्य के आगे १२° पर चन्द्रमा हो जाता है तब एक तिथि का भोग पूरा होता है। एवं २४° अन्तर होने पर २ तिथि, ३६° अन्तर होने पर ३ तिथि इत्यादि होती है। इस भांति जब चन्द्रमा १२° X १५ = १८०° सूर्य से आगे हो जाता है अर्थात् दोनों का अन्तर ६ राशि होता है तब पूर्णिमा का अन्त होता है। फिर आगे कृष्णपक्ष प्रारम्भ होता है और जब अमावस आ जाता है तब ३० तिथि या १ चन्द्रमास पूर्ण होता है।)*

सूर्य चन्द्रमा की गति के समान रूप से न होने के कारण सर्वदा दोनों का अन्तर १२° अंश ६० घड़ी में नहीं होता किन्तु कभी कम समय में कभी अधिक समय में होता है अर्थात् १२° अंश अन्तर ५४ घड़ी के लगभग से लेकर ६६ घटी के आसन्न तक होता है।।२६-२७।।

नन्दादि तिथि संज्ञाः -

नन्दा-भद्रा-जया-रिक्ता-पूर्णाः स्युस्तिथयः क्रमात् ।
पर्यायत्वेन विज्ञेया नेष्टमध्येष्टदाः सिते ।।
कृष्णपक्षेऽपीष्टमध्यनेष्टदाः क्रमशः स्मृताः ।।२८।।

प्रतिपदादि तिथियों की प्रतिपक्ष में ३ पर्याय से नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा ये पाँच संज्ञायें होती हैं। शुक्लपक्ष में प्रथम पर्याय (प्रतिपदा से पञ्चमी तक) अशुभ, द्वितीय पर्याय (६-१० तक) मध्यम और तृतीय पर्याय (११-१५ तक) शुभ हैं एवं कृष्णपक्ष में प्रथम पर्याय की तिथियाँ (१-५ तक) शुभ, द्वितीय पर्याय की (५-१० तक) मध्यम और तृतीय पर्याय की (११-३० तक) अशुभ होती हैं।।२८।।

सिते	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	कृष्णे
अशुभ	१	२	३	४	५	शुभ
मध्य	६	७	८	९	१०	मध्य
शुभ	११	१२	१३	१४	१५/३०	अशुभ

सदसत्तिथयः -

अमावस्याष्टमी रिक्ता षष्ठी च द्वादशी तथा ।
अशुभास्तिथयः प्रोक्ता अपरास्तिथयः शुभाः ।।२९।।

प्रत्येक पक्ष में अमावस्या, अष्टमी, रिक्ता (४।९।१४), षष्ठी, द्वादशी, तिथियाँ अशुभ और बाकी (१,२,३,५,७,१०,११,१३) तिथियाँ शुभ होती हैं।।२९।।

आवश्यके वर्ज्यघट्यः –

वेदांगष्ट-नवार्केन्द्र-पक्षन्ध्रतिथौ त्यजेत् ।
वस्वंकमनुतत्त्वाशाः शरा नाड्यः पराः शुभाः ।।३०।।

[1]चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी, चतुर्दशी इन तिथियों में क्रम से ८,६,१४,२५,१०,५ घटियाँ वर्जित और शेष शुभ हैं।।३०।।

प्रसंगात्पञ्चपर्वाणि –

चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा त्वमावास्या च पूर्णिमा ।
पुण्यानि पञ्च पर्वाणि संक्रान्तिर्दिनपस्य च ।।३१।।

कृष्ण पक्ष की १४,८,३० और पूर्णिमा तथा सूर्य की संक्रान्ति ये पाँच पर्व कहलाती हैं।।३१।।

तिथीनामीशाः –

तिथीशा वह्निकौ गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः ।
शिवो दुर्गान्तको विश्वे हरिः कामः शिवः शशी ।।३२।।

प्रतिपदा के अग्नि, २के ब्रह्मा, ३के गौरी, ४के गणेश, ५के सर्प, ६के कार्तिकेय, ७के सूर्य, ८के शिव, ९की दुर्गा, १०के यम, ११के विश्वेदेवा, १२के विष्णु, १३के कन्दर्प, १४के महादेव, पूर्णिमा के चन्द्रमा और अमावस्या के स्वामी पितर है।।३२।।

तिथिक्षयर्द्धी –

स्युस्तिस्रस्तिथयो वारे एकस्मिन्नवमीतिथिः ।
तिथिर्वारत्रये यैका त्रिद्युस्पृग्द्वेऽतिनिन्दिते ।।३३।।
कृतं यन्मंगलं तत्र त्रिद्युस्पृगवमे दिने ।
भस्मीभवति तत्क्षिप्रमग्नौ सम्यग्यथेन्धनम् ।।३४।।

एक वार को ३ तिथियाँ स्पर्श करें तो तिथि क्षय, एक तिथि तीन बार को स्पर्श करे तो तिथिवृद्धि होती है। ये दोनों (तिथिक्षय-वृद्धि) प्रत्येक शुभ कार्यो में निन्दित हैं। इन (तिथिक्षय-तिथिवृद्धि) में किये गये कर्म भभकती हुई आग में पड़कर ईधन के समान शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।।३३-३४।।

(२) वारप्रवृतिस्तन्नामानि च –

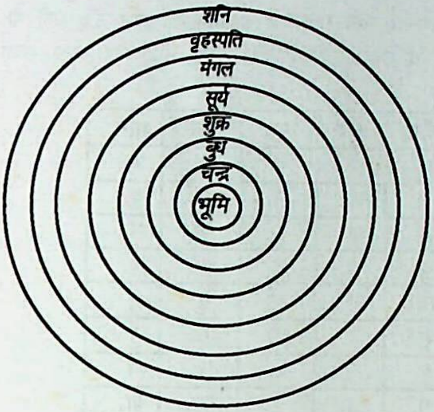
अथ सावनमानेन वाराः सप्त प्रकीर्तिताः ।
ते चार्कोदययोरेव विवरे तु समाः स्मृताः ।।३५।।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधश्चाथ बृहस्पतिः ।
शुक्रः शनैश्चरश्चैते वासराः परिकीर्तिताः ।।३६।।

दो सूर्योदय के बीच में सावनात्मक ७ वार होते हैं। रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि ये ७ वारों के नाम कहे गये हैं।

(जन्म, मरण, संस्कार, यात्रा इत्यादि कार्यो में सूर्योदय, से सूर्योदय के बीच में और स्नान सन्ध्या इत्यादि कर्मो में आधी रात से आधी रात के बीच में सावन दिन का प्रयोग होता है।)।।३५-३६।।

---

१. यह ६० घटी के मान से लिखा है, न्यूनाधिक के वास्ते त्रैराशिक करना चाहिये।



हमारी वसुन्धरा से जिस पर हम अनन्तकाल से विद्यमान् है सबसे सन्निकट चन्द्रकक्षा है उसके ऊपर क्रम से बुध शुक्र सूर्य मंगल बृहस्पति और शनि की कक्षायें हैं, अपनी अपनी कक्षाओं में ग्रह निरन्तर पूर्वा-भिमुख अविरलगति से भ्रमण करते रहते हैं।

इनमे सबसे चमकीला प्रकाशमान् ग्रह सूर्य है जो इस अनन्त ब्रह्माण्ड के समस्त तमस्तोय को अपने दिव्य किरणों से ध्वस्त करता रहता है और अखिल ब्रह्माण्ड गोलक पर रहने वाले अनन्तानन्त जीवों को प्राण दान करने वाला एवं सम्पूर्ण जगत् का समाश्रय है उसी के नाम से पहले बार का निर्देश किया गया, सूर्य के बाद हमारी दृष्टि चन्द्रमा पर आती है। यह सूर्य कक्षा से नीचे की ओर कक्षाओं को गिनते जाँय तो ज्ञात होता है कि चौथी कक्षा चन्द्र की पड़ती है अतः उसी क्रम से नीचे की ओर गिनते-गिनते प्रत्येक चौथी २ कक्षा पर जो-जो ग्रह भ्रमण करते देखे गये क्रम से उन उन ग्रहों के नाम से वार गणना करना हमारे त्रिकाल दर्शी ऋषियों ने निश्चित किया है।

जैसे इस चक्र में सूर्य कक्षा से चौथी की नीचे की ओर चन्द्र कक्षा, फिर उसके आगे से ऊपर गिनने पर चौथी कक्षा मंगल की, एवं मंगल की कक्षा से आरम्भ करके नीचे गिनने पर चौथी कक्षा बुध की, बुध कक्षा के आगे से ऊपर आरम्भ करके गिनने पर चौथी कक्षा गुरू की एवं आगे भी इसी क्रम मे शुक्र एवं शनि की कक्षायें पड़ती हैं। अतः सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि के वार निश्चित हुए। और इसी भारतीय पद्धति को सारे भूमण्डल ने अपनाया। यह वार गणना का क्रम करोड़ों वर्षों से अविरल क्रम से चला आ रहा है। किसी देश में भी अभी तक इसका क्रम विछिन्न नहीं हुआ।

शुक्रेन्दुबुधजीवानां वाराः सर्वत्र शोभनाः ।
भानुभूसुतमन्दानां शुभकर्मसु केष्वपि ।।३७।।
न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् ।
दिवा शशाङ्कार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ।।३८।।

शुक्र, सोम, बुध और बृहस्पति ये वार सब शुभ कामों में शुभ है। और सूर्य, मंगल और शनि ये तीनो वार कहे हुए कार्यो में ही शुभद होते है। गुरू, शुक्र, रवि इन वारों के दोष रात्रि मे नहीं होते। सोम, शनि, भौम इनका दोष दिन में नही होता है। और बुधवार का दोष रात दिन सर्वदा होता है।।

मतान्तरेण वारप्रवृत्तिः (रत्नमालायाम्) -

वारप्रवृत्तिं मुनयो वदन्ति सूर्योदयाद्रावणराजधान्याम् ।
ऊर्ध्वं तथाऽधोप्यपरत्र तस्माच्चरार्धदेशान्तरनाडिकाभिः ।।३९।।

लंका में सर्वदा सूर्योदय से वार प्रवृत्ति होती है। अन्य देशों में चरार्ध और देशान्तर के संस्कार से वार प्रवृत्ति का ज्ञान होता है।

पूर्व के देशों में पहले तथा पश्चिम देशों में बाद अर्थात् प्रत्येक देशों में एक साथ सूर्योदय न होने के कारण भिन्न २ समय में वार प्रवृत्ति का होना स्वाभाविक है, किन्तु ऐसा मानने से अनवस्था दोष

होता है, इसलिए आचार्यो ने लंका मे सूर्योदय के समय से वार की प्रवृत्ति माना है। वहाँ से अपने २ देश मे वार प्रवृत्ति जानने के लिये देशान्तर और चरान्तर संस्कार करना चाहिए। यह दिन ६० घटी या २४ घण्टे का होता है। उत्तर और दक्षिण देशों के भेद से २ सूर्योदयों का अन्तर छोटा बड़ा होता रहता है।

रव्यादिवारे कालहोरेशज्ञानाय चक्रम्

वार	रवि	सोम	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१।३०	र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
५।०	शु.	श.	र.	सो.	मं.	बु.	बृ.
७।३०	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	सो.	मं.
१०।०	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.
१२।३०	श.	र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.
१५।०	गु.	शु.	श.	र.	सो.	मं.	बु.
१७।३०	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.
२०।०	र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
२२।३०	शु.	शु.	र.	सो.	मं.	बु.	बृ.
२५।०	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.
२७।३०	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.
३०।०	श.	र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.
३२।३०	गु.	शु.	श.	र.	सो.	मं.	बु.
३५।०	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.
३७।३०	र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
४०।०	शु.	श.	र.	सो.	मं.	बु.	बृ.
४२।३०	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.
४५।०	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.
४७।३०	श.	र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.
५०।०	बृ.	शु.	श.	र.	सो.	मं.	बु.
५२।३०	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.
५५।०	र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
५७।३०	शु.	श.	र.	सो.	मं.	बु.	बृ.
६०।०	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	सो.	मं.

प्रसंगात्कालहोरा:, तत्प्रयोजनञ्च –

वारप्रवृत्तेः घटिका द्विनिघ्नाः कालाख्यहोरापतयः शराप्ताः ।
दिनाधिपाद्या रविशुक्रसौम्यशशांङ्कसौरीज्यकुजाः क्रमेण ।।४०।।
यस्य ग्रहस्य वारे यत्किञ्चित्कर्म प्रकीर्तितम् ।
तत्तस्य कालहोरायां सर्वमेव विधीयते ।।४१।।

वार प्रवृत्तिसमय से गत घटिका को २ से गुणा कर ५ का भाग देने पर जो लब्धि हो उसमें १ जोड़ देना तो दिन के क्रम से छठवें-छठवें दिन के स्वामी होरेश होते हैं- जैसे सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्रमा, शनि, गुरु और मंगल। जिस वार मे जो कर्म कहा गया है (वार न मिलने पर) उस कर्म को उसकी कालहोरा में करना चाहिये।

नक्षत्राणि -

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः ।
आर्द्रा पुनर्वसू पुष्य आश्लेषा च ततो मघा ।।४२।।
पूर्वाफल्गुनिका ज्ञेया तत उत्तरफल्गुनी ।
हस्तश्चित्रा ततः स्वाती विशाखा मैत्रभं ततः ।।४३।।
ज्येष्ठा मूलं ततः पूर्वोत्तराषाढेऽभिजित्ततः ।
श्रवणश्च धनिष्ठा च ततश्च शततारका ।।४४।।
पूर्वोत्तराभाद्रपदे रेवती तदनन्तरम् ।
अष्टाविंशतिराख्यातास्तारका मुनिसत्तमैः ।।४५।।

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसू, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती ये अट्ठाईस नक्षत्र मुनियों ने कहे है।

नक्षत्रेशाः -

नक्षत्रेंशाः क्रमाद्दस्रयमवह्निपितामहाः ।
चन्द्रेशादितिजीवाहिपितरो भगसंज्ञिताः ।।४६।।
अर्यमार्कस्त्वष्ट्रमरुच्छक्राग्निमित्रवासवाः ।
निर्ऋत्युदकविश्वेजगोविन्दवसवोऽम्बुपः ।।४७।।
ततोऽजपाहिर्बुध्न्यः पूषा चेति प्रकीर्तिताः ।।४८।।

अश्विन्यादि नक्षत्रों के क्रम से अश्विनीकुमार, यम, अग्नि, ब्रह्मा, चन्द्रमा, महादेव, दिति, बृहस्पति, सूर्य, पितर, भग, अर्यमा, सूर्य, त्वष्ट्रा, वायु, इन्द्र-अग्नि, मित्र, इन्द्र, राक्षस, जल, विश्वेदेव, विष्णु, ब्रह्मा, वसु, वरुण, अजपाद, अहिर्बुध्य और पूषा ये २८ स्वामी होते हैं।।४६-४८।।

नक्षत्राणां संज्ञा -

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम् ।
तत्र स्थिरं बीजगेहशान्त्यारामादि सिद्ध्यति ।।४९।।

तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा) और रोहिणी नक्षत्र और रविवार इनकी ध्रुव और स्थिर संज्ञा होती है। इनमें स्थिरकर्म, बीज बोना, घर में प्रवेश करना और बाग लगाना, आदि शब्द से मृदुसंज्ञक नक्षत्रों में कहे हुए कार्य भी करने उचित हैं।।४९।।

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम् ।
तस्मिन्गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम् ।।५०।।

स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा ये नक्षत्र और चन्द्रवार इनकी चर और चल संज्ञा है। इनमें हाथी, घोड़ा, ऊँट आदि की सवारी करना, फुलवाड़ी का लगाना और फुलवाड़ी में प्रथम जाना शुभ कार्य हैं और आदि शब्द से लघु क्षिप्र नक्षत्रों में कहे कार्य भी करने शुभ हैं।।५०।।

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा ।
तस्मिन्घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिद्ध्यति ।।५१।।

तीनों पूर्वा (पूर्वाफल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपदा) भरणी और मघा नक्षत्र और मंगलवार इनकी उग्र और क्रूर संज्ञा है। इनमें शत्रु को मारना, अग्नि लगाना, शठता करना, विष देना, और हथियारों का कर्म-ये सब कार्य शुभदायक हैं। आदि शब्द से दारुण नक्षत्रों में कहे कार्य भी करने-शुभ हैं।।५१।।

विशाखाग्नेयभे सौम्ये मिश्रं साधारणं स्मृतम् ।
तत्राग्निकार्यं मिश्रञ्च वृषोत्सर्गादि सिद्ध्यति ।।५२।।

विशाखा और कृत्तिका नक्षत्र और बुधवार इनकी मिश्र और साधारण संज्ञा है। इनमें अग्निसम्बन्धी कर्म, चीजों का मिलन वृषोत्सर्ग करना और आदि शब्द से उग्र नक्षत्रों में कहे कार्य सिद्ध होते हैं।।५२।।

हस्ताश्विपुष्यभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा ।
तस्मिन्पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकम् ।।५३।।

हस्त, अश्विनी, पुष्य और अभिजित् ये नक्षत्र और बृहस्पतिवार इनकी क्षिप्र और लघु संज्ञा है। इनमें दुकान खोलना, मैथुन कर्म करना, आभूषण बनाना, चित्रादि-कलादि निकालना, किसी विद्या को सीखना और आदि पद से चर नक्षत्रों में कहे कार्य भी सिद्ध होते हैं।।५३।।

मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा ।
तत्र गीताम्बरक्रीडा मित्रकार्यं विभूषणम् ।।५४।।

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा नक्षत्र और शुक्रवार इनकी मृदु और मैत्र संज्ञा है। इनमें गान विद्या का अभ्यास, नवीन वस्त्र आभूषण धारण करना, क्रीड़ा और मैत्री करना सब कार्य सिद्ध होते हैं।।५४

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम् ।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ।।५५।।

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा नक्षत्र और शनिवार इनकी तीक्ष्ण और दारुण संज्ञा है। इनमें अभिचार प्रयोग शस्त्रों से मारना, क्रूर कार्य करना और पशुओं को वश में करना ये कार्य सिद्ध होते हैं और आदि शब्द से बन्धन और स्थिर कार्य भी सिद्ध होते हैं।।५५।।

अथ ध्रुवादिवार-नक्षत्र संज्ञा चक्रम्-

ध्रुवादि संज्ञा	वार	नक्षत्र
ध्रुव स्थिर	रविवार	रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद
चर	सोमवार	स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा
उग्र (क्रूर)	मंगलवार	भरणी, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद
मिश्र	बुधवार	कृत्तिका, विशाखा
लघु (क्षिप्र)	गुरुवार	अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभिजित
मृदु (मैत्री)	शुक्रवार	मृगशिर, चित्रा, अनुराधा, रेवती
दारुण (तीक्ष्ण)	शनिवार	आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, मूल

पञ्चक विचार (ज्योतिर्निबन्धे) -

कुर्यान्न दारुतृणसंग्रहमन्तकाशायानं मृतस्य दहनं गृहगोपनं च ।
शय्यावितानमिह वासवपञ्चके च केचिद्वदन्ति परतो वसुदैवतोर्धात् ।।५६।।

पंचक नक्षत्रों में तृण-काष्ठ आदि का संग्रह, दक्षिण दिशा का गमन, शवदाह, घर का छाना (मकान में पाटन आदि का डालना), चारपाई का निर्माण तथा स्तम्भारोपणादि कार्य नहीं कराने चाहिये। किसी आचार्य ने श्रवण से रेवती तक छः नक्षत्रों में पंचकदोष मानकर उपर्युक्त कार्यों का निषेध किया है।।५६।।

छेदनं संग्रहं चैव काष्ठादीनां न कारयेत् ।
श्रवणाद्ये बुधः षट्के न गच्छेद्दक्षिणां दिशम् ।।५७।।

किसी के मत से धनिष्ठा के प्रारम्भ से पाँच नक्षत्रों में और किसी के मत में श्रवण से छ नक्षत्रों में उपर्युक्त कार्य निषिद्ध हैं।।५७।।

प्रसक्तस्वामितिथ्यंशाः (दिवा १५ मुहूर्ताः) -

दिवा मुहूर्ता रुद्राहिमित्राः पितृवसूदकम् ।
विश्वे विधातृब्रह्मेन्द्रा इन्द्राग्न्यासुरतोयपाः ।
अर्यमा भगसंज्ञश्च विज्ञेया दश पञ्च च ।।५८।।

रुद्र, सर्प, मित्र, पितर, वसु, जल, विश्वेदेव, विधाता, ब्रह्म, इन्द्र, इन्द्राग्नि, निऋति, वरुण, सूर्य और भग ये दिन में १५ मुहूर्तों के स्वामी होते हैं।।५८।।

रात्रौ -

ईशाजपादहिर्बुध्न्य- पूषाश्वि- यम- वह्नयः ।
धातृचन्द्रादितीज्याख्यविष्ण्वर्कत्वष्ट्रवासवाः ।।५९।।

ईश, अजपाद, अहिर्बुध्न्य, पूषा, दस्र, यम, अग्नि, ब्रह्मा, चन्द्र, अदिती, पुष्य, विष्णु, अर्क, त्वष्ट्रा और वासव ये रात्रि के १५ मूहूर्तों के स्वामी होते हैं।।५९।।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	मुहूर्त
आर्द्रा	आश्लेषा	अनुराधा	पितृगण	धनिष्ठा	पू.षाढा	उ.षाढा	अभिजित्	रोहिणी	ज्येष्ठा	विशाखा	मूल	शतभिष	उ.फा.	पू.फा.	दिवा
आर्द्रा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृगशि.	पुनर्वसु	पुष्य	श्रवण	हस्त	चित्रा	धनिष्ठा	रात्रौ

प्रयोजनम् -

यस्मिन्नृक्षे हि यत्कर्म कथितं निखिलं च यत् ।
तद्दैवत्ये तन्मुहूर्ते कार्यं यात्रादिकं सदा ।।६०।।

जिस नक्षत्र में जो कार्य विहित हैं, उन कार्यों को उसके स्वामितिथ्यंश में करना शुभ होता है।।६०।।

तिथिवारजः कुयोगः (क्रकचाख्यः)

त्रयोदश स्युर्मिलने संख्यायस्तिथिवारयोः ।
क्रकचो नाम योगोऽयं मंगलेष्वतिगर्हितः ।।६१।।

तिथि और वार की संख्या मिलकर १३ हो तो क्रकच योग होता है। यह सब शुभकार्यों में निषिद्ध है।।६१।।

संवर्तयोगः -

सप्तम्यामर्कवारश्चेत् प्रतिपत्सौम्यवासरे ।
संवर्तयोगो विज्ञेयः सर्वकर्मसु गर्हितः ।।६२।।

सप्तमी को रविवार, प्रतिपदा को बुधवार हो तो सब कामो में निषिद्ध संवर्तयोग होता है।६२।।

दग्धयोगः -

द्वादश्येकादशीनागगौरीस्कन्दवसुष्वपि ।
नवम्यां दग्धयोगाख्या भानुवारादितः क्रमात् ।।६३।।

सूर्यादि सात वारों में क्रम से १२, ११, ५, ३, ६, ८, ९ ये तिथियाँ हो तो दग्ध योग होता है।।६३।।

विषयोगः -

षष्ठी शशांके नवमी च शुक्रे बुधे द्वितीया तपने चतुर्थी ।
जीवेऽष्टमी सौरिकुजेह्नि सप्तमी योगा विषाख्याः कुलनाशनाःस्युः ।।६४।।

सोमवार को षष्ठी, शुक्रवार को नवमी, बुध को द्वितीया, रविवार को चतुर्थी, गुरु को अष्टमी, शनि-भौम को सप्तमी हो तो कुल का नाशक विषयोग होता है।।६४।।

हुताशनयोगः –

सप्त षष्ठ्यादितिथयः सोमवारादिभिर्युताः ।
अग्निजिह्वाः सप्त योगा मंगले कुलनाशनाः ।।६५।।

सोमवारादि में क्रम से षष्ठ्यादि तिथियाँ पड़ें तो अग्निजिह्वा योग होता है। इसमें मंगल कार्य करने में कुल का नाश होता है।।६५।।

मृत्युयोगाः (कश्यपः) –

आदित्यभौमयोर्नन्दा भद्रा शुक्रशशाङ्कयोः ।
जया सौम्ये गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा मृतिप्रदा ।।६६।।

रविवार-भौमवार को नन्दा, सोम-शुक्रवार को भद्रा, बुधवार को जया, गुरुवार को रिक्ता और शनिवार को पूर्णा तिथि हो तो मृत्युयोग होते हैं।।६६।।

सिद्धियोगाः –

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा जया भौमे प्रकीर्तिताः ।
शनौ रिक्ता गुरौ पूर्णा सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ।।६७।।

शुक्रवार को नन्दा, बुधवार को भद्रा, मङ्गलवार को जया, शनिवार को रिक्ता और गुरुवार को पूर्णा तिथि हो तो सिद्धियोग होते हैं।।६७।।

यमघंटयोगः (गर्गः) –

मघा विशाखा चार्द्रा च मूलमृक्षं च कृत्तिका ।
रोहिणी हस्त इत्येवं यमघण्टाः क्रमाद् रवेः ।।६८।।

रव्यादिक वारों में क्रम से मघा, विशाखा, आर्द्रा, मूल, कृत्तिका, रोहिणी और हस्त नक्षत्र हों तो यमघण्ट योग होते हैं।।६८।।

दग्धयोगः (लल्लः) –

याम्यं चित्रोत्तराषाढा धनिष्ठोत्तरफाल्गुनी ।
ज्येष्ठा च रेवती चैव जन्मर्क्षं भानुतः क्रमात् ।।६९।।
जन्मर्क्षग्रह-संयोगे न कुर्याच्छोभनं नरः ।
पाणिग्रहण-यात्रादि विनाशमुपयाति हि ।।७०।।

रव्यादिवारों में क्रम से भरणी, चित्रा, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी ज्येष्ठा, रेवती ये जन्मनक्षत्र हैं तो इन नक्षत्रों और रव्यादि वारों के योग में विवाह, यात्रा इत्यादि शुभ कार्य करने से कार्य नष्ट हो जाता है।।६९-७०।।

कुलिकयोगः –

सूर्ये च सप्तमी सोमे षष्ठी भौमे च पञ्चमी।
बुधे चतुर्थी देवेज्ये तृतीया भृगुनन्दने ।।७१।।
द्वितीया वर्जनीया च प्रतिपद्रविनन्दने ।
कुलिकाख्यो हि योगोऽयं विवाहादौ न शस्यते ।।७२।।

रव्यादिक वारों में ७, ६, इत्यादि तिथियाँ व्युत्क्रम से पड़ जाय (रविवार को सप्तमी, सोम को षष्ठी, भौम को पंचमी, बुध को चतुर्थी, गुरु को तृतीया, शुक्र का द्वितीया और शनिवार को प्रतिपदा तिथि हो) तो कुलिकयोग होता है। यह विवाह-यात्रा आदि में वर्जित है।।६६-७२।।

सर्वार्थसिद्धियोगाः (मु० चि०) –

सूर्येऽर्कमूलोत्तरपुष्यदास्रं चन्द्रे श्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम् ।
भौमेऽश्व्यहिर्बुध्न्यकृसानुशार्पं ज्ञे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचान्द्रम् ।।७३।।
जीवेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधिष्ण्यंशुक्रेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितिश्रवोभम् ।
शनौ श्रुतिब्राह्मसमीरमानिसर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि पूर्वैः ।।७४।।

रविवार को हस्त, मूल, तीनों उत्तरा पुष्य, अश्विनी, सोमवार को श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, मङ्गलवार को अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, कृत्तिका, आश्लेषा, बुधवार को रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, मृगशिरा, गुरुवार को रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुर्नवसु, पुष्य, शुक्रवार को रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण और शनिवार को श्रवण, रोहिणी, स्वाती हो तो सर्वार्थसिद्धियोग पूर्वाचार्यों ने कहा है।

अमृतसिद्धिः (रत्नमालायाम्) –

हस्तो रवौ शशधरे च मृगोत्तमर्क्षं
भौमेऽश्विनी बुधदिने च तथाऽनुराधा।
तिष्यो गुरौ भृगुसुतेऽपि च पौष्णधिष्ण्यं
रोहिण्यथार्कतनयेऽमृतसिद्धियोगाः ।।७५।।

रविवार को हस्त, सोमवार को मृगशिरा, मंगल को अश्विनी, बुध को अनुराधा, गुरुवार को पुष्य, शुक्र को रेवती और शनिवार को रोहिणी हो तो अमृतसिद्धियोग होता है।।७५।।

तिथिवार-नक्षत्रवारोत्पन्न योग-बोधक चक्रम् –

रविः	सोमः	भौमः	बुधः	गुरु	शुक्रः	शनिः	वाराः
१२	११	१०	६	८	७	६	क्रकचयोगः
७	६	५	४	३	२	१	कुलिकः
१२	११	५	३	६	८	६	दग्धः
४	६	७	२	८	६	७	विषाख्यः
१२	६	७	८	६	१०	११	हुताशनः
नन्दा	भद्रा	नन्दा	जया	रिक्ता	भद्रा	पूणा	मृत्युः
		जया	भद्रा	पूर्णा	नन्दा	रिक्ता	सिद्धिः
मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त	यमघण्टः
भरणी	चित्रा	उ.षा.	धनिष्ठा	उ.फा.	ज्येष्ठा	रेवती	दग्धः
पू.षा.	आर्द्रा	विशा.	रोहिणी	पुष्य	मघा	मूल	चराख्यः
मघा धनिष्ठा	विशा. मूल	भरणी कृत्तिका	पू.षा. पुन.	उ.षा. अभि.	रोहिणी अनु.	श्रवण शत.	यमद्रंष्ट्र
हस्त,मूल तीनों उत्तरा पुष्य, अश्वि.	श्र.,रो. मृग.पुष्य अनु.	अश्वि. उ.फा. कृ.आश.	रो.,अनु. हस्त कृ.,मृग.	रे.,अनु. अश्वि.,पुन. पुष्य	रे.,अनु. अश्व. पुन.,श्र.	श्रवण रोहिणी स्वाति	सर्वार्थ सिद्धि योगः
हस्त	मृग.	अश्वि.	अनु.	पुष्य	रेवती	रोहिणी	अमृतसिद्धिः

तिथिनक्षत्रजाः कुयोगाः (मु० चि०)–

तथा निन्द्यं शुभे सार्पं द्वादश्यां वैश्वमादिमे।
अनुराधा द्वितीयायां पञ्चम्यां पितृभं तथा ।।
त्र्युत्तराश्च तृतीयायामेकादश्यां च रोहिणी ।।७६।।
स्वातीचित्रे त्रयोदश्यां सप्तम्यां हस्त-राक्षसे ।
नवम्यां कृत्तिकाष्टम्यां पूभा षष्ठ्यां च रोहिणी ।।७७।।

द्वादशी में आश्लेषा, प्रतिपदा में उत्तराषाढ़ा, द्वितीया में अनुराधा, पञ्चमी में मघा, तृतीया मे तीनों उत्तरा, एकादशी में रोहिणी, त्रयोदशी में स्वाती-चित्रा, सप्तमी में हस्त-मूल और नवमी में कृत्तिका, अष्टमी में पूर्वाभाद्रपदा, षष्ठी में रोहिणी हो तो सब शुभ कामों मे वर्जित हैं।।७६-७७।।

मधुसर्पिषयोगाः (त्रितयजाः कुयोगाः) (मु० चि०) –

वर्जयेत्सर्वकार्येषु हस्तार्कं पंचमी - तिथौ ।
भौमाश्विनीं च सप्तम्यां षष्ठ्यां चन्द्रैन्दवं तथा।।७८।।
बुधानुराधामष्टम्यां दशम्यां भृगुरेवतीम् ।
नवम्यां गुरुपुष्यं चैकादश्यां शनिरोहिणीम् ।।७६।।

पञ्चमी को रविवार हस्त नक्षत्र, सप्तमी को भौमवार अश्विनी नक्षत्र, षष्ठी को सोमवार-मृगशिरा नक्षत्र, अष्टमी को बुधवार-अनुराधा नक्षत्र, दशमी को शुक्रवार रेवती नक्षत्र, नवमी को गुरुवार-पुष्यनक्षत्र और एकादशी को शनिवार-रेहिणी नक्षत्र पड़े तो सब शुभ कर्मो में वर्जित है।।७८-७६।।

कार्यविशेषे त्याज्याः सिद्धियोगाः (मु० चि०) –

गृहप्रवेशे यात्रायां विवाहे च यथाक्रमम् ।
भौमाश्विनीं शनौ ब्राह्मं गुरौ पुष्यं विवर्जयेत् ।।८०।।

गृहप्रवेश में भौमवार-अश्विनी नक्षत्र, यात्रा मे शनिवार-रोहिणी नक्षत्र और विवाह में गुरुवार-पुष्यनक्षत्र को प्रयत्नपूर्वक वर्जित करना चाहिये।।८०।।

आनन्दादियोगाः (मु० चि०)

आनन्दाख्यः कालदण्डश्च धूम्रो धाता सौम्यो ध्वांक्षकेतू क्रमेण ।
श्रीवात्साख्यो वज्रकं मुद्गरश्च छत्रं मित्रं मानसं पद्म-लुम्बौ ।।८१।।
उत्पात-मृत्यू फिल काणसिद्धी शुभोऽमृताख्यो मुसलं गदश्च ।
मातङ्गरक्षश्चरसुस्थिराख्याः प्रवर्धमानाः फलदाः स्वनाम्ना ।।८२।।

१ आनन्द, २ कालदण्ड, ३ धूम्र, ४ धाता, ५ सौम्य, ६ ध्वांक्ष, ७ केतु, ८ श्रीवत्स, ६ वज्र, १० मुद्गर, ११ छत्र, १२ मित्र, १३ मानस, १४ पद्म, १५ लुम्ब, १६ उत्पात, १७ मृत्यु, १८ काण, १६ सिद्धि, २० शुभ, २१ अमृत २२ मुसल, २३ गद, २४ मातंग, २५ रक्ष, २६ चर, २७ सुस्थिर और २८ प्रवर्धमान ये २८ योग अपने नाम तुल्य फल देने वाले होते हैं।।८१-८२।।

एषां ज्ञानप्रकारः (मु० चि०) –

दास्रादर्के मृगादिन्दौ सार्पाद्भौमे कराद् बुधे ।
मैत्राद्गुरौ भृगौ वैश्वाद्गण्या मन्दे च वारुणात् ।।८३।।

रविवार को अश्विनी से, सोमवार को मृगशिरा से, भौमवार को आश्लेषा से, बुधवार को हस्त से, गुरुवार को अनुराधा से, शुक्रवार को उत्तराषाढ़ा से और शनिवार को शतभिषा से दिन नक्षत्र तक गिनने पर जितनी संख्यायें हों उतने संख्यक आनन्दादि योग होता है।।८३।। स्फुटता के लिये चक्र देखिये।

२८ योगानां नामानि	वर्ज्यघ०	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	योगफलम्
आनन्दः	०	अश्व.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	उ.षा.	श.	अर्थसिद्धि
कालदण्डः	६०	भ.	आर्द्रा	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	मृत्युभीति
धूम्रः	१	कृ.	पु.	पू.फा.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.भा.	असुखम्
प्रजापतिः	०	रो.	पुष्य	उ.फा.	वि.	पू.षा.	ध.	रे.	सोभाग्यम्
सौम्यः	०	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	उ.षा.	श.	अ.	बहुसुखम्
ध्वांक्षः	५	आर्द्रा	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	धननाशः
ध्वजः	०	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.भा.	कृ.	सौभाग्यम्
श्रीवत्सः	०	पुष्य	उ.फा.	वि.	पू.षा.	ध.	रे.	रो.	सुखसम्पत्तिः
वज्रः	५	आ.	ह.	अनु.	उ.षा.	श.	अ.	मृ.	अर्थक्षयः
मुद्गरः	५	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.भा.	भ.	आर्द्रा	लक्ष्मीनाशः
छत्रम्	०	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्र.	उ.भा.	कृ.	पुन	राजसम्मानम्
मित्रम्	०	उ.फा.	वि.	पू.षा.	ध.	रे.	रो.	पुष्य	सौख्यपुष्टिः
मानसम्	०	ह.	अनु०	उ.षा.	श.	अ.	मृ.	आ.	सौभाग्यम्
पद्मम्	४	चि.	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भ.	आर्द्रा	म.	धनागमः
लुम्बकः	४	स्वा.	मू.	श्र.	उ.भा.	कृ.	पुन.	पू.फा.	धनक्षयः
उत्पातः	६०	वि.	पू.षा.	ध.	रे.	रो.	पुष्य	उ.फा.	प्राणनाशः
मृत्युः	६०	अनु.	उ.षा.	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	ह.	मृत्युभयम्
काणः	२	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भ.	आर्द्रा	म.	चि.	क्लेशवृद्धिः
सिद्धिः	०	मू.	श्र.	उ.भा.	कृ.	पु.	पू.फा.	स्वा.	कार्यसिद्धिः
शुभः	०	पू.षा.	ध.	रे.	रो.	पुष्य	उ.फा.	वि.	कल्याणम्
अमृतम्	०	उ.षा.	श.	अ.	मृं.	आश्ले.	ह.	अनु.	राजसम्मान
मुसलः	२	अभि.	पू.भा.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	धनक्षयः
गदः	७	श्र.	उ.भा.	कृ.	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मू.	रोगमविद्या
मातंगः	०	ध.	रे.	रो.	पुष्य	उ.फा.	वि.	पू.षा.	कुलवृद्धिः
राक्षसः	६०	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	उ.षा.	महत्कष्टम्
चरः	०	पू.भा.	भ.	आर्द्रा	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	कार्यसिद्धिः
सुस्थिरः	०	उ.भा.	कृ.	पुन.	पू.फा.	स्वाति	मू.	श्र.	गृहलाभः
प्रवर्धमानः	०	रे.	रो.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	ध.	सुमंगलम्

दुष्टयोगेषु त्याज्यघट्यः (मु० चि०) -

ध्वांक्षे वज्रे मुद्गरे चेषुनाड्यो वर्ज्या वेदाः पद्मलुम्बे गदेऽश्वाः ।
धूम्रे काणे मौसले भूर्द्वयं द्वे रक्षोमृत्यूत्पातकालाश्च सर्वे ।।८४।।

ध्वांक्ष वज्र और मुद्गर में ५ घटिका, पद्म लुम्ब योग में ४ घटी, गदयोग में ७ घटी, धूम्र में १ घटी, काण में २ घटी, मुसल में २ घटी और रक्ष, मृत्यु, उत्पात, एवं काल इनकी सब घटियाँ सम्पूर्ण शुभकार्यों में वर्जित करना चाहिये।।८४।।

आवश्यके दुष्टयोगपरिहारः (मु० चि०) –

कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्था भवारजाः ।
हूणवङ्गखशेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा ।।८५।।
अयोगे सुयोगोऽपि चेत्स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति ।
परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम् ।।८६।।
मृत्युः क्रकचदग्धादीनिन्दौ शस्ते शुभाञ्जगुः ।
केचिद्यामोत्तरं चान्ये यात्रायामेव निन्दितान् ।।८७।।

तिथि-वार से उत्पन्न कुयोग, तिथि-नक्षत्र से उत्पन्न कुयोग, नक्षत्र-वार से उत्पन्न कुयोग और तिथि-वार-नक्षत्र तीनों से उत्पन्न तीनों से उत्पन्न कुयोगों को हूण, वंग, खस (नेपाल) इन तीनों देशों में ही वर्जित करना चाहिये। ये अन्य देशों में वर्जित नहीं हैं। किसी कुयोग के समय सुयोग भी विद्यमान हो तो वह सुयोग कुयोग के अशुभ फलों को नष्ट करके सिद्धि को प्राप्त कराता है। अन्य आचार्यों का कहना है कि लग्नशुद्धि से कुयोग के दोष नष्ट हो जाते हैं और दिन के दोपहर के बाद भद्रा इत्यादि कुयोग शुभद होते है। मृत्यु, क्रकच, दग्ध इत्यादि सब कुयोग चन्द्रमा के शुभ होनेपर शुभ हो जाते है। किसी २ आचार्य के मतसे १ प्रहर के बाद ये शुभ होते है। और कोई २ आचार्य कहते हैं कि ये कुयोग केवल यात्रा में ही निन्दित है अन्य शुभकार्यों में वर्ज्य नहीं है।।८५-८७।।

सूर्यनक्षत्रवशाद्रवियोगः (मु० चि०) –

सूर्यभाद्वेदगोतर्कदिग्विश्वनखसम्मिते ।
चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसंघविनाशकाः ।।८८।।

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर यदि, ४,६,६,१०,१३,२० हो तो सम्पूर्ण दोषों के समूह को नाश करने वाला रवियोग होता है।।८८।।

जैसेः- यदि रोहिणी नक्षत्र पर सूर्य व्यवस्थित है तो पुनर्वसु, आश्लेषा, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, विशाखा, उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रों में रवियोग होगा।

(४) विष्कम्भादियोगः –

सूर्याधिष्ठितनक्षत्रं तथा चन्द्रप्रतिष्ठितम् ।
व्येकादैक्यात्तयोर्योगाः स्युर्हि विष्कम्भकादयः ।।८६।।

सूर्याधिष्ठित नक्षत्र और चन्द्राधिष्ठित नक्षत्र की संख्याओं के योग में १ घटा के २७ का भाग देने से जो शेष वचे वह विष्कम्भादि योग होता है।।८६।।

तन्नामानि- (ब्रह्मवैवर्तपुराणकृष्णजन्मखंड अ. ६६। श्लो. ७८-७६ शीघ्रबोध)

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ।
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलं तथैव च ।।६०।।
गण्डो वृद्धिः ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ।
वज्रः सिद्धिः व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः।।६१।।
सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मेन्द्रो वैधृतिस्तथा।
सप्तविंशतिराख्याता नाम-तुल्यफला इमे ।।६२।।

१ विष्कम्भ, २ प्रीति, ३ आयुष्मान्, ४ सौभाग्य, ५ शोभन, ६ अतिगण्ड, ७ सुकर्मा, ८ धृति, ६ शूल, १० गण्ड, ११ वृद्धि, १२ ध्रुव, १३ व्याघात, १४ हर्षण, १५ वज्र, १६ सिद्धि, १७ व्यतिपात, १८ वरीयान्, १६ परिघ, २० शिव, २१ सिद्धि, २२ साध्य, २३ शुभ, २४ शुक्ल, २५ ब्रह्म, २६ ऐन्द्र, २७ वैधृति, ये २७ योग होते हैं।।६०-६२।।

निन्द्ययोगाः (वशिष्ठः) –

विरुद्धयोगेषु सदाद्यपादः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयः ।
सवैधृती यो व्यतिपातयोगः सर्वोऽप्यनिष्टः परिघस्य चार्धम् ।
तिस्रस्तु योगे प्रथमे सवज्रे व्याघातसंज्ञे नव पञ्च शूले ।।
गण्डेऽतिगण्डे च षडेच नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः ।।६३।।

शुभकार्य में अशुभयोग का प्रथम चरण त्याग करना चाहिये व्यतीपात और वैधृति योग सम्पूर्ण, परिघ का पूर्वार्ध, विष्कम्भ और वज्र की पहले की ३ घटी, व्याघात के प्रारम्भ की ९ घटी, शूलयोग के आरम्भ की ५ घटी, गण्ड अतिगण्ड योग की ६ घटी सब शुभ कार्यों में निन्दित हैं।।६३।।

(५) करणानि –

तिथिं च द्विगुणीकृत्य एकहीनं च कारयेत् ।
सप्तभिश्च हरेद् भागं शेषं करणमुच्यते ।।६४।।
बवं च बालवं चैव कौलवं तैतिलं गरः ।
वणिजं विष्टिरित्याहुः करणानि चराणि तु ।।६५।।
पक्षे कृष्णे चतुर्दश्यां शकुनिः पश्चिमे दले ।
भवेच्चतुष्पदं नागममावास्यादलद्वये ।।६६।।
शुक्लप्रतिपदि ज्ञेयं किंस्तुघ्नं प्रथमे दले ।
स्थिराण्येतानि चत्वारि करणानि जगुर्बुधाः ।।६७।।
करणानि ववादीनि शुभसंज्ञानि षट् क्रमात् ।
क्रमायाता क्रमायाता विष्टिर्नेष्टा तु मंगले ।।६८।।

शुक्लापक्षादि की तिथि संख्या को २ से गुणनकर के १ घटा कर ७ से भाग देने पर जो शेष बचे वह तिथि के उत्तरार्ध में ववादि करण होता है। बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज और विष्टि ये ७ चर करण कहे गये हैं। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के परार्द्ध में शकुनि, अमावस्या के पूर्वार्ध मे चतुष्पद, उत्तरार्ध मे नाग और शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के पूर्वार्ध में किंस्तुघ्नं करण होता है। इन चारों को स्थिर करण कहते हैं, ववादिक ६ करण शुभ और विष्टिनामक करण सब शुभ कार्यों मे निषिद्ध है।।६४-६८

उदाहरण –

यदि कृष्णपक्ष की पञ्चमी को करण जानना है तो तिथि संख्या २० को दूना करके १ कम किया, शेष मे ७ का भाग दिया तो $\frac{२०x२-१}{७} = \frac{३९}{७} = ५ + \frac{४}{७}$

पाँच लब्धि और ४ शेष बचें, इसलिये कृष्णपञ्चमी के उत्तरार्द्ध में चौथा तैतिल करण हुआ। यदि पूर्वार्द्ध मे जानना हो तो एक और कम कर देना चाहिये (या गत तिथि संख्या को दूना करके ७ भाग देने से शेषांक तुल्य वर्तमान तिथि के पूर्वार्ध मे करण होता है)। करणों का भोग तिथि मान के आधे के समान होता है।

भद्राज्ञानम् –

दशम्यां च तृतीयायां कृष्णे पक्षे परे दले ।
सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वदले स्मृता ।।९९।।
एकादस्यां चतुर्थ्यां च शुक्ले पक्षे परे दले ।
अष्टम्यां पूर्णिमायां च विष्टिः पूर्वदले भवेत् ।।१००।।

कृष्णपक्ष में दशमी और तृतीया के परदल में एवं सप्तमी और चतुर्दशी के पूर्वदल में भद्रा होती है। शुक्लपक्ष में एकादशी और चतुर्थी के परदल में, अष्टमी और पूर्णिमा के पूर्वदल में भद्रा होती है।

भद्रावास (मु० चि०) -

कुम्भकर्कद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽब्जेऽजात्रयेऽलिगे।
स्त्रीधनुर्जूकनक्रेऽधो भद्रा तत्रैव तत्फलम् ।।१०१।।

कुम्भ, मीन, कर्क, सिंह राशियों के चन्द्रमा में भद्रा का वास धरती पर मृत्युलोक में, मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक राशि के चन्द्रमा में स्वर्ग में और कन्या, धनु, तुला, मकर राशि के चन्द्रमा में भद्रा पाताल लोक में रहती है। भद्रा का वास जिस लोक में हो वहीं उसका अशुभ फल होता है (भद्रा के रहने पर शुभ कार्य करना निषेध है)।।१०१।।

स्थितिः फलञ्च -

सम्मुखे मृत्युलोकस्था पाताले च ह्यधोमुखी।
ऊर्ध्वस्था स्वर्गगा भद्रा सम्मुखे मरणप्रदा ।।१०२।।
भद्रामुखेषु यो याति क्रोशमेकन्तु नोत्तरम् ।
पुनरागमनं नास्ति सागरात् सरितो यथा ।।१०३।।

मृत्युलोक में भद्रा का वास हो तो सम्मुख, पाताल में हो तो अधोमुख और स्वर्ग में भद्रा का वास हो तो ऊर्ध्वमुख समझना। सम्मुख भद्रा का मुख हो ता मरणप्रद होता है। भद्रा के मुख में जो मनुष्य १ कोश तक की भी यात्रा करता है वह फिर लौट कर उस स्थान पर नहीं आता। जैसे सागर में जाकर नदियाँ नहीं लौटतीं।।१०२-१०३।।

भद्रादिग्वासः -

पूर्वे भद्रा चतुर्दश्यामाग्नेय्यामष्टमीषु च ।
सप्तम्यां दक्षिणे चैव नैऋत्ये पौर्णिमासु च ।।१०४।।
पश्चिमायां चतुर्थ्यां च वायव्यां दशमीतिथौ ।
एकादश्यामुत्तरे स्यादैशान्यां गिरिजातिथौ ।।१०५।।

चतुर्दशी में भद्रा का वास पूर्वदिशा में, अष्टमी को अग्निकोण में, सप्तमी को दक्षिण दिशा में, पौर्णमासी को नैर्ऋत्यकोण में, चतुर्थी को पश्चिम दिशा में, दशमी को वायव्यकोण में, एकादशी को उत्तर दिशा में तृतीया को ईशानकोण में भद्रा का वास रहता है। भद्रा के सम्मुख जाना निषिद्ध है।।१०५।।

भद्रायामवश्यं वर्ज्य कर्म-

भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा ।
श्रावणी नृपतीन् हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी ।।१०६।।

भद्रा में श्रावणी और होलिकादहन ये दोनों नहीं करना चाहिये, क्योंकि भद्रा में करने से श्रावणी राजा का और होलिका गाँव का नाश करती है।।१०६।।

भद्रामुखपुच्छज्ञानम् (मु० चि०)

पञ्चद्व्यद्रिकृताष्टरामरसभूयामादिघट्यः शराः
विष्टेरास्यमसद्गजेन्दुरसरामाद्यश्विबाणाब्धिषु ।
यामेष्वन्त्यघटीत्रयं शुभकरं पुच्छं तथा वासरे
विष्टिस्तिथ्यपरार्धजा शुभकरी रात्रौ च पूर्वार्धजा ।।१०७।।

'मुख पुच्छ-बोधकचक्रम-

तिथयः	४	८	११	१५	३	७	१०	१४
प्रहरेषु	५	२	७	४	८	३	६	१
मुखघट्यः	५	५	५	५	५	५	५	५
प्रहरेषु	८	१	६	३	७	२	५	४
पुच्छघट्यः	३	३	३	३	३	३	३	३

चतुर्थी को पाँचवे प्रहर के आदि में पाँच घड़ी भद्रा का मुख होता है। एवं अष्टमी को दूसरे प्रहर के आदि में, एकादशी को सातवें प्रहर के आदि में, पौर्णमासी को चौथे प्रहर के आदि में, तृतीया को आठवें प्रहर के आदि में, 'सप्तमी को तीसरे प्रहर के आदि में, दशमी को छठवें प्रहर के आदि में और चतुर्दशी को पहले प्रहर के आदि में पाँच-पाँच घटी भद्रा का मुख होता है। यह सब शुभकार्यो में निषिद्ध है। एवं चतुर्थी को आठवें प्रहर के अन्त में ३ घटी भद्रा पुच्छ होता है, तथा अष्टमी को प्रथम प्रहर के अन्त्य में, एकादशी को छठे प्रहर के अन्त्य में पूर्णिमा को तीसरे प्रहर के अन्त्य में, तृतीया को सातवें प्रहर के अन्त्य में सप्तमी को दूसरे प्रहर के अन्त्य में, दशमी को पाँचवें प्रहर के अन्त्य में, और चतुर्दशी को चौथे प्रहर के अन्त में तीन' घटी भद्रा का पुच्छ होता है (आवश्यक्ता में) यह मंगल कार्यों में शुभद है। और तिथि की परार्द्ध की भद्रा दिन में, पूर्वार्द्ध की भद्रा रात में हो तो शुभदायिनी होती है (६० घटिका के मान से यहाँ मुख-पुच्छादि लिखा है। तिथि का मान ६० घटी से कम या अधिक होने पर त्रैराशिक करना चाहिये)।।१०७।।

संवत्सरप्रकरणम् बार्हस्पत्यमान –

मध्यगत्या भभोगेन गुरोर्गौरव-वत्सरः ।
संहितायामिति प्रोक्तं वसिष्ठादि-महर्षिणा ।।१०८।।

बृहस्पति की मध्यम गति से एक नक्षत्र के भोगकाल को संवत्सर कहते हैं। इस प्रकार का वसिष्ठादि मुनियों का कथन है।।१०८।।

नर्मदोत्तरभागे तु बार्हस्पत्येन वत्सरः।
तस्यास्तु दक्षिणे भागे सौरमानेन वर्तते ।।१०६।।

नर्मदा के उत्तरभाग में स्थित प्रान्तों में बार्हस्पत्य (प्रभवादि) संवत्सर तथा दक्षिण भाग में सौर (मेष संक्रान्ति से मेष संक्रान्ति के पूर्व तक) संवत्सर फलादि में ग्रहण किया जाता है।।१०६।।

शुद्धसंवत्सर –

यत्रैव राशि सञ्चारो भवेन् मार्गगतेर्गुरोः ।
शुद्धः संवत्सरः सः स्यात् सर्वेषां च शुभप्रदः।।११०।।

जिस संवत्सर में स्पष्ट गुरु एक राशि पर मार्गी होकर ही सञ्चरणकरता हो वह शुद्धवर्ष समस्तशुभ कार्यो के लिये शुभप्रद होता है।।११०।।

अतिचार और लुप्तवर्ष –

यत्र वर्षे द्विचारः स्यादतीचारः स उच्यते ।
तदा कर्म शुभं त्याज्यमष्टाविंशति-वासरान् ।।१११।।

जिस संवत्सर में मार्गी होकर गुरु दो राशियों में संचार करता हो वह अतिचार कहलाता है। उस काल में अट्ठाइस दिन पर्यन्त शुभ कार्य का त्याग करना चाहिये।।१११।।

वर्षान्ते च पुनर्वक्रो भूत्वा गच्छति पूर्वभम् ।
तदा लघ्वतिचारः स्यादन्यथा लुप्तवत्सरः ।।११२।।
यस्मिन् राशौ स्फुटेज्यस्य वत्सरान्तो न जायते ।
तद्राशिवत्सरस्यैव नाम्नो लोपः प्रजायते ।।११३।।

---

१. ६० घटीका के मान से यहां मुख-पृच्छादि लिखा है। तिथि का मान ६० घटी से न्यूनाधिक होने पर त्रैराशिक करना चाहिये।

अतिचार होने पर भी यदि स्पष्टगुरु वक्री होकर संवत्सर के अन्तकाल में पुनः पूर्वराशि में आजावे तो लघुअतिचार होता है। अन्यथा यदि पूर्वराशि में न आवे, अथवा पुनः वर्षान्त काल से पूर्व ही अग्रिम राशि में चला जाय तो लुप्त संवत्सर होता है।।११२-११३।।

महातिचारसंज्ञं तं लुप्तं संवत्सरं त्यजेत् ।
वत्सरारम्भतः पञ्च-चत्वारिंशद् दिनानि वा ।।११४।।

लुप्तसंवत्सर को ही महातिचार कहते हैं। उस वर्ष में शुभ कर्मों का त्याग करना चाहिये। यदि अति आवश्यक हो तो प्रारम्भ से ४५ (पैंतालीस) दिन उपरान्त ही शुभकार्य करना चाहिये।।११४।।

षष्टिसंवत्सरनामानि –

ब्रह्म-विष्णु-रुद्र-विंशति भेदेन क्रमेण सृष्टि-स्थिति-प्रलयानुरूपफलमेतेषाम् –

ब्रह्मविंशतिः –

प्रभवो विभवः शुल्कः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ।
अंगिरा श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ।।११५।।
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः ।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवोऽव्ययः ।।११६।।

विष्णुविंशतिः –

सर्वजित्-सर्वधारी च विरोधी विकृतिः स्वरः ।
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथ-दुर्मुखो ।।११७।।
हेमलम्बी विलम्बी च विकारो शार्वरी प्लवः ।
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसु-पराभवौ ।।११८।।

रुद्रविंशतिः –

प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणो विरोधकृत् ।
परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः ।।११९।।
पिंगलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थो रौद्र-दुर्मतिः ।
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षः क्रोधनः क्षयः ।।१२०।।
षष्टि संख्याः समाख्याता नाम-तुल्य-फला इमे ।

निम्नलिखित ६० संवत्सर अपने नाम तुल्य फल प्रदान करते है।

ब्रह्मविंशतिः		विष्णुविंशतिः		रुद्रविंशतिः	
प्रवभ	ईश्वर	सर्वजित्	हेमलम्वी	प्लवंग	पिंगल
विभव	वहुधान्य	सर्वधारी	विलम्वी	कीलक	कालयुक्त
शुल्क	प्रमाथी	विरोधी	विकारी	सौम्य	सिद्धार्थ
प्रमोद	विक्रम	विकृति	शार्वरी	साधारण	रौद्र
प्रजापति	वृष	खर	प्लव	विरोधकृत्	दुर्मति
अंगिरा	चित्रभानु	नन्दन	शुभकृत्	प्ररिधावी	दुन्दुभि
श्रीमुख	सुभानु	विजय	शोभन	प्रमादी	रुधिरोद्गारी
भाव	तारण	जय	क्रोधी	आनन्द	रक्ताक्ष
युवा	पार्थिव	मन्मथ	विश्वावसु	राक्षस	क्रोधन
धाता	अव्यय	दुर्मुख	पराभव	नल	क्षय

शतपदचक्रसारोद्धारः (ज्यौतिषार्के)

चू चे चो ला पदा दास्रे ली लू ले लो यमस्य भे।
आ ई उ ए कृत्तिकायां ओ वा वी वू तु धातृभे।।१२१।।
वे वो का की मृगे ख्याता कु घ ङ छा तु रौद्रभे ।
के को हा ही त्वदितिभे हू हे हो डा च पुष्यभे ।।१२२।।
डी डू डे डो इमे सार्पे मा मी मू मे मघाभिधे ।
मो टा टी टू तथा भाग्ये टे टो पा पी अर्यमर्क्षके ।।१२३।।
पू षा णा ठा तथा हस्ते पे पो रा री ति चित्रभे।
रू रे रो ता तथा स्वातौ ती तू ते तो द्विदैवभे ।।१२४।।
ना नी नू ने क्रमान्मैत्रे नो या यी यू इतीन्द्रभे ।
ये यो भा भी ति मूलाख्ये भू धा फा ढा जलस्य भे ।।१२५।।
भे भो जा जी तु विश्वर्क्षे जू जे जो खा-ऽभिजद्भवत् ।
खी खू खे खो श्रुतौ श्रेया गा गी गू गे च वासवे ।।१२६।।
गो सा सी सू जलेशर्क्षे से सो दा दी-त्यजाङ्घ्रिभे ।
दू थ झ ञ तथोपान्त्ये दे दो चा ची ति पौष्णभे ।।१२७।।

राशयः-

मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कः सिंहश्च कन्यका ।
तुला च वृश्चिकश्चैव धनुर्मकर-कुम्भकौ ।।
मीनश्च विबुधैर्ज्ञेया राशिसंज्ञा यथाक्रमात् ।।१२८।।

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन ये बारह राशियाँ होती है।।१२८।।

अनन्ताकाश मण्डल में अविरल गति से जिस निश्चित मार्ग से श्रीसूर्य भगवान् इस हमारी पृथिवी की परिक्रमा करते हुए दिखाई पड़ते हैं, उसे क्रान्तिमण्डल कहते हैं। यह गोलाकार है। इसके बराबर बराबर बारह विभाग मान लिये गये हैं। उन प्रत्येक विभागों को राशि कहते हैं। प्रत्येक राशि में ३०।३० अंश होते है। प्रत्येक अंश के ६०वें भाग को कला एवं प्रत्येक कला के ६०वें भाग को विकला कहते है। आकाशस्थ रेवती तारा के पूर्व ओर क्रान्ति मण्डल के १२वें भाग के अन्तर्गत जिन अश्विनी, भरणी इत्यादि नक्षत्रों की तारायें बीच में आ जाती हैं उनमें यदि रेखायें करदी जाय तो मेष (भेड़) के आकार का एक चित्र सा बन जाता है अतः उस मार्ग का नाम आचार्यों ने मेष रखा एवं आगे भी वृष, मिथुन आदि के आकार बनते हैं, अतः आकार के अनुरूप १२ विभागों के उक्त नाम रखे गये हैं। क्रान्ति मण्डल के समीप ही इन ताराओं की स्थिति है, अतः ये राशियाँ क्रान्ति मंडल का ही भाग मानी जाती है।

इति प्रोक्ता इमे पद्ये वर्णनामादिजाः स्फुटाः ।
ज्ञेया मेषादिराशीनां नवभिर्नवभिः पदैः ।।१२९।।
सप्तविंशतिताराणां नवभिर्नवभिः पदैः ।
अश्विनीप्रमुखाणां च मेषाद्या राशयः स्मृताः ।।१३०।।
अश्विन्योऽथ भरण्यो बहुलापादश्च कीर्त्यते मेषः।
वृषभो बहुला शेषं विधिभमर्द्धं च मृगशिरसः ।।१३१।।
मृगशिरसोर्द्धं रौद्रं पुनर्वसोश्चांशकत्रयं मिथुनम् ।
पादश्च पुनर्वसुतस्तिष्याऽऽश्लेषा च कर्कटकः ।।१३२।।

सिंहोऽथ मघा पूर्वाफाल्गुन्याः पाद उत्तराश्च ।
तत्परिशेषं हस्तश्चित्राद्यर्धं च कन्याख्यः ।।१३३।।
तौलिनि चित्रान्त्यार्धं स्वातीपादत्रयं विशाखायाः ।
अलिनि विशाखापादस्तथाऽनुराधान्विता ज्येष्ठा ।।१३४।।
मूलमाषाढापूर्वा प्रथमञ्चाप्युत्तरांको धन्वी ।
मकरस्तत्परिशेषं श्रवणं पूर्वं धनिष्ठार्द्धम् ।।१३५।।
कुम्भोन्त्यंधनिष्ठार्द्धं शतभिषगं त्रयं च पूर्वायाः ।
भाद्रपदायाः शेषं तथोत्तरा रेवती च झषः ।।१३६।।

इन श्लोकों का अर्थ स्पष्ट है।

नक्षत्रचरणाद्राशिबोधकचक्रम् –

मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
चू	इ	का	ही	मा	टो	रा	तो	ये	भो	गू	दी
चे	उ	की	हू	मी	पा	री	ना	या	जा	गे	दू
चो	ए	कु	हे	मू	पी	रू	नी	भा	जी	गो	था
ला	ओ	घा	हो	मे	पू	रे	नू	भी	खी	सा	झा
ली	वा	ङा	डा	मो	ष	रो	ने	भू	खू	सी	ञा
लू	वा	छा	डी	टा	ण	ता	नो	धा	खे	सू	दे
ले	वू	के	डू	टी	ठ	ती	या	फा	खो	से	दो
लो	वे	को	डे	टू	पे	तू	यी	ढा	गा	सो	चा
आ	वो	हा	डो	टे	पो	ते	यू	भे	गी	दा	ची

नामकल्पनाप्रकारः (गृह्यपरिशिष्टे)

तदक्षरादिकं नाम यस्मिन्धिष्ण्ये तदक्षरम् ।
यदि नाम्नि भवेद्वर्णः संयुक्ताक्षरलक्षणः ।
ग्राह्यस्तदादिमो वर्ण इत्युक्तं ब्रह्मयामले ।।१३७।।

यदि नाम के प्रारम्भ में संयुक्ताक्षर हो तो संयुक्ताक्षर के प्रथम वर्ण को नक्षत्र चरण कल्पना करना चाहिये। (जैसे प्रभुनारायण, ब्रह्मदेव, श्रीधर इत्यादि नामों प, य, शि इत्यादि नाम का प्रथमाक्षर कल्पना करके नक्षत्र चरण कल्पना करे)।।१३७।।

तथा –

अनुक्तत्वादृकारस्य रेफो ग्राह्यो विचक्षणैः ।
ऋद्धिदेवस्य नक्षत्रं यथा त्वाष्ट्रं भवेत्किल ।।१३८।।

पूर्व लिखित चक्र में ऋकार नाम का प्रथमाक्षर हो वहाँ ऋ के स्थान में 'रि' ग्रहण करना चाहिये। जैसे ऋद्धिदेव का नक्षत्र चित्रा होता है।।१३८।।

तथा च –

अ–आ, इ–ई, उ–ऊ, ए–ऐ, ओ–औ, द्वो–द्वौ मिथः समौ ।
व–बौ, श–सौ, ख–षौ, चैव ज्ञेयो दैवविदा समौ ।।१३९।।

अ-आ, इ-ई, उ-ऊ, ए-ऐ, ओ-औ ये दो-दो वर्ण आपस में समान होते हैं और ब-व, श-स, ख-ष से वर्ण भी आपस में ज्योतिषियों को समान समझना चाहिये।।१३९।।

सिंहस्याधिपतिः सूर्यश्चन्द्रः कर्कटकेश्वरः ।
मेष-वृश्चिकयोर्भौमः कन्या-मिथुनयोर्बुधः ।।१४०।।
धनुर्मीनयोर्देवेज्यः शुक्रो वृषतुलेश्वरः ।
शनिर्मकरकुम्भेश इत्येते राशिनायकाः ।।१४१।।

सिंह का स्वामी सूर्य, कर्क के स्वामी चन्द्रमा, मेष-वृश्चिक के स्वामी भौम, कन्या-मिथुन के स्वामी बुध, धनु-मीन के स्वामी गुरु, वृष-तुला के स्वामी शुक्र और मकर-कुम्भ के स्वामी शनि हैं।।१४०-१४१

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
सिंहः	कर्कः	मेषः वृश्चि.	कन्याः मिथु.	धनुः मीनः	वृषः तुला	मकरः कुम्भः	राशयः

विशेष (होरामकरन्दे): –

मृगाधिपं विक्रमिणं विलोक्य स्वीयं पदं तत्र चकार सूर्यः ।
चन्द्रस्तदासन्नतया कुलीरे निजं बबन्धालयमेणलक्ष्मा ।।१४२।।
अन्ये ग्रहा गृहयियाचिषया क्रमेण
शीतांशुतिग्ममहसोः सदनं समीयुः ।
प्राप्तक्रमेण ददतुर्भवनानि तौ तु
ताराग्रहा द्विभवनास्तत एव जाताः ।।१४३।।

सूर्य ने सिंह को पराक्रमी समझकर अपना स्थान बनाया। चन्द्रमा ने उसी के समीप वाले कर्कराशि को अपने स्वभावानुकूल जानकर अपना स्थान बनाया। तदुपरान्त बुधादि ग्रह गृह पाने की इच्छा से चन्द्रमा और सूर्य के पास गये। तब चन्द्रमा और सूर्य ने एक-एक राशि क्रम से बुध, शुक्र, भौम, बृहस्पति और शनि इन पाँचों को दिया, इसीलिये ये ताराग्रह दो-दो राशियों के स्वामी हो गये।।१४२-१४३।।

विशेषः –

जन्मनक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु ।
क्षौरे भैषज्य-वादाध्व-कर्तनेषु च वर्जयेत् ।।१४४।।

जन्म नक्षत्र का चन्द्रमा शुभकार्यों में शुभदायक है। किन्तु क्षौरकर्म, औषध सेवन, लड़ाई-झगड़ा, यात्रा, मुण्डन संस्कार में निषिद्ध है।।१४४।।

द्वादशस्थे चन्द्रे विशेषः –

अभिषेके निषेके च प्राशने व्रतबन्धने ।
पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः ।[illegible]।

अभिषेक, निषेक (गर्भाधान), अन्नप्राशन, व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत), विवाह, यात्रा इन कार्यों में द्वादश (बारहवाँ) चन्द्रमा शुभकारक होता है।।१४५।।

जन्मराशिस्थे विशेषः –

जन्मगः फलदश्चन्द्रः पञ्चकर्मसु वर्जयेत् ।
यात्रा-युद्ध-विवाहेषु प्रवेशे क्षौरकर्मणि ।।१४६।।

जन्मराशि में स्थित चन्द्रमा यात्रा-युद्ध-विवाह-गृहप्रवेश और क्षौरकर्म इन पाँच कामों में प्रशस्त नहीं होता है।।१४६।।

तिथ्यादिबलविचारः –

तिथिरेकगुणः प्रोक्तः नक्षत्रं च चतुर्गुणम् ।
वारश्चाष्टगुणः प्रोक्तः करणं षोडशान्वितम् ।।१४७।।
चन्द्रः शतगुणः प्रोक्तस्तस्माच्चन्द्रबलं स्मृतम् ।
द्वात्रिंशद्गुणितो योगस्तारा षष्टिगुणान्विता ।।१४८।।

तिथि में एक गुण, नक्षत्र में चार गुण, वार मे आठ गुण, करण में १६ गुण योग में ३२ गुण, तारा में ६० गुण एवं चन्द्रमा में १०० गुण होता है। इसीलिये चन्द्रमा का बल सव शुभकामों में देखना चाहिये।

दिक्षु चन्द्रवासस्तत्फलञ्च –

मेषे च सिंहे धनुषीन्द्रभागे वृषेऽङ्गनायां मकरे च याम्ये ।
कुम्भे तुलायां मिथुने प्रतीच्यां कर्कालिमीनेषु तथोत्तरायाम् ।।१४९।।
सम्मुखे चार्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः ।
पृष्ठे च शोकसन्तापौ वामे चन्द्रे धनक्षयः ।।१५०।।

मेष, सिंह और धनु राशि का चन्द्रमा पूर्व दिशा में, वृष, कन्या, मकर राशि का चन्द्रमा दक्षिण दिशा में, मिथुन, तुला, कुम्भ राशि का चन्द्रमा पश्चिम दिशा में एवं कर्क, वृश्चिक और मीन राशि का चन्द्रमा उत्तर दिशा में रहता है। कार्य करने के समय चन्द्रमा सम्मुख रहे तो अर्थ (धन) का लाभ करता है, दाहिने भाग में हो तो सुख और सम्पत्ति को देता है। पीछे के तरफ हो तो शोक और सन्ताप देता है। वाम भाग में चन्द्रमा हो तो धनक्षय करता है।।१४९-१५०।।

चन्द्रवर्णज्ञानम् –

अलौ मेषसिंहेऽरुणो युद्धकारी सितो गोवणिक्कर्कटर्क्षेषु सिद्ध्यैः ।
धनुर्मीनयुग्मेषु पीतः शशी श्रीः मृगस्त्रीघटाख्येषु कृष्णो भयञ्च ।।१५१।।

वृश्चिक, मेष सिंह राशि का लालवर्ण का होता है, इसका फल युद्धकारक है। वृष, कन्या, कर्क में श्वेत रंग का चन्द्रमा सिद्धिदायक होता है। धनु, मीन, मिथुन राशि का चन्द्रमा पीत वर्ण का लक्ष्मी देने वाला होता है। मकर कन्या और कुम्भ राशि का चन्द्रमा कृष्ण वर्ण का भय देने वाला होता है।।१५१

लोकेषु चन्द्रवासज्ञानम् –

तिथिं पंचगुणीकृत्य एकेन च समन्वितम् ।
त्रिभिश्चैव हरेद्भागं शेषे चन्द्रं विचारयेत् ।।१५२।।
एकेन वसते स्वर्गे द्विके पातालमेव च ।
तृतीये वसते मर्त्ये सर्वकर्माणि कारयेत् ।।१५३।।
पातालस्थो यदा चन्द्रः षट् कर्माणि विवर्जयेत् ।
गृह-होम-कृषिर्यात्रा-तडागाः कूपकर्म च ।।१५४।।

तिथि की संख्या को पाँच से गुणाकर १ जोड़ दे पुनः ३ से भाग देकर एकादि शेष से चन्द्रवास का विचार करे। एक शेष वचे तो चन्द्रमा का वास स्वर्ग में, दो शेष वचे तो पाताल में, एवं शून्य शेष वचे तो चन्द्रवास मृत्युलोक में रहता है। पाताल में यदि चन्द्रमा का वास हो तो गृह बनाना, हवन करना, कृषिकर्म करना, यात्रा, तगाड (तालाव) निर्माण एवं कूयें के कार्यो को वर्जित करना चाहिये।।१५२-१५४।।

शुक्ले चन्द्रबलस्य प्राधान्यं (रत्नमालायाम्) –

सिते पक्षे चन्द्रबलं प्रधानं ताराबलं तत्र न चिन्तनीयम् ।
सुप्ते गृहस्थे सबले च पत्यौ प्रधानता नास्ति यतोऽङ्गनानाम् ।।१५५।।

शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा का बल प्रधान है, तारा का बल नहीं देखना चाहिये। क्योंकि बलवान् गृह स्वामी यदि सोता भी हो तो भी पुरुष की ही प्रधानता होती है स्त्री की नहीं।।१५५।।

घातचन्द्रः (गोविन्दः) -

मेष-कन्या-घट-हरि-नक्र-युग्म-धनु-र्वृषाः ।
मीन-सिंह-धनुःकुम्भा घातचन्द्रा अजादितः ।।१५६।।

मेषादि राशिवालों को क्रम से मेष, कन्या, कुम्भ, सिंह, मकर, मिथुन, धनु, वृष, मीन, सिंह, धनु कुम्भ राशि के चन्द्रमा घातक होते हैं।।१५६।।

घातचन्द्रविचारः -

तीर्थयात्रा- विवाहा- न्नप्राशनो- पनयादिषु ।
सर्वमङ्गलकार्येषु घातचन्द्रं न वर्जयेत् ।।१५७।।
युद्धे चैव विवादे च कुमारीपूजने तथा ।
राजसेवा-वाहनादौ घातचन्द्रं विवर्जयेत् ।।१५८।।

तीर्थयात्रा, विवाह, अन्नप्राशन, उपनयन (यज्ञोपवीत) आदि सब शुभ कार्यों में घात चन्द्रमा का विचार नहीं करना चाहिए। युद्ध, झगड़ा-लड़ाई, कुमारी-पूजन, राजसेवा, वाहन के कार्यों में घात चन्द्रमा का विचार करना उचित है।।१५७-१५८।।

प्रसंगात्ताराविचारः (नारदः) -

जन्म-संपद्-विपत्-क्षेम-प्रत्यरी साधको वधः ।
मित्रं परममित्रं च जन्मभाच्च पुनः पुनः ।।१५९।।

जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर नव का भाग देने पर एकादि शेष बचे तो क्रम से जन्म, सम्पत्, विपत्, क्षेम, प्रत्यरी, साधक, वध, मित्र और अधिमित्र ये नव तारायें होती हैं। (इनका फल नाम तुल्य होता है)।।१५९।।

कृष्णे पक्षे तारायाः प्राधान्यं (रत्नमालायाम्) -

न खलु बहुलपक्षे शीतरश्मेः प्रभावः
कथितमिह हि तारावीर्यमार्यैः प्रधानम् ।
अतिविकलशरीरे प्रेयसि प्रोषिते वा
प्रभवति खलु कर्तुं सर्वकार्याणि योषा ।।१६०।।

कृष्णपक्ष में चन्द्रमा का प्रभाव नहीं होता हैं, इसमें तारावल की प्रधानता कही है। जैसे प्रियतम के परदेश जाने पर या क्षीणकाय होने पर घर के सब कार्यों में मालकीन ही प्रवन्ध करती है।।१६०।।

दुष्टतारापरिहारः (नारदः) -

अनिष्टपरिहाराय दद्याद्दानं द्विजातये ।
शाकं गुडं च लवणं सतिलं कांचनं क्रमात् ।।१६१।।
पर्याये प्रथमे वर्ज्या विपत्प्रत्यरि-नैधनाः ।
द्वितीये त्वंशका वर्ज्यास्तृतीये त्वखिलाः शुभाः ।।१६२।।

अनिष्ट परिहार के लिये ब्राह्मण को जन्म तारा में शाग, तीसरी में गुड़, पाँचवीं में नमक, सातवीं में तिल और सुवर्ण दान करना चाहिये। प्रथमावृत्ति के विपत्, प्रत्यरि और मृत्यु तीनों ताराओं को सम्पूर्ण वर्जित करना चाहिये। द्वितीयावृत्ति में अंशों को वर्जित करे और तीसरे आवृत्ति में सब (तीनों) शुभ हो जाती है।

अंशविभागक्रमः (गु०) उदाहरणं –

आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरे चरमोऽशुभः ।
वधे त्याज्यस्तृतीयोंशः शेषा अंशास्तु शोभनाः ।।१६३।।

द्वितीय पर्याय में विपद् तारा का प्रथम तृतीयांश, प्रत्यरि का द्वितीय तृतीयांश एवं वध का तृतीय तृतीयांश त्यागना चाहिये, शेष अंश शुभ होते हैं।।१६३।।

वारवेला –

रवौ वर्ज्यं चतुःपंच सोमे सप्तद्वयं तथा ।
कुजे षष्ठद्वयं चैव बुधे पंचतृतीयकम् ।।१६४।।
गुरौ षष्ठाष्टकं चैव शुक्रे वेदतृतीयकम् ।
शनावाद्यन्तषष्ठं च वारवेलाऽतिनिन्दिता ।।१६५।।

रविवार को चौथा और पाँचवां, सोमवार को सातवाँ और दूसरा, भौमवार को छठा और दूसरा, बुधवार को पाँचवा-तीसरा, गुरुवार को छठवाँ और आठवाँ, शुक्रवार को तीसरा और चौथा एवं शनिवार को पहला, आठवाँ और छठवाँ अर्धयाम वारवेला कहलाता है, यह शुभ कामों में सर्वथा वर्जित है।।१३५

कुलिकादिमुहूर्ताः (मु० चि०) –

कुलिकः कालवेला च यमघण्टश्च कण्टकः ।
वाराद् द्विघ्ने क्रमान्मन्दे बुधे जीवे कुजे क्षणः ।।१६६।।

वर्तमान वार से शनि, बुध, बृहस्पति और भौम वार तक गिन के जितनी संख्या हो उनको दूना करने से क्रम से कुलिक, कालवेला, यमघण्ट और कण्टक मुहूर्त होते हैं। स्पष्ट ज्ञान के लिये चक्र देखिये।।१६६।।

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	वाराः
४ ५	७ २	६ २	५ ३	६ ८	४ ३	१ ८,६	वारवेला
१४	१२	१०	८	६	४	२	कुलिकः
८	६	४	२	१४	१२	१०	कालवेलाः
१०	८	६	४	२	१४	१२	यमघण्टः
६	४	२	१४	१२	१०	८	कण्टकः

(शून्यतिथयः वशिष्ठः) –

अष्टमी नवमी चैत्रे पक्षयोरुभयोरपि ।
माधवे द्वादशी त्याज्या पक्षयोरुभयोरपि ।।१६७।।
ज्येष्ठे त्रयोदशी निन्द्या सिते कृष्णे चतुर्दशी ।
आषाढ़े कृष्णपक्षस्य षष्ठी शुक्ले तु सप्तमी ।।१६८।।
द्वितीया च तृतीय च श्रावणे सितकृष्णयोः ।
प्रथमा च द्वितीया च नभस्ये मासि निन्दिते ।।१६९।।
दशम्येकादशी निन्द्या मासीषे शुक्लकृष्णयोः ।
ऊर्ज्जे चतुर्दशी शुक्ले कृष्णपक्षे तु पंचमी ।।१७०।।

सप्तमी चाष्टमी सौम्ये पक्षयोरुभयोरपि ।
पौषे पक्षद्वये चैव चतुर्थी पंचमी तथा ।।१७१।।
माघे तु पंचमी षष्ठी कृष्णे शुक्ले यथाक्रमम्।
तृतीया च चतुर्थी च फाल्गुने सितकृष्णयोः ।।१७२।।
तिथयो मासशून्याख्या वंशवित्तविनाशनाः ।
आसु श्राद्धं प्रकुर्वीत नैव मङ्गलमाचरेत् ।।१७३।।

चैत्र के दोनों पक्षों में अष्टमी-नवमी, वैशाख के दोनों पक्षों में द्वादशी, ज्येष्ठ के शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी, कृष्णपक्ष में चतुर्दशी, आषाढ़ के कृष्ण पक्ष में षष्ठी शुक्लपक्ष में सप्तमी, श्रावण के दोनों पक्षों में द्वितीया-तृतीया, भाद्रपद के दोनों पक्षों में प्रतिपदा-द्वितीया, आश्विन के दोनों पक्षों में दशमी-एकादशी, कार्तिक के शुक्लपक्ष में चतुर्दशी, कृष्णपक्ष में पंचमी, मार्गशीर्ष (अगहन) के दोनों पक्षों में सप्तमी-अष्टमी, पौष के दोनों पक्षों में चतुर्थी-पंचमी, माघ के कृष्ण पक्ष में पंचमी शुक्लपक्ष में षष्ठी और फाल्गुन के शुक्लपक्ष में तृतीया कृष्णपक्ष में चतुर्थी शून्य होती है। इन शून्य तिथियों में शुभकार्य करने से वंशक्रमागत धन का नाश होता है। इनमें श्राद्ध कर्म करना चाहिये शुभकार्य करना वर्जित है।।१६७-१७३।।

शून्यनक्षत्राणि (मु० चि०) -

कदास्रमे त्वाष्ट्रवायू विश्वेज्यौ भगवासवौ ।
वैश्वश्रुती पाशिपौष्णे अजपादग्निपित्र्यभे ।।१७४।।
चित्राद्वीशौ शिवाश्व्यर्काः श्रुतिमूले यमेन्द्रभे ।
चैत्रादिमासे शून्याख्यास्तारा वित्तविनाशदाः ।।१७५।।

चैत्र में रोहिणी-अश्विनी, वैशाख में चित्रा-स्वाती, ज्येष्ठ में उत्तराषाढ़ा पुष्य, आषाढ़ में पूर्वाफाल्गुनी-धनिष्ठा, श्रावण में उत्तराषाढ़ा-श्रवण, भाद्रपद में शतभिषा-रेवती, आश्विन (कुआर) में उत्तराभाद्रपद, कार्तिक में कृत्तिका-मघा, मार्गशीर्ष (अगहन) में चित्रा-विशाखा, पौष में आर्द्रा अश्विनी-हस्त, माघ में श्रवण-मूल और फाल्गुन में भरणी-ज्येष्ठा ये नक्षत्र शून्य संज्ञक हैं। इन में शुभकार्य करने से धन का नाश होता है।।१७४-१७५।।

शून्यराशय (मू० चि०) -

घटो झषो गौर्मिथुनं मेषकन्यालितौलिनः ।
धनुः कर्को मृगस्सिंहश्चैत्रादौ शून्यराशयः ।।१७६।।

चैत्र में कुम्भ, वैशाख में मीन, ज्येष्ठ में वृष, आषाढ़ में मिथुन, श्रावण में मेष, भाद्रपद में कन्या, आश्विन में वृश्चिक, कार्तिक में तुला, मार्गशीर्ष (अगहन) में धनु, पौष में कर्क, माघ में मकर और फाल्गुन में सिंह राशि शून्य होती है। (इनमें शुभ कार्य करना निषेध है)।।१७६।।

तिथौ शून्यलग्नादि (मू० चि०) -

पक्षादितस्त्वोजतिथौ घटैणौ मृगेन्द्रनक्रौ मिथुनाङ्गने च ।
चापेन्दुभे कर्कहरी हयान्त्यौ गोन्त्यौ च नेष्टे तिथिशून्यलग्ने ।।१७७।।

प्रतिपक्ष में प्रतिपदादि विषम तिथियों में क्रम से उक्त लग्न तिथि शून्य लग्न कहलाती है। जैसे प्रतिपदा में तुला-मकर, तृतीया में सिंह-मकर, पंचमी में मिथुन-कन्या, सप्तमी में धनु-कर्क, नवमी में कर्क-सिंह, एकादशी में धनु-मीन, और त्रयोदशी में वृष-मीन तिथि शून्य लग्न हैं।।१७७।।

शून्यतिथिनक्षत्रराशिबोधकचक्रम् –

मास	चै.	वै.	ज्येष्ठ शु. कृ.	आषाढ़ शु. कृ.	श्रा.	भा.	आ.	कार्तिक शु. कृ.	मा.	पौष	माघ शु.कृ.	फाल्गुन शु.कृ.
ति.	८ ९	१२	१३ १४	६ ७	२ ३	१ २	१० ११	१४ ५	७ ८	४ ५	५ ६	३ ४
नक्षत्र	रो. अ.	चि. स्वा.	उ.षा. पुष्य,	पू.फा. धनि,	उ.षा. श्र.	श. रे.	उ.भा.	कृत्ति. मघा	चि. वि.	आ.अ. हस्त	श्र. मूल	भरणी ज्येष्ठा
राशि	कु.	मी.	वृष	मिथुन	मेष	कन्या	वृश्चि.	तुला	धनु	कर्क	मकर	सिंह

शून्यलग्न बोधकचक्र –

१	३	५	७	९	११	१३	तिथयः
तुला	सिंह	मिथु.	धनु	कर्क,	धनु	वृष	शून्य
मकर	मकर	कन्या	कर्क	सिंह	मीन	मीन	लग्न

एषां परिहारः (मु० चि०) –

तिथयो मासशून्याश्चः शून्यलग्नानि यान्यपि ।

मध्यदेशे विवर्ज्यानि न दूष्याणीतरेषु तु ।।१७८।।

महीन में शून्य तिथियाँ और लग्न केवल मध्यदेश[1] में ही वर्जित हैं अन्य देशोंमें निषिद्ध नहीं हैं।

अन्यः (जगन्मोहने) –

केन्द्रे चैव त्रिकोणे च शुभो ह्युपचयेऽपि वा ।

एकोऽपि बलवाँश्चापि शून्यतिथ्युडुनाशनः ।।१७९।।

केन्द्र, त्रिकोण अथवा उपचय राशि में शुभग्रह पड़े हो या एक ग्रह भी बलवान् हो तो शून्यतिथि शून्यनक्षत्र का दोष नष्ट हो जाता है।।१७९।।

आवश्यके दुष्टयोगादौ दानानि (मु० चि०) –

दुष्टे योगे हेम चन्द्रे च शंखं धान्यं तिथ्यर्धे तिथौ तण्डुलाँश्च ।

वारे रत्नं भे च गां हेम नाड्यां दद्यात्सिन्धूत्थं तारासु राजा ।।१८०।।

बालबोधज्योतिषे संज्ञाप्रकरणम् प्रथमं समाप्तम् ।।१।।

दुष्ट योग में सुवर्ण, अशुभ चन्द्रमा के रहने पर शंख, करण (तिथ्यर्द्ध) में धान्य, तिथि में चावल, वार में रत्न, नक्षत्रों में गौ, नाड़ी में सुवर्ण और तारा में सेंधव नमक दान करना चाहिये।।१८०।

हिन्दीटीकायां संज्ञाप्रकरणम् प्रथमं समाप्तम् ।।१।।

---

१. मनुः- हिमवद्विन्ध्ययोमध्ये यत्प्राग्विशनादपि। प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः। इति ।।

मुहूर्तप्रकरणम् ।।२।।

समयशुद्धिः (मु० चि०) -

सर्वस्मिन्विधुपापयुक्तनुलवावर्द्धे निशाह्नोर्घटी-
त्र्यंशं वै कुनवांशकं ग्रहणतः पूर्वं दिनानां त्रयम् ।
उत्पातग्रहतोऽग्रहाँश्च शुभदोत्पातैश्च दुष्टं दिनं
षण्मासं ग्रहभिन्नभं त्यज शुभे यौद्धं तथोत्पातभम् ।।१।।

सब शुभकार्यों में चन्द्रमा और पापग्रह से युक्त लग्न और नवमांश को, ठीक दोपहर और अर्धरात्रि के समय २० वल (अर्थात् १० पल पूर्व और १० पल बाद) पापग्रहों का नवमांश, ग्रहण से पूर्व ३ दिन, उत्पात और ग्रहण के बाद ७ दिन, शुभद उत्पात का दिन और ग्रह से वेधित नक्षत्र, युद्ध का नक्षत्र, उत्पात का नक्षत्र इनको ६ मास तक वर्जित करना चाहिये।।१।।

गुर्वादिनामस्तादिके वर्ज्यकर्माणि (मु० चि०) -

वाप्यारामतडाग-कूपभवनारम्भप्रतिष्ठे व्रता-
रम्भोत्सर्गवधूप्रवेशनमहादानानि सोमाष्टके ।
गोदानाग्रयणप्रपाप्रथमकोपाकर्मवेदव्रतं
नीलोद्वाहमथातिपन्नशिशुसंस्कारान्सुरस्थापनम् ।।२।।
दीक्षामौञ्जिविवाहमुण्डनमपूर्वं देवतीर्थेक्षणं
सन्यासाग्निपरिग्रहौ नृपतिसंदर्शाभिषेकौ गमम् ।
चातुर्मास्यसमावृती श्रवणयोर्वेधं परीक्षां त्यजेद्
वृद्धत्वास्तशिशुत्व ईज्यसितयोर्न्यूनाधिमासे तथा ।।३।।
अस्ते वर्ज्यं सिंहनक्रस्थजीवे वर्ज्यं केचिद्वक्रगे चातिचारे ।
गुर्वादित्ये विश्वघस्रेऽपि पक्षे प्रोचुस्तद्वद्दन्तरत्नादिभूषाम् ।।४।।

वापी, बगीचा, तडाग, कुवाँ और मकान इनका आरम्भ और प्रतिष्ठा, व्रत का आरम्भ और उद्यापन, वधूप्रवेश, महादान, सोमयाग, अष्टका श्राद्ध, गोदान, नवान्न भक्षण, पौसरा चलाना, पहले पहल श्रावणी कर्म करना, वेदारम्भ, वृषोत्सर्ग, समय पर न होने वाले बालकों के संस्कार, देवतओं का स्थापन, मन्त्र ग्रहण करना, जनेऊ, विवाह, मुण्डन, अपूर्व देवताओं और तीर्थों का दर्शन, संयासग्रहण, अग्निहोत्र, राजाओं का दर्शन और अभिषेक, यात्रा, चातुर्मास्यव्रत, समावर्तन, कर्णवेध, परीक्षा इन कर्मो को वृहस्पति शुक्र के वृद्धत्व, बाल्य, अस्त, अधिमास, क्षयमास में वर्जित करना चाहिये। जितने कार्य अस्तादि में वर्जित हैं, वे सब सिंह और मकर के बृहस्पति में भी वर्जित हैं। और किसी-किसी के मत से गुरु शुक्र के वक्र-अतिचार में गुर्वादित्य में (जब सूर्य-गुरु एक राशि में हों), १३ दिन के पक्ष में भी निर्दिष्ट कार्यों को वर्जित करना चाहिये और दाँत रत्न इत्यादि के भूषण धारण करना भी अस्तादिकों में वर्जित है।।२-४।।

अतिचारादिके वर्ज्यदिनानि -

अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेव च ।
नीचस्थिते च वागीशे मासमेकं विवर्जयेत् ।।५।।

ग्रहों के अतिचार में सात दिनों तक, ग्रहों के वक्री होने पर १२ दिनों तक, बृहस्पति के नीच रहने पर एक मास तंक शुभ कार्यों को नहीं करना चाहिये।।५।।

हलप्रवहणमुहूर्तः (श्रीपतिः) –

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूले मघाविशाखासहितेषु भेषु ।
हलप्रवाहं प्रथमं विदध्यान्नीरोगमुष्कान्वितसौरभेयैः ।।६।।

मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, चरसंज्ञक, मूल, मघा, विशाखा इन नक्षत्रों में नीरोग, और अण्डकोश सहित बैलों से पहले पहल (ज्येष्ठ-आषाढ़ में) हल प्रवहण करना (हल जोतना) चाहिये।।६।।

ज्यौतिःसारसागरे –

मेषलग्ने पशून् हन्ति कर्कटे जलजं भयम् ।
सिंहे सस्यभयं ज्ञेयं तुलायां हलसंक्षयः ।।७।।
मकरे सस्यनाशः स्यात् कुम्भे चौरभयं तथा ।
हन्त्यष्टमी बलीवर्दान् नवमी सस्यघातिनी ।।८।।
षष्ठी च कीटजननी पशून् हन्ति चतुर्दशी ।
चतुर्थी च पशून् हन्ति ज्ञेयमेवं विचक्षणैः ।।९।।

मेष लग्न में पशुओं का नाश, कर्क में पानी से भय, सिंह में उपज के लिये भय, तुला लग्न में हल का नाश, मकर में उपज़ का नाश, कुम्भ में चौर भय होता है। अष्टमी में बैल का नाश, नवमी में धान्य का नाश, षष्ठी में कीड़ों की उत्पत्ति, चतुर्दशी में पशुओं का नाश होता है। शेष लग्न और तिथियाँ शुभदायक हैं।।७-९।।

कश्यपः –

गुरौ लग्नगते शुक्रे बलिन्यापोदये विधौ ।
शस्ता कृषिक्रिया तत्र दुर्बलैः क्रूरखेचरैः ।।१०।।

लग्न में बलवान् बृहस्पति और शुक्र, जलचर राशि में चन्द्रमा पड़े हों और पापग्रह बलविहीन हों तो खेती का काम शुभ होता है।।१०।।

सूर्यभुक्तभाद्धलचक्रम् (नारदः) –

हलादौ वृषनाशाय भत्रयं सूर्यभुक्तभात् ।
अग्रे ऋक्षत्रयं लक्ष्म्यै सौख्यं पार्श्वस्थपंचके ।।११।।
शूलत्रयेऽपि नवकं मरणायान्यपंचकम् ।
श्रियं पुच्छत्रयं श्रेष्ठं स्याच्चक्रे लाङ्गले शुभे ।।१२।।

सूर्य के भुक्त नक्षत्र से ३ नक्षत्रों में वृष का नाश, ३ नक्षत्र में लक्ष्मी प्राप्ति, ५ नक्षत्रों में सौख्य, फिर ९ नक्षत्रों में मरण, ५ नक्षत्रों में लक्ष्मी लाभ, ३ नक्षत्रों में हलप्रवहण शुभ होता है।।११-१२।।

३	३	५	९	५	३	नक्षत्र
वृषनाश	लक्ष्मी	सौख्य	मरण	श्री	श्रेष्ठ	फल

रामरामाग्निपंचाग्निपंचाग्न्यक्षयः शुभाऽशुभम् ।
अर्कोज्झताच्च नक्षत्राल्लांगले चक्रमीरितम् ।।१३।।

सूर्य के भुक्तनक्षत्र से ३,३,३,५,३,५,३,२ ये नक्षत्र क्रम से पहले शुभ फिर अशुभ होते हैं। इस देश में प्रायः इसी से काम लेते हैं।।१३।।

सूर्यभुक्तभाद्धलचक्रम् (कश्यपः) -

त्रिष्वष्टसु नवर्क्षेषु सप्तस्वर्कविभुक्तभात् ।
हानिर्वृद्धिः कर्तृमृत्युर्लक्ष्मीश्चैव यथाक्रमम् ।।१४।।

सूर्य के भुक्त नक्षत्र से ३ नक्षत्रों में हानि, ८ नक्षत्रों में वृद्धि, ९ नक्षत्रों में कर्त्ता की मृत्यु, पुनः ७ नक्षत्रों में लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।।१४।।

३	८	९	७	नक्षत्राणि
हानिः	वृद्धिः	कर्तृमृत्युः	लक्ष्मीः	फलं

बीजवपनमुहूर्तः (रत्नमालायाम्) -

हस्ताश्वि- मूलोत्तर- रोहिणीषु चित्रानुराधा- मृगरेवतीषु ।
स्वातीधनिष्ठासु मघासु भेषु वीजोप्तिरुत्कृष्टफला प्रदिष्टा ।।१५।।

हस्त, अश्विनी, मूल, तीनों उत्तरा, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, स्वाती, धनिष्ठा, मघा, इन नक्षत्रो में वीज बोना वहुत उत्तम होता है।।१५।।

भूमिरजः -

रवौ रौद्राद्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः ।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ।।१६।।

आर्द्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में सूर्य के रहने पर भूमि को रज होता है। रजयुक्त भूमि के होने से ३ दिन तक बीज नहीं वोना चाहिये।।१६।।

बीजवापे फणिचक्रं राहुभात् -

राहुभादष्टमं यावद् द्वादशं षोडशं च भम् ।
विंशं जिनाश्चतुष्कं च बीजवापे परित्यजेत् ।।१७।।

राहु जिस नक्षत्र पर व्यवस्थित हो उस नक्षत्र से आठ नक्षत्र तक, और बारहवें, सोलहवें, बीसवें और चौवीस से ४ नक्षत्रों में बीज बोना निषिद्ध होता है।।१७।।

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	फल

भूमिशयनम् -

प्रद्योतनात् पंचनगाङ्कसूर्यनवेन्दु-षड्विंशमितानि भानि ।
शेते मही नैव गृहं विधेयं तडागवापीखननं न शस्तम् ।।१८।।

सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से ५,७,९,१२,१९,२६ वें नक्षत्र में भूमिसुप्त होती है। इस (भूमिसुप्त) में घर वनाना, वापी, कूप, तडाग खनन, हल जोतना, वीज वोना इत्यादि कर्म निषिद्ध हैं।।१८।।

शेषशिरोज्ञानम् -

भाद्रत्रये शिरः प्राज्यां याम्यां मार्गत्रये शिरः ।
फाल्गुनत्रितये पश्चाच्छिरो ज्येष्ठत्रये उदक् ।।२०।।
ऊर्ध्वं भागद्वयं त्यक्त्वा ह्यधो भागत्रयं तथा ।
मध्ये नाभिं विजानीयात्तत्र कर्म समाचरेत् ।।२१।।

भाद्रपद आश्विन और कार्तिक इन तीन महीनों में शेषका सिर पूर्व दिशा में, मार्गशीर्ष, पौष, माघ में दक्षिण दिशा में, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख में पश्चिम दिशा में एवं ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण इन तीन महीनों में उत्तर दिशा में शेष का शिर रहता है। उर्ध्व भाग में दो हिस्सा अधोभाग में तीन हिस्सा छोडकर मध्य में नाभि जानना उसी में बीज बोना शुभ है।।२०-२१।।

धान्यरोपणमुहूर्तः (राजमार्तण्डे)

पूर्वाभाद्रपदा - मूल - रोहिण्युत्तरफल्गुनी ।
विशाखा वारुणं चैव धान्यानां रोपणे वराः ।।२२।।

पुर्वाभाद्रपदा, मूल, रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, शतभिषा ये नक्षत्र धान्यरोपण (धान्य को एक जगह से उपार कर (खोदकर) दूसरी जगह रोपना (लगाना) शुभ होता है।।२२।।

धान्यच्छेदनमुहूर्तः (राज मा०)

रौद्रे पित्र्ये तथा सौम्ये हस्ते पुष्येऽनिले तथा ।
सस्यच्छेदं प्रशंसन्ति मूल–श्रवण–वासवे ।।२३।।

अर्द्रा, मघा, मृगशिरा, हस्त, पुष्य, स्वाती, मूल, श्रवण, धनिष्ठा इन ९ नक्षत्रों में धान्यच्छेदन (काटना) शुभदायक होता है।।२३।।

धान्यच्छेदने वाराः (व्यवहारतत्त्वे) -

धान्यानां लवनं कुर्याद् गुरौ शुक्रे च सर्वदा ।
बुधवारे तथा चन्द्रवारेऽपि शुभदं स्मृतम् ।।२४।।

गुरु, शुक्र, बुध, चन्द्रवार इन चार वारों में धान्यच्छेदन सर्वदा शुभद होता है।।२४।।

धान्यमर्दन मुहूर्तः (व्यवहारोच्चये)

फल्गुन्यौ श्रवणश्चैव मघा मूलं तथा मता ।
अनुराधा तथा ज्येष्ठा रेवती धान्यमर्दने ।।
केवले सिंहलग्ने वा गुरुशुक्रोदये तथा ।।२५।।

पूर्वाफल्गुनी, उत्तराफल्गुनी, श्रवण, मघा, मूल, अनुराधा, ज्येष्ठा, रेवती, इन नक्षत्रों में, सिंह लग्न में, गुरु और शुक्र के उदय (लग्न, अर्थात् मीन-धनु-वृष-तुला) में धान्य का मर्दन करना शुभ दायक होता है।।२५

धान्यस्थितिः (दीपिकायाम्) -

याम्याग्निरुद्राहिविशाखपूर्वामहेन्द्रपित्र्येतरभैः शुभाहे ।
धान्यादिसंस्थापनमेषु शस्तं मृगस्थिरद्व्यङ्ग गृहोदयेषु ।।२६।।

भरणी, कृत्तिका, आश्लेषा, विशाखा, तीनों पूर्वा (पुर्वाफाल्गुनी, पुर्वाषाढ़ा, पुर्वाभाद्रपदा) ज्येष्ठा, मघा इन ९ नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्रों में शुभग्रह के वारों में मकर, स्थिरसंज्ञक, (२,५,८,११) और द्विस्वभाव संज्ञक (३,६,९,१२) लग्नों में धान्य स्थिति (अन्न को इकट्ठाकर के भूसा इत्यादि में रखना) शुभदायक होता है।।२६।।

धान्यवृद्धिः (दीपिकायाम्) -

श्रवणत्रयं विशाखा ध्रुवपुष्यपुनर्वसूनि वायुश्च ।
अश्विन्यथ च ज्येष्ठा धनधान्यविवर्धने शस्ताः ।।२७।।

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, विशाखा, ध्रुवसंज्ञक, (तीनों उत्तरा, रोहिणी) पुष्य, पुनर्वसू, स्वाती, अश्विनी, और ज्येष्ठा इन १३ नक्षत्रों में धान्यवृद्धि (अन्न को व्याज पर देना) शुभद होता है।।२७।।

नवान्नभक्षणमुहूर्तः (मु० चि०) -

नवान्नं स्याच्चरक्षिप्रमृदुभे सत्तनौ शुभम्।
विना नन्दाविषघटीमधुपौषार्किभूमिजाम् ।।२८।।

चर संज्ञक (स्वाती, पूनर्वसू, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा), क्षिप्रसंज्ञक (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्), मृदुसंज्ञक, (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा) नक्षत्रों में शुभ लग्नों (२।३।६।७।९।१२) में नन्दा (१।६।११) तथा विषघटी, चैत्र-पौष मास वा शनि-भौमवार इनको छोड़कर नवान्न भक्षण करना शुभद होता है।।२८।।

बुधर्क्षान्नवान्नचक्रम्-

बुधर्क्षात् पुत्रे पुत्रेषु पुत्र-वेद-युगेन्दुषु।
सच्छुभं शुभमर्थघ्नं शुभं व्यर्थं शुभं क्रमात्।।२९।।

वुध के नक्षत्र से, ५,५,५,५,४,२,१ इतने नक्षत्रों में क्रम से शुभ, शुभ, शुभ, अशुभ, शुभ, व्यर्थ शुभ ये फल होते हैं।।२९।।

५	५	५	५	४	२	१	नक्षत्र
शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	व्यर्थ	शुभ	फलं

नवान्नभक्षणविधिः-

नवयज्ञाधिकाराः स्याच्छयामाकाः ब्रीहयो यवाः।
नाश्नीयात्तानहुत्वैवमन्येष्वनियमः स्मृतः।।३०।।
ऐक्षवः सर्वसूगाश्च नीवाराश्चणकास्तिलाः।
अकृताग्रयणोऽश्नीयात्तेषां नोक्ता हविर्गुणाः।।३१।।

साँवा, व्रीही (साठी) यव (जव) इन्हीं अन्नों से नवान्नयज्ञ करने का अधिकार है। इन्हीं को हवन करके तव भक्षण करना चाहिये। शेष अन्नों के लिये नियम नहीं है। इक्षु=(ईख), सूग, तिन्नी, चना, तिल इन सवों से बिना अन्नेष्टि किये भी इनको भोजन कर लेना चाहिये क्योंकि इनमें हवि के गुण नहीं होते है।

कोल्हू चक्रम्-

सूर्यभात् पञ्च पञ्चेषु राम-युग्म-शर-त्रिकम्।
असच्छुभमसद्दुःखं क्लेशं शुभमतोऽशुभम्।।
कोल्हूचक्रे साभिजिते ज्ञेयमेवं विचक्षणैः।।३२।।

सूर्य के नक्षत्र से ५,५,५,३,२,५,३ इन नक्षत्रों में क्रम से अशुभ, शुभ, अशुभ, दुःख, क्लेश, शुभ और अशुभ फल कोल्हू चक्र में जानना। इस में नक्षत्रों की गणना अभिजित् सहित होती है।।३२।।

५	५	५	३	२	५	३	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	दुःख	क्लेश	शुभ	अशुभ	फलं

काष्ठसञ्चयमुहूर्तः-

सूर्याभाद्दिनभं यावत् तर्काङ्गाब्धिगजाब्धयः।
क्रमाच्छुभाशुभं ज्ञेयं काष्ठादिस्थापने बुधैः।।३३।।

इसका अर्थ चक्र से स्पष्ट है, (इस में अभिजित का भी ग्रहण है)।।३३।।

६	६	४	८	४	नक्षत्र
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलं

वस्त्रधारणमुहूर्तः (मु० चि०)-

पौष्णध्रुवाश्विकरपञ्चकवासवेज्यादित्ये प्रवालरदशंङ्खसुवर्णवस्त्रम् ।
धार्यं विरिक्तशनिचन्द्रकुजेह्नि रक्तं भौमे ध्रुवादितियुगे शुभगा न दद्यात् ।।३४।।

रेवती ध्रुवसंज्ञक(तीनों उत्तरा, रोहिणी), अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य, पुनर्वसु, इन नक्षत्रों में, रिक्ता तिथि, शनि, चन्द्र भौमवार को छोड़कर अन्य तिथि वारों में मूँगा, हाथीदाँत के भूषण, शंख के भूषण और सुवर्ण के भूषण, वस्त्रको धारण करना चाहिए। भौमवार को रक्त वस्त्र धारण करना शुभ है। ध्रुसंज्ञक, (रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा और उत्तराभाद्र) पुनर्वसु, पुष्य में सौभाग्यवती स्त्री के लिए वस्त्रादि धारण करना निषिद्ध है।।३४।।

वस्त्रप्रक्षालनमुहूर्तः (चंडेश्वरः)

शनौ भूमिसुते श्राद्धे षष्ठ्यमावास्ययोस्तथा ।
वस्त्रक्षालनजो दोषो दहत्यासप्तमं कुलम् ।।३५।।
संक्रान्तौ पंचदश्यां च द्वादश्यां च रवेर्दिने ।
वस्त्रं निष्पीडयेन्नैव क्षारेणपि न योजयेत् ।।३६।।

शनि-मंगलवार को, श्राद्ध के दिन, षष्ठी अमावस्या तिथि में, वस्त्र प्रछालन करने से सात कुल नष्ट हो जाते है। संक्रान्ति, पूर्णिमा, द्वादशी, रविवार को वस्त्र निचोड़ना नहीं चाहिए और क्षार इत्यादि से भी वस्त्र नहीं धोना चाहिये।।३५-३६।।

चूडीधारणचक्रम्-

यावद्भास्करभुक्तभानि दिवसे धिष्णानि संख्या तथा
बहिर्भूतगुणाब्धि-सप्त-नयनं पृथ्वीकरेन्दुक्रमात् ।
सूर्यारौ कविसौम्यराहुरविजौ जीवः शशी केतवः
क्रूरेऽसच्च शुभे शुभं च कथितं चक्रे करे भूषणे ।।३७।।

सूर्य के भुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिन कर क्रम से ३,५,३,४,७,२,१,२,१ सूर्य, भौम, शुक्र, बुध, राहु, शनि, गुरु, चन्द्रमा और केतु के नक्षत्र होते हैं। इनमें चूड़ी धारण करने के दिन का नक्षत्र क्रूर ग्रह के भाग में पड़े तो अशुभ, शुभग्रह के भाग में पड़े तो शुभ फल होता है।

कोषसंग्रहमुहूर्तः -

रौद्र–श्रवण–पुष्येन्दु–मैत्रवासव–वारुणाः ।
त्रीण्युत्तराणि हस्तश्च कोशसंग्रहणे शुभाः ।।३८।।

आर्द्रा, श्रवण, पुष्य, मृगशिरा, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा तीनों उत्तरा और हस्त ये ११ नक्षत्र कोष (खजाना) संग्रह करने में शुभफलदायक हैं।।३८।।

कर (शुल्क) ग्रहणमुहूर्तः -

तीक्ष्णोग्रवह्नीतरभेषु लग्ने शीर्षोदये भानुदिने शुभाहे ।
कुर्यादनुक्तानि समीहितानि करग्रहारम्भमपि प्रजाभ्यः ।।३९।।

तीक्ष्ण संज्ञक (मूल, ज्येष्टा, आर्द्रा और आश्लेषा), उग्रसंज्ञक (३ पूर्वा, भरणी, मघा,) और कृत्तिका इन १० नक्षत्रों को छोड़कर शेष १७ नक्षत्रों में शीर्षोदय (मिथुन, कन्या, तुला, धनु और कुम्भ) लग्नों में सूर्य और शुभग्रह के वारों में समस्त अभीष्ट कार्य तथा प्रजाओं से कर (शुल्क) ग्रहण करना उत्तम होता है।।३९।।

ऋणदानादानमुहूर्तौ (मु० चि०)

स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभे कर्णत्रयाश्वे चरे
लग्ने धर्मसुताष्टशुद्धिसहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः ।
नारे ग्राह्यमृणं तु संक्रमदिने वृद्धौ करेऽर्केह्नि यत्-
तद्वंशेषु भवेदृणं न च बुधे देयं कदाचिद्धनम् ।।४०।।

स्वाती, पुनर्वसु, मृदुसंज्ञकनक्षत्र, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी इन नक्षत्रों में चर लग्न (१,४,७,१०) में, लग्न से नववाँ, पाँचवाँ, आठवाँ स्थान के शुद्ध रहने पर द्रव्य का लेन देन शुभ होता है। मंगलवार, संक्रान्ति, वृद्धियोग, हस्त नक्षत्र, रविवार इनमें ऋण नहीं लेना चाहिये। क्योंकि इनमें ऋण लेने से कुल परम्परा ऋणी हो जाती है। और बुधवार को भूल के भी धन नहीं देना चाहिये। (जिन वारादिकों में ऋण लेना निषेध है उनमें ऋण चुकाने से ऋण नहीं होता और बुधवार को धन सञ्चय करना विशेष अच्छा होता है)।।४०।।

विशेषः (मु० चि०) -

तीक्ष्णमिश्रध्रुवोग्रैर्यद्द्रव्यं दत्तं निवेशितम् ।
प्रयुक्तं च विनष्टं च विष्ट्यां पाते च नाप्यते ।।४१।।
ऋणग्राहकनक्षत्रं प्रथममृणदस्य भात् ।
द्वितीयमृणसम्बन्धो न कर्तव्यः कथंचन ।।४२।।

तीक्ष्ण, मिश्र, ध्रुव और उग्र संज्ञक नक्षत्रों में जो द्रव्य दिया जाय, कहीं धरोहर रखा जाय, किसी व्यापार में लगाया जाय या नष्ट हो जाय वह फिर नहीं मिलता। भद्रा और व्यतीपात में भी यही फल जानना। ऋण लेने वाले का नक्षत्र यदि देने वाले के नक्षत्र से पूर्व हो तो (दिया हुआ धन नष्ट होने के भय से) लेन देन नहीं करना चाहिये।।४१-४२।।

अंधाक्षादिनक्षत्राणि तत्फलानि च -

रोहिण्यादिक्रमेणांधं मंदाक्षं मध्यलोचनम् ।
सुलोचनं च विज्ञेयं सदा फलितवेदिभिः ।।४३।।
विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः ।
स्याद् दूरे श्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने ।।४४।।

रोहिण्यादि नक्षत्र के क्रम से अन्धाक्ष, मन्दाक्ष, मध्याक्ष, सुलोचनसंज्ञक नक्षत्र फलित के विद्वानों को जानना चाहिये। अन्धसंज्ञक नक्षत्रों में खोई हुई वस्तु शीघ्र मिल जाती है। मन्द संज्ञक नक्षत्रों में नष्ट हुई वस्तु प्रयास करने पर मिलती है। मध्याक्ष संज्ञक नक्षत्रों में खोई वस्तु दूर सुनने में आती है परन्तु मिलती नहीं। एवं सुलोचन संज्ञक नक्षत्रों में खोई हुई वस्तु न सुनने में आतीं और न मिलती है।।४३-४४।।

सेवामुहूर्तः (मु० चि०) -

क्षिप्रे मैत्रे वित्सितार्केज्यवारे सौम्ये लग्नेऽर्के कुजे वा खलाभे।
योनेर्मैत्र्यां राशिपोश्चापि मैत्र्यां सेवा कार्या स्वामिनः सेवकेन।।४५।।

क्षिप्रसंज्ञक, मित्रसंज्ञक नक्षत्रों में बुध, शुक्र, रवि गुरुवारों में शुभ ग्रह लग्न में हो और सूर्य या मंगल दशम या एकादश में बैठे हों योनि और राशीशों की मित्रता हो तो सेवक को स्वामी की सेवा करना ठीक होता है।।४५।।

सेवाचक्रम् -

नराकारं लिखेच्चक्रं सेवार्थे स्वामिसंग्रहे ।
शीर्षे त्रीण्यर्थलाभः स्यान्मुखे त्रीणि विनाशनम् ।।४६।।

हृदि पंच धनं धान्यं पादे षट्कं दरिद्रता ।
पृष्ठे द्वे प्राणसन्देहो नाभौ वेदाः शुभावहाः ।।४७।।
गुदे द्वे भयपीडा च दक्षहस्तैकमर्थदम् ।
एवं वामे नाशकरं भृत्यमात्स्वामिभान्तकम् ।।४८।।

नौकर रखने के समय नराकार चक्र बनावे। नौकर के नक्षत्र से स्वामी के नक्षत्र तक गिन के क्रम से ३ नक्षत्र (नराकार चक्र के) शीर्ष में पड़े तो अर्थ लाभ, मुख में तीन विनाश, हृदय में पाँच धनधान्य को देने वाला, पाद में ६ नक्षत्र दरिद्रप्रद, पृष्ठ में दो नक्षत्र प्राण सन्देहकारक, नाभि में ४ नक्षत्र शुभदायक, गुदा में दो भयपीडाकारक, दाहिने हाथ में १ नक्षत्र अर्थ देनेवाला, बायें हाथ में एक नक्षत्र नाश करने वाला समझना चाहिये।।४६-४८।।

शिर	मुख	हृदय	चरण	पीठ	नाभि	गुदा	दक्षकर	वामकर	स्थान
३	३	५	६	२	४	२	१	१	नक्षत्र
अर्थला.	विनाश	धनवा.	दारिद्र	प्राणस.	शुभ	भयपीडा	अर्थला.	नाश	फल

विशेषः –

प्रथमं सेव्यनक्षत्रं द्वितीयं सेवकस्य चेत् ।
न सेवा सुस्थिरा तस्य यतः प्राणार्थनाशदा ।।४६।।

सेव्य (मालिक) का नक्षत्र प्रथम और सेवक (नौकर) का नक्षत्र दूसरा हो तो सेवा सुस्थिर नहीं रहती प्राण और धन का नाश करने वाली होती है।।४६।।

वर्ग काकिणी विचारः (मु० चि०) –

अ क च ट त प य श वर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम् ।
सर्पाखु – मृगावीनां निज – पंचम – वैरिणामष्टौ ।।५०।।
स्ववर्गं द्विगुणीकृत्य परवर्गेण योजयेत् ।
अष्टभिस्तु हरेच्छेषे योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।५१।।

अ,क,च,ट,त,प,य,श इन आठ वर्गों के क्रम से गरुड़, मार्जार, सिंह, श्वान, सर्प, मूषक, मृग और मेष ये क्रमशः आठ वर्गों के स्वामी होते हैं। इनमें अपने से पाँचवाँ शत्रु होता है, (चौथा मित्र तथा तीसरा सम होता है अन्य उदासीन होते हैं)। अपने-अपने वर्ग की संख्या को दूना करके अन्य के वर्ग की संज्ञा को जोड़कर आठ से भाग देना, जिसका शेष अधिक हो वह लाभदायक होता है।।५०-५१।।

क्रयविक्रयविपणिमुहूर्ताः (मु० चि०) –

क्रयर्क्षे विक्रयो नेष्टो विक्रयर्क्षे क्रयोऽपि न ।
पौष्णाम्बुपाश्विनी वातश्रवश्चित्राः क्रये शुभाः ।।५२।।
पूर्वाद्वीशकृशानुसार्पयमभे केन्द्रत्रिकोणे शुभैः
षट्त्र्यायेष्वशुभैर्विना घटतनुं संविक्रयः सत्तिथौ ।
रिक्तामौमघटान्विना च विपणि-र्मित्रध्रुवक्षिप्रभै-
र्लग्ने चन्द्रसिते व्ययाष्टरहितैः पापैः शुभैर्द्व्यायखे ।।५३।।

क्रय (खरीदने) के नक्षत्र में वेचना और विक्रय (वेचने) के नक्षत्र में खरीदना निषेध है। रेवती, शतभिषा, अश्विनी, स्वाती, श्रवण, चित्रा ये नक्षत्र वेचने के लिये शुभ हैं। तीनों पूर्वा, विशाखा, कृत्तिका, आश्लेषा, भरणी नक्षत्रों में केन्द्र और त्रिकोण में शुभग्रहों के और छठें तीसरे ग्यारहवें स्थानों में पाप

ग्रहों के रहने पर कुम्भ लग्न को छोड़ अन्य लग्नों में शुभ तिथियों में वस्तुओं को वेचना शुभ होता है। रिक्ता तिथि भौमवार कुम्भ लग्न इनको त्याज्य करके मैत्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्रों में, लग्न में चन्द्रमा-शुक्र, वारहवें आठवें स्थान को छोड़ अन्य स्थानों में पापग्रह, द्वितीय, एकादश, दशम स्थानों में शुभग्रहों के रहने पर दूकान करना, वाजार लगाना इत्यादि कार्य शुभ होते हैं।।५२-५३।।

गोक्रयविक्रयमुहूर्तः (रत्नमालायाम्) –

शाक्रवासवकरेषु विशाखा-पुष्य-वारुण-पुनर्वसुभेषु ।
अश्विपूषभयुतेषु विधेयो विक्रयः क्रयविधिः सुरभीणाम् ।।५४।।

ज्येष्ठा, धनिष्ठा, हस्त, विशाखा, पुष्य, शतभिषा, पुनर्वसु, अश्विनी, रेवती इन ६ नक्षत्रों में गौओं का खरीदना वेचना शुभप्रद है।।५४।।

पशूनां यात्राप्रवेशादिसकलकर्ममुहूर्तः (मु० चि०) –

लग्ने शुभे चाष्टमशुद्धिसंयुते रक्षा पशूनां निजयोनिभे चरे ।
रिक्ताष्टमीदर्शकुजश्रवोध्रुवत्वाष्ट्रेषु यानं स्थितिवेशने न सत् ।।५५।।

लग्न में शुभग्रह पड़े हों, लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो, पशु के योनि का नक्षत्र हों तो पशुओं की रक्षा करना शुभ होता है। रिक्ता, अष्टमी, अमावस्या, भौमवार, श्रवण, ध्रुवसंज्ञक, चित्रा ये नक्षत्र पशुओं के यात्रा, प्रवेश, स्थापन इत्यादि में शुभ नहीं है।।५५।।

गजवाजिकृत्यम् (मु० चि०) –

क्षिप्रान्त्यवस्विन्दुमरुज्जलेशादित्येष्वरिक्तारदिने प्रशस्तम् ।
स्याद्वाजिकृत्यं त्वथ हस्तिकार्यं कुर्यान्मृदुक्षिप्रचरेषु विद्वान् ।।५६।।

क्षिप्रसंज्ञक, रेवती, धनिष्ठा, मृगशिरा, शतभिषा, स्वाती, पुनर्वसु, नक्षत्रों में रिक्ता तिथि भौमवार को छोड़ अन्य तिथियों वारों में घोड़ा सम्बन्धी कार्य शुभ होते हैं, विद्वानों का कथन है कि मृदु, क्षिप्र और चर संज्ञक नक्षत्रों में हाथियों का कार्य करना शुभ होता है।।५६।।

अश्वारोहणेऽश्वचक्रम् (दैवज्ञमनोहरे) –

अश्वाकारं खिेच्चक्रं साभिजिद्भानि विन्यसेत् ।
स्कन्धे च सूर्यभात्पञ्च पृष्ठे च दश भानि च ।।५७।।
पुच्छे द्वे स्थापयेद्भञ्च चतुःपादे चतुष्टयम् ।
उदरे विन्यसेत्पंच मुखे द्वे तुरगस्य च ।।५८।।
अर्थलाभो मुखे सम्यग्वाजी नश्यति चोदरे ।
चरणस्थे रणे भङ्गः पुच्छे पत्नी विनश्यति ।।
अर्थसिद्धिर्भवेत्पृष्ठे स्कन्धे लक्ष्मीपतिर्भवेत् ।।५९।।

एक घोड़े के आकार का चक्र बनाके उसमें अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों को स्थापन करे। सूर्य के नक्षत्र से ५ नक्षत्र स्कन्ध में, १० नक्षत्र पीठ में, २ नक्षत्र पुच्छ में, ४ नक्षत्र चारों पदों में, ५ नक्षत्र पेट में, २ नक्षत्र मुख में स्थापन करके क्रम से उनका फल जाने। मुख मे दिन नक्षत्र पड़े तो अर्थलाभ, पेट में अश्वनाश, पाद मे रण में भंग (हार), पुच्छ मे स्वामी के स्त्री का नाश, पृष्ठ मे अर्थ की सिद्धि, स्कन्ध में लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।।५७-५९।।

स्कन्ध	पृष्ठे	पुच्छे	पादे	उदरे	मुखे	स्थान
५	१०	२	४	५	२	नक्षत्र
लक्ष्मी	अर्थसिद्धिः	स्त्रीनाशः	रणभंगः	अश्वनाशः	अर्थलाभः	फलं

नौकाकर्ममुहूर्तः (मु० चि०) –

याम्यत्रय- विशाखेन्द्र- सार्पपित्र्येष- भिन्नभे ।
भृग्वीज्यार्कदिने नौकाघट्टनं सत्तिथौ शुभम् ।।६०।।
शुभाहे विष्णुयुग्मेन्दुभगमैत्राश्विपौष्णभे ।
चालनं घट्टनस्थानान्नावः शुभतिथीन्दुषु ।।६१।।

भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, विशाखा, ज्येष्ठा, आश्लेषा, मघा, आर्द्रा इन नक्षत्रों को छोड़ अन्य नक्षत्रों में शुक्र, गुरु, रवि वारों में शुभ तिथियों में नौका बनाना शुभ है। श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिरा, पूर्वाफाल्गुनी, अनुराधा, अश्विनी, रेवती इन नक्षत्रों में शुभतिथि और शुभ चन्द्रमा में नौका को पानी में चलाने का मुहूर्त शुभ होता है।।६०-६१।।

शिल्पकर्ममुहूर्तः (मु० चि०) –

मृदु-ध्रुव-क्षिप्र-चरे ज्ञे गुरौ वा खलग्नगे ।
विधौ ज्ञजीववर्गस्थे शिल्पविद्या प्रशस्यते ।।६२।।

मृदुसंज्ञक (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा) ध्रुवसंज्ञक (३ उत्तरा, रोहिणी) क्षिप्रसंज्ञक (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभि.) चरसंज्ञक (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा) नक्षत्रों में बुध या वृहस्पति लग्न अथवा दशम में हों, चन्द्रमा, बुध या गुरु के षड्वर्ग में स्थित हो तब शिल्पविद्या का प्रारम्भ करना शुभ होता है।।६२।।

।। देवप्रतिष्ठामुहूर्तः।।

निष्कामयज्ञानुष्ठानकर्मविचारः (परशुरामः)

यदैव जायते वित्तं चित्तं श्रद्धासमन्वितम् ।
तदैव पुण्यकालोऽस्य यतोऽनियतजीवितम् ।
अतः सर्वेषु कालेषु जपाद्यारंभणं शुभम् ।।६३।।

परशुराम कारिका के अनुसार से जब आर्थिक स्थिति अच्छी हो और मन में दृढ श्रद्धा एवं इच्छा हो तब पुण्यकाल समझ कर निष्काम जपानुष्ठान इत्यादि धर्म कार्य करना उचित है (क्योंकि शरीर क्षणभंगुर है)।।

प्रतिष्ठामासविचारः (मत्स्य पुराण)

चैत्रै वा फाल्गुने वापि ज्येष्ठे वा माधवेऽपि वा ।
माघे वा सर्वदेवानां प्रतिष्ठा शुभदा भवेत् ।।६४।।

समस्त देवताओं की प्रतिष्ठा चैत्र, फाल्गुन, ज्येष्ठ, वैशाख और माघ मास में करना शुभ है।।६४।।

श्रावणे स्थापयेल्लिंगमाश्विने जगदंबिकाम् ।
मार्गशीर्षे हरिं चैव सर्वान् पौषेऽपि केचन ।।६५।।

श्रावण में शकर की स्थापना करना, आश्विन में जगदंबा की स्थापना करना, मार्गशीर्ष में विष्णु की स्थापन करना और कुछ आचार्यों के मत से पौष मास में सभी देवताओं की स्थापना करना शुभ है।

प्रतिष्ठानक्षत्राणि (वशिष्ठः)

हस्तत्रये मित्रहरित्रये च पौष्णद्वयादित्यसुरेज्यभेषु ।
स्यादुत्तराधातृशशांकभेषु सर्वामरस्थापनमुत्तमं च ।।६६।।

हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, तीन उत्तरा, रोहिणी, मृगशीर्ष नक्षत्रों में सभी देवताओं की प्रतिष्ठा करना शुभ है।।६६।।

प्रतिष्ठायां तिथिपक्षविचारः (नारदः)

यद्दिनं यस्य देवस्य तद्दिने तस्य संस्थितिः ।
द्वितीयादिद्वयोः पंचम्यादितस्तिसृषु क्रमात् ।।
दशम्यादि चतसृषु पौर्णमास्यां विशेषतः।
प्राप्य पक्षं शुभं शुक्लमतीते दक्षिणायने ।।६७।। *(वशिष्ठः)*

जिस देवता की जो तिथि हो उस दिन उस देवता की प्रतिष्ठा करना। द्वितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, पूर्णिमा इन तिथियों में देव प्रतिष्ठा करना शुभ है। शुक्ल पक्ष में (और कृष्ण पक्ष की दशमी तक) तथा दक्षिणायन के बाद उत्तरायण के सूर्य में प्रतिष्ठा करना शुभ है।

प्रतिष्ठायां वारविचारः –

सोमो बृहस्पतिश्चैव शुक्रश्चैव तथा बुधः ।
एते वाराः शुभाः प्रोक्ताः प्रतिष्ठायज्ञकर्मणि ।।६८।।

सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र इन वारों में प्रतिष्ठा तथा यज्ञकर्म करना शुभ है।।६८।।

देवस्थापने लग्नकथनम् –

स्थाप्यो हरिर्दिनकरो मिथुने महेशो ।
नारायणश्च युवतौ घटके विधाता ।।६९।।
देव्यो द्विमूर्त्तभवनेषु निवेशनीयाः ।
क्षुद्राश्चरे स्थिरगृहे निखिलाश्च देवाः ।।७०।।

मिथुन लग्न में विष्णु, महादेव तथा सूर्य की स्थापना करना, कन्या लग्न में नारायण (राम-कृष्ण) की, तथा कुंभ लग्न में ब्रह्मा की, द्विस्वभाव लग्नों में देवियों की स्थापना करनी चाहिये। चर लग्नों में क्षुद्र देवताओं (योगिनी आदि) की और स्थिर लग्नों में समस्त देवताओं की स्थापना करना शुभप्रद होता है।।७०।।

रुद्रयागमुहूर्तः (ज्यो. म.)

वैशाखे श्रावणे मासे चाश्विने मार्गशीर्षके ।
माघफाल्गुनयोर्वापि सिते पक्षे शुभे दिने ।
रुद्रारम्भः प्रकर्तव्यः पुत्रपौत्रादिवृद्धये ।।७१।।

वैशाख, श्रावण, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन इन मासों में और शुक्ल पक्ष मे रुद्रयागारंभ करनें से पुत्रपौत्रादिक की वृद्धि होती है।।७१।।

अनध्यायतिथिं रिक्तां तथा षष्ठीं विहाय च ।
इतरासु च कर्तव्यो रुद्रारम्भः शुभप्रदः ।।७२।।
अनध्याये च संध्यायामपराह्ने कथञ्चन ।
स्त्रियां रजस्वलायां च रुद्रारम्भो न सिद्धिदः ।।७३।।

अनध्याय तिथि (१।८।१४।१५।३०) रिक्ता तिथि (४।९।१४) तथा ६ इनके सिवा अन्य तिथियों में रुद्रारम्भ करे तो शुभ फल देता है। अनध्याय के समय सन्ध्या काल के समय, स्त्री रजस्वला हो तो रुद्रारंभ करने से सिद्धि नहीं प्राप्त होती है।।७२-७३।।

सोमसौम्यगुरुशुक्रवासराः सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः ।।७४।।

सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार सभी कार्यों की सिद्धि देने वाले हैं। अतः रुद्रारंभ करना उत्तम है।

नक्षत्रादिविचारः -

दास्रे पौष्णे ध्रुवे रौद्रे हस्तपंचादितिद्वये ।
दिनेऽर्के भौमवारे च रुद्रारंभः प्रशस्यते ।।७५।।

अश्विनी, रेवती, ध्रुव संज्ञावाले नक्षत्र आर्द्रा, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य नक्षत्र और रवि और मंगल के दिन रुद्रनुष्ठा प्रारम्भ करना शुभ है।७५।।

विष्णुयागमुहूर्तविचारः (मु० सं०)

वैशाखे श्रावणे मासि आश्विने मार्गशीर्षके ।
माघफाल्गुनयोर्वापि सिते पक्षे शुभेऽहनि ।।७६।।
विष्णुयागस्तु कर्तव्यः पुत्रपौत्रादिवृद्धये ।
कार्तिकेऽधिकमासे च कर्तव्य इति केचन ।।७७।।
द्वितीया पंचमी षष्ठी, सप्तमी नवमी तथा ।
द्वादश्येकादशी ग्राह्या विष्णुयागाख्यकर्मणि ।।७८।।
आर्द्रा शतभिषा स्वाती रोहिणी श्रवणं मृगः ।
पूर्वाषाढोत्तराषाढा ज्येष्ठाऽऽश्लेषा च रेवती।
चित्रा हस्तो धनिष्ठा स्यादनुराधा च सिद्धिदा।।७९।।

वैशाख, श्रावण, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन इन महीनों में शुक्ल पक्ष में शुभ दिनों में विष्णुयाग करना चाहिये, जिससे पुत्र पौत्रादि की वृद्धि होती है। कुछ विद्वानों का मत है कि कार्तिक और अधिक मास में भी विष्णुयाग कर सकते हैं। द्वितीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, नवमी, एकादशी, द्वादशी ये तिथियाँ विष्णुयाग करने के लिए श्रेष्ठ है। आर्द्रा, शतभिषा, स्वाती, रोहिणी, श्रवण, मृगशीर्ष, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती, चित्रा, हस्त, धनिष्ठा और अनुराधा ये नक्षत्र विष्णुयाग में सिद्धि देने वाले हैं।७६-७९।।

नवचण्डी-शतचण्डी सहस्रचण्ड्यादि देव्याराधनमुहूर्तविचारः। *(ज्यो०म०)*

नवरात्र विचारः (देवी भागवते) -

शरत्काले महापूजा कर्तव्या मम सर्वदा ।
नवरात्र-विधानेन भक्तिभाव-युतेन च ।।८०।।
चैत्रेऽश्विने तथाऽऽषाढे माघे कार्यो महोत्सवः।
नवरात्रे महाराज पूजा कार्या विशेषतः ।।८१।।

राजा सुवाहु से प्रसन्न होकर मां भगवती जगदम्बा कहती है कि हे राजन् शरतकाल (आश्विन नवरात्र) में महापूजा (विशेष पूजा) रावरात्र में कथित विधान से सर्वदा भक्तिभाव पूर्वक करनी चाहिये। नवरात्र महोत्सव चैत्र, आषाढ़, आश्विन एवं माघ मास में शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त विशेष रूप से मेरा पूजन अर्जन करना चाहिये।।८०-८१।।

तत्रादौ मासविचारः -

वैशाखः फाल्गुनो माघः श्रावणो मार्ग एव च ।
आश्विनः कार्तिको मासाः पूजायां तु शुभावहाः ।।८२।।

नवचंडी, शतचंडी, सहस्त्रचंडी जैसे देवी के जपानुष्ठानादि याग के कार्यो में वैशाख, फाल्गुन, माघ, श्रावण, मार्गशीर्ष, आश्विन तथा कार्तिक ये सात महीने श्रेष्ठ हैं।।८२।।

तिथि-वारविचारः -

तृतीया पंचमी पूर्णा सप्तमी च त्रयोदशी ।
दशमी द्वादशी षष्ठी चतुर्थी नवमी तथा ।
कृष्णाष्टमीचतुर्दश्यौ तिथयः सर्वकामदाः ।।८३।।
रविर्बृहस्पतिः सोमो बुधशुक्रौ शुभावहाः ।।८४।।

शुक्लपक्ष में ३।५।१५।७।१३।१०।१२।६।४।६ उसी प्रकार कृष्णपक्ष में ८।१४ ये तिथियाँ सर्वमनोरथ पूर्ण करती है। रवि, गुरु, सोम, बुध, शुक्र ये वार शुभ है।।८३-८४।।

देवीपूजन नक्षत्रविचारः -

अश्विनी रोहिणी स्वाती पौष्णं ज्येष्ठोत्तरात्रयम्।
पुष्यं पुनर्वसुर्भानि श्रेष्ठानि शक्तिपूजने ।।८५।।

अश्विनी, रोहिणी, स्वाति, रेवती, ज्येष्ठा, उ०फा०, उ०षा०, उ०भा०, पुष्य, पुनर्वसु ये दश नक्षत्र देवीपूजन में शुभ है।।८५।।

हवनादिशान्तिकर्ममुहूर्तः (मु० चि०) -

क्षिप्र-ध्रुवान्त्य-चरमैत्रमघासु शस्तं
स्याच्छान्तिकं च सह पौष्टिकमङ्गलाभ्याम् ।
खेऽर्के विधौ सुखगते तनुगे गुरौ नो
मौढ्यादिदुष्टसमये शुभदं निमित्ते ।।८६।।

क्षिप्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, रेवती, चरसंज्ञक, अनुराधा, मघा इन नक्षत्रों में, दशम में सूर्य, चतुर्थ में चन्द्रमा, लग्न में बृहस्पति के रहने पर, बृहस्पति शुक्र का अस्तादि दोष न हो तब मांगलिक पौष्टिक शान्ति कर्म शुभदायक होते हैं। नैमित्तिक कार्य में अस्तादि दोषों का ग्रहण नहीं करना चाहिये।।८६।।

होमाहुतिमुहूर्तः (मु० चि०) -

सूर्याभात् त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपङ्गवः ।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले ।।८७।।

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिन के क्रम से ३, ३ नक्षत्र सूर्य बुध, शुक्र, शनि, चन्द्रमा, मङ्गल, बृहस्पति, राहु, केतु का भाग समझना। यदि चन्द्र नक्षत्र शुभग्रहों के भाग में पड़े तो शुभ, पापग्रहों के भाग में पड़े तो अशुभ फल हवन के विचार में जानना।।८७।।

आहुतिबोधकचक्रम् -

सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	भौम	गुरु	राहू	केतु	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	फल

अग्निवास (मु० चि०) -

सैकातिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः ।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ।।८८।।

शुक्ल पक्षादि से तिथि गिन कर उनकी संख्या में वारसंख्या को जोड़ के एक और जोड़ देना। जोड़ने पर जो हो उसमें ४ का भाग देने पर यदि शून्य या तीन शेष बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर

रहता है यह हवन में शुभफलदायक है। तथा एक और दो शेष बचे तो क्रम से स्वर्ग और पाताल में अग्निवास होता है इनमें यथाक्रम से प्राण और अर्थ का नाश करने वाले होते हैं।।८८।।

विशेषः- (वृह० ज्यौति० सारे)-

विवाह-यात्रा-व्रत-गोचरेषु चूडोपनीते ग्रहणे युगाद्यैः ।
दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ।।८६।।

विवाह, यात्रा, व्रत, गोचर, चूड़ा, उपनयन, ग्रहण; युगादितिथियों में, दुर्गापूजन में, लड़के के जन्म के समय अग्निचक्र और अग्निवास का विचार नहीं करना चाहिये।।८६।।

आहुतिदोषपरिहारः -

विवाह-याग-व्रतबंध-दीक्षा-सीमंत-चण्डी-गृहवास्तुशांतौ ।
आदित्यसौरी कुजराहुकेतवो न दोषदा यज्ञविधायिनां खलु।।६०।।

विवाह, जनेऊ, दीक्षा, सीमंत, देवी कार्य, वास्तुशान्ति इतने कार्यो में पापग्रह के मुख में आहुति हो तो भी होमाकार्य कर सक्ते हैं।।६०।।

व्रतबन्धे विवाहे च नवरात्रे च नित्यके ।
कुलदेवार्चने धीमान्नो कुर्यादाग्निचिन्तनम् ।।६१।।

व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत), विवाह, नवरात्र, नित्यकर्म और कुलदेवता के पूजन में अग्निचक्र का विचार करने की आवश्यकता नहीं है।।६१।।

ग्रहणोद्वाह-गण्डान्ते तथा दुर्गोत्सवेऽपि च ।
तदाऽग्निचक्रं नालोक्यं ग्रहशान्तौ विचारयेत् ।।६२।।

ग्रहण, विवाह, गण्डांत (मूलशान्ति) और दुर्गोत्सव (नवरात्र) के समय अग्निचक्र का विचार नहीं करना चाहिए, परन्तु ग्रह शान्ति में अग्निचक्र का विचार अवश्य करना चाहिये।।६२।।

प्रकारान्तरेण अग्निचक्रविचारः -

तिथिर्वारश्च नक्षत्रं कलाभि(१६) श्च समन्वितम् ।
वेदसंख्यैर्हरेद्भागं वह्निचक्रं विलोकयेत् ।।६३।।
एकेन वसते स्वर्गे द्वाभ्यां पातालमेव च ।
त्रिशून्ये(३।०) वसते भूमौ भूमिलोके सुखावहम्।।६४।।

(रुद्र याग में शिवमुखाहुतिचक्र का विचार प्रकारान्तर से करना) तिथि, वार, नक्षत्रों का योग करके उसमें १६ कला जोड़ कर चार से भाग देना, यदि एक शेष तो स्वर्ग में, दो शेष बचे तो पाताल में, अशुम है। तीन या शून्य शेष बचे तो भूमि में वह्निवास शुभप्रद है ऐसा जानना।।६३-६४।।

दुर्गाहोमे आहुतिचक्रविचारः -

ब्राह्मी च कौमारी च वैष्णवी च वाराहिचैंद्री त्वथ चंडिका च ।
मेधा च माहेश्वरी नारसिंही क्रमेण सूर्याद्दिनभं त्रिकं च ।।६५।।
श्रीपुत्रदा शोकभयौ धनाप्तिर्ह्रतस्तथाराजपदाप्तिरोगौ ।
विद्यासुखाप्तिर्नृपतेश्च लाभः फलानि दुर्गाहवने क्रमेण ।।६६।।

अर्थ स्पष्ट समझने के लिए चक्र दिया जा रहा है।

देवीनाम	ब्रा.	कौ.	वै.	वा.	ऐ.	चं.	मे.	मा.	ना.
नक्षत्र संख्या	३	३	३	३	३	३	३	३	३
योग	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७
फल	श्रे.	ने.	ने.	श्रे.	श्रे.	ने.	श्रे.	श्रे.	श्रे.
	लक्ष्मी, पुत्र	शोक	भय	धनप्राप्ति	राज्यसुख	रोग	विद्या	सुख	राजसम्मान

विष्णुयागे आहुतिचक्रम् -

रोहिण्यधिपनक्षत्रं वारस्तिथिरनुक्रमात् ।
धृतिभि(१८) श्च युतं कार्यं युग (४) संख्यैर्हरेत्पुनः।
त्रिवेदे(३।४) वसते भूमौ भूमिलोके सुखावहम् ।।९७।।

विष्णु के यज्ञ में अग्नि चक्र का विचार करने में दिन की तिथि, वार, नक्षत्र का योग करना। उसमें १८ जोड़ कर चार से भाग देना जो शेष ३।४ आवे तो भूमि पर वह्निवास है और वह सुख कारक है। ऐसा समझना।।९७।।

भैषज्य- सूचीकर्ममुहूर्तौ (मु० चि०)

भैषज्यं सल्लघुमृदुचरे मूलभे द्व्यङ्गलग्ने
शुक्रेन्द्वीज्ये विदि च दिवसे चापि तेषां रवेश्च ।
शुद्धे रिष्फद्यूनमृतिगृहे सत्तिथौ नो जनेर्भे
सूचीकर्माऽप्यदितिवसुभे-त्वाष्ट्रमैत्राश्विपुष्ये ।।९८।।

लघुसंज्ञक (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्) मृदुसंज्ञक, (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा) चरसंज्ञक (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा), मूल इन नक्षत्रों में द्विस्वभाव (३।६।९।१२) लग्नों में शुक्र, सोम, बृहस्पति और बुध के रहने पर, इन्हीं (शुक्र, सोम, गुरु, बुध) के वारों में तथा रविवार में, लग्न से द्वादश, सप्तम, अष्टम गृह शुद्ध (पाप-शुभ ग्रहों से रहित) होने पर, शुभ तिथियों में, जन्म नक्षत्र को छोड़कर भैषज्य कर्म (दवा बनाना, दवा देना, दवा खाना...इत्यादि) शुभ होता है। पुनर्वसु, धनिष्ठा, चित्रा, अनुराधा, अश्विनी, पुष्य इन नक्षत्रों में सूचीकर्म (सिलना) शुभ होता है।।९८।।

रोगोत्पत्तौ तन्निवृत्तिदिनसंख्या (मु० चि०)

स्वातीन्द्रपूर्वाशिवसार्पभे मृतिर्ज्वरेऽन्त्यमैत्रे स्थिरता भवेद्रुजः ।
याम्यश्रवो-वारुणतक्षभे शिवा घस्राहिपक्षो द्व्यधिपार्कवासवे ।।९९।।
मूलाग्निदास्रे नव पित्र्यभे नखा बुध्न्यार्यमेज्यादितिधातृभे नगाः।
मासोऽब्जवैश्वेऽथ यमाहिमूलभे मिश्रेशपित्र्ये फणिदंशने मृतिः।।१००।।

स्वाती, ज्येष्ठा तीनों पूर्वा, आर्द्रा, आश्लेषा इन नक्षत्रों में ज्वर उत्पन्न हो तो मनुष्य की मृत्यु होती है। रेवती और अनुराधा में ज्वर होने पर बहुत दिनों तक स्थिर रहता है। भरणी, श्रवण, शतभिषा, चित्रा इन नक्षत्रों में ज्वरोत्पत्ति होने पर १५ दिनों तक; मूल, कृत्तिका, अश्विनी इनमें नव दिन, मघा में २० दिन, उत्तरा भाद्रपद उत्तराफाल्गुनी, पुष्य, पुनर्वसु, रोहिणी इन पाँच नक्षत्रों में ७ दिन, मृगशिरा-उत्तराषाढा में १ मास तक रोग रहता है, उसके बाद अच्छा होता है। भरणी, आश्लेषा, मूल, मिश्रसंज्ञक (कृत्तिका, विशाखा) आर्द्रा, मघा, इन ७ नक्षत्रों में सर्प काटे तो मृत्यु हो जाती है।।९९-१००।।

रौद्राहि-शाक्राम्बुपयाम्यपूर्वा-द्विदैववस्वग्निषु पापवारे ।
रिक्ताहरिस्कन्ददिने च रोगे शीघ्रं भवद्रोगिजनस्य मृत्युः ।।१०१।।

आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, शतभिषा, भरणी, तीनों पूर्वा, विशाखा, धनिष्ठा, कृत्तिका, इन ११ नक्षत्रों में पापवारों मे, रिक्ता (४/९/१४) द्वादशी, षष्ठी तिथियों मे रोगोत्पत्ति हो तो रोगी की शीघ्र मृत्यु होती है।

रोगविमुक्तस्नानम्(मु० चि०)-

व्यन्त्यादितिध्रुवमघानिलसार्पधिष्ण्ये
रिक्ता तिथौ चरतनौ विकवीन्दुवारे ।
स्नानं रुजा विरहितस्य जनस्य शस्तं
हीने विधौ खलखगैर्भवकेन्द्रकोणे ।।१०२।।

रेवती, पुनर्वसु, ध्रुवसंज्ञक(३ उत्तरा-रोहिणी) मघा, स्वाती, आश्लेषा, इन नक्षत्रों को छोड़ अन्य नक्षत्र में, रिक्ता तिथि में, शुक्र और सोम के अतिरिक्त अन्य वारों में, चरलग्नों(१।४।७।१०) में, चन्द्रमा के निर्बल होने पर, पापग्रह ग्यारहवें, केन्द्र(१।४।७।१०) स्थान और कोण(९।५) इन स्थानों में हों तब रोग से मुक्त व्यक्ति को स्नान करना शुभ होता है।।१०२।।

प्रसंगद्रोगत्रिनाडीचक्रम्(ग्रन्थान्तरे):-

आर्द्रादिमृगपर्यन्तं मध्ये मूलं प्रतिष्ठितम् ।
रवीन्दुनामनक्षत्रमेकनाड्यां यदा भवेत् ।।१०३।।
तदा मृत्युर्न सन्देहो यदुक्तं ब्रह्मयामले ।।१०४।।

आर्द्रा से मृगशिरा तक चक्र में लिख के मध्य में मूल को स्थापन करे इस रोग त्रिनाडी चक्र में रोगी का नक्षत्र, चन्द्रमा का नक्षत्र और सूर्य का नक्षत्र एक नाडी पर पड़े तो अवश्य रोगी की मृत्यु होती है, ऐसा ब्रह्मयामल में लिखा है (उस दिन अष्टम चन्द्रमा का होना अवश्य मृत्युकारक होता है)।

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्येष्ठा	धनि.	शत.	भर.	कृत्ति.
पुन.	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रोहि.
पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वाति	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेवती	मृग.

जलाशयारम्भमुहूर्तः-

पुष्ये मित्रकरोत्तरस्ववरुणब्रह्माम्बुपित्र्येन्दुभिः
शस्तेऽर्के शुभवारयोगतिथिषु क्रूरेष्ववीर्येषु च ।
पुष्टेन्दौ जलराशिगे दशमगे शुक्रे शुभांशोदये
प्रारम्भः सलिलालयस्य शुभदो जीवेन्दुपुत्रोदये ।।१०५।।

पुष्य, अनुराधा, हस्त, तीनों उत्तरा, स्व(धनिष्ठा), शतभिषा, रोहिणी, पूर्वाषाढ़ा, मृगशिरा, गोचर (चन्द्र) से सूर्य के शुभ रहने पर शुभ वार, योग, तिथियों में क्रूर ग्रहों की निर्बलता में, चन्द्रमा पुष्ट(बली) और जलचर राशि में स्थित हो, शुक्र ग्रह दशम राशि में हो, शुभग्रहों की राशि का लग्न और नवमांश हो, बुध और बृहस्पति लग्न में पड़े हो, तब सब जलाशयों का प्रारम्भ करना शुभद होता है।

(१)सूर्यभात्कूपचक्रम्-

कूपेऽर्कभान्मध्यगतैस्त्रिभिर्भैः स्वादूदकं पूर्वदिशस्त्रिभिस्त्रिभिः ।
खण्डं जलं स्वादुजलं जलक्षयं स्वादूदकं क्षारजलं शिलाश्च ।।१०६।।
मिष्टं जलं क्षारजलं क्रमाद्भवेद्वै सूर्यभात्त्रिभितः फलं वदेत् ।।१०७।।

सूर्य जिस नक्षत्र पर हो वहाँ से ३ नक्षत्र मध्य में रखना जिसका फल स्वादिष्ट जल निकलता है। इसी तरह पूर्वादि आठो दिशाओं में ३, ३ नक्षत्र रखना चाहिये। कूप के उत्खनन दिन का नक्षत्र जिस दिशा में पड़े उसका फल क्रम से चक्र से स्पष्ट जानना चाहिये।।१०६-१०७।।

मध्य	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चि.	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
स्वादु	खंडजल	स्वादु	जलक्षय	स्वादु	क्षार	शिला	मिष्ट	क्षार	फल

(२) प्रकारान्तरे भौमभात्-

शशिशराब्धित्रित्र्यब्धिगुणाब्धये वधजलं च ससिद्धिरभंङ्गदम् ।
रुजमसिद्धियशोऽर्थप्रसिद्धये जलविभंङ्गकरः कुजभादिषु ।।१०८।।

भौम जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से (१,५,४,३,३,४,३,४) नक्षत्रों के फल क्रमशः वधजल आदि शुभाशुभ आठ प्रकार के होते हैं। कूप खनन के दिनका नक्षत्र जिस क्रम में पड़े तदनुसार इस चक्र से फल समझना चाहिये।।१०८।।

भौमभात् कूपचक्रम् -

१	५	४	३	३	४	३	४	नक्षत्र२७
वधजल	सिद्धि	अभंगद	रोग	असिद्धि	यश	अर्थसिद्धि	जलभंग	फल

(३) राहुमात्प्रकारन्तरेण-

राहु-ऋक्षात्त्रयं पूर्वे त्रयमाग्नेयतः क्रमात् ।
मध्ये चत्वारि ऋक्षाणि फलं वाच्यं शुभाऽशुभम् ।।१०९।।
पूर्वे शोककरं ज्ञेयमाग्नेय्यां जलदं सदा ।
दक्षिणे स्वामिमरणं नैर्ऋत्यां सुखदं सदा ।।११०।।
पश्चिमे सुखसौभाग्यं वायाव्ये जलवर्धनम् ।
उत्तरे निर्जलं विद्यादीश्वरे जलसिद्धिदम् ।।१११।।
मध्ये च सजलं वाच्यं नान्यथा रुद्रभाषितम् ।
स्वयं रूपी सदा राहूः फलदस्तक्षणे भुवि ।।११२।।

राह के नक्षत्र से ३ नक्षत्र पूर्व में एवं ३,३ नक्षत्र अग्नि कोणादि में रखना अन्त्य में ४ नक्षत्र मध्य में रखना चाहिये। दिन नक्षत्र जिस दिशा में पड़े उसका फल इस चक्र में लिखे क्रम से जानना।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्ये	दिशा
३	३	३	३	३	३	३	३	४	नक्षत्र
अशुभ शोककर	शुभ जल युक्त	अशुभ स्वामी मरण	शुभ सुखद	शुभ सुख सौभाग्य	शुभ जल युक्त	अशुभ जल रहित	शुभ जल सहित	शुभ सजल	फल

(४) *रोहिणीभात् -*

रोहिण्यादि-लिखेच्चक्रं त्रयं मध्ये प्रतिष्ठितम् ।
पूर्वादि-दिक्षु सर्वासु सृष्टिमार्गेण दीयते ।।११३।।
मध्ये शीघ्रजलं स्वादु पूर्वे भूमिश्च खण्डिता ।
आग्नेयां सुजलं प्रोक्तं दक्षिणे निर्जलं तथा ।।११४।।
नैर्ऋत्ये चामृतं वारि पश्चिमे शोभनं जलम् ।
वायव्येऽपि जलं हन्ति चोत्तरे स्वादुकं जलम् ।
ईशाने कटुकं क्षारमल्पतीक्ष्णस्य सम्भवः ।।११५।।

रोहिणी से दिन नक्षत्र तक गिन के प्रथम तीन नक्षत्र मध्य में फिर ३, ३ नक्षत्र पूर्वादि दिशाओं और कोणों में कल्पना करे उसका फल क्रम से जाने। दिन नक्षत्र मध्य में पड़े तो शीघ्र प्राप्त होने वाला स्वादिष्ट जल, पूर्व में खण्डित जल, अग्निकोण में सुजल, दक्षिण में निर्जल, नैर्ऋत्यकोण में अमृत सदृश, पश्चिम में उत्तम जल, वायव्य में जलहानि, उत्तर में स्वादुजल, ईशान में खाराजल होता है।।११३-११५।।

मध्य	पूर्व	आग्ने	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चि.	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
रो.मृ.	पुन.पु.	म.पू.	ह.चि.	वि.अ.	मू.पू.	श्र.ध.	पू.भा.	अ.भ.	नक्षत्र
आ.	आश्ले.	उ.फा.	स्वाति	ज्येष्ठा	उ.षा.	शत.	उ.रे.	कृत्ति.	
स्वादु	खण्डित भूमि	सुजल	निर्जल	अमृत जल	शोभन	जल हानि	स्वादु	क्षार अल्पतीक्ष्ण	फल

विशेषः –

रोहिण्यर्क्षात् सूर्यभाद्भौमभाच्च राहो ऋक्षाद् गण्यते कूपचक्रम्।
यस्मिन्काले सर्वमेतत्प्रशस्तं तस्मिन्भूभौ निर्जले स्याज्जलत्वम्।।११६।।

रोहिणी-नक्षत्र से, सूर्य-नक्षत्र से, भौम-नक्षत्र से और राहु-नक्षत्र से कूप-चक्र देखे। जब ये चारों चक्र एक साथ अच्छे मिल जायँ, तो निर्जल भूमि में भी बड़ा स्वादु जल पैदा होता है।।११६।।

राहुभान्निर्वारिचक्रम् –

निवारि पूर्वतस्त्रीणि त्रीणि त्रीणि च सर्वतः।
मध्ये चत्वारि देयानि राहुभाच्चन्द्रभं बुधैः।।११७।।
मध्ये पूर्वे जलं सौख्यं चोत्तरे धनवर्धनम्।
याम्यनैर्ऋत्ययोर्दुःखं भयमाने परासु च।।११८।।

राहू के नक्षत्र से चन्द्र (दिन) नक्षत्र तक गिन के ३,३ नक्षत्र पूर्वादि दिशाओं में और ४ नक्षत्र मध्य में रखे। दिन नक्षत्र 'मध्य और पूर्व में पड़े तो कुएँ का जल बड़ा स्वादिष्ट हो, उत्तर में पड़े तो धन सम्पत्ति बढ़े, दक्षिण और नैर्ऋत्य में पड़ जाय तो दुःख हो और अग्नि कोण में तथा बाकी (पश्चिम, वायव्य, ईशान) में पड़े तो भय होता है।।११७-११८।।

पूर्व	आग्ने.	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य	दिशा
३	३	३	३	३	३	३	३	४	नक्षत्र
जलसुख	भय	दुःख	दुःख	भय	भय	धनवृ.	भय	ज.सु.	फल

जलाशयारामप्रतिष्ठामुहूर्तः (मु० चि०) –

जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशंशाकशुक्रे।
दृश्ये मृदुक्षिप्रचरे ध्रुवे स्यात्पक्षे सिते स्वर्क्षतिथिक्षणे वा।।११९।।
रिक्तारवर्ज्ये दिवसेऽतिशस्ता शशांकपापैस्त्रिभवाङ्गसंस्थैः।
व्यन्त्याष्टगैः सत्खचरैर्मृगेन्द्रे सूर्यो घटे को युवतौ च विष्णुः।।१२०।।

सौम्यायन (मकर से कर्कादि तक के) सूर्य में, बृहस्पति, शुक्र और चन्द्रमा के उदय रहने पर, मृदु, क्षिप्र, चर, ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों, में शुक्ल पक्ष में, अपने २ तिथि, नक्षत्र और मुहूर्तो में, रिक्ता तिथि भौमवार को छोड़कर तिथिवारों में, चन्द्रमा और पापग्रहों के तीसरे, ग्यारहवें छठवें स्थानों में रहने पर, बारहवें, आठवें स्थान को छोड़ अन्य स्थानों में शुभ ग्रह हो तब जलाशय, बगीचा, देवता इनकी प्रतिष्ठा करना शुभ होता है। सूर्य की सिंह में, ब्रह्मा की कुम्भ में, विष्णु की कन्या लग्न में स्थापना करनी चाहिये।

दीक्षाग्रहणमुहूर्तः –

आर्द्राचित्रात्र्युत्तरे रेवतीन्दुब्राह्मे मित्रे वा धनिष्ठासु दीक्षा।
ग्राह्या मार्गे फाल्गुने श्रावणोर्जे माघे वारे मन्दमाहेयहीने।।१२१।।

आर्द्रा, चित्रा, तीनों उत्तरा, रेवती, मृगशिरा, रोहिणी, अनुराधा, धनिष्ठा नक्षत्रों में मार्गशीर्ष (अगहन) फाल्गुन, श्रावण, कार्तिक, माघ इन महीनों में शनि और भौम वार को छोड़ अन्य वारों में दीक्षा ग्रहण करना शुभ होता है।।१२१।।

मन्वन्तरासु तिथिषु युगाद्यासु तथैव च।
अयने विषुवे चैव ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः।
रविसंक्रमणे चैव दीक्षाकर्म प्रशस्यते ।।१२२।।

युगादि, मन्वन्तरादि तिथियों में अयन और वसन्त व शारदीय संक्रान्तियों में सूर्य और चन्द्रग्रहण में तथा सूर्य की सब संक्रान्तियों में दीक्षाग्रहण करना शुभ होता है।।१२२।।

तैलाभ्यांगे वाराः –

तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः।
बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम् ।।१२३।।

रविवार को तैल लगाने से मनस्ताप, सोमवार को शोभा, मंगलवार को मृत्यु, बुध को धन की प्राप्ति, गुरुवार को हानि, शुक्रवार को दुःख और शनिवार को सुख होता है।।१२३।।

दुष्टवारपरिहारः –

रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका।
शुक्रे तु गोमयं क्षिप्त्वा तैलदोषो न विद्यते ।।१२४।।

निषिद्ध वारों में तेल लगाना आवश्यक हो तो रविवार को फूल डाल के, भौमवार को मिट्टी डाल कर, गुरुवार को दूब (दूर्वा) डालकर, शुक्रवार को गोबर डालकर तेल लगाना चाहिये।।१२४।।

विशेष : –

तैलाभ्यंगं न दोषाय प्रत्यहं क्रियते च यः।
उत्सवे वातरोगे वा यत्र वाचनिकोऽपि वा ।।१२५।।
मंत्रितं क्वथितं तैलं सार्षपं पुष्पवासितम्।
द्रव्यान्तरयुतं वापि नैव दुष्येत् कदाचन ।।१२६।।

प्रतिदिन तेल मर्दन, उत्सव में, वात रोग में, और वचन प्राप्त होने पर तेल लगाना दूषित नहीं होता। मन्त्र प्रयोग किया हुआ, पकाया हुआ, सरसों का, पुष्प वासित, औषधियों से युक्त तेल लगाना दोषकर नहीं होता है।।१२५-१२६।।

खट्वामुहूर्तः –

रोहिणी त्र्युत्तरा चैव हस्तः पुष्यः पुनर्वसुः।
अनुराधाऽश्विनी शस्ता खट्वानिर्माणकर्मणि।।१२७।।
शुभयोगे शुभे वारे विदध्यात् खट्वकां नरः।
मृतशौचे तथा हेया रिक्तायां विष्टिवैधृतौ ।।१२८।।
पितृपक्षे श्रावणे च भाद्रे मास्यशुभेऽहनि।
वर्जयेद् भौममन्दे च खट्वानिर्माणकं सदा ।।१२९।।

रोहिणी, तीनों उत्तरा, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, अश्विनी इन नक्षत्रों में शुभ योग तिथि वारों मे मृताऽशौच, रिक्ता, (४।६।१४) तिथि, भद्रा, वैधृति, पितृपक्ष, श्रावण-भादों का महीना अशुभ ग्रहों के वारों में (शनि, भौमवार) इनको छोड़कर के खाट निर्माण एवं बीनना शुभ होता है।।१२७-१२६।।

खट्वाचक्रम् –

सूर्यभाच्चन्द्रभं गण्यं खट्वा चक्रं विचारयेत् ।
मस्तके वेदशुभदं कोणयोरष्टमृत्युदम् ।।१३०।।
शाखायामष्टौ शुभदं मध्ये त्रीणि शुभप्रदम् ।
पादेषु वेदनक्षत्रं हानि-मृत्यु-महद्भयम् ।।१३१।।
खट्वा हि सर्वमासेषु पञ्चपक्षं विवर्जयेत् ।
कन्यायाः प्रथमे पक्षे धनुर्मीनं तथैव च ।।१३२।।

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनकर खट्वा चक्र का विचार करै। पहले ४ नक्षत्र शिर में स्थापन करे उसका फल शुभदायक है। फिर कोण में ८ नक्षत्र मृत्यु देने वाले, ८ नक्षत्र शाखा में शुभ फलद, फिर ३ नक्षत्र मध्य में शुभप्रद, ४ नक्षत्र चारों पदों में हानि मृत्यु महाभय कारक समझना। चारपाई सब महीनों में बनवाना चाहिये। परन्तु ५ पक्ष अर्थात् कन्या का प्रथम पक्ष और धनु-मीन के दोनों पक्ष वर्जित हैं।।१३०-१३२।।

चरणीविचारः –

स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुतम् ।
वसुभिश्च हरेद्भागं शेषं चरणिरुच्यते ।।१३३।।
पशुहानिः पशोर्नाशः पशुलाभः पशुक्षयः ।
पशुरोगः पशोर्वृद्धिः पशुभेदः बहुः पशुः ।।१३४।।

स्वामी के हाथ से लम्बाई चौड़ाई की हाथ संख्या को जोड़ के ८ से भाग देने पर जो शेष बचे उसका फल क्रम से जानना। १ शेष बचे तो पशुहानि, २ शेष बचे तो पशुनाश, ३ शेष बचे तो पशुलाभ, ४ शेष बचे तो पशुक्षय, ५ शेष बचे तो पशुरोग, ६ शेष में पशुवृद्धि, ७ शेष में पशुभेद, ८ शेष बचने पर पशुवाहुल्य (पशुओं की वृद्धि) समझना चाहिये।।१३३-१३४।।

ग्रामवासचक्रम –

ग्रामस्य यद्भवेदृक्षं तदाद्याः सप्तमस्तके ।
पृष्ठे च हृदये सप्त पादयोः सप्ततारकाः ।।१३५।।
मस्तके च धनी मानी पृष्ठे हानिश्च निर्धनम्।
हृदये सुखसम्पत्तिः पादे पर्यटनं फलम् ।।१३६।।

ग्राम नक्षत्र से ग्रामवासी के नामनक्षत्र तक गिनकर ७।७ नक्षत्र क्रम से मस्तक, पृष्ठ, हृदय और पाद में कल्पना करे। यदि मस्तक पर ग्रामवासी का नक्षत्र पड़े तो वासकर्ता धनी-मानी होता है। पृष्ठ पर वासकर्ता का नक्षत्र हो तो हानि और निर्धनता होती है। हृदय पर ग्रामवासी का नक्षत्र हो तो वासकर्ता सुख सम्पत्ति युक्त रहता है और पाद पर ग्रामवासी का नक्षत्र हो तो वासकर्ता को सदा पर्यटन करना पड़ता है।।१३५-१३६।।

गेहारम्भे प्रशस्ता भूमिः –

मनसश्चक्षुषो यत्र सन्तोषो जायते भुवि ।
तस्यां कार्यं गृहं सर्वैरिति गर्गादिसम्मतम् ।।१३७।

जिस भूमि को देखने से मन प्रसन्न हो जाय, नेत्र तृप्त हो जाय उसी भूमि (जमीन) पर गृह बनाना चाहिये गर्गादि मुनियों की सम्मति है।।१३७।।

पिण्डज्ञानम् (ज्योतिर्विदाभरणे) -

क्षेत्रे भवेत् क्षेत्रफलं चतुर्भुजे तत्कोटिदोराहतिरेवमायते ।।१३८।।

क्षेत्र के लम्बाई चौड़ाई का गुणन करने से क्षेत्रफल (पिंड) होता है।।१३८।।

आयाद्यानयनम् (मु० चि०) -

पिण्डे नवाङ्काङ्गगजाग्निनागनागाब्धिनागैर्गुणिते क्रमेण ।
विभाजिते नागनगाङ्कसूर्यनागर्क्षतिथ्यर्क्षखभानुभिश्च ।।१३९।।
आयो वारोंऽशको द्रव्यमृणमृक्षतिथिर्युतिः ।
आयुश्चाथ गृहेशर्क्षं गृहभैक्यं मृतिप्रदम् ।।१४०।।

पिण्ड को ९ स्थानों में रख के क्रम से ९।६।६।८।३।८।८।४।८ इन अंको से गुणन कर ८।७।९।१२।८।२७।१५।२७।१२० इन अंको से भाग देने से शेष आय, वार, अंश, द्रव्य, ऋण, नक्षत्र, तिथि, योग और आयु होते हैं। गृहेश का और गृह का नक्षत्र एक हो तो मृत्यु होती है।।१३९-१४०।।

मंडलेशज्ञानम् -

स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुतम् ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं मण्डलमुच्यते ।।१४१।।
दाता च भूपतिश्चैव क्लीबश्चौरो विचक्षणः ।
षष्ठो भोगी धनाढ्यश्च दरिद्रो धनदस्तथा ।।१४२।।

गृहेश के हाथ से लम्बाई चौडाई को जोड़[1] के ९ से भाग देने पर एक दो... इत्यादि शेष वचे तो क्रम से दाता, नृपति, नपुंसक, चौर, पण्डित, भोगी, धनाढ्य, दरिद्र, कुबेर, ये मण्डलेश होते हैं।।१४२।।

गृहारम्भे वर्ज्यमासाः (रत्नमालायाम्) -

आषाढचैत्राश्वयुजोर्जमाघज्येष्ठेषु सप्रौढपदेषु नूनम् ।
निकेतानानां घटनं नृपाणां योगेश्वराचार्यमते न शस्तम् ।।१४३।।

आषाढ़, चैत्र, आश्विन, कार्तिक, माघ, ज्येष्ठ, भाद्रपद मासों में योगेश्वराचार्य के मत से मकान बनाना शुभ नहीं है।।१४३।।

शुभनक्षत्राणि (गर्गः) -

त्र्युत्तरेऽपि च रोहिण्यां पुष्ये मैत्रे करद्वये ।
धनिष्ठाद्वितये पौष्णे गृहारम्भः प्रशस्यते ।।१४४।।

(मु० चि०) -

भौमार्करिक्ताऽमाद्यूने चरोनेंगे विपञ्चके ।
व्यष्टान्त्यस्थैः शुभैर्गेहारम्भस्त्रयारिगैः खलैः ।।१४५।।

तीनो उत्तरा, रोहिणी, पुष्य, अनुराधा, हस्त, चित्रा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती इन नक्षत्रों में गेहारम्भ शुभ होता है। भौम, रविवार, रिक्ता (४।९।१४) अमावस्या, शुक्ल प्रतिपदा को छोड़ के अन्य तिथिवारों

---

१. यहाँ पर चरणी (२।१००) के विचार में किसी-किसी ने जोड़ने का अर्थ गुणा करना लिखा है, पर वह प्रमाणाभाव के कारण हेय है।

पिण्डसारणी

विस्तार	१५	१५	१७	१७	१९	२१	२१	२३	२३	२५	२५	२७	२७	२९	२९	२९	३१	३१
दैर्घ्य	१७	१९	१९	२१	२१	२३	२५	२५	२७	२७	२९	२९	३१	३१	३३	३५	३५	३५
पिण्ड	२५५	२८५	३२३	३५७	३९९	४८३	५२५	५७५	६२१	६७५	७२५	७८३	८३७	८९९	९५७	१०१५	१०२३	१०८५
आय	७	५	३	५	७	३	५	७	५	३	५	७	५	३	५	७	७	५
वार	६	३	२	७	७	७	७	२	३	६	१	५	१	६	३	७	२	७
अंश	९	९	३	९	९	९	९	३	९	९	३	९	९	३	९	६	९	३
द्रव्य	१२	१२	४	१२	१२	१२	१२	४	१२	१२	४	१२	१२	४	१२	९	१२	८
ऋण	५	७	१	७	५	१	७	५	७	१	७	५	७	१	७	५	५	७
नक्षत्र	१५	१२	१९	२१	६	३	१५	१०	२७	२७	२२	२७	२७	१०	१५	२०	३	१३
तिथि	१५	१५	४	६	१२	९	१५	१०	३	१५	१०	९	६	७	७	५	९	१०
योग	२१	६	२३	२४	३	१५	२१	५	२७	२७	११	२७	२७	५	२१	१०	१५	२०
आयु	११०	१२०	६४	९६	७२	२४	१२०	४०	४८	१२०	४०	२४	९६	११२	९६	८०	२४	४०
व्यय	७	४	३	५	६	३	७	२	३	३	६	३	३	२	७	४	३	५
दाता	५	७	९	२	४	८	१	३	५	७	९	४	८	६	८	१	१	३

विस्तार	३१	३१	३३	३३	३३	३३	३५	३५	३५	३५	३५	३७	३७	३९	३९	३९	४१
दैर्घ्य	३७	३९	३५	३७	३९	४१	३७	३९	४१	४३	३९	४५	४१	४३	४५	४७	४५
पिण्ड	११४७	१२०९	११५५	१२२१	१२८७	१३०५	१२९५	१३६५	१४३५	१५०५	१४४३	१६६५	१५६६	१६७७	१७५५	१८३३	१८४१
आय	३	१	३	५	७	१	७	५	३	१	३	३	७	५	३	१	५
वार	५	३	७	६	५	४	७	७	७	७	२	२	६	१	३	५	१
अंश	६	९	९	९	९	९	३	९	६	३	९	९	९	९	९	९	९
द्रव्य	१२	१२	१२	१२	१२	४	१२	८	४	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
ऋण	१	३	१	७	५	३	५	७	१	३	१	१	५	७	१	३	७
नक्षत्र	२३	६	६	२१	९	२४	१९	१२	९	२५	१५	१८	२१	२४	२७	३	१८
तिथि	१०	१२	१५	३	६	९	१०	१५	५	१०	९	१५	१२	६	१५	९	१५
योग	१५	३	३	२४	१८	१२	२३	६	१६	२६	२१	९	२४	१२	२७	१५	९
आयु	५६	७२	१२०	४८	९६	२४	४०	१२०	८०	४०	२४	१२०	७२	९६	१२०	२४	१२०
व्यय	७	६	६	५	१	८	३	४	५	१	७	१	५	८	३	३	२
दाता	३	७	५	७	९	२	९	२	४	६	४	१	८	१	३	५	७

में चर लग्न और सिंह को छोड़ अन्य लग्नों में बाहरवें, आठवें स्थानों को छोड़ अन्य स्थानों में शुभग्रहों के रहने पर, तृतीय, एकादश, छठवें स्थानों में पापग्रह हों तो गृहारम्भ करना शुभ होता है।।१४४-१४५।।

वास्तुचक्रम् (ग्रन्यान्तरे) -

रविभात्सप्त नेष्टानि शुभान्येकादशाष्टभात् ।
दश शेषाण्यनिष्टानि साभिजिद्वृषवास्तुनि ।।१४६।।

सूर्य के नक्षत्र से ७ नक्षत्र अशुभ, फिर ११ नक्षत्र शुभ एवं १० नक्षत्र अशुभ वास्तुवृषचक्र में जानना।

लग्नशुद्धिः (मु० चि०) -

स्वोच्चे शुक्रे लग्नगे वा गुरौ वेश्मगतेऽथवा ।
शनौ स्वोच्चे लाभगे वा लक्ष्म्या युक्तं चिरं गृहम् ।।१४७।।
द्यूनाम्बरे यदैकोऽपि परांशस्थो ग्रहो गृहम् ।
अब्दान्तः परहस्तस्थं कुर्याच्चेद्वर्णपोऽबलः ।।१४८।।

शुक्र अपने उच्च का लग्न में हो, अथवा ४ थे स्थान में वृहस्पति अपने उच्च का हों या ग्यारहवें तुला का शनि हो तो गृहारम्भ करने से बहुत दिनों तक लक्ष्मीयुक्त गृह बना रहता है। सातवें या दशवें एक भी ग्रह शत्रु के गृह में पड़े हो परन्तु यदि वर्णपति निर्वल हो तो १ वर्ष के बाद वह मकान दूसरे के हाथ में चला जाता है (यदि वर्णेश बली हो तो ऐसा न हो)।।१४७-१४८।।

द्वारनिर्णयः -

दैर्घ्ये नवांशाः पदमत्र सव्याद् द्वारं शुभं प्राक्त्रिचतुर्थभागे ।
चतुर्थषष्ठे दिशि दक्षिणस्यां पश्चाच्चतुः पंचमके तथोदक् ।।१४९।।

गृह के लम्बाई में ९ भाग करके[1] बायें भाग के क्रम से पूर्व में ३-४ भाग में, दक्षिण में ४-६वें भाग में, पश्चिम और उत्तर में ४-५ भाग में द्वार बनाना शुभ होता है।।१४९।।

द्वारचक्रम् -

सूर्यभाद्वेदनागाष्टवह्नि - वेदमितैश्च भैः ।
शुभं नेष्टं क्रमाज्ज्ञेयं द्वारचक्रे मनीषिभिः ।।१५०।।

सूर्य के नक्षत्र से ४।८।८।३।४ नक्षत्रों में क्रम से शुभ नेष्ट फल पण्डितों ने कहा है।।१५०।।

४	८	८	३	४	नक्षत्र २७
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फल

प्रवेशमुहूर्तः (नारदः) -

प्रवेशो मध्यमो श्रेयः सौम्यकार्तिकमासयोः ।
माघफाल्गुनवैशाखमासेषु खलु शोभनः ।।१५१।।
शुभः प्रवेशो देवेज्यशुक्रयोर्दृश्यमानयोः ।
वस्वीज्य-वारुण-स्वातीदस्रमैत्र-करादिषु ।।१५२।।

मार्गशीर्ष-कार्तिक मास में प्रवेश मध्यम होता है। माघ, फाल्गुन, वैशाख महीनों में शुभ होता है। वृहस्पति, शुक्र के उदय रहने पर धनिष्ठा, पुष्य, शतभिषा, स्वाती, अश्विनी, अनुराधा, हस्त, इन नक्षत्रों में गृहप्रवेश[2] शुभ होता है।।१५१-१५२।।

---

१. दक्षिणांगः स वै प्रोक्तो मन्दिरान्निःसृते सति। यो भूयाद्दक्षिणे भागे वामे भूयात्स वामगः।। इति
२. ज्योतिःप्रकाशेः - प्रवेशो नूतने हर्म्ये ध्रुवमैत्रैः सुखाप्तये। पुष्ये स्वातियुतैस्तैश्च जीर्णे स्याद्वासवद्वये।।

विशेषः (लल्लः) -

यद्दिङ्मुखं गृहद्वारं तद्द्वारर्क्षे गृहं विशेत् ।

सूर्यारवारौ रिक्तामाकुयोगानपि वर्जयेत् ।।१५३।।

उक्त नक्षत्रो में भी जिस दिशा के मुख वाले मकान में प्रवेश करना हो उस दिशा के नक्षत्रों मे रवि, भौमवार रिक्ता (४।६।१४) अमावस्या और कुयोगों को त्याग करके प्रवेश करना शुभ होता है।।१५३।।

लग्नशुद्धिःनारदः -

स्थिरे लग्ने स्थिरे राशो नैधने शुद्धिसंयुते ।

त्रिकोण-केन्द्रस्वत्र्याय सौम्यै-स्त्र्यायारिगैः खलैः।।

लग्नान्त्यार्यष्टमस्थानवर्जितेन हिमांशुना ।।१५४।।

स्थिर लग्न स्थिर राशि में अष्टम स्थान शुभ पाप से रहित हो, (५।६।१।४।७।१०।२।३।११) में शुभग्रह, ३।६।११ में पापग्रह हो, १।१२।६।८ स्थान चन्द्रमा से रहित हो तो मकान में प्रवेश शुभ होता है।।१५४।।

कलशचक्रम् (ज्योतिष्प्रकाशे) -

भूर्वेदपंचकं त्रिस्त्रिः प्रवेशो कलशेऽर्कभात् ।

मृतिर्गतिर्धनं श्री स्याद्वैरं शुच् स्थिरता सुखम् ।।१५५।।

[1]सूर्य के नक्षत्र से १,४,४,४,४,४,३,३ नक्षत्र चन्द्रमा की हो तो क्रम से मृत्यु, गति, धन, लक्ष्मी, वैर, शोक, स्थिरता, सुख ये फल होते हैं।।१५५।।

१	४	४	४	४	४	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	गमन	धन	लक्ष्मी	वैरः	शोक	स्थिरता	सुख	फल
५अशुभ		८शुभ		८अशुभ		६शुभ		२७नक्षत्र

गृहप्रवेश वामरविः -

अष्टमात्पंचमाद्वित्ताल्लाभात्पंचस्थिते रवौ ।

पूर्वाशादिमुखं गेहं विशेद्वामो भवेद्यतः ।।१५६।।

बालबोधज्योतिषे मुहूर्तप्रकरणम् द्वितीयं समाप्तम्।।२।।

पूर्व मुख के द्वार में प्रवेश करने के लिये ८ वें से ५ (८।६।१०।११।१२) स्थानों में, दक्षिण मुख के द्वार में प्रवेश करने के लिये ५वें से ५ (५।६।७।८।६) स्थानों में, पश्चिम मुख के द्वार वाले गृह में प्रवेश करने के लिये दूसरे से ५ (२।३।४।५।६) स्थानों में, और उत्तर मुखवाले मकान में प्रवेश करने के लिये ग्यारहवें स्थान से ५ स्थान से (११।१२।१।२।३) स्थानों में सूर्य के रहने पर वाम रवि होता है। इसमें प्रवेश करना शुभ है।।१२३।।

हिन्दीटीकायां मुहूर्तप्रकरणम् द्वितीयं समाप्तम्।।२।।

---

१. अत्र मदीयं पद्यम्: - पंचेभाष्टरसैर्भहि प्रवेशे रविभात्क्रमात्। असत्सद्विबुधैर्ज्ञेयं संहितासारविद्वरैः।।

संक्रान्ति-गोचरप्रकरणम् ।।३।।

(१) तत्र संक्रान्तिसंज्ञा (मु० चि०) -

षडशीत्याननं चापनृयुक्कन्याझषे भवेत् ।
तुलाजौ विषुवं विष्णुपदं सिंहाऽलिगोघटे ।।१।।

धनु, मिथुन, कन्या, मीन, (अर्थात् द्विस्वभाव राशियाँ), षडशीत्याननसंज्ञक, तुला, मेष, विषुसंज्ञक, सिंह, वृश्चिक, वृष, कुम्भ (अर्थात् स्थिर संज्ञक राशियाँ) विष्णुपद संज्ञक हैं। (एवं कर्क और मकर संक्रान्ति क्रमशः याम्यायन (दक्षिणायन) सौम्यायन (उत्तरायण) संज्ञक है)।।१।।

पुण्यकालः (मु० चि०) -

संक्रान्तिकालादुभयत्र नाडिकाः पुण्या मताः षोडश षोडशोष्णगोः।
निशीथतोऽर्वागपरत्र संक्रमे पूर्वा-पराहान्तिमपूर्वभागयोः ।।२।।
पूर्णे निशीथे यदि संक्रमः स्याद्दिनद्वयं पुण्यमथोदयास्यात् ।
पूर्वं परस्ताद्यदि याम्यसौम्यायने दिने पूर्वपरे तु पुण्ये ।।३।।

सूर्य संक्रान्ति के समय से पूर्व और पर दोनों भाग में सोलह-सोलह घटिका पुण्यकाल होता है। यदि आधीरात के पूर्व सूर्य की संक्रान्ति लगे तो पूर्व दिन के पर भाग में, एवं आधीरात के बाद सूर्य संक्रमण हो तो अग्रिम दिन के पूर्व भाग में पुण्यकाल होता है। यदि ठीक आधीरात के समय सूर्य संक्रमण हो तो पूर्व एवं पर दिन पुण्यकाल होता है। यदि सूर्योदय के पूर्व याम्यायन संक्रमण हो तो पूर्व दिन के पर भाग में तथा सूर्यास्त के बाद सौम्यायन संक्रान्ति हो तो पर दिन के पूर्व भाग में पुण्यकाल होता है।

(मु० चि०) -

सन्ध्या त्रिनाडीप्रमितार्कबिम्बादर्धोदितास्तादधऊर्ध्वमत्र ।
चेद्याम्यसौम्ये अयंने क्रमात्तः पुण्यौ तदानीं परपूर्वघस्रौ ।।४।।

सूर्य के आधे बिम्ब के उदय होने के ३ घटी पूर्व प्रातःसंन्ध्या और सूर्य के आधे बिम्ब के अस्त होने के बाद ३ घटी सायं सन्ध्या होती है। इसमें यदि याम्यायन-सौम्यायन संक्रान्ति हो तो क्रम से पर और पूर्व दिन में पुण्यकाल होता है। (अर्थात् यदि प्रातः सन्ध्या में याम्यायन संक्रान्ति हो तो पर दिन में एवं सायं सन्ध्या में सौम्यायन संक्रान्ति हो तो पूर्व दिन में पुण्यकाल होता है)।।४।।

रव्यादिग्रहाणां संक्रमणे पुण्यकालाः -

देवद्वयङ्कर्तवोऽष्टाऽष्टौ नाड्योऽङ्काः खनृपाः क्रमात् ।
वर्ज्याः संक्रमणेऽर्कादेः प्रायोऽर्कस्याऽतिनिन्दिताः ।।५।।

सामान्यतः सूर्य की सब संक्रान्तियों में ३३ घटी, चन्द्रमा की संक्रान्ति में २ घटी, मंगल की संक्रान्ति में ९ घटी, बुध की संक्रान्ति में ६ घटी, बृहस्पति की संक्रान्ति में ८८ घटी, शुक्र की संक्रान्ति में ९ घटी एवं शनि की संक्रान्ति में १६० घटी पुण्यकाल होता है। इनको हरेक शुभकार्यो में वर्जित करना चाहिये किन्तु प्रायः सूर्य की संक्रान्ति ही अति निन्दनीय है।।५।।

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
३३	२	९	६	८८	९	१६०	पुण्यघटी

वस्तुमहर्घादिज्ञानाय जघन्यादिसंज्ञा –

जघन्यधिष्णानि जलेशसर्परौद्रेन्द्रयाम्याऽनिलदैवतानि ।
अध्यर्धधिष्ण्यान्यदितिद्विदैवं स्थिराणि शेषर्क्षसमाह्वयानि ।।६।।
बृहत्सु धान्यं कुरुते समर्घं जघन्यधिष्ण्याऽभ्युदिते महर्घम् ।
समेषु धिष्ण्येषु समं हिमांशुर्वदन्त्यसन्दिग्धमिदं महान्तः ।।७।।

शतभिषा, आश्लेषा, आर्द्रा, ज्येष्ठा, भरणी, स्वाती ये ६ नक्षत्र जघन्य संज्ञक, पुनर्वसू, विशाखा स्थिरसंज्ञक (तीनों उत्तरा, रोहिणी) ये ६ नक्षत्र बृहत्संज्ञक और अवशिष्ट (अश्वनी, कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, मघा, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती) ये १५ नक्षत्र समसंज्ञक हैं। वृहत्संज्ञक नक्षत्रों में सूर्य की संक्रान्ति या प्रथम चन्द्रदर्शन हो तो उस मास में सस्ती होती है, जघन्य संज्ञक में संक्रान्ति और चन्द्रदर्शन होने पर मंहगी एवं समसंज्ञक नक्षत्रों में संक्रमण और चन्द्रदर्शन होने से समता रहती है इसप्रकार बड़े बड़े पण्डितों ने निश्चय करके कहा है।।६-७।।

अन्यप्रकारेण महर्घादिज्ञानम् –

संक्रान्तिऋक्षं तिथिवारयुक्तं धान्याक्षरैर्मिश्रितरामभक्तम् ।
एकेन वृद्धिं समतां द्वितीये शून्येन हानिं मुनयो वदन्ति ।।८।।

सूर्य की संक्रान्ति का नक्षत्र तथा तिथि वार एवं धान्यादि वस्तु के नाम अक्षरों को जोड़कर ३ से भाग देना यदि १ शेष वचे तो वढ़ती, दो शेष वचने पर समता और शून्य शेष वचने पर हानि होती है। ऐसा मुनियों ने कहा है।।८।।

वस्तु	ध्रुवांक	वस्तु	ध्रुवांक	वस्तु	ध्रुवांक	वस्तु	ध्रुवांक	वस्तु	ध्रुवांक	वस्तु	ध्रुवांक
सुवर्ण	६६	कपास	१२७	नमक	५६	गेहू	१४	चावल	८७	हाथी	६४
चांदी	८१	सूत	६४	तिल	५३	यव	५७	कांगुनी	२०	घोड़ा	७७०
पीतल	५६	कपड़ा	१००	सरसों	८८	चावल	१७	कुलथी	६२	गाय	७७
लोहा	५४	घृत	५०	राई	७७	चना	५६	सोठ	१००	भैस	६२
शीसा	६०	तैल	१०	कपूर	१०२	जुवार	१००	छोहारा	१४४	बकरी	६०
कांसा	१२७	शक्कर	१०२	जीरा	७०	मूंग	५१	मंजीठ	१४४	वैल	८७
तांवा	१०	मिश्री	१०३	सुपारी	२०४	अरहर	७२	हरड	७३	ऊँट	८५
मोती	६५	गुड़	४०	नारियल	७८	उड़द	८०	कुमकुम	२५	हींग	६२
संक्रान्ति	**ध्रुवांक**	**तिथि**	**ध्रुवांक**	**तिथि**	**ध्रुवांक**	**वार**	**ध्रुवांक**	**नक्षत्र**	**ध्रुवांक**	**नक्षत्र**	**ध्रुवांक**
मेष	३७	प्रतिपद	१८	नवमी	१६	रवि	४०	अश्वि.	१०	हस्त	३३४
वृषभ	८४	द्वितीया	२०	दशमी	१७	सोम	५०	भरणी	१०	चित्रा	२१
मिथु.	६६	तृतीया	२२	एका.	१५	मंगल	५७	कृत्ति.	६६	स्वाती	२१०
कर्क	१०६	चतुर्थी	२४	द्वादशी	१३	वुध	७२	रोहि.	५६	विशा.	३२०
सिंह	१२५	पंचमी	२६	त्रयो.	११	गुरु	६५	मृग.	२०	अनु.	४६३
कन्या	१०२	षष्ठी	२५	चतु.	६	शुक्र	२४	आर्द्रा	८६	ज्ये.	५५६
तुला	१४०	सप्तमी	२३	पूर्णि.	१६	शनि	१४	पुन.	२१	मूल	५५२
वृश्चि.	१४४	अष्टमी	२१	अमा.	७			पुष्य	६४	पू.षा.	१४२
धनु	१४४					पू.भा.	२७५	श्लेषा	१३५	उ.श्रा.	४२०
मकर	१६८					उ.भा.	१२६	मघा	१५०	श्रवण	५५०
कुम्भ	१६०					रेवती	२५६	पू.फा.	२२०	धनि.	७३६
मीन	१८०							उ.फा.	७२	शत.	५७६

वस्तुओं की तेजी-मंदी देखना हो उस दिन का तिथि, वार, नक्षत्र व संक्रान्ति का ध्रुवांक व उस-उस वस्तु का ध्रुवांक सबको एक साथ योग कर तीन का भाग देवे। यदि एक शेषवचे तो वह वस्तु सस्ती होगी। जिसका ध्रुवांक योग किया है। यदि दो शेष वचे तो मूल्य स्थिर रहेगा और यदि शून्य शेष वचे तो उस वस्तु के दाम में अवश्य तेजी आवेगी।

प्रसंगाद् वृष्टिविचारः –

दशार्द्राद्याः स्त्रियस्तारा विशाखाद्या नपुंसकाः ।
तिस्रस्ततश्च मूलाद्याः पुरुषाश्च चतुर्दश ।।९।।
स्त्रीपुन्सोश्च महावृष्टिः स्त्रीनपुंसकयोः क्वचित् ।
स्त्रीस्त्रियोः शीतलच्छाया योगः पुरुषयोर्न च ।।१०।।

आर्द्रा से दश नक्षत्र स्त्री संज्ञक, विशाखा से ३ नक्षत्र नपुंसक संज्ञक और मूल से १४ नक्षत्र पुरुष संज्ञक हैं। इन नक्षत्रों में से सूर्य और चन्द्र में से एक स्त्री संज्ञक, दूसरा पुरुषसंज्ञक नक्षत्र पर हो तो वहुत वर्षा होती है। स्त्री- नपुंसक पर हो तो कहीं कहीं, स्त्री-स्त्री पर हो तो केवल छाया होने के कारण ठण्डक मात्र रहती है और पुरुष-पुरुष पर सूर्य चन्द्र दोनों हो तो कदापि वृष्टि नहीं होती है।।९-१०।।

अन्यच्च: –

आर्द्रादिपंचकं पूभारेवत्यादिचतुष्टयम् ।
पूर्वाषाढाचतुष्कंच चंद्रर्क्षाणि चतुर्दश ।।११।।
शेषाणि रविधिष्ण्यानि विज्ञेयानि मनीषिभिः ।
सूर्ये चन्द्रर्क्षगे वृष्टिश्चन्द्रे सूर्यर्क्षगे तथा ।।१२।।
उभौ चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदा भवेत् ।
तावेवं यदि सूर्यर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते ।।१३।।

आर्द्रा से ५ नक्षत्र (आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा एवं मघा) पूर्वाभाद्रपद, रेवती से ४ नक्षत्र (रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका), पूर्वाषाढ़ा से ४ नक्षत्र (पू.षा., उ.षा., श्रवण और धनिष्ठा) ये १४ नक्षत्र चन्द्रमा के होते हैं। शेष सूर्य नक्षत्र हैं। चन्द्र नक्षत्र में सूर्य के होने पर वर्षा होती है। सूर्य नक्षत्र में चन्द्र के होने पर भी वर्षा होती है। सूर्य तथा चन्द्र, चन्द्र के नक्षत्र में रहने पर स्वल्प वर्षा होती है। सूर्य-चन्द्र यदि सूर्य के नक्षत्र में हों तो वर्षा नहीं होती है (अर्थात् सूखा पड़ता है) कुछ आचार्यों का इस प्रकार मत है।

अन्ये वृष्टियोगाः –

उदयास्तंगतो शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः ।
जलराशिगते चन्द्रे पक्षान्ते संक्रमे तथा ।।१४।।
बुधः शुक्रसमीपस्थः करोत्येकार्णवां महीम् ।
तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत् ।।१५।।
चलत्यङ्गारके वृष्टिस्त्रिधा वृष्टिः शनैश्चरे ।
परिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्संचरते गुरुः ।।१६।।
भानोरग्रे महीपुत्रो जलशोषः प्रजायते ।
भानोः पश्चाद्धरासूनुर्वृष्टिर्भवति भूयसी ।।१७।।
एकराशौ यदा यान्ति चत्वारो पंच वा ग्रहाः ।
प्लावयन्ति महीं कृत्स्नां रुधिरेण जलेन वा ।।१८।।

शुक्र और वुध उदय और अस्त होते समय वृष्टिकारक होते हैं। पक्ष के अन्त में सूर्यसंक्रमण हो उसी दिन जलचर राशिके चन्द्रमा भी हो तो भी वृष्टियोग समझना चाहिये। वुध, शुक्र केसमीप हो तो एकार्णवा पृथिवी हो जाती है। (अर्थात् खूब वर्षा होती है) और उन्हीं दोनों (वुध और शुक्र) के वीच

में सूर्य के आ जाने पर समुद्र भी सूख जाता है (अर्थात् वर्षा नहीं होती)। मंगल के अतिचार होने पर और शनि की तीनों अवस्थाओं (उदयास्त, वक्र, अतिचार) में वृष्टि होती है। बृहस्पति पहले पृथिवी को जल से पूर्ण करके तब मार्गी होता है। अर्थात् गुरु के मार्गी के पूर्व ही अत्यन्त वृष्टि होती है। यदि सूर्य के आगे मंगल हो तो जलशोष (अनावृष्टि) होता है। यदि सूर्य के पीछे मंगल हो तो बहुत अच्छी वृष्टि होती है। एक राशि पर ४ या ५ ग्रह एकत्रित हो जाँय तो पृथ्वी को रुधिर से या जल से प्लावित कर देते है।।१४-१८।।

(२) अथ गोचर प्रकरणं तत्र सामान्यतो भावस्थ ग्रहफलानि –

धनजन्मनि पंचमसप्तमगाश्चतुरष्टमद्वादशधर्मयुताः ।
धनधान्यहिरण्यविनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः ।।१९।।
तृतीयैकादशे षष्ठे शन्यर्ककुजराहवः ।
चत्वारस्तस्य राज्यं वा शरीरे सौख्यमादिशेत् ।।२०।।
द्वादशदशमचतुर्थे जन्मनि षष्ठाष्टमे तृतीये च ।
व्याधिं विदेशगमनं मित्रविरोधं सुरगुरुः कुरुते ।।२१।।
द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः ।
सार्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत् ।।२२।।

दूसरे, जन्म के, पांचवे, सातवें, चौथे, आठवें, बारहवें, नववें स्थानों में यदि सूर्य, राहू, शनैश्चर, मंगल गोचर से हो तो धन, धान्य, सुवर्ण इत्यादि सम्पत्तियों को नष्ट कराने वाले, (मित्रों को भी शत्रु बना देने वाले, शत्रुओं का तो कहना ही क्या है, अनायास नाना प्रकार की हृदय में चिन्ता करने वाले, शारीरिक कष्ट देने वाले, इत्यादि) होते हैं। तीसरे, ग्यारहवें, छठवें, शनि, सूर्य, मंगल, राहु हो तो राज्य, नाना प्रकार के शारीरिक सुख देते हैं। बारहवें, दशवें, चौथे, जन्म के, छठवें, आठवें, तीसरे राशियों पर गोचर में बृहस्पति के आ जाने पर नाना प्रकार की व्याधि, विदेशगमन, मित्रों से विरोध इत्यादि होता है। बारहवें जन्म के और दूसरे शनि हो तो साढ़ेसाती कहलाती है। साढ़ेसाती होने पर दुःख, आधि- व्याधि इत्यादि से पीड़ा होती है।।१९-२२।।

अथ चन्द्रविचारः (ग्रन्थान्तरे) –

आद्यश्चन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके ।
तृतीये धनसम्पत्तिं चतुर्थे कलहागमम् ।।२३।।
पञ्चमे ज्ञानवृद्धिं च षष्ठे सम्पत्तिमुत्तमाम् ।
सप्तमे राजसम्मानमष्टमे प्राणसंशयः ।।२४।।
नवमे धर्मलाभश्च दशमे मानसेप्सितम् ।
एकादशे सर्वलाभं द्वादशे हानिमेव च ।।२५।।
स्वीयराशौ स्वोच्चराशौ श्रेष्ठं चन्द्रबलं तथा ।
कृष्णपक्षे द्वितीयस्तु पञ्चमे नवमेऽशुभः ।।२६।।

जन्मलग्न का चन्द्रमा लक्ष्मी को देता है। द्वितीय राशि का सन्तोष, तृतीय राशि का धन और सम्पत्ति, चतुर्थ राशि का कलह, पाँचवें राशि का ज्ञान की वृद्धि, षष्ठ राशि का उत्तम सम्पत्ति, सप्तम राशि का राजा से सम्मान, अष्टम राशि का प्राण संशय, नवम राशि का धर्म का लाभ, दशम राशि का मन के अभीष्ट की सिद्धि, एकादश राशि का चन्द्रमा सर्वप्रकार का लाभ और, द्वादश राशि का चन्द्रमा हानि करता है। अपने राशि, अपने उच्चराशि का चन्द्रमा वली और शुभदायक होता है। कृष्णपक्ष में द्वितीय, पञ्चम, नवम चन्द्रमा अशुभ होता है।।२३-२६।।

शनिपाद –

जन्माङ्गरुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दे रजतस्य पादम् ।
त्रिसप्तदिक्ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्ट सार्केष्विह लोहपादम् ।।२३।।

शनि के राशि संक्रमण के समय यदि जन्म राशि से १।६।११ स्थानों पर चन्द्रमा हो तो शनि सुवर्ण पाद का होता है। २।५।९ स्थानों पर चन्द्रमा के रहने से रजत पाद का होता है। ३।१०।७ वें स्थानों में चन्द्रमा हो तो ताम्र पाद का एवं ४।१२।८ वें स्थानों में चन्द्रमा हो तो लोहका पाद होता है। सुवर्ण, चांदी का पाद शुभ, ताम्र का पाद मध्यम एवं लोह पाद अशुमफल कारक होता है।।२३।।

शनिवाहनानि –

तिथिवारञ्च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं वाहनमुच्यते ।।२४।।
गर्दभस्तुरगो हस्ती मेषो जम्बुकसिंहकौ ।
काको मयूरो हंसाश्च नवैते शनिवाहनाः ।।२५।।
गर्दभे च महाःदुखं वाजिने सुखसंपदः ।
गजे मिष्ठान्नभोजी स्यान्मेषे विमुखतो भवेत् ।।२६।।
जम्बुके मरणं ज्ञेयं सिंहे शत्रुविनाशनम् ।
काके च मरणं ज्ञेयं मयूरेऽर्थसुखे भवेत् ।।
हंसे च राजसन्मानं वाहनानां फलं त्विदम् ।।२७।।

तिथि वार नक्षत्र और नाम के अक्षर इन सबों को जोड़ के ९ का भाग देने पर एक, दो इत्यादि शेष वचने पर क्रम से १ गर्दभ, २ तुरंग, ३ हस्ती, ४ मेष, ५ जम्बुक, ६ सिंह, ७ काक, ८ मयुर, ९ हंस ये शनिवाहन होते हैं। गर्दभ वाहन हो तो महादुख, वाजिवाहन हो तो सुख सम्पति, गज वाहन में मिष्टान्न भोजन, मेष वाहन में विमुखता, जम्बुक (श्रृगाल) एवं काक वाहन मे मरण, सिंह वाहन हो तो शत्रु का नाश, मयूर वाहन में सुख, और अर्थलाभ, हंस वाहन में राजा से सम्मान प्राप्त होता है। ऐसा वाहनों का फल कहा है।।२४-२७।।

ग्रहाणां स्नानौषधयो दानानि च (मू० चि०) –

लाजाकुष्टबलाप्रियंगुघनसिद्धार्थैर्निशादारुभिः
पुंखालोध्रयुतैर्जलैर्निगदितं स्नानं ग्रहोत्थाघहृत् ।
धेनुः कम्ब्वरुणो वृषश्च कनकं पीताम्बरं घोटकः
श्वेतो गौरसिता महासिरज इत्येता रवेर्दक्षिणाः ।।२८।।

लाजा, कुटकी, बला, प्रियंगु, नागरमोथा, सरसों, हरदी, दारुहरदी, पुंखा, लोध इत्यादि औषधियों को जल में छोड़ कर स्नान करने से ग्रहों के दोष का नाश हो जाता है। एवं सूर्य के अनिष्टशान्त्यर्थ धेनु, चन्द्रमा के लिये शंख, मंगल के लिये लाल वैल, वुध के लिये सुवर्ण, वृहस्पति के लिये पीताम्वर, शुक्र के लिये सफेद घोड़ा, शनि के लिये काली गौ, राहु-केतु के वास्ते वड़ी तलवार और मेढा (वकरा) ये सब दक्षिणा सूर्यादि ग्रहों के लिये देना चाहिये।।२८।।

ग्रहदोषनिवृत्यर्थं रत्नधारणम् (मू० चि०) –

माणिक्य-मुक्ताफल-विद्रुमाणि गारुत्मक पुष्पक-वज्र-नीलम् ।
गोमेद-वैडूर्यकमर्कतः स्यु रत्नाम्यथो ज्ञस्य मुदे सुवर्णम् ।।
धार्य लाजावर्तकं राहुकेत्वो रौप्यं शुक्रन्द्वोश्च मुक्ता गुरोस्तु ।
लोहं मन्दस्यारभान्वोः प्रवालम् ।।२९।।

सूर्य का माणिक्य, चन्द्रमा का मोती, मंगल का मूंगा, बुध का पन्ना, गुरु का पुखराज, शुक्र का हीरा, शनि का नीलम, राहू का गोमेदक और केतु का मरकतमणि (लहसुनियां) रत्न होते है। बुध के लिये स्वर्ण, राहु केतु के लिए लाजावर्त, शुक्र तथा चन्द्र के लिये चांदी, गुरु के लिए मुक्ता तथा शनि के लिए लोहा (त्रिलोह), सूर्य और मंगल के लिए प्रवाल आदि उपरत्न कहे गये हैं।।२६।।

दानकालः-

सूर्यादिकानां यद्दानं जपहोमार्चनादिकम् ।
तेषां वारे प्रकुर्वीत संतुष्टास्ते भवन्ति हि ।।३०।।

सूर्यादि ग्रहों के वास्ते जो दान, जप इत्यादि कहे हैं उनको उन्हीं ग्रहों के वारों में करने चाहिये।।३०।। (देखिये नवग्रह स्तोत्र संग्रह, सम्पादक- रामजन्म मिश्र)

विशेषोपायः-

देवब्राह्मणपूजनाद् गुरुवचःसम्पादनात्प्रत्यहं
साधूनामभिभाषणाच्छ्रुतिरवश्रेयस्कथाकर्णनात् ।
होमादध्वरदर्शनाच्छुचिमनोभावाज्जपाद्दानतो
नो कुर्वन्ति कदाचिदेव पुरुषस्यैवं ग्रहाः पीडनम् ।।३१।।

देवता, ब्राह्मणों का पूजन करने से, गुरुओं के कथनानुसार चलने से, साधुओं के सहवास से, वेदध्वनि श्रवण करने से, धार्मिक कथाओं के सुनने से, देवताओं के निमित्त हवन करने से, यज्ञों का दर्शन व अनुष्ठान करने से, पवित्र अन्तःकरण से भगवद्भजन, जप, दान इत्यादि करने से ग्रह लोगो को पीड़ा कभी नहीं देते।।३१।।

ग्रहाणां फल (दान) कालः-

प्रवेशकाले भौमार्कौ शुक्रेज्यौ राशिमध्यगौ ।
निर्गच्छन्तौ शनीन्दू च सर्वदा फलदो बुधः ।।३२।।
सूर्यारसौम्याऽऽस्फुजितोऽक्षनागसप्ताद्रिघस्रान्विधुरग्निनाडीः ।
तमो यमेज्याब्रिरसाश्विमासान् गन्तव्यराशेः फलदाः पुरस्तात् ।।३३।।

मंगल, सूर्य राशि के आदि में, शुक्र-वृहस्पति राशि के मध्य में, शनि चन्द्रमा राशि के अन्त में और बुध सर्वदा फल देते हैं। सूर्य ६ दिन पूर्व, मंगल ८ दिन पूर्व, बुध ७ दिन पूर्व, शुक्र ७ दिन पूर्व, चन्द्रमा ३ घटी पहले, राहु ३ मास पूर्व, शनैश्चर ६ मास पहले, बृहस्पति २ महीने पूर्व से ही आगे जाने वाली राशि का फल देने लगते हैं।।३२-३३।।

ग्रहफलम्-

त्रिषड्दशायोपगतं नराणां शुभप्रदं स्याद् ग्रहणं रवीन्द्वोः ।
द्विसप्तनन्देषु च मध्यम स्याच्छेषेष्वनिष्टं मुनयो वदन्ति ।।३४।।
गोदानं भूमिदानं च स्वर्णदानं विशेषतः ।
ग्रहणे क्लेशनाशाय दैवज्ञाय निवेदयेत् ।।३५।।

बालबोधज्योतिषे संक्रान्ति-गोचरप्रकरणम् तृतीयं समाप्तम्।।३।।

जन्म राशि से तीसरे, छठवें, दशवें, ग्यारहवें राशि पर सूर्य वा चन्द्रमा का ग्रहण लगे तो मनुष्यों को शुभप्रद होता है। दूसरे, सातवें, नववें राशियों पर ग्रहण लगने से मध्यम और शेष राशियों पर अनिष्ट फल दायक होता है। ग्रहण दोष की शान्ति हेतु ज्योतिषियों को गौ, भूमि, स्वर्ण आदि का दान देना चाहिये।

हिन्दीटीकायां संक्रान्ति-गोचरप्रकरणम् तृतीयं समाप्तम्।।३।।

संस्कारप्रकरणम् ।।४।।

ऋतुस्नानमुहूर्तः (मु० चि०) -

हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः
शक्रान्वितैः शुभतिथौ शुभवासरे च।
स्नायादथार्तववती मृगपौष्णवायु-
हस्ताश्विधातृभिररं लभते च गर्भम्।।१।।

हस्त, स्वाती, अश्विनी, मृगशिरा, अनुराधा, धनिष्ठा, ध्रुवसंज्ञक (तीनों उत्तरा, रोहिणी) ज्येष्ठा इन ११ नक्षत्रों में शुभतिथियों (२।३।५।७।१०।११।१२) में, शुभवारों (बुध, गुरु, शुक्र, सोम) में ऋतुमती स्त्री को स्नान करना चाहिये। मृगशिरा, रेवती, स्वाती, हस्त, अश्विनी, रोहिणी इन नक्षत्रों में ऋतुमती स्नान करे तो बहुत शीघ्र गर्भ धारण करती है।।१।।

गर्भाधानमुहूर्तः (मु० मार्तण्डे)

स्वर्क्षीं प्राङ्निट्चतुष्कासमदिनविवरश्राद्धतत्प्राग्दिनानि
त्यक्त्वा मूलं मघान्त्ये वसुकलिजनिमाहानि पर्वाणि चर्तौ।
याहीज्यार्केन्दुलग्नैर्विषममलगवगैरुद्बलैर्भो सुतार्थिन्
व्यस्तैरेतैरिहैवायुगहनि मुदितः कन्यकेच्छो! सुचन्द्रे ।।२।।

ऋतु दर्शन से पहले की चार रात्रि, विषम (५।७।६।११।१३।१५) दिन तीनों गण्डान्त, श्राद्ध का दिन, तथा श्राद्ध के पूर्व का दिन, मूल, मघा, रेवती ये नक्षत्र अष्टमी, चतुर्दशी, जन्म का दिन और पर्व (१४।८।३०।१५) इन सबों को छोड़कर स्त्री के ऋतु होने पर अपनी स्त्री के पास गर्भाधानार्थ जाना चाहिये। यदि पुत्र पैदा करने की इच्छा हो तो बृहस्पति, सूर्य, चन्द्रमा और लग्न ये विषम राशि तथा नवामांश में विशेष बलवान् होकर स्थित हों तब प्रसन्न चित्त होकर प्रसन्नचित्त पत्नी के पास जाना चाहिये। और यदि कन्या पैदा करने की इच्छा हो तो पूर्वोक्त त्याज्यसमय को छोड़कर बृहस्पति, सूर्य, चन्द्रमा लग्न इसके समराशि के नवमांश में रहने पर प्रसन्नमन होकर अपनी स्त्री से विहार करे। उस दिन स्त्री और पुरुष दोनों के लिये शुभ चन्द्रमा होना चाहिये।।२।।

सूतीस्नानमुहूर्तः (मु० चि०) -

पौष्णध्रुवेन्दुकरवातहयेषु सूतीस्नानं समित्रभरवीज्यकुजेषु शस्तम् ।
नार्द्रात्रयश्रुतिमघान्तकमिश्रमूलत्वाष्ट्रेज्ञसौरिवसुषड्द्रविरिक्ततिथ्याम् ।।३।।

रेवती, ध्रुवसंज्ञक (तीनों उत्तरा, रोहिणी) मृगशिरा, हस्त, स्वाती, अश्विनी और अनुराधा इन १० नक्षत्रों में रवि, गुरु, भौम इन वारों में, सूतिका स्त्री का प्रथम स्नान करना शुभ होता है। आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी, मिश्र संज्ञक (विशाखा, कृत्तिका), मूल और चित्रा ये नक्षत्र बुध, शनिवार, अष्टमी, षष्ठी, द्वादशी रिक्ता (४।६।१४) ये तिथयां सूतीस्नान में शुभ नहीं हैं। बाकी नक्षत्र, वार, तिथियां सूतीस्नान में मध्यम है।।३।।

सूतिका क्वाथमुहूर्तः -

भेषज्यगदिते वारे भे च दुर्योगवर्जिते ।
शुभदृष्टियुते लग्ने सूतिकाक्वाथमाचरेत् ।।४।।

भैषज्य कर्म में कथित नक्षत्र वार (देखें मुहूर्तरत्न श्लोक ६७) लग्न में शुभग्रह के रहने पर सूतिका को क्वाथ देना शुभ होता है।।४।।

स्त्रियश्चन्द्रबलविचारः (राजमार्तण्डे) –

विवाहकार्यं – कुसुमप्रतिष्ठा – गर्भप्रतिष्ठा – वनिताविशुद्धौ ।
अन्यानि कार्याणि धवस्य शुद्धौ पत्यौविहीने प्रमदाऽऽत्मशुद्ध्या ।।५।।

विवाहसंस्कार, ऋतुदर्शन तथा गर्भाधान संस्कार में स्त्री की राशि से चन्द्र बल तथा शेष कार्यों में पुरुष के नाम से ही चन्द्रबल स्त्री का भी देखना चाहिये। विधवा का उसी के नाम से चन्द्रवल देखना चाहिये।

स्तनपानमुहूर्तः –

रिक्तां भौमं परित्यज्य विष्टिं पातं सवैधृतिम् ।
मृदुध्रुवक्षिप्रभेषु स्तन्यपानं हितं शिशोः ।।६।।

रिक्ता तिथि, शनि, भौमवार, भद्रा, व्यतीपात और वैधृतियोग इनको छोड़कर मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्रों में बालक को प्रथमवार दूध पान कराना शुभ होता है।।६।।

नामकरण –

न प्रोक्ताङञणा वर्णा नामादौ सन्ति ते नहि।
चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया गजडास्ते यथाक्रमम् ।।७।।

जिस नक्षत्र के जिस चरणाक्षर में जन्म हो मनुष्य के नाम का प्रथमाक्षर वही चरणाक्षर होना चाहिये। नाम के आदि में ङ, ञ, ण, वर्ग नहीं हो सकते अतः यदि नाम के प्रथम यही अक्षर प्राप्त हों तो उनकी जगह पर क्रम से ग, ज, ड कल्पना करके नाम रखना चाहिये (और उसका विवरण जन्मकुण्डली में उसी जगह लिख देना चाहिये)।।७।।

नामकरण प्रयोजनम् –

नामाखिलस्य व्यवहारहेतुः शुभावहं कर्मसु भाग्यहेतुः।
नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म।।८।।

सांसारिक सम्पूर्ण व्यावहारिक कार्यों का कारण नाम ही है (अर्थात् नाम के बिना सांसारिक कोई व्यावहारिक कार्य नहीं हो सकता)। सब कार्यों में शुभ को देनेवाला तथा भाग्य का कारण नाम ही है। नाम ही से मनुष्य कीर्ति प्राप्त करता है। इसलिये मनुष्य का नामकरण करना परमावश्यक है।।८।।

नामविचारः –

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे।
जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ।।९।।
देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यावहारिके ।
नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ।।१०।।

विवाह में, सब मांगलिक कार्यो में, यात्रा में ग्रहगोचर में, जन्म राशि की प्रधानता है, इन कार्यों में नामराशि से विचार नहीं करना चाहिये। देश, ग्राम, गृह के विचार में, युद्ध में, सेवा (नौकरी करने) में व्यावहारिक कार्यों में नामराशि की ही प्रधानता है, जन्मराशि से विचार नहीं करना चाहिये।९-१०।।

नाम्नां बहुत्वे ग्राह्यं नाम –

बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन।
तस्य पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वरविशारदैः ।।११।।

जिस मनुष्य के वहुत से व्यावहारिक (पुकारने के) नाम हों उनमें जो सबसे पीछे नाम रखा गया हो उसी नाम को ग्रहण करना चाहिये। ऐसा स्वरशास्त्र के पण्डितो ने कहा है।।११।।

अथवा –

प्रसुप्तो येन जागर्ति येनाऽऽगच्छति शाब्दितः।
तत्र नामादिमो वर्णो ग्राह्यः स्वरविशारदैः ।।१२।।

जिस नाम के पुकारने पर मनुष्य सोने से जाग उठे, बुलाने पर दूर से चला आवे उस नाम के प्रथमाक्षर से नक्षत्र ग्रहण करना चाहिये।।१२।।

नक्षत्रदोषः –

पौष्णाश्विनी तिष्यसार्पमघाचित्रेन्द्रमूलमम् ।
एषु ऋक्षेषु जातानां कुर्याद्गोयजनं तथा ।।१३।।

रेवती, अश्विनी, पुष्य, आश्लेषा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा मूल इन ८ नक्षत्रों में बालक का जन्म हो तो नक्षत्र शान्ति हेतु गोपूजन एवं गोदान कराना चाहिये। तिथि वार, नक्षत्र गण्डान्त, व्यतीपात एक नक्षत्र में जन्म यमलजात-त्रितर-अमावस्या आदि में जन्म लेने वाले बालक की भी शान्ति करानी चाहिये।।१३।।

जातकर्म-नामकरणमुहूर्तः[1] –

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु भेषु चारिक्तपर्वाख्यदिनेषु कार्यम् ।
शुभग्रहाणां दिनलग्नवर्गे तज्जातकर्म त्वथ नामधेयत् ।।१४।।

मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, चरसंज्ञक नक्षत्रों में, रिक्ता-पर्वादि तिथि को छोड़ शुभग्रहों के वार, लग्न और वर्गो में बालक का जातकर्म तथा नामकरण करना शुभ होता है।।१४।।

विशेषः (मनुः) –

नामधेयं दशम्यां तु द्वादस्यां चास्य कारयेत् ।
पुण्ये तिथौ मुहूर्ते वा नक्षत्रे वा गुणान्विते ।।१५।।

दशवें अथवा बारहवें दिन पुनीत तिथि मुहूर्त, गुणवान् नक्षत्रों में बालक का नामकरण संस्कार करना चाहिये।

दन्तजननफलम् *(मु० चि०)*

मासे चेत्प्रथमे भवेत्सदशनो बालो विनश्येत्स्वयं
हन्यात्स क्रमतोऽनुजातभगिनी-मात्रग्रजान्द्वयादिके ।
षष्ठादौ लभते ही भोगमतुलं तातात्सुखं पुष्टतां
लक्ष्मीं सौख्यमथो जनौ सदशनो वोर्ध्वं स्वपित्रादिहा ।।१६।।

---

१. प्रसंगान्महोपयोगित्वाच्च सूतिकाविषय इह संक्षेपतः प्रदर्श्यते, तत्रोपसूतिका संख्याज्ञानं (सारावल्यम्) –
शशिलग्नविवरयुक्ता ग्रहतुल्याः सूतिकाश्च विज्ञेयाः। अनुदितचक्रार्द्धयुतैरन्तर्बहिरन्यथा वदन्त्येके।।
लक्षणरूपविभूषणयोगास्तासां शुभैर्योगात्। क्रूरैर्विरूपदेहा लक्षणहीनाश्व रौद्रमलिनाश्च।।
मिश्रैर्मध्यमरूपा बलसहितैः सर्वमवधार्यम्।

विशेषः– पापग्रहैस्तु विधवा सधवा सौम्यखेचरैः। क्रूरग्रहैः कुमारी स्याज्ज्ञात्वैवं निगदेद्बुधः।।

सूतिकावस्त्रम् –
अरुणधवलचापी पाटलो तोयदामं रजनि धवलयुक्तो चित्रवर्णोऽथ कृष्णः।
कनकरजनिवर्णो कर्बुरा वभ्रु स्वक्षः क्रियत इह हि वाच्यं चाम्बरं सूतिकायाः।।
मातृवस्त्रं वदेत्तत्र वा विलग्ननवांशपात्।

भोजनम् – तुर्येशवशतो वाच्यं सूतेः प्राङ्मातृभोजनम्। कठिनं मधुरं रूक्षं लेह्यपेयादिकं मृदु।।
शोषणाम्लगुडं दुग्धं विचित्रं स्वल्पभोजनम्। वटकाद्यं बहुरसं पेयादि मधुरं हिमम्।।
क्रोधादिना कदन्नं स्यात्सूर्यादेः श्लोकपादतः।

चूडिका – यावत्संख्या ग्रहाणां च चतुर्थदशमे गृहे। दृष्टिः स्यात्तावता ज्ञेया चूडिका वर्णमादिशेत्।।

समस्तवास्तूनि क्व सूतिकागारम् –
मेषकुलीस्तुलालिघटैः प्रागुत्तरतो गुरुसौम्यगृहेषु। पश्चिमतश्च वृषेण निवासो दक्षिणभागकरौ मृगसिंहौ।।

सूतिकागारे क्व शयनम् –
प्राच्यादिगृहे क्रियादयो द्वौ द्वौ कोणगता द्विमूर्तयः। शय्यास्वपि वास्तुवद्वदेत्पादैः षट्त्रिनवान्त्यसंस्थितैः।।

मातुः क्लेशादिज्ञानम् – क्लेशो मातुः क्रूरैर्वन्ध्वस्तगतैः शशांक युक्तैर्वा।

बालकशिरोज्ञानम् – दिग्द्वारभे लग्नगते तद्दिक्शीर्षो भवेच्छिशुः।

दीपगृहद्वारयोर्ज्ञानं – स्नेहः शशांकादुदयाच्च वर्ती दीपोऽर्कयुक्तर्क्षवशाच्चराद्यैः।
द्वारं च तद्वास्तुनि केन्द्रसंस्थैर्ज्ञेयं ग्रहैर्वीर्यसमन्वितैर्वा।।

यदि प्रथम मास (जन्म दिन से ३० दिन के भीतर) में ही बालक को दाँत जम जाँय तो वह स्वयं नष्ट हो जाता है। यदि दूसरे मास में दाँत जमे तो छोटे भाई को, तीसरे में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई को नष्ट करता है, तथा छठवें महीने में दाँत जमें तो अत्यन्त सुख भोगने वाला, सातवें महीने में पिता से सुखी, आठवें मास में बलिष्ठ (पहलवान्) नवे मास में लक्ष्मीवान्, दसवें (ग्यारहवें तथा बारहवें) मास में दाँत जमने से सुखी होता है। यदि जन्म समय में दाँत सहित अथवा ऊपर वाली पंक्ति में दाँत जमे तो पिता इत्यादि का नाश करने वाला होता है।।१६।।

सूतिकाजलपूजनमुहूर्तः (मु० चि०) –

कवीज्यास्तचैत्राधिमासे न पौषे जलं पूजयेत्सूतिका मासपूर्तौ।
बुधेन्द्वीज्यवारे विरिक्ते तिथौ हि श्रुतीज्यादितीन्द्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रैः।।१७।।

शुक्र और बृहस्पति के अस्त होने पर चैत्र, अधिमास, पौष इन सबों को छोड़कर सन्तान पैदा होने से १ मास के बाद, बुध, सोम, गुरु इन वारों में, रिक्ता को छोड़ अन्य तिथियों में श्रवण, पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिरा, हस्त, मूल, अनुराधा इन नक्षत्रों में सूतिका स्त्री को जल का पूजन करना शुभ होता है।।१७।।

अन्नप्राशन मुहूर्तः (मु० चि०) –

रिक्तानन्दाष्टदर्शं हरिदिवसमथो सौरिभौमार्कवारान्
लग्नं जन्मर्क्षलग्नाष्टमगृहलवगं मीनमेषाऽलिकं च।
हित्वा षष्ठात्समे मास्यथ हि मृगदृशां पंचमादोजमासे
नक्षत्रैः स्यात्स्थिराख्यैः समृदुलघुचरैर्बालकाऽन्नाशनं सत् ।।१८।।
केन्द्रत्रिकोणसहजेषु शुभैः खशुद्धे लग्ने त्रिलाभरिपुगैश्च वदन्ति पापैः।
लग्नाष्टषष्ठरहितं शशिनं प्रशस्तं मैत्राम्बुपानिलजनुर्भमसच्च केचिद्।।१६।।

रिक्ता (४।६।१४) नन्दा (१।६।११) अष्टमी, अमावस्या, द्वादशी ये तिथियाँ, शनि भौम, रवि ये वार, जन्मराशि और जन्मलग्न से आठवीं राशि का लग्न वा लग्न में उन्हीं के नवमांश, मीन, मेष, वृश्चिक लग्न इन सबों को त्याज्य करके छठवें महीने से सम (६।८) महीनें में पुत्र का, पाँचवे मास से विषम मास (५।७) में कन्याओं का स्थिरसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, लघुसंज्ञक, चरसंज्ञक नक्षत्रों में अन्नप्राशन करना शुभदायक है। केन्द्र(१।४।७) त्रिकोण (५।६) तृतीय इन स्थानों में शुभग्रह हो, लग्न से दशवाँ स्थान शुद्ध (सब ग्रहों से रहित) हो, लग्न से तीसरे, छठवे, ग्यारहवें पापग्रह हों, लग्न षष्ठ, अष्टम इन स्थानों के अतिरिक्त स्थानों में चन्द्रमा हो तो अन्नप्राशन होता है। किसी-किसी आचार्य के मत से अनुराधा, स्वाति, शतभिषा और जन्म का नक्षत्र ये अशुभ होते है।।१८-१६।।

ताम्बूल भक्षणमुहूर्तः (मु० चि०)

वारे भौमार्किहीने ध्रुवमृदुलघुभैर्विष्णुमूलादितीन्द्र-
स्वातीवस्वम्बुपेतैर्मिथुनमृगसुताकुम्भगोमीनलग्ने ।
सौम्यैः केन्द्रत्रिकोणैरशुभगगनगैः शत्रुलाभत्रिसंस्थै
स्ताम्बूलं सार्धमासद्वयमितसमये प्रोक्तमन्नाशने वा ।।२०।।

मंगल, शनि को छोड़ अन्य वारों में ध्रुव, मृदु, लघुसंज्ञक, श्रवण, मूल, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, स्वाती, धनिष्ठा, इन नक्षत्रों में मिथुन, मकर, कन्या, कुम्भ, वृष, मीन लग्नों में शुभग्रहों के केन्द्र और त्रिकोण में तथा पापग्रहों के छठवें, ग्यारहवें, तीसरे स्थानों में रहने पर अढाई मास की अवस्था में अथवा अन्नप्राशन के समय बालक को ताम्बूल भक्षण (खिलाना) कराना शुभ कहा है।।२०।।

अस्तादौ वर्ज्यकर्माणि (मु० मार्तण्डे) -

गर्भाद्यन्नाशनान्तेषु न गुरुसितयोर्बाल्यवार्ध्ये च मौढ्यं
जह्यात्कालस्य रोधाद्धरिगुरुमनयं याम्यमूनाधिमासौ ।
एतच्चौलादिषूज्झेदथ गुरुसितयोर्बाल्यवार्ध्ये नगाहे
चाथो शाखेशमौढ्ये व्रतमपि निगमारम्भमार्यो न कुर्यात् ।।२१।।

अन्यच्च -

नित्ययाने गृहे जीर्णे प्राशने परिधानके ।
वधूप्रवेशे मांगल्ये न मौढ्यं गुरुशुक्रयोः ।।२२।।
गोदवर्यां गयायांच श्रीशैले ग्रहणद्वये ।
अयने विषुवे चैव चातुर्मास्यव्रतादिषु ।।२३।।
उत्सवेषु च सर्वेषु सीमन्ते च ऋतुक्रमे ।
सुरासुरेज्ययोश्चात्र मौढ्यदोषो न विद्यते ।।२४।।

गर्भाधान से लेकर अन्नप्राशन पर्यन्त संस्कारों में बृहस्पति-शुक्र का अस्त, बाल्य, वृद्धत्व, सिंहस्थ गुरु का दोष, दक्षिणायन, क्षयमास और अधिमास इत्यादि का विचार काल के अनुरोध से नहीं करना चाहिये। इनको चौलाधिक संस्कारों में त्याज्य करना चाहिये। बृहस्पति शुक्र का बाल्य और वृद्धत्व ७ दिनों तक वर्जित है। शाखेश के अस्त में व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत) और वेदारम्भ करना शुभ नहीं होता।।२४

कर्णवेधः (मु० मार्तण्ड)[1] -

मित्रैः क्षिप्रैः स्थिरभचरभैर्व्यानिलांभःपकर्क्षै-
श्चैकाफापौष्विनशनिकुजर्क्षां शवारानपास्य ।
रिक्तापर्वेश्वरवसुतिथिनूरात्रिसन्ध्ये समाब्दं
पुंस्त्रीकर्णौ सविधि पटुना दक्षवामादिवेध्यौ ।।२५।।

मित्रसंज्ञक (अनुराधा, रेवती, मृगशिरा, चित्रा) क्षिप्र (अश्विनी, हस्त, पुष्य, अभिजित्) स्थिर (तीनों उत्तरा, रोहिणी) चर (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा) इन नक्षत्रों में से स्वाती और शतभिषा को छोड़कर शेष नक्षत्रों में और चैत्र, कार्तिक, पौष, फाल्गुन इन महीनों में रवि, शनि, भौम इन वारों रिक्ता (४।९।१४) पंचपर्व, एकादशी, अष्टमी इन तिथियों और रात्रि, सन्ध्या समवर्ष इन सबों को छोड़कर विधिपूर्वक कुशल व्यक्ति से लड़के का दाहिना और लड़की का बाँया कान पहिले छेदवाना चाहिये।।२५।।

चूड़ाकर्ममुहूर्तः (मु० चि०) -

चूड़ा वर्षात्तृतीयात्प्रभवति विषमेऽष्टार्करिक्ताद्यषष्ठी-
पर्वोनाहे विचैत्रोदगयनसमये ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम् ।
वारे लग्नांशयोश्चशुभनिधनतनौ नैधने शुद्धियुक्ते
शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदुचरलघुभै- रायषट्त्रिस्थ- पापैः ।।२६ ।।

जन्म से लेकर तीसरे, पाँचवे इत्यादि विषम वर्षों में अष्टमी रिक्ता (४।९।१४) प्रतिपद् षष्ठी पंचपर्व इनको छोड़कर, चैत्ररहितोत्तरायण (अर्थात् माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ इन महीनों) में बुध, शुक्र, सोम, बृहस्पति इन्हीं ग्रहों के वार लग्न (२।३।४।६।७।९।१२) और नवमांशों में शुभ ग्रहों की राशियाँ और जन्मलग्न तथा जन्मराशि से आठवीं राशि का लग्न न हो, लग्न से अष्टम शुद्ध हो, अनुराधा को छोड़कर

---

१. कर्णविधने ब्राह्मणादीनां सूचयः (बृहस्पतिः) -
सौवर्णी राजपुत्रस्य राजती विप्रवैश्ययोः। शूद्रस्य त्वायसी सूची मध्यमाष्टांगुलात्मिका। इति।।

मृदुसंज्ञक, चरसंज्ञक, लघुसंज्ञक और ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में एकादश, षष्ठ और तृतीय भाव में पापग्रह हों और केन्द्र (१।४।७।१०) त्रिकोण (९।५) में शुभग्रह हों तो बालक को चूड़ाकरण शुभ होता है।

ताराबलस्यावश्यकत्वं दुष्टायां सत्यामपवादश्च (मु० चि०) –

तारादौष्ट्येऽब्जे त्रिकोणोच्चगे वा क्षौरं सत्स्यात्सौम्यमित्रस्ववर्गे ।
सौम्ये भेऽब्जे शोभने दुष्टतारा शस्ता ज्ञेया क्षौरयात्रादिकृत्ये ।।२७।।

यदि तारा खराब हो, चन्द्रमा त्रिकोण या अपने उच्च में अथवा शुभग्रह या अपने मित्र के वर्ग में हो तो क्षौर कर्म करना शुभ होता है। शुभग्रह की राशि में चन्द्रमा स्थित हों और स्वयं शुभ हो तो क्षौर और यात्रादि कर्म में दुष्ट तारा शुभ हो जाती है।।२७।।

चौलादिषु कालान्तरनिषेधः (मु० चि०) –

पञ्चमासाधिके मातुर्गर्भे चौलं शिशोर्न सत्।
पंचवर्षाधिकस्येष्टं गर्भिण्यामपि मातरि ।।२८।।

पाँच मास से अधिक माता को गर्भ हो तो बालक का क्षौर कराना शुभ नहीं होता। परन्तु यदि बालक की अवस्था ५ वर्ष से अधिक हो तो पाँच मास से अधिक का गर्भ रहने पर भी बालक का मुण्डन शुभदायक होता है।।२८।।

चौलादिषु निषिद्धकालः (मु० चि०) –

ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूनोश्चौलादि नाचरेत् ।
ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे कश्चिन्मार्गेऽपि नेष्यते ।।२९।।

बालक की माता ऋतुमती अथवा प्रसूता हो तो बालक का मुण्डन करना ठीक नहीं (यदि मुण्डनकर्म के प्रारम्भ हो जाने पर माता ऋतुमती वा प्रसूता हो तो चूडाकर्म समाप्त कर डालना चाहिये) ज्येष्ठ बालक का ज्येष्ठ मास में और किसी-किसी के मत से मार्गशीर्ष (अगहन) में चूडाकर्म करना शुभद नहीं है।।२९।।

सामान्यक्षौरादिमुहूर्तः[1] *(मु० चि०) –*

दन्तक्षौरनखक्रियाऽत्र विहिता चौलादिते वारभे
पातंग्याररवीन्विहाय नवमं घस्त्रं च सन्ध्यां तथा।
रिक्तां पर्व निशां निरासनरणग्राहप्रयाणोद्यत-
स्नाताभ्यक्तकृताशनैर्नहि पुनःकार्या हितप्रेप्सुभिः।।३०।।

दाँत का कार्य, क्षौर कर्म, नख कर्म, चौल में कहे तिथि, वार, नक्षत्रों में, शनि भौम रविवार को छोड़कर अन्य वारों में, पूर्व क्षौर से नववाँ दिन, सन्ध्याकाल, रिक्ता, पञ्चपर्व, रात्रि इनको छोड़ के निरासन, युद्धयात्रा में उत्सुक, स्नानादिक नित्य कर्म करने के बाद, उबटन लगाके, भोजन करके अपना कल्याण चाहने वाले को बाल नहीं बनवाने चाहिये।।३०।।

क्षौरकर्माणि विशेषकालः (मु० चि०) –

क्रतुपाणिपीडमृतिबंधमोक्षणे क्षुरकर्म च द्विजनृपाऽऽज्ञया चरेत् ।
शववाहतीर्थगमसिन्धुमज्जनक्षुरमाचरेन्न खलु गर्भिणीपतिः ।।३१।।

यज्ञ में, विवाह में, किसी आत्मीय मनुष्य के मर जाने पर, जेलखाने से छुटकारा पाने पर ब्राह्मण या राजा की आज्ञा से क्षौर कर्म करा लेना चाहिये (मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं)। गर्भिणी स्त्री

---

१. मुहूर्तमार्तण्डे विशेषः –
मुक्ताभ्यक्तोपवासीश्वरजनयुवतिःप्राग्वयस्काश्च योगी। यात्रायुद्धोन्मुखा ये कृतदिनविधयोऽस्त्यम्बकास्ते न मुण्ड्याः।।
सीमन्तोर्ध्वं न पत्युर्नखकचलवनं दूरदेशप्रयाणं। वृक्षच्छेदःसमुद्राप्लुतिमृतहरणे स्यादृते ऽवश्यकार्यात्।इति।।

के पति को मुर्दे का ढोना, तीर्थयात्रा, समुद्रस्नान और क्षौरकर्म नहीं करना चाहिये (परन्तु अत्यावश्यक कार्य के उपस्थित हो जाने पर कर सकता है जैसा कि मु० मा० में लिखा है)'।।३१।।

राज्ञां विशेषं वर्ज्य नक्षत्राणि च (मु० चि०) -

नृपाणां हितं क्षौरभे श्मश्रुकर्म दिने पंचमे पंचमेऽस्योदये वा।
षडग्निस्त्रिमैत्रोष्टकःपंचपित्र्योऽब्दतोऽब्ध्यर्यमा क्षौरकृन्मृत्युमेति ।।३२।।

क्षौर में कहे नक्षत्रों (वारादिकों) में पाँचवें पाँचवें दिन वा पाँचवे के कालहोरा (१।३७) में राजा को श्मश्रुकर्म (दाढ़ी बनवाना) शुभ कहा है। ६ वार कृत्तिका में, ३ वार अनुराधा में, ८ वार रोहिणी में, ५ वार मघा में, ४ वार उत्तरा फाल्गुनी में बराबर वर्ष दिनों तक क्षौरकर्म कराने वाला मनुष्य वर्ष के मध्य ही मृत्यु को पाता है।।३२।।

अक्षरारम्भमुहूर्तः (मु० चि०) -

गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्य पंचमाब्दके
तिथौ शिवार्कदिग्द्विषट्शरत्रिके रवावुदक् ।
लघुश्रवोऽनिलान्त्यभादितीशतक्षमित्रभे
चरोनसत्तनौ शिशोर्लिपिग्रहः सतां दिने ।।३३।।

गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी इनकी पूजा करके पाँचवें वर्ष में एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितिया, षष्ठी, पंचमी, तृतीया इन तिथियों में उत्तरायण सूर्य में, लघुसंज्ञक, श्रवण, स्वाती, रेवती, पुनर्वसु, आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा इन नक्षत्रों में, चरसंज्ञक राशि को छोड़ शुभग्रह की राशियों में शुभग्रह के वारों में बालकों को अक्षरारम्भ कराना कल्याणकारी होता है।।३३।।

विद्यारम्भमुहूर्तः (मु० चि०) -

मृगात्कराच्छ्रुतेस्त्रये ऽश्विमूलपूर्विकात्रये
गुरुद्वयेऽर्कजीवविित्सिते ऽह्नि षट्शरत्रिके ।
शिवाऽर्कदिग्द्विके तिथौ ध्रुवान्त्यमित्रभे परैः
शुभैरधीतिरुत्तमा त्रिकोणकेन्द्रगैः स्मृता ।।३४।।

मृगशिरा से तीन (मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु) हस्त से तीन (हस्त, चित्रा, स्वाती) श्रवण से तीन (श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा), अश्विनी, मूल, तीनों पूर्वा, पुष्य, आश्लेषा इन १६ नक्षत्रों में सूर्य, बृहस्पति, बुध, शुक्र वारों में ६।५।३।११।१२।१०।२ इन तिथियों में किसी २ के मत में ध्रुवसंज्ञक और रेवती, अनुराधा में त्रिकोण ५।९ और केन्द्र (१।४।७।१०) में शुभग्रहों के रहने पर विद्यारम्भ कराना शुभद होता है।

व्रतबन्धकालः (मु० चि०) -

विप्राणां व्रतबन्धनं निगदितं गर्भाज्जनेर्वाऽष्टमे
वर्षे वाप्यथ पंचमे क्षितिभुजां षष्ठे तथैकादशे ।
वैश्यानां पुनरष्टमेऽप्यथ पुनः स्याद् द्वादशे वत्सरे
कालेऽथ द्विगुणे गते निगदितं गौणं तदाहुर्बुधाः ।।३५।।

गर्भ से या जन्म से पाँचवें या आठवें वर्ष में ब्राह्मणों का, छठवें या ग्यारहवें वर्ष में क्षत्रियों का, आठवें या बारहवें वर्ष में वैश्यों का व्रतबन्ध करना शुभ होता है। यदि इन कथित कालों से दूना समय व्यतीत हो जाय तो निषिद्ध होता है, ऐसा आचार्यों ने कहा है।।३५।।

व्रतबन्धमुहूर्तः (मु० चि०) -

क्षिप्र-ध्रुवाहिचर-मूलमृदुत्रिपूर्वा-रौद्रेऽर्कविद्गुरुसितेन्दुदिने व्रतं सत् ।
द्वित्रीषु-रुद्ररविदिक्प्रमिते तिथौ हि कृष्णादिमत्रिलवकेऽपि न चापराह्णे।।३६।।

क्षिप्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, आश्लेषा, चरसंज्ञक, मूल, मृदुसंज्ञक, तीनों पूर्वा, आर्द्रा इन नक्षत्रों में रवि, गुरु, बुध, शुक्र, चन्द्र वारों में २।३।५।११।१२।१० तिथियों में कृष्णपक्ष के आदिम तृतीयांश (१-५ तक) में और पूर्वाह्न में उपनयन करना शुभ होता है। (अपराह्न में निषिद्ध है)।।३६।।

लग्नशुद्धिः (मु० चि०) –

कवीज्यचन्द्रलग्नपा रिपौ मृतौ व्रतेऽधमाः ।
व्ययेऽब्जभार्गवौ तथा तनौ मृतौ सुते खलाः ।।३७।।
व्रतबन्धेष्टषड्रिष्फवर्जिताः शोभनाः शुभाः ।
त्रिषडाये खलाः पूर्णो गोकर्कस्थो विधुस्तनौ ।।३८।।

शुक्र, गुरु, चन्द्रमा लग्न का स्वामी छठवें, आठवें, चन्द्रमा- शुक्र बारहवें, लग्न, अष्टम और पंचम में पापग्रह हो तो व्रतबन्धन में नेष्ट होते हैं। आठवें, छठें, बारहवें को छोड़कर अन्य स्थानों में शुभग्रह, तीसरे छठे, ग्यारहवें स्थानों में पापग्रह, वृष और कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो व्रतबन्ध (उपनयन) में शुभ होता है।

व्रतबन्धे जन्ममासादिविचारः (मु० चि०) –

जन्मर्क्षमासलग्नादौ व्रते विद्याधिको व्रती ।
आद्यगर्भेऽपि विप्राणां क्षत्रादीनामनादिमे ।।३९।।

पहले गर्भ से उत्पन्न ब्राह्मण, द्वितीयादिगर्भ से उत्पन्न क्षत्रियादिकों का व्रतबन्ध जन्ममास, जन्मनक्षत्र, जन्मलग्न आदि में हो तो व्रती (बालक) बड़ा विद्वान् होता है।।३९।।

शाखेशास्तत्प्रयोजनाच्च (मु० चि०) –

विप्राधीशौ भार्गवेज्यौ कुजार्कौ राजन्यानामोषधीशो विशां च ।
शूद्राणां ज्ञश्चान्त्यजानां शनिःस्याच्छाखेशाः स्युर्जीवशुक्रारसौम्याः ।।
शाखेशवारतनुवीर्यमतीव शस्तं शाखेशसूर्यशशिजीवबले व्रतं सत् ।
जीवे भृगौ रिपुगृहे विजिते[1] च नीचे स्याद्वेदशास्त्रविधिना रहितो व्रतेन ।।४०।।

ब्राह्मणों के शुक्र-गुरु, क्षत्रियों के मंगल-सूर्य, वैश्य के चन्द्रमा, शूद्रों के बुध, अन्त्यजों के शनि शाखेश होते हैं। तथा ऋक्, साम, यजुः अथर्वण वेदों के क्रम से बृहस्पति, शुक्र, मंगल और बुध स्वामी कहे गये है। शाखेश का वार लग्न और बल प्रशस्त होता है। शाखेश, सूर्य, चन्द्रमा, गुरु के बली रहने पर व्रतबन्ध शुभद होता है। बृहस्पति शुक्र ये शत्रु की राशि में, नीच में, विजित (पराजित) हों तो बालक वेदशास्त्र की विधि से रहित होता है।।४०।।

व्रतबन्धे त्याज्यविषयाः (मु० चि०) –

कृष्णे प्रदोषेऽनध्याये शनौ निश्यपराह्णके ।
प्राक्सन्ध्यागर्जिते नेष्टो व्रतबन्धो गलग्रहे ।।४१।।

कृष्णपक्ष, प्रदोष, अनध्याय, शनिवार, रात्रि, अपराह्न जिस के एक दिन पूर्व सायंकाल में मेघ गर्जा हो वह दिन और गलग्रह व्रतबन्ध में अशुभ है।।४१।।

प्रदोषः (मु० चि०) –

अर्कतर्कत्रितिथिषु प्रदोषः स्यात्तदग्रिमैः ।
रात्र्यर्द्धसार्द्धप्रहरयाममध्यस्थितैः क्रमात् ।।४२।।

---

१. पराजित लक्षणं वराहसंहितायाम् –
दक्षिणदिक्स्थः परुषो वेपथुरप्राप्य सन्निवृतोऽणुः। अधिरूढो विकृतो निष्प्रभो विवर्णश्च यः स जितः।। इति।।

द्वादशी को आधी रात के पूर्व त्रयोदशी, षष्ठी को डेढ़ प्रहर रात के पूर्व सप्तमी, तृतीया को एक पहर रात के पूर्व चतुर्थी लग जाय तो प्रदोष होता है।।४२।।

गलग्रहः (मु० चि०) -

त्रयोदश्यादि चत्वारि सप्तम्यादि दिनत्रयम् ।
चतुर्थी चैकतः प्रोक्ता अष्टावेते गलग्रहाः ।।४३।।

त्रयोदशी से चार दिन, सप्तमी से तीन दिन और चौथ ये आठ तिथियाँ गलग्रह कहलाती है।।४३।।

विशेषः (मु० चि०) -

नान्दीश्राद्धोत्तरं मातुः पुष्पे लग्नान्तरे नहि ।
शान्त्या चौलं व्रतं पाणिग्रहः कार्योऽन्यथा न सत् ।।४४।।

नान्दी श्राद्ध के बाद माता ऋतुमती हो जाय और दूसरा मुहूर्त न मिले तो उसी मुहूर्त में शान्ति कर के चौल (मुण्डन) व्रतबन्ध विवाह करना चाहिये। विना शान्ति किये शुभ नहीं होता।।४४।।

व्रते चैत्रस्य प्राशस्त्यम् -

चैत्रे मासि रवौ मीने विबलेऽपि गुरौ वटो :।
व्रतबन्धः प्रशस्तः स्याच्चैत्रे मीनयुते रवौ ।।४५।।

बृहस्पति के निर्बल रहने पर भी चैत्र में मीन के सूर्य में व्रतबन्ध उत्तम होता है।।४५।।

उपनयनकर्तारः (वृद्धगर्गः) -

पिता पितामहो भ्राता ज्ञातयो गोत्रजाऽग्रजाः।
उपायनेऽधिकारी स्यात्पूर्वाऽभावे परः परः।।४६।।

पिता, पितामह (पिता के पिता) भ्राता (बड़ा भाई), जाति के लोग या गोत्र के लोग जो व्रती (जिसका उपनयन होता है, उस) से अधिक अवस्था वाले हों, पूर्व के अभाव में पर जनेऊ देने के अधिकारी होते हैं अर्थात् पिता के अभाव में दादा, दादा के अभाव में बड़ा भाई, भाई के अभाव में अवस्था (उमर) में बड़े जाति के लोग या सगोत्र उपनयनकर्ता होने के अधिकारी हैं।।४६।।

केशान्तसमावर्तमुहूर्तौ (मु० चि०) -

केशान्तं षोडशे वर्षे चौलोक्तदिवसे शुभम् ।
व्रतोक्तदिवसादौ हि समावर्तनमिष्यते ।।४७।।

सोलहवें वर्ष में चौलकर्म (मुण्डन) में कहे (४।३६) मुहूर्त में केशान्त कर्म करना शुभ होता है। एवं व्रतबन्ध (४।४३) के मुहूर्त में समावर्तन कर्म करना शुभ कहा गया है।।४७।।

दत्तकग्रहणमुहूर्तः -

हस्तादिपंचकभिषग्वसुपुष्यभेषु सूर्यक्षमाजगुरुभार्गववासरेषु ।
रिक्ताविवर्जिततिथिष्वलिकुम्भलग्ने सिंहे वृषे भवति दत्तपरिग्रहोऽयम् ।।४८।।

बालबोधज्योतिषे संस्कारप्रकरणम् चतुर्थं समाप्तम् ।।४।।

हस्त से ५ नक्षत्र (हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा) शत-भिषक्, धनिष्ठा, पुष्य इन ८ नक्षत्रों में, सूर्य, भौम, गुरु, शुक्र इन वारों में रिक्ता (४।९।१४) से रहित तिथियों में और स्थिर (८।११।२।५) लग्नों में दत्तक ग्रहण किया जाता है।।४८।।

हिन्दीटीकायां संस्कारप्रकरणम् चतुर्थं समाप्तम् ।।४।।

विवाहप्रकरणम् ।।५।।

वर-कन्या-मेलनं चात्र द्विज-देवाग्नि-सन्निधौ ।
विवाह इतिख्यातः धर्मार्थ कुल सौख्यदम् ।।१।।

देव-अग्नि-ब्राह्मण के साक्ष्य में वर-कन्या का स्नेहपूर्वक सम्मेलन ही विवाह कहलाता है। जो धर्म, अर्थ, सौख्य, कुल की वृद्धि करने वाला है।

कन्यालक्षणम् (मनुः) –

नोद्वहेत् कपिलां कन्यां नाधिकाङ्गीं न रोगिणीम् ।
नालोमिकां नातिलोमां न वाचालां न पिंगलाम् ।।२।।
अव्यङ्गाङ्गीं सौम्यनाम्नीं हंस-वारण-गमिनीम् ।
तनुलोमकेश-दशनां' मृद्वंगीमुद्वहेत् स्त्रियम् ।।३।।

कपिलवर्ण की, अधिक अंगवाली, रोगिणी, विना रोयें की, अत्यन्त रोमवाली, वहुत बोलने वाली, पिंगलवर्ण की, अंगभंग वाली (लँगड़ी, टूँटी, कानी, कुवड़ी इत्यादि) को छोड़कर हंस और हथिनी के गमन को मात करती हो, जिसके अत्यन्त कोमल बाल, रोम, नख हों, और पतले-पतले दाँत और कोमल शरीर जिसका हो ऐसी स्त्री से व्याह करना चाहिये।।२-३।।

अविलुप्त ब्रह्मचर्यो लक्षण्यां स्त्रियमुद्वहेत् ।
अनन्यपूर्विकां कान्तामसपिण्डां यवीयसीम् ।।४।।
अरोगिणीं भ्रातृमतीमसमानार्षगोत्रजाम् ।।

ब्रह्मचर्य युक्त, समानवर्ण वाली, अच्छे लक्षण वाली रोग रहित (वन्ध्या न हो, अंग विकृति न हो, सुभाषिणी, सदा प्रसन्न रहने वाली) परिजनों का सम्मान करने वाली हो, भ्राता युक्त हो, असमान गौत्र की हो जिसका पूर्व में विवाह न हुआ हो। ऐसी कन्या त्रिवर्ग (अर्थ, धर्म, काम) को फलीभूत करने वाली होती है।

श्यामा सुकेशी तनुरोमराजी सुभ्रुः सुशीला सुगतिः सुदन्ता।
वेदीविमद्ध्या यदि पंकजाक्षी कुलेन हीनापि विवाहयोग्या।।५।।

जिस कन्या की वाणी मधुर हो, सुन्दर व काले केश हो, शरीर पर नहीं के समान रोम हो, सुन्दर भ्रू (भौवें) हों, सुशील स्वभाव हो, अच्छे दाँत (पंङ्क्तिशः लघु एकावली) हो। सुन्दर चाल, पतली कमर व कमलसदृश नेत्र हो। यदि वह नीचे कुल में उत्पन्न हुई हो तो भी विवाह करने योग्य है।।५।।

अतः माता-पिता (अभिवावक) का कर्तव्य –

ग्रहमेलापके योग्यः न योग्यः भिषजां मते ।
धर्मशास्त्रमते हीनः नोद्वाहः तत् प्रशस्यते ।।६।।

यदि जन्मपत्री में ग्रह नक्षत्रों का मेलापक वन रहा हो, लेकिन वैद्यो की दृष्टि में तथा धर्मशास्त्र की दृष्टि में वर एवं कन्या दूषित हों तो उनका विवाह कदापि नहीं करना चाहिये। (अर्थात वर एवं कन्या के) अभिभावक को चाहिये कि ज्योतिष के अनुसार अदृष्ट (भाग्यादि) का विचार कराले साथ ही वैद्य और धर्मशास्त्री से यह भी सुनिश्चित करवा लें कि वर-कन्या के शारीरिक और मानसिक कुल की शुद्धता है तभी सम्वन्ध पक्का करना चाहिये।।६।।

---

१. तथा च वास्तुराज वल्लभे (११।३३) –
यस्याश्चारु मुखं नितम्बजघने स्थूले कुचौ श्रीफलैस्तुल्यौ क्षामकटिर्विशालनयने ताम्रोधरः सत्कचाः।
"सोद्वाह्या सुसहायकेन धनिना विद्यावता शीलिना
कौलेयेन वरेण नूतनवयोयुक्तेन सत्कीर्तिना।।" ~~अनोत्सर्ग पदीयम्~~।

अपरीक्ष्य वरं कन्यां निर्गुणाय ददाति यः ।
कुलं तस्यैवतच्छोकसन्तप्तं वै निकृन्तति ।।७।।

जो मनुष्य बिना वर की परीक्षा किये हीन गुण वर को कन्या देता है, उस कन्या के शोक सन्ताप से उसके कुल का विनाश हो जाता है।।७।।

वरस्य गुणदोषः -

कुलं च शीलं च सनाथतां च विद्यां च वित्तं च वपुर्वयश्च ।
वरे गुणान्सप्त परीक्ष्य देया कन्या बुधैः शेषमचिन्त्यनीयम् ।।८।।
अत्यासन्ने नातिदूरे नाऽत्याढ्ये ऽनातिदुर्बले ।
वृत्तिहीने च मूर्खे च षट्सु कन्या न दीयते ।।९।।

कुल, शील, सनाथता, विद्या, धन, शरीर, अवस्था ये सात गुण जिस वर में हों उसको कन्या देनी चाहिये। अत्यन्त नजदीक रहने वाला, अत्यन्त दूर का निवासी, अत्यन्त धनी, अत्यन्त दुर्वल, वृत्तिहीन (जिसके पास कोई जीविकोपाय न हो), मूर्ख इन छ प्रकार के वर को कदापि कन्या न देवें।।८-९।।

कन्यादानाधिकारिणः (याज्ञवल्क्यः) -

पिता पितामहो भ्राता सकुल्यो जननी तथा ।
कन्याप्रदः पूर्वनाशे प्रकृतिस्थः परः परः ।।१०।।
अप्रयच्छन् सामप्नोति भ्रूणहत्यामृतावृतौ ।
गम्यात्वभावे दातृणां कन्या कुर्यात् स्वयंवरम् ।।११।।
कुर्यात् षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते ।
सर्वाण्यन्यानि कार्याणि नाम राशौ बलान्विते ।।१२।।

सोलह संस्कारों में जन्मनाम (नक्षत्र राशिनाम) की प्रधानता है। विवाह (नक्षत्र) मेलापक में वर और कन्या के जन्म नक्षत्रों का ही प्रयोग करना चाहिये। ऐसा वशिष्ठ का मत है।।१२।।

जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामाधिष्ण्येन नामभम् ।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम् ।।१३।।
अज्ञात-जन्मनां नृणां नामभे परिकल्पयेत् ।
तेनैव चिन्तयेत्सर्वं राशिकूटादि जन्मवत् ।।१४।। (वशिष्ठः)

यदि जन्म नक्षत्र ज्ञात न हो तो वर एवं कन्या के पुकारने के नामों से गणना देखनी चाहिये। ऐसा कथन है।।१३-१४।।

पुनर्भूमेलने ज्ञेया नामराशेः प्रधानता ।
अतोऽन्यत्र विवाहादौ प्रधान्यं जन्मभस्य हि ।।१५।।

पुनर्विवाह में पुकारने के नाम से ही गणना देखनी चाहिये। ऐसा मुहूर्तगणपति मे लिखा है।

बहूनि यस्य नामानि वरस्य स्युः कथञ्चन ।
तस्य पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ।।१६।।

जिस कन्या या वर के राशि नाम ज्ञात न हों और पुकार नाम कई हों तो पीछे जो नाम रखा गया है उससे मेलापक करना चाहिये।।१६।।

'अष्टौ कुटानि (मू० चि०) -

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम् ।
गणमैत्री भकूटं च नाड़ी चैते गुणाधिकाः ।।१७।।

वर्ण में १, वश्य में २, तारा में ३, योनि में ४, ग्रहमैत्री में ५, गणमैत्री में ६, भकूट में ७ और नाड़ी में ८ गुण होते हैं, इनको अष्टकुट कहते है।।१७।।

(१) ²वर्णविचारः (मू० चि०) -

द्विजा झषाऽलिकर्कटास्ततो नृपा विशोऽङ्घ्रिजाः ।
वरस्य वर्णतोऽधिका वधूर्न शस्यते बुधैः ।।१८।।

मीन, वृश्चिक, कर्क राशियाँ ब्राह्मण वर्ण, मेष, धनु, सिंह, क्षत्रिय वर्ण, वृष, मकर, कन्या, वैश्यवर्ण, मिथुन, तुला, कुम्भ ये राशियाँ शूद्रवर्ण हैं। वर के वर्ण से उत्तम वधू का वर्ण हो तो विवाह शुभ नहीं होता है।।१८।।

(२) वश्यविचारः³ (मू० चि०) -

हित्वा मृगेन्द्रं नर राशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्च भक्ष्याः ।
सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनालिं ज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत् ।।१९।।

सिंह को छोड़कर बाकी सब राशियाँ मनुष्य राशि (मिथुन, कन्या, तुला, धनु का पूर्वार्ध और कुम्भ) के वश में है, तथा जलचर राशियाँ (कर्क, मीन, मकर का उत्तरार्ध) मनुष्य राशि के भक्ष्य है। वृश्चिक को छोड़कर शेष सब राशियाँ सिंह के वश में हैं। बाकी व्यवहार से समझना है।।१९।।

(३) ताराविचार (मू० चि०) -

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत्कन्याभं वरभादपि ।
गणयेन्नवहृच्छेषे त्रीष्वद्रिभ-मसत्स्मृतम् ।।२०।।

कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक, वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिन के ९ का भाग देने पर यदि ३,५,७ शेष वचे तो असत् तारा होती है।।२०।।

(४) योनिविचार (मू० चि०) -

अश्विन्यम्बुपयोर्हयो निगदितः स्वात्यर्कयोः कासरः
सिंहो वस्वजपाद्भयोः समुदितो याम्यान्त्ययोः कुञ्जरः ।
मेषो देवपुरोहिताऽनलभयोः कर्णाम्बुनोर्वानरः
स्याद्वैश्वाऽभिजितोस्तथैव नकुलश्चान्द्राब्दयोन्योरहिः ।।२१।।
ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरंग उदितो मूलार्द्रयोः श्वा तथा
मार्जारोऽदितिसार्पयोरथ मघायोन्योस्तथैवोन्दुरुः ।
व्याघ्रो द्वीशभचित्रयोरपि गौरर्यम्णबुध्न्यर्क्षयो-
र्योनिः पादगयोः परस्परमहावैरं भयोन्योस्त्यजेत् ।।२२।।

---

१. नारद के अनुसार १० कूट, गर्ग के मत में १८ कूट होते हैं जिनका विवरण मुहूर्तचिन्तामणि के पीयूषधारा टीका में बहुत अच्छी तरह किया है।
२. वर्णपरिहारः -हीनवर्णो यदा राशी राशीशो वर्ण उत्तमः। तदा राशीश्वरो ग्राह्यस्तद्राशिं नैव चिन्तयेत्।।
२. लघुजातके - मेषवृषधन्विसिंहाश्चतुष्पदा मकरपूर्वभागश्च। कीटः कर्कटराशिः सरीसृपो वृश्चिकः कथितः।। मकरस्य पश्चिमार्द्धं ज्ञेयो मीनश्च जलचरः। मिथुनतुलाघटकन्या द्विपदाख्या धन्विपूर्वभागश्च।।

अश्विनी-शतभिषा की अश्व योनि, स्वाती-हस्त की महिष, धनिष्ठा-पूर्वाभाद्रपदा की सिंह, भरणी-रेवती की गज, पुष्य-कृत्तिका की मेष, श्रवण-पूर्वाषाढ़ा की वानर, उत्तराषाढ़ा-अभिजित् की नकुल, मृगशिरा-रोहिणी की सर्प, ज्येष्ठा-अनुराधा की मृग, मूल-आर्द्रा की श्वान, पुनर्वसु-आश्लेषा की मार्जार, मघा-पूर्वाफाल्गुनी की मूषक, विशाखा-चित्रा की व्याघ्र एवं उत्तराफाल्गुनी-उत्तराभाद्रपद की गौ योनि होती है। एक चरण में कही गई दो योनियों (जैसे अश्व-महिष) में परस्पर बड़ा वैर होता है इसको त्याग देना चाहिये।

योनि कोष्टक

योनयः	नक्षत्राणि	वैरः
अश्व	अश्विनी, शतभिषा	महिष
महिष	हस्त, स्वाती	अश्व
सिंह	धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद	गज
गज	भरणी, रेवती	सिंह
मेष	पुष्य, कृत्तिका	वानर
वानर	श्रवण, पूर्वाषाढ़ा	मेष
नकुल	उत्तराषाढ़ा, अभिजित्	सर्प
सर्प	रोहिणी, मृगशिरा	नकुल
मृग	अनुराधा, ज्येष्ठा	श्वान
श्वान	मूल, आर्द्रा	मृग
मार्जार	पुनर्वसु, आश्लेषा	मूषक
मूषक	मघा, पूर्वाफाल्गुनी	मार्जार
व्याघ्र	विशाखा, चित्रा	गौ
गौ	उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद	व्याघ्र

ग्रह मैत्री (पीयुषधारायां कश्यप) –

रवेः समो ज्ञो मित्राणि चंद्रारेज्याः परावरी ।
इंदोर्न शत्रवो मित्रे रविज्ञावितरे समाः ।।२३।।
समौ कुजस्य शुक्रार्की बुधोरिः सुहृदः परे ।
ज्ञस्य चन्द्रो रिपुर्मित्रे शुक्रार्कावितरे समाः ।।२४।।
गुरोरारेन्दुजा मित्राण्यार्की मध्यः परावरी ।
भृगोः समाविज्यकुजौ मित्रे ज्ञार्कौ परौ रिपु ।।२५।।
शनेर्गुरुस्समो मित्रे शुक्रज्ञौ शत्रवः परे ।
कश्यपेनोदितः श्लोका इमे ज्ञेया विचक्षणैः ।।२६।इति।

नैसर्गिकग्रहमैत्री –

ग्रहा	सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	बृह.	शुक्रः	शनिः
मित्राणि	चं.मं.बृ.	सू.बु.	सू.चं.बृ.	सू.शु.	सू.चं.मं.	बु.श.	बु.शु.
समाः	बुध	मं.बृ. शु.,शनि	शुक्र शनि	मं.बृ. शनि	शनि	मंगल बृह.	बृह.
शत्रवः	शु.श.	०	बुध	चन्द्र	बु.शु.	सू.चं.	सू.चं.मं.

सूर्य के बुध सम, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति मित्र और शुक्र-शनि शत्रु। चन्द्रमा के शत्रु कोई नहीं, बुध सूर्य मित्र और शेष (मंगल बृहस्पति, शुक्र शनि) सम। मंगल के चन्द्रमा बृहस्पति सूर्य मित्र, बुध, शत्रु, शुक्र शनि सम। बुध के चन्द्रमा शत्रु, शुक्र-सूर्य मित्र, मंगल बृहस्पति, शनि सम। बृहस्पति के सूर्य, चन्द्रमा, मंगल मित्र, बुध-शुक्र शत्रु, शनि सम। शुक्र के बृहस्पति-मंगल सम, बुध-शनि मित्र, सूर्य-चन्द्रमा शत्रु तथा शनैश्चर के शुक्र-बुध मित्र, सूर्य-चन्द्रमा-मंगल, शत्रु, बृहस्पति सम होते है। इस कश्यपोक्ति के अनुसार ग्रहमैत्री का विचार करना चाहिये।।२३-२६।।

ग्रहमैत्रीप्रशंसा –

न वर्गवर्णौ न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशं चैव षडष्टकं वा ।
वरेपि दूरे नवपंचमं वा मैत्री यदा स्याच्छुभदो विवाहः ।।२७।।
वर्णवैरं योनिवैरं गणवैरं नृदूरकम् ।
दुष्टकूटभवं सर्वं ग्रहमैत्रेण नश्यति ।।२८।।

(६) गणविचार (मु० चि०) –

रक्षो नरामरगणाः क्रमतो मघाऽहिवस्विन्द्रमूल-वरुणाऽनलतक्षराधाः ।
पूर्वोत्तरात्रय विधातृयमेशभानि मैत्रादितीन्दु-हरिपौष्णमरुल्लघूनि ।।२९।।
निजनिजगणमध्ये प्रीतिरत्युत्तमा स्या-
दमरमनुजयोः सा मध्यमा संप्रदिष्टा।
असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेव प्रदिष्टो
दनुजविबुधयोः स्याद्वैरमेकान्ततोऽत्र ।।३०।।

मघा, आश्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतभीषा, कृत्तिका, चित्रा, विशाखा ये सब नक्षत्र राक्षसगण, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भरणी, आर्द्रा ये मनुष्यगण और अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाती, लघुसंज्ञक (हस्त, अश्विनी, पुष्य) ये सब नक्षत्र देवगण होते हैं। अपने-अपने गण में घनिष्ठ मित्रता होती है। देवता-मनुष्य में मध्यम प्रीति होती है। मनुष्य-राक्षस गण कन्या-वर हों तो मृत्यु समझना और देवता-राक्षस गण वर-कन्या हो तो सर्वदा आपस में विशेष शत्रुता रहती है।।२९-३०।।

गणपरिहारः

राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे चांशनाथयोः।
गणादिदौष्ट्येऽप्युच्छाहः पुत्रपौत्रप्रवर्धनः ।।३१।।

अन्यच्च –

सद्भकूटं योनिशुद्धिः ग्रहसख्यं गुणत्रयम् ।
एष्वेकतमसद्भावे कन्या रक्षोगणा शुभा ।।३२।।

(७) भकूट विचार (मु० चि०) –

मृत्युः षडष्टके ज्ञेयोऽपत्य-हानिर्नवात्मजे ।
द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ।।३३।।

कन्या-वर की राशि परस्पर छठी आठवीं हो तो मृत्यु, नवम पंचम हो तो सन्तान की हानि, द्विर्द्वादश हो तो निर्धनत्व (दरिद्रता) होती है बाकी सब शुभ-भकूट जानना।।३३।।

षडाष्टके विशेषः –

विषमात्कन्यकाराशेः षष्ठं षष्ठाष्टकं न सत् ।
समात्षष्ठं शुभं ज्ञेयं विपरीतं न शोभनम् ।।३४।।

कन्या की विषम राशि से छठी वर की राशि (मेष-कन्या, तुला-मीन, धनु-वृष, मिथुन-वृश्चिक, सिंह-मकर, कुम्भ-कर्क) हो तो ये षडाष्टक शुभ नहीं होते। समराशि से छठी राशि (वृष-तुला, कर्क-धनु, कन्या-कुम्भ, वृश्चिक-मेष, मकर-मिथुन, मीन-सिंह) हो तो ये षडष्टक शुभ होते हैं इससे विपरीत अशुभ होते हैं।।३४।।

नवपंचके विशेषः –

मीनालिभ्यां युते कीटे कुम्भे मिथुनसंयुते ।
मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवपंचमे ।।३५।।

मीन-वृश्चिक से युक्त कर्क (अर्थात् मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क) कुम्भ-मिथुन, मकर-कन्या इन राशियों में नवपंचम भी शुभद नहीं है। इसकी किसी-किसी आचार्यों ने उपेक्षा की है परन्तु हमने प्रसंगवश यहाँ सन्निवेश कर दिया।।३५।।

द्विर्द्वादशे विशेषः -

द्विर्द्वादशं शुभं प्रोक्तं मीनादौ युग्मराशिषु ।
मेषादौ युग्मराशौ तु निर्धनत्वं न संशयः ।।३६।।

मीनादि युग्म राशि (मीन-मेष, वृष-मिथुन,....) का द्विर्द्वादश हो तो शुभ और मेषादि युग्म राशि का द्विर्द्वादश (मेष-वृष, मिथुन कर्क,...) हो तो अशुभ द्विर्द्वादश होता है।।३६।।

अन्यच्च -

पुंसो गृहात्सुतगृहे सुतहा च कन्या
धर्मे स्थिता धनवती पतिवल्लभा च।
द्विर्द्वादशे धनगृहे धनहा च कन्या
रिष्फे स्थिता धनवती पतिवल्लभा च।।३७।।

वर की राशि से पाँचवीं राशि कन्या की हो तो सन्तान-हानि और नववीं राशि कन्या की हो तो कन्या धनवती और पति की परम प्यारी होती है। अथवा द्विर्द्वादशों में वर की राशि से दूसरी कन्या की राशि हो तो धन का नाश और बारहवीं कन्या की राशि हो तो कन्या धनवती और पति की अत्यन्त प्रिय होती है।

तथा च -

मृगः कुलीरेण घटेन सिंहो वैरप्रदः स्यात्समसप्तकोयम् ।
तुला वृषेणाथ वृषेण सिंहो मेषेण कीटो मिथुनेन मीनः ।।
चापेन कन्या घटभेन चालिर्दौर्भाग्यदैन्ये दश-तुर्यकेऽस्मिन् ।।३८।।

मकर-कर्क, कुम्भ-सिंह और तुला-वृष राशि का सम-सप्त वैरप्रद होता है एवं वृष-सिंह, मेष-कर्क मिथुन-मीन, कन्या-धनु, वृश्चिक-कुम्भ राशियों का परस्पर दशम-चतुर्थ दुर्भाग्य और दुःख देने वाला है।।३८।।

दुष्टभकूटापवादः (मु० चि०) -

प्रोक्ते दुष्टभकूटे परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो-
ऽथो राशीश्वरसौहृदेऽपि गदितो नाड्यर्क्षशुद्धिर्यदि।
अन्यर्क्षेशपयोर्बलित्वसखिते नाड्यृक्षशुद्धौ तथा
ताराशुद्धिवशेन राशिवशताभावे निरुक्तो बुधैः ।।३९।।

दुष्ट भकूट में (१) वर-वधू के राशियों के स्वामी एक हों (यथा षडाष्टक में मेष-वृश्चिक और वृष-तुला में, द्विर्द्वादश में मकर-कुम्भ में एकाधिपत्य होता है किन्तु नवपंचम में एकाधिपत्य का अभाव होता है)। (२) अथवा दोनों की राशि स्वामियों में परस्पर मित्रता हो (जैसे षडष्टक में मीन-सिंह, नवपंचम में मेष-धनु, मेष-सिंह, वृष-कन्या, वृष-मकर, मिथुन-तुला, सिंह-धनु, तुला-कुम्भ, वृश्चिक-मीन, द्विर्द्वादश में मीन-मेष, वृष-मिथुन, कर्क-सिंह, कन्या-तुला, वृश्चिक-धनु हो) तो विवाह शुभ होता है। इन दोनों स्थितियों में नाड़ी का पृथक्-पृथक् होना आवश्यक है। (३) अन्यर्क्ष (अन्य राशि) अर्थात् प्रीतिषडष्टक इत्यादि से भिन्न राशि हो और नाड़ी नक्षत्र शुद्धि हो तो नवांशपतियों के बलित्व और सखित्व दोनों होने पर विवाह उत्तम होता है। (जैसे भरणी नक्षत्र १ चरण और हस्त के १ चरण में नाड़ी अलग-अलग और षडष्टक है किन्तु अंश स्वामी सूर्य और भौम में बलित्व सखित्व है, (४) अन्यर्क्ष हो किन्तु राशिवश्य ठीक बनती हो तो (५) अथवा दोनों की तारा और राशिवश्य ठीक बनता हो तो विवाह शुभ होता है।।३९।।

(८) नाड़ीविचारः (मुहूर्त मा०) –

मूलेन्द्रार्कभपाश्यजैकचरणादित्यार्यमेशाश्विभै-
र्याम्येन्द्वीज्यभमित्रभाग्यवसुभत्वाष्ट्राम्ब्वहिर्बुध्न्यभैः ।
अन्यैर्नाड्य इहैकनाडिनवके स्यातां द्विभे चेन्मृति-
र्गोदादक्षिणतः क्वचिन्नृपमुखे पार्श्वैकनाडी हिता ।।४०।।

मूल, ज्येष्ठा, हस्त, शतभिषा, पूर्वाभाद्रा, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, आर्द्रा अश्विनी, इन ९ नक्षत्रों की आदि नाड़ी। भरणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा, चित्रा, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा इन ९ नक्षत्रों की मध्य नाड़ी और शेष (कृत्तिका, रोहिणी आश्लेषा, मघा स्वाती, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण और रेवती) ९ नक्षत्रों की अन्त्य नाड़ी होती है। एक ही नाड़ी में वर-कन्या दोनों के नक्षत्र हों तो मृत्यु होती है। किसी-किसी आचार्य का मत[1] है कि अगल बगल की (आदि अथवा अन्त्य) नाड़ी हो तो गोदवरी के दक्षिण देशवासी क्षत्रियादिको के लिये शुभ होती है (परन्तु मध्यनाड़ी सर्वत्र सब वर्णों के लिये अशुभ है)।।४०।।

नक्षत्रैक्ये-राश्यैके सति वैशिष्टयम् (मु० चि०) –

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव ।
नाड़ीदोषो नोगणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ।।४१।।

(१) वर-कन्या दोनों की राशि एक और भिन्न-भिन्न नक्षत्र हों, (२) नक्षत्र एक हो भिन्न-भिन्न राशियाँ हो तो नाड़ी का दोष और गण का दोष नहीं होता है। एवं नक्षत्र का ऐक्य हो (राशि भी एक ही हो) परन्तु पाद भेद हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।।४१।।

नृदूरविचारः –

भामिनी जन्मनक्षत्राद् द्वितीयं पतिजन्मभम् ।
न शुभं भर्तृनाशाय कथितं ब्रह्मयामले ।।४२।।

कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो शुभ नहीं होता, क्योंकि यह पति के नाश के लिये होता है ऐसा ब्रह्मयामल में कहा है।।४२।।

गुणज्ञानप्रकारः (मुहूर्तमार्तण्डे) –

भूवर्णैक्यवरोत्तमेऽथ वशभक्षेऽर्द्धं द्वयं मित्रयोः
खं वैराशनके धरारिवशकेऽथो सद्वयोरग्नयः ।
मिश्रे तच्छकलं त्वथातिसुहृदोर्वेदास्तयो मित्रयो-
रेकः स्याद्द्विवितोः स्वभावगुणयोर्द्वौ खं महद्वैरिणोः ।।४३।।
एकेशोभयमित्रयोः शरमिता अर्द्धं समारातिके
चत्वारः सममित्रके रिपुहिते भूमिर्ह्युदासे त्रयः ।
ना देवो मनुजा वधूरिह रसास्तद्वैपरीत्ये शराः
षट् साम्येऽस्रपपूरुषः सुरवधूरत्रैकको ऽन्यत्र खम् ।।४४।।
दुःकूटे यदि योनिमैत्रमवलादूरं तदाम्भोधयो-
र्नो चेत्खं त्वनयोर्यदैकमिह भूर्भाङ्घ्र्यैक्यके खं गुणः।
सत्कूटे वरदूरता भरिपुता षड्भिन्नराश्यैक्यभे
पञ्चान्यत्र सुकूटके च गिरयोऽथो नाडिभेदे गजाः।।४५।।

---

१. विवाह कुतुहले – शुक्रे जीवे तथा सौम्ये एक राशीश्वरे यदि। नाडी दोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः। भृगुः – रोहिण्या-मृगेन्द्राग्निक-पुष्य-श्रवण-पौष्णभम्। अहि-र्बुध्न्यर्क्ष-भतेषां नाड़ीदोषो न विद्यते।।

वश्यगुणाः (२)

	वश्या	च.	मा.	ज.	व.	की.
कन्या	चतु.	२	१	१	०	१
	मानव	१	२	।।	०	१
	जलचर	१	।।	२	१	१
	वनचर	०	०	१	२	०
	कीट	१	१	१	०	२

वर्ण गुण के लिये (१)

	व.४	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
कन्या	विप्र	१	०	०	०
	क्षत्रि.	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

६ गणगुणाः।

		दे.	म.	रा.
कन्या	दे.	६	५	१
	म.	६	६	०
	रा.	०	०	६

८ नाड़ी गुणाः।

	ना.	आ.	म.	अ.
कन्या	आ.	०	८	८
	म.	८	०	८
	अ.	८	८	०

ग्रहमैत्री गुण (५)

	(५)	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
कन्या	सू.	५	५	५	४	५	०	०
	चं.	५	५	४	१	४	।।	।।
	मं.	५	४	५	।।	५	३	।।
	बु.	३	१	।।	५	।।	५	४
	बृ.	५	४	५	।।	५	।।	३
	शु.	०	।।	३	५	।।	५	५
	श.	०	।।	।।	४	३	५	५

तारा गुणाः (३)

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
२	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
३	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
४	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
५	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
६	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
७	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
८	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
९	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३

योनिगुणाः (४)

योनयः	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जा.	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	३	१	३	०	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	१	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	२	२	२	२	०	२	२	१
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२
मूषक	३	३	३	१	२	०	४	३	३	२	३	२	१	१
गौ	३	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	३	२	२	३
व्याघ्र	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	१
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	३	१	४	२	२	१
वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२
नकुल	२	२	२	०	२	२	१	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	३	१	२	२	४

भकूटगुणाः (७)

रा.	१ मे.	२ वृ.	३ मि.	४ क़.	५ सिं.	६ कं.	७ तु.	८ वृ.	९ ध.	१० म.	११ कुं.	१२ मी.
मे.	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृ.	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मि.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
क.	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिं.	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कं.	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तु.	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
ध.	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
म.	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुं.	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

(१)वर-वधू दोनों का एक वर्ण या वर उत्तमवर्ण हो तो एक गुण होता है। (२) वश्य में- वशभक्ष्य हो तो आधा, दोनों राशियों में मित्रता हो तो दो, वैर-भक्ष्य हो तो शून्य और शत्रु-वश्य हो तो एक गुण होता है। (३) दोनों की शुभ तारा हो तो ३ गुण, एक की शुभ दूसरे की अशुभ तारा हो तो डेढ़ गुण होता है। (४) योनि में उत्तम प्रीति हो तो चार गुण, साधारण मित्रता हो तो ३ गुण, साधारण शत्रुता हो तो १ गुण, समता हो तो २ गुण और घोर वैरत्व हो तो शून्य गुण होता है। (५) दोनों के एक ही स्वामी हो वा दोनों के स्वामियों में परस्पर मित्रता हो तो ५ गुण, आपस में एक का दूसरा सम दूसरे का पहला शत्रु हो तो आधा, दोनों आपस में सममित्र हों तो चार, शत्रु-मित्र हों तो एक, सम-सम हों तो तीन गुण होते हैं। (६) वर देवगण वधू मनुष्य गण हो तो ६ गुण, इससे विपरीत (वर मनुष्य गण वधू देवगण) हो तो ५ गुण, दोनो का एक गण हो तो ६ गुण, वर राक्षसगण वधू देवगण हो तो एक और अन्यत्र शून्य गुण होते हैं। (७) दुष्टभकूट में यदि योनियों में मैत्री और स्त्री दूर हो तो ४ गुण, यदि योनि मैत्री और स्त्री दूर न हो तो शून्यगुण, यदि योनि मैत्री और स्त्री दूर में से केवल एक ही बनता हो तो एक गुण होता है। एक ही नक्षत्र एकही चरण दोनों वरवधू हो तो शून्य गुण होता है। सद्भकूट में नृदूर और योनिवैर हो तो ६ गुण, भिन्नराशि एक नक्षत्र हो तो ५ गुण अन्य सद्भकूट में ७ गुण होते हैं। (८) वर-वधू दोनों की नाड़ी अलग-अलग हो तो आठ गुण होते हैं। दोनों की एक नाड़ी होने पर गुण नहीं होते।

गुणैः षोडशभिर्निन्द्यं मध्यमा विंशतिस्तथा ।
श्रेष्ठं त्रिंशद्‌गुणं यावत् परतस्तूत्तमोत्तमम् ।।४६।

१६ गुण तक निन्द्य है, उसके वाद २० गुण तक मध्यम ३० गुणों तक श्रेष्ठ इसके वाद विवाह उत्तमोत्तम होता है।।४६।।

युञ्जामचक्रम् (मु० चि०) -

पौष्णेशशाक्राद्रससूर्यनन्दाः पूर्वार्धमध्यापरभागयुग्मम् ।
भर्त्ता प्रियः प्राग्युजिमे स्त्रियाः स्यान्मध्ये द्वयोः प्रेम परे प्रिया स्त्री ।।४७।।

रेवती से ६ नक्षत्र (रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा) तक पूर्व भाग, आर्द्रा से १२ नक्षत्र (आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा और अनुराधा) मध्यभाग और ज्येष्ठा से ९ नक्षत्र (ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक् पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद) पर भाग संज्ञक हैं। पूर्व भाग के नक्षत्रों में ही वर-वधू दोनों का नक्षत्र हो तो स्त्री को पति वहुता प्यारा होता है। मध्य भाग के नक्षत्रों में दोनों का नक्षत्र हो तो दोनों में परस्पर वड़ा प्रेम रहता है एवं यदि पर भाग में दोनों का नक्षत्र पड़ जाय तो पति को स्त्री परम प्यारी होती है। इस के अतिरिक्त भिन्न-भिन्न भागों में दोनों का नक्षत्र हो तो दोनों का शुष्क जीवन व्यतीत होता है।।४७।।

अथ वर्गकूट -

अवर्गो गरुडस्योक्तो मार्जारस्य कवर्गकः ।
सिंहस्यैव चवर्गस्तु कुक्कुरस्य टवर्गकः ।।
सर्पस्योक्तस्तवर्गस्तु पवर्गो मूषकस्य च ।
यवर्गस्तु गजस्योक्तो मेषस्य तु शवर्गकः ।।४८।।

अ वर्ग के स्वामी गरुण क वर्ग के मार्जार च वर्ग के सिंह, टवर्ग के श्वान, तवर्ग के सर्प, पवर्ग के मूषक, यवर्ग के हरिण (मृग) शवर्ग के स्वामी मेष हैं।।

स्ववर्गात्पञ्चमः शत्रुश्चतुर्थो मित्रसंज्ञकः ।
उदासीनस्तृतीयः स्याद्वर्गभेदस्त्रिधोदितः ।।४९।।

स्ववर्गे परमाप्रीतिर्मित्रवर्गेऽपि तादृशी ।
उदासीने प्रीतिरल्पा शत्रुवर्गे मृतिर्भवेत् ।।५०।।

अपने से ५वां वर्गेश शत्रु, ४ था मित्र, ३ तृतीय उदासीन (सम) होते हैं। इस प्रकार तीन भेद हैं। एक वर्ग में अत्यन्त प्रीति, मित्र वर्ग में उत्तम प्रीति, और उदासीन में थोड़ी प्रीति होती है। परस्पर शत्रुवर्ग में मृत्यु होती है।।४९-५०।।

वर्ग चक्र -

	वर्ग	स्वामी	मित्र	सम	शत्रु	दिशा	स्वर
अवर्ग	अ इ उ ए ओ	गरुड़	श्वान	सिंह	सर्प	पूर्व	८
कवर्ग	क ख ग घ ङ	मार्जार	सर्प	श्वान	मूषक	आग्नेय	५
चवर्ग	च छ ज झ ञ	सिंह	मूषक	सर्प	मृग	दक्षिण	६
टवर्ग	ट ठ ड ढ ण	श्वान	मृग	मूषक	मेष	नैऋत्य	४
तवर्ग	त थ द ध न	सर्प	मेष	मृग	गरुड़	पश्चिम	७
पवर्ग	प फ ब भ म	मूषक	गरुड़	मेष	मार्जार	वायव्य	१
यवर्ग	य र ल व	मृग	मार्जार	गरुड़	सिंह	उत्तर	३
शवर्ग	श ष स ह	मेष	सिंह	मार्जार	श्वान	ईशान	२

पुंनार्योमध्ये पूर्वं कस्य मृतिः -

दम्पतिवर्णा द्विगुणा मात्राश्चतुर्भिर्गुणाश्च युताः ।
भक्ता रामैः शेषे रूपेऽभ्रे च मृता भवेन्नारी ।।५१।।
युग्मे शेषे पत्युः मृत्युः पूर्वं भवेद्धि नियमेन।
ज्योतिः शास्त्राभिज्ञैः पूर्वैरुक्तं त्रिकालमर्मज्ञैः ।।५२।।

वर-वधू के व्यावहारिक नामों के अक्षरों के योग में जितने मात्रा-विहीन वर्ण हो उनकी संख्या को दूना करके, और मात्रा वाले अक्षरों की संख्या को चतुर्गुण करके जोड़ देना चाहिये। उस योग में ३ का भाग देने से १ और ० शेष बचे तो पहले स्त्री की मृत्यु होती है और २ शेष बचे तो स्त्री की अपेक्षा पहले पुरुष की मृत्यु होती है।।५१-५२।।

जन्मनामोल्लापननामविचारः -

अज्ञात जन्मनां नृणां नामभे परिकल्पयेत् ।
तेनैवचिन्तयेत्सर्वं राशिकूटादि जन्मवत् ।।५३।।
जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम् ।
व्यत्ययेन यदायोज्यं दम्पत्योर्निधनं भवेत् ।।५४।।

जब जन्मनाम (राशिनाम) का ज्ञान न हो तो व्यावहारिकनाम से ही राशिकूट आदि सब का विचार करना चाहिये। जन्म के नक्षत्र से जन्म के नक्षत्र का और नाम नक्षत्र से नाम नक्षत्र की गणना देखना उचित है। यदि इससे विपरीत अर्थात् जन्म नक्षत्र से नाम नक्षत्र की या नाम नक्षत्र से जन्म नक्षत्र की परस्पर गणना देखी जाय तो दोनों (वर-कन्या) का अनिष्ट होता है।।५३-५४।।

अथ प्रसंगात् विषकन्या विचारः -

शनौ द्वितीयाऽऽश्लेषा च सप्तमी वारुणं कुजे ।
विशाखा द्वादशी सूर्ये यज्जनिः सा विषा स्मृता ।।५५।।
धर्म गेहगते भौमे लग्नगे रविनन्दने ।
पंचमे दिवसाधीशे विषाख्या सा कुमारिका ।।५६।।

शनिवार को द्वितीया और आश्लेषा हो, मंगलवार को सप्तमी और शतभिषानक्षत्र हो एवं रविवार को द्वादशी और विशाखा हो। इन तीनों योगों में से किसी योग में जिस कन्या का जन्म हो वह विषकन्या कही जाती है।

जन्म समय में जिस बालिका के जन्म कुण्डली में नवम भवन में मंगल, लग्न में शनि और पंचम में सूर्य व्यवस्थित हो वह विष-कन्या होती है। ऐसी कन्यायें जहाँ रहती हैं, वहाँ दुःख, दैन्य, मृतापत्यत्व आदि का निवास रहता है।।५५-५६।।

मंगलदोष का विचार (मु० चि० पीयूषधारा) -

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
कन्या भर्तुर्विनाशाय भर्ता कन्याविनाशकृत् ।।५७।।

जन्म कुण्डली या चन्द्र कुण्डली से लग्न, बारहवें, चौथे, सातवें और आठवें स्थान में मंगल पड़े हो तो कन्या पति का और पति पत्नी का नाश करता है।।५७।।

वैधव्य योगाः -

सप्तमेशोऽष्टमे यस्याः सप्तमे निधनाधिपः ।
पापेक्षणयुतो बाला वैधव्यं लभते ध्रुवम् ।।५८।।
पापग्रहे सप्तमलग्नगेहे भर्तादिवं गच्छति सप्तमाब्दे ।
निशाकरे चाष्टमवैरिभावे तदाष्टमाब्दे निधनं प्रयाति ।।५९।।
सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा पापपीडितौ ।
तदा व्यैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र सँशयः ।।६०।।

(१.) जिस कन्या की जन्मकुण्डली में सप्तमेश अष्टममें और अष्टमेश सप्तम भवन में पड़ा हो और पापग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो वह बालिका वैधव्य युक्त होती है। (२.) जिस बालिका के जन्म समय में जन्म लग्न में या सप्तम भवन में पापग्रह पड़े हों, वह विवाह से सातवें वर्ष में विधवा होती है। (३.) यदि छठवें या आठवें भवन में चन्द्रमा पड़ा हो तो आठवें वर्ष में उसका पति मर जाता है। (४.) सातवें आठवें के स्वामी छठवें या बारहवें स्थान में पड़े हों और पापग्रहों से पीडित हो तो स्त्री विधवा हो जाती है।।५८-६०।।

अन्यच्चः -

निशाकरात् सप्तमभावसंस्था महीजमन्दागुदिवाकराश्चेत् ।
तनोरिमे जन्मनि नैधने वा दिशन्ति वैधव्यमलं मदे वा ।।६१।।
व्ययेष्टमे भूमिसुतस्य राशावगुः सपापे भवतीहं रण्डा ।
मदे कुलीरे सरवौ तुलेऽपि धनेन हीना रमतेऽन्यलोकैः ।।६२।।

जन्म समय में चन्द्रमा से सप्तम भाव में मंगल, शनि, राहु (केतु) और सूर्य पड़े हो अथवा जन्म लग्न से ये ही ग्रह अष्टम वा सप्तम में पड़े हों तो अति वैधव्य योग करते हैं। बारहवें या अष्टम में मंगल की राशि (१।८) में पाप ग्रहों के साथ राहु पड़ा हो तो अथवा सप्तम में कर्क वा तुला राशि का होकर सूर्य पड़ा हो वह कन्या निर्धन होकर अन्य पुरुषों के साथ रमण करती है।।६१-६२।।

वर-कन्याकुण्डल्यामेवैषां परिहारः -

लग्नाद्विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च ।
द्यूनस्थितो हन्त्यनपत्यदोषं वैधव्यदोषं च विषांगनाख्यम् ।।६३।।
केन्द्रे कोणे शुभाढ्यश्चेत्त्रिषडायेप्यसद्ग्रहाः ।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा ।।६४।।

जन्म समय में जन्म लग्न से अथवा चन्द्रमा से सप्तम स्थान में शुभग्रह अथवा सप्तम भवन का स्वामी पड़ा हो तो वैधव्यदोष को अथवा विषकन्यादोष को नष्ट कर देता है। केन्द्र (१।४।७।१०) और त्रिकोण (५।६) स्थानों में शुभग्रह हों और ३।६।११ वें स्थानों में पापग्रह हो तो मंगल का दोष नहीं होता एवं सप्तमाधीश सप्तम में पड़ जाय तो भी भौम जन्य दोष निवृत्ति हो जाती है।।६३-६४।।

अथैषां कुयोगानां वरकुण्डल्यामप्यपवादः उक्तः -

शनिर्भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत् ।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष - विनाशकृत्'।।६५।।
शत्रुस्थाने यदा भौमः सप्तमे सिंहिकासुतः।
नैधने भानुपुत्रस्थे तस्य भार्या न जीवति ।इति।।६६।।

यदि वर की कुण्डली में शनि वा मंगल अथवा कोई भी पाप ग्रह उन्ही स्थानों (१।४।७।८।१२) में पड़ा हो तो (कन्या कुण्डलीस्थ) भौम दोष को नष्ट कर देता है। वर कुण्डली में यदि अन्यान्य स्त्री हानिकर योग हों तो भी इस दोष का परिहार हो जाता है। यदि पुरुष की कुण्डली में लग्न से छठें भौम हो, ७म में राहु हो और ८म में शनि हो तो स्त्री की मृत्यु हो जाती है।।६५-६६।।

रवि-चन्द्र-गुरु-शुद्धिः -

गुरुशुद्धिवशेन कन्यकानां समवर्षेषु षडब्दकोपरिष्टात् ।
रविशुद्धिवशाच्छुभो वराणमुभयोश्चन्द्रविशुद्धितो विवाहः ।।६७।।

[२]छः वर्ष के बाद समवर्षो में गुरू की शुद्धि वश कन्या का और (१६ वर्ष के बाद) सूर्य की शुद्धिवश वर का विवाह करना चाहिये। और दोनों को [२]चन्द्रमा की शुद्धि अवश्य देखनी चाहिये।।६७।।

कन्यायाः समवर्षेषु वरस्य च विषम वर्षेष्वेव विवाहः उचितः -

नारदसंहितायाम्ः -

युग्मेब्दे जन्मतः स्त्रीणां शुभदं पाणिपीडनम् ।
एतत्पुंसामयुग्मेब्दे व्यत्यये नाशनं तयोः ।।६८।।

स्त्रियो का विवाह सम वर्षो में पुरुष का विषम वर्षों में करना शुभ होता है। वयतिक्रम करने से हानि होती है।।६८।।

गुरुशुद्धिविचारः (मु० चि०) -

बटु - कन्या - जन्मराशे - स्त्रिकोणायद्विसप्तगः।
श्रेष्ठो गुरुः खषट्त्र्याद्ये पूजनाऽन्यत्र निन्दितः ।।६९।।
स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः ।
रिष्फाष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत् ।।७०।।

वटु (जिसका उपनयन करना हो) और कन्या (जिसका परिणय करना हो) की जन्म राशि से त्रिकोण (५।६), एकादश, द्वितीय, सप्तम राशि में बृहस्पति हो तो श्रेष्ठ होता है। दशम, षष्ठ, तृतीय, जन्मराशि का बृहस्पति हो तो पूजन करने से शुभ होता है। तथा अन्य (१२।८।४) स्थानों में हो तो अशुभ जानना। अपने उच्च, अपने राशि, अपने मित्र की राशि, अपने नवमांश, अपने वर्गोत्तम में गुरु हो तो (१२।८।४) इन स्थानों में रहने पर भी शुभद होता है। नीच राशि और शत्रु की राशि में होने पर शुभ स्थान (५।६।११।२।७) में रहता हुआ भी अशुभ फलद हो जाता है।।६८-७०।।

---

१. मूर्ती तुर्येऽष्टमे भौमे सप्तमेऽन्तये च जन्मनि। भर्तुर्योषिद्विनाशः स्यात् स्त्रीया भर्तृनिवासनम्।।
एवं विधे कुजे संस्थे विवाहो न कदाचन। कार्यो वा गुण वाहुल्ये कुजो वा तादृशो द्वयोः।।
यस्मिन् योगे समुत्पन्ना पतिं हन्ति कुमारिका। स्त्रीहन्ता योगे समुत्पन्न पत्नीं हन्ति नरोऽपि च।।
स्त्रीहन्ता परिणीता चेत् पतिहन्ती कुमारिका। तदा वैधव्ययोगस्य भंगो भवति निश्चयात्।।

२. 'रजोदर्शनादर्वागेव कन्योद्वाहः कार्यः' इति केचित्। २. चन्द्रशुद्धिः प्रागेवोक्ता।

रविशुद्धिः –

त्रिषड्दशायेषु शुभो दिवाकरश्चतुर्थरिष्फाष्टगतस्तु निन्द्यः ।
शेषेषु पूज्यो गदितो विवाहे शुभाशुभत्वं गुरुवद्विचार्यम् ।।७१।।

सूर्य जन्म राशि से (३।६।१०।११) इन स्थानों में शुभ, (१२,८,४) इन स्थानों में निन्द्य और शेष (१।२।५।७।९) स्थानों में पूजने से शुभ होता है। इनका भी शुभाशुभत्व बृहस्पति की तरह विचारना चाहिये।

२।५।९ राशिगेऽर्के परिहारः –

अनिष्टस्थानगे सूर्ये शुभराशिः पुरो यदि ।
त्रयोदशदिनं त्यक्त्वा शेषस्थं शुभमादिशेत् ।।७२।।

विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम्

रविः	चन्द्रः	गुरुः	ग्रहा
३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।९।११	शुभ स्थानानि
१।२।५।७।९	१।२।५।९	१।३।१०।६	पूज्य स्थानानि
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निन्दित स्थानानि

विशेषः –

गोचरं वेधजं चाष्टवर्गजं रूपजं बलम् ।
यथोत्तरं बलाधिक्यं स्थूलं गोचरमार्गजम् ।।७३।।
दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्याशुद्धिविवर्जिता ।
तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः ।।७४।।

गोचर वल, वेधजवल, अष्टवर्गजवल, रूपजवल ये यथोत्तर वली होते हैं। गोचर-मार्गजबल स्थूल है। कन्या की अवस्था दशवर्ष से अधिक हो जाय तो कन्या की बृहस्पति शुद्धि का विचार नहीं करना चाहिये केवल तारा और चन्द्रमा का बल देखकर उसका विवाह कर देना चाहिये।।७३-७४।।

विवाहे विहितमासाः –

मिथुनकुम्भमृगालिवृषाऽजगे मिथुनगेऽपि रवौ त्रिलवे शुचेः ।
अलिमृगाऽजगते करपीडनं भवति कार्तिक-पौषमधुष्वपि ।।७५।।

मिथुन, कुम्भ, मकर, वृश्चिक, वृष तथा मेष राशि के सूर्य में विवाह करना उत्तम है, मिथुन के सूर्य में आषाढ़ सुदी १० तक, वृश्चिक के सूर्य में कार्तिक में, मकर के सूर्य में पौष में, मेष के सूर्य में चैत्र में विवाह होता है।।७५।।

जन्ममासि न च जन्मभे तिथौ नैव जन्मदिवसेऽपि कारयेत् ।
आद्यगर्भदुहितुः सुतस्य वा ज्येष्ठमासि न च जातु मंगलम् ।।७६।।

जन्म मास, जन्मनक्षत्र, जन्मतिथि, जन्मदिन में और प्रथम गर्भ के पुत्र-पुत्री का विवाह ज्येष्ठ मास में कदापि नहीं करना चाहिये।।७६।।

ज्येष्ठयोर्ज्येष्ठे निषेधः –

ज्येष्ठे न ज्येष्ठयोः कार्यं नृनार्योः पाणिपीडनम् ।
तयोरन्यतरे ज्येष्ठे ज्येष्ठमासेऽपि कारयेत् ।।७७।।

ज्येष्ठ मास में कन्या-वर दोनों जेठे का विवाह कदापि नहीं करना चाहिये। यदि दोनों में एक जेठ हो तो ज्येष्टमास में भी विवाह कर लेना चाहिये।।७७।।

कन्या-वरण -

विश्व स्वाती वैष्णव पूर्वात्रय मैत्रैर्वस्वाग्नेयैर्वा करपीडोचितऋक्षैः।
वस्त्रालंकारादिसमेतैः फलपुष्पैः सन्तोष्यादौ स्यादनु कन्या वरणं हि।।७८।।

उत्तराषाढ़ा, स्वाती, श्रवण, तीनों पूर्वा, अनुराधा, धनिष्ठा, कृत्तिका अथवा विवाहोक्त नक्षत्रों में इच्छानुसार फल-पुष्प, वस्त्राभूषण के साथ कन्या का वरण (गोद भरना) करना चाहिये।।७८।।

वरवरणमुहूर्तः -

धरणिदेवोऽथवा कन्यकासोदरः शुभदिने गीतवाद्यादिभिः संयुतः ।
वरवृत्तिं वस्त्रयज्ञोपवीतादिना ध्रुवयुतैवह्निपूर्वात्रयैराचरेत् ।।७९।।

ब्राह्मण (पुरोहित) अथवा कन्या का सगा भाई गीत वाद्य के साथ शुभ दिनों में ध्रुव, (ग्र० १।४५) कृत्तिका, तीनों, पूर्वा और विवाहोदित नक्षत्रों में कपड़ा, यज्ञोपवीत, नारियल, सोपारी, हल्दी, अक्षत और द्रव्य इत्यादि से वर का वरण (तिलक) करे।।७९।।

वैवाहिक कृत्य समयः -

विवाहकृत्यं सकलं विवाहभैर्विलोकयेन्नैव बलं हिमद्युतेः।
नवत्रिषष्ठेऽह्नि विवाहपूर्वतो न वर्णकोमण्डपतैलमंगलम् ।।८०।।

विवाह में कहे नक्षत्रों में विवाह सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्य अन्न दलना, कूटना, मंगल कलश स्थापन, गृह-आँगन का विभूषण (मकान छुवाना, कोहवर बनवाना, दरवाजे पर चित्रादि लिखाना) वेदी और मण्डप बनाना इत्यादि शुभ होता है। इन कार्यो में चन्द्रशुद्धि देखना आवश्यक नहीं है। और इन कार्यो को विवाह के पूर्व ३, ६, ९ दिनों में नहीं करना चाहिये।।८०।।

मण्डपोद्वासन समयः नादरसंहितायाम् -

समे तु दिवसे कुर्याद्देवकोत्थापनं बुधः ।
षष्ठं च विषमं नेष्टं मुक्त्वा पंचमसप्तमौ ।।८१।।

विवाहनक्षत्राणि: -

निर्वेधैः शशिकरमूलमैत्रपित्र्य-
ब्राह्मान्त्युत्तरपवनैः शुभो विवाहः ।
रिक्ताऽमारहिततिथौ शुभेऽह्नि, वैश्वप्रां-
त्यांघ्रिः श्रुतितिथिभागतोऽभिजित्स्यात् ।।८२।।

वेध रहित मृगशिरा, हस्त, मूल, अनुराधा, मघा, रोहिणी, रेवती, तीनों उत्तरा, स्वाती इन ११ नक्षत्रों में रिक्ता (४।९।१४) अमावस्या को छोड़ अन्य तिथियों में शुभग्रहों के वारों मे विवाह करना शुभ होता है। उत्तराषाढ़ा का चतुर्थ चरण श्रवण का आदिम १५ वाँ हिस्सा मिलकर अभिजित् का भोगकाल होता है।

विवाहे दशदोषा: -

लत्ता पातो युतिर्वेधो जामित्रं बुधपंचकम् ।
एकार्गलोपग्रहौ च क्रान्तिसाम्यं तथैव च ।।८३।।
दग्धातिथिश्च विज्ञेया दश दोषा महाबलाः ।
एतान्दोषान्परित्यज्य लग्नं संसाधयेद् बुधः।।८४।।

लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, बुधपंचक, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य दग्धातिथि, इन १० दोषों को त्याग करके विवाह लग्न देखना चाहिये।।८३-८४।।

१ लत्तादोषः (मु० चि०) –

ज्ञराहुपूर्णेन्दुसिताः स्वपृष्ठे भं सप्तगोजातिशरैर्मितं हि।
संलत्तयन्ते ऽर्कशनीज्यभौमाः सूर्याष्टतर्काग्निमितं पुरस्तात् ।।८५।।

बुध जिस नक्षत्र पर रहता है उससे पिछले ७वें नक्षत्र को, राहु पिछले ९वें नक्षत्र को, पूर्ण चन्द्रमा पिछले २२वें नक्षत्र को, शुक्र पिछले ५वें नक्षत्र को लत्ता योग करता है। एवं सूर्य अगले १२वे नक्षत्र को, शनि अगले ८वें नक्षत्र को, बृहस्पति अगले ६वें नक्षत्र को, मंगल अगले तीसरे नक्षत्र को लत्ता योग करता है।

उदाहरण - सारांश यह है कि यदि मृगशिरा नक्षत्र में विवाह करना है तो (उस मास के पूर्ण चन्द्रमा को उत्तराभाद्रपदा में) बुध को पूर्वाफाल्गुनी में, शुक्र को आश्लेषा में, राहु को हस्त में एवं सूर्य को उत्तराषाढ़ा में, मंगल को कृत्तिका में, गुरु को रेवती में, शनि को पूर्वाभाद्रपदा में न होना चाहिये। यदि उन ग्रहों में से कोई ग्रह उक्त नक्षत्र पर रहेंगे तो मृगशिरा पर उस ग्रह की लत्ता कही जायेगी। इसीप्रकार सर्वत्र देखना चाहिये।।८५।।

२ पातदोषः (मु० चि०) –

हर्षणवैधृतिसाध्यव्यतिपातकगण्डशूलयोगानाम्।
अन्ते यन्नक्षत्रं पातेन निपातितं तत्स्यात् ।।८६।।

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गण्ड, शूल इन योगों के अन्त में जो नक्षत्र वर्तमान हो वह पात से दूषित होता है, इसलिये उस नक्षत्र में विवाह करना निषिद्ध है।।८६।।

३ युतिदोषः (मु० चि०) –

चन्द्रे सूर्यादिसंयुक्ते दारिद्र्यं मरणं शुभम्।
सौख्यं सापत्न्यवैराग्ये पापद्वययुते मृतिः ।।८७।।

चन्द्रमा, सूर्य से युत हो तो दारिद्र्य, भौम से युत हो तो मरण, बुध से युक्त हो तो शुभ, बृहस्पति से युत हो तो सौख्य, शुक्र से युक्त हो तो सापत्न्य (पति की दूसरी पत्नी भी आती है। सौतिया डाह), शनि से युक्त हो तो वैराग्य और दो पापग्रहों से युक्त हो तो मृत्यु होती है। अर्थात् जिस नक्षत्र में विवाह करना है उसी नक्षत्र में कोई ग्रह बैठा हो तो उस ग्रह का युतिदोष होता है।।८७।।

अपवादः –

पापद्वयगते चन्द्रे स्वोच्चे मित्रर्क्षगे तथा।
युतिदोषश्च न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसी सदा ।।८८।।

चन्द्रमा दो पापग्रहों से युक्त हो और अपनी उच्च राशि, मित्र की राशि में स्थित हो तो युति दोष नहीं होता है, प्रत्युत स्त्री पुरुष का कल्याण होता है।।८८।।

४ विवाहे पंचशलाकावेधः (मु० चि०) –

वेधोऽन्योन्यमसौ विरिञ्च्यभिजितोर्याम्यानुराधर्क्षयो-
र्विश्वेन्दोर्हरिपित्र्ययोर्ग्रहकृतो हस्तोत्तराभाद्रयोः।
स्वातीवारुणयोर्भवेन्निर्ऋतिभादित्योस्तथोपान्त्ययोः
खेटे तत्र गते तुरीयचरणाद्योर्वा तृतीयद्वयोः ।।८९।।

रोहिणी–अभिजित् का, भरणी–अनुराधा का, उत्तराषाढ़ा–मृगशिर का, श्रवण–मघा का, हस्त–उत्तराभाद्रपदा का, स्वाती–शतभिषा का, मूल–पुनर्वसु का उत्तराफाल्गुनी–रेवती का आपस में वेध[1] (विवाहदिन नक्षत्रों का) होता है। इनमें प्रथम और चौथे चरण से, द्वितीय और तृतीय चरण में परस्पर वेध होता है।।८९।।

---

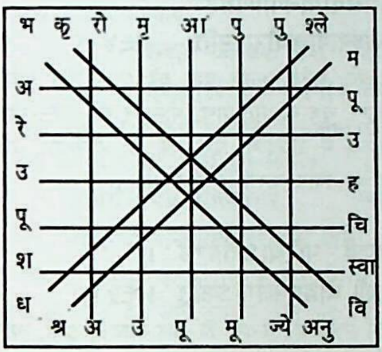
१. यहाँ विवाहोदित नक्षत्रों का ही वेध लिखा है।

अन्येषु मंगलेषु सप्तशलाकावेधः (मु० चि०) -

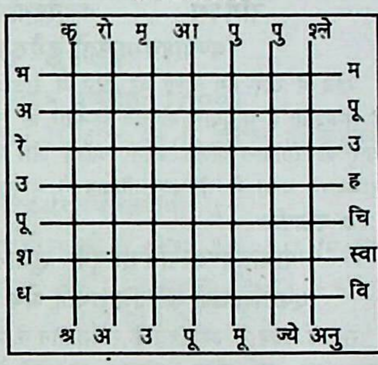
शाक्रेज्ये शतभानिले जलशिवे पौष्णार्यमर्क्षे वसु-
द्वीशे वैश्वसुधांशुभे हयभगे सार्पानुराधे मिथः ।
हस्तोपान्तिमभे विधातृविधिभे मूलादितीत्वाष्ट्रभा-
जांघ्री याम्यमघे कृशानुहरिभे विद्धे कुभृद्रेखिके।।९०।।

ज्येष्ठा-पुष्य का, शतभिषा-स्वाती का, पूर्वाषाढ़ा-आर्द्रा का, रेवती-उत्तराफाल्गुनी का, धनिष्ठा-विशाखा का, उत्तराषाढ़ा-मृगशिरा का, अश्विनी-पूर्वाफाल्गुनी का, आश्लेषा-अनुराधा का, हस्त-उत्तराभाद्रपद का, रोहिणी-अभिजित् का, मूल-पुनर्वसु का, चित्रा-पूर्वाभाद्रपदा का, भरणी-मघा का, कृत्तिका-श्रवण का, वेध सप्तशलाका चक्र में होता है।।९०।।

पंचशलाकाबेधः



सप्तशलाकाबेधः



परिहारः (विवाहवृन्दावने)

विषप्रदिग्धेन हतस्य पत्रिणा मृगस्य मांसं शुभदं क्षतादृते।
तथैव पादो न शुभो वशिष्ठः पादाः शुभानेति पितामहेन ।।९१।।

जैसे विष में बुझाये बाणों से मारे गये मृग का मांस घाव से अतिरिक्त स्थान का खाने योग्य होता है, वैसे ही जिस पाद पर वेध हो उसके अतिरिक्त चरणों में विवाह हो सकता है- यह वशिष्ठ का मत है (परन्तु आचार्यों का मत है कि पापग्रह से वेधित नक्षत्र के चारों चरणों का त्यागना चाहिये)।।९१।।

५ जामित्रदोषः (मु० चि०) -

लग्नाच्चन्द्रान्मदनभवनगे खेटे न स्यादिह परिणयनम् ।
किंवा बाणाशुगमितलवगे जामित्रं स्यादशुभकरमिदम् ।।९२।।

लग्न और चन्द्रमा से सातवें स्थान में कोई ग्रह हो तो विवाह नहीं करना चाहिये। यदि लग्न या चन्द्रमा से ५५वें नवमांश पर ग्रह हो तो वह अशुभ फल का देने वाला जामित्र होता है।।९२।।

६ बुधपंचकदोषः (वाणदोषः अपवाद) (मु० चि०) -

रसगुणशशिनागाब्याढ्यसंक्रान्तियाता-
शकमितिरथ तष्टाङ्कैर्यदा पंच शेषाः ।
रुगनलनृपचौरा मृत्युसंज्ञश्च बाणो
नवहृतशरशेषे शेषकैक्ये सशल्यः ।।९३।।

सूर्य के वर्तमान राशि के बीते हुए अंशों को पाँच जगहों पर रखकर उसमें अलग-अलग क्रम से ६।३।१।८।४ इन अंकों को जोड़ के ६ का भाग देने पर यदि पहले जगह ५ शेष बचे तो रोग, दूसरी जगह ५ शेष बचे तो अग्नि, तीसरी जगह ५ शेष बचे तो राजा, चौथी जगह ५ शेष बचे तो चौर, पाँचवें स्थान में ५ शेष बचे तो मृत्युबाण होता है। सब शेषों के योग में ६ का भाग देकर यदि ५ शेष बच जाय तो सशल्य बाण होता है।

उदाहरण - विवाह के समय यदि सूर्य किसी राशि में ६।१८ और २७वें अंश पर हो तो रोगवाण, ३।१२।२१ और ३०वें अंश पर हो तो अग्निवाण, ५,१४ और २३वें अंश पर तो राजवाण, ७,१६ और २५वें अंश पर हो तो चौर बाण और २।११।२० और २६वें अंश पर हो तो मृत्युबाण होता है।।६३।।

परिहारः (मु० चि०) -

रात्रौ चौररुजौ दिवा नरपतिर्वह्निः सदा सन्ध्ययो-
मृत्युश्चाथ शनौ नृपो विदि मृतिर्भौमेऽग्निचौरौ रवौ।
रोगेऽथ व्रतगेहगोपनृपसेवायानपाणिग्रहे
वर्ज्याश्च क्रमतो बुधैरुगनलक्ष्मापालचौरा मृतिः ।।६४।।

रात्रि में चौर-रोग वाणों को, दिन में राजबाण को, सर्वदा अनल बाण को, प्रातः और सायं काल दोनों सन्ध्याओं में मृत्युबाण को एवं शनिवार को नृपबाण, बुध को मृत्युबाण, भौमवार को अग्नि-चौरबाण, रविवार को रोगबाण वर्जित करना चाहिये और व्रतबन्ध में रोगवाण, घर छाने में अग्निवाण, राजसेवा में राजवाण, यात्रा में चौरवाण, विवाह में मृत्युबाण का त्याग करना चाहिये।।६४।।

७ एकार्गलः -

व्याघातगण्डव्यतिपातपूर्वे शूलान्त्यवज्रे परिघाऽतिगण्डे ।
एकार्गलाख्यो ह्यभिजित्समेतो दोषः शशी चेद्विषमर्क्षगोऽर्कात् ।।६५।।

सूर्य के नक्षत्र से अभिजित् के सहित गिन के विषम नक्षत्र पर चन्द्रमा हो और व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुम्भ, शूल, व्रज, परिघ, अतिगण्ड इन योगों में से कोई योग हो तो एकार्गल दोष होता है।।६५।।

८ उपग्रहः (मु० चि०) -

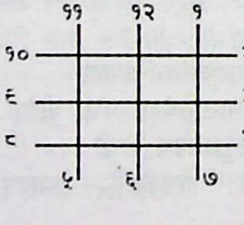
शराष्टदिक्शक्रनगातिधृत्यस्तिथिर्धृतिश्च प्रकृतेश्च पंच।
उपग्रहः सूर्यभतोऽब्जताराः शुभा न देशे कुरुवाह्लिकानाम्।।६६।।

सूर्य के नक्षत्र से (५।८।१०।१४।७।१६।१५।१८।२१।२२।२३।२४।२५) इन नक्षत्रों पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है यह कुरु, वाह्लिक देशों में वर्जित है।।६६।।

९ क्रान्तिसाम्यम् -

पंचास्याजौ गोमृगौ तौलिकुम्भौ कन्यामीनौ कर्क्यली चापयुग्मे।
तत्रान्योन्यं चन्द्रभान्वोर्निरुक्तं क्रान्तेः साम्यं नो शुभं मंगलेषु।।६७।।

सिंह-मेष, वृष-मकर, तुला-कुम्भ, कन्या-मीन, कर्क-वृश्चिक, धनु-मिथुन राशियों में परस्पर सूर्य और चन्द्रमा के रहने पर क्रान्तिसाम्य होता है। यह मांगलिक कार्यो में निषिद्ध है।।६७।।



१० दग्धतिथिदोषः -

मीने चापे द्वितीयाऽर्के चतुर्थी वृषकुम्भयोः।
मेषकर्कटयोः षष्ठी कन्यायुग्मेषु चाष्टमी ।।९८।।
दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।
एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः ।।९९।।

मीन और धनु के सूर्य में द्वितीया, वृष-कुम्भ के सूर्य में चतुर्थी, मेष-कर्क के सूर्य में षष्ठी, कन्या-मिथुन के सूर्य में अष्टमी, वृश्चिक-सिंहराशि के सूर्य में दशमी, मकर-तुला के सूर्य में द्वादशी दग्ध तिथि होती है। ये दग्ध तिथियाँ शुभकार्यों में निषिद्ध हैं।।९८-९९।।

१२।९	२।११	१।४	६।३	८।५	१०।७	राशियाँ
२	४	६	८	१०	१२	तिथियाँ

एषां देशभेदेनापवादः -

लत्ता मालवके देशे पातश्च कुरुजाङ्गले ।
एकार्गलं च कश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ।।१००।

लत्ता दोष को मालवा देश में, प्रात-दोष को कुरु और जांगल देश में, एकार्गल को काश्मीर में और वेध सब देशों में वर्जित हैं।।१००।।

एकार्गलोपग्रहपातलत्ता जामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः ।
नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपत्रे लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः ।।१०१।। *(मु०चि०)*

एकार्गल, उपग्रह, पात, लत्ता, जामित्र, कर्तरी, उदयास्त इत्यादि दोष चन्द्रमा और सूर्य के बली होने पर नष्ट हो जाते हैं। जैसे सूर्योदय होने पर रात्रि नष्ट हो जाती है।।१०१।।

लग्नशुद्धिः -

व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः ।
लग्नेट्कविग्लौश्च रिपौ मृतौ ग्लौर्लग्नेट्शुभाराश्च मदे च सर्वे ।।१०२।।
त्र्यायाष्टषट्सु रविकेतुतमोर्कपुत्रा-
स्त्र्यायारिगः क्षितिसुतो द्विगुणायगोऽब्जः ।
सप्तव्ययाष्टरहितौ ज्ञगुरू सितोष्ट-
त्रिद्यूनषट्व्ययगृहान्परिहृत्य शस्तः ।।१०३।।

विवाह लग्न से बारहवें में शनि, दशवें में मंगल, तीसरे शुक्र, लग्न में चन्द्रमा और पापग्रह शुभद नहीं होते। छठवें लग्न का स्वामी, शुक्र और चन्द्रमा, आठवें चन्द्रमा, लग्नेश, शुभग्रह और मंगल और सातवें सब ग्रह निषिद्ध होते हैं। तीसरे, ग्यारहवें, आठवें, छठवें, सूर्य, केतु, राहु, शनि। तीसरे, ग्यारहवें, छठवें मंगल। दूसरे, तीसरे, ग्यारहवे चन्द्रमा। सातवें, बारहवें, आठवें स्थानों को छोड़ अन्य स्थान में बुध-बृहस्पति। आठवें, तीसरे, सातवें, छठे, बारहवें स्थानों को छोड़ अन्य स्थानों (१।२।४।५।९।१०।११) में शुक्र पड़ा हो तो शुभप्रद होता है।।१०२-१०३।।

कर्तरीदोषः (मु० चि०) -

लग्नात्पापावृज्वनृजू व्ययार्थस्थौ यदा तदा ।
कर्तरी नाम सा ज्ञेया मृत्युदारिद्र्यशोकदा ।।१०४।।

विवाह लग्न से बारहवें मार्गी, दूसरे वक्री पापग्रह पड़े हो तो कर्तरी नाम का योग होता है, यह मृत्यु दारिद्रय और शोक को देने वाला है।।१०४।।

अष्टमद्वादशलग्नदोषाऽपवादश्च (मु० चि०) -

जन्मलग्नभयोर्मृत्व्यन्त्यभे नेष्टः करग्रहः ।
एकाधिपत्ये राशीशमैत्रे वा नैव दोषकृत् ।।१०५।।

जन्म लग्न और जन्मराशि से आठवीं और बारहवीं राशि में विवाह करना निषिद्ध है। यदि दोनों के स्वामी एक हों या दोनों के स्वामियों में मित्रता हो तो दोषकारक नहीं होता है।।१०५।।

उदयास्तशुद्धिः (मु० चि०) -

यदा लग्नांशेशो लवमथ तनुं पश्यति युतो ।
भवेद्वायं वोढुः शुभफलमनल्पं रचयति ।।१०६।।
लवद्यूनस्वामी लवमदनभं लग्नमदनं ।
प्रपश्येद्वा वध्वा शुभमितरथा ज्ञेयमशुभम् ।।१०७।।
लवेशो लवं लग्नपो लग्नगेहं प्रपश्येन्मिथो वा शुभं स्याद्वरस्य।
लवद्यूनपोंशद्युनं लग्नपोऽस्तं मिथो वेक्ष्यते स्याच्छुभं कन्यकायाः।।१०८।।

नवांश का स्वामी नवांश को, लग्न का स्वामी लग्न को देखता हो या लग्नेश नवांशेश आपस में देखते हों तो वर के लिये शुभ होता है। एवं नवांश के सप्तम नवांश का स्वामी सप्तम नवांश को लग्नपति सप्तम भाव को देखते हों या ये दोनों आपस में एक दूसरे को देखते हों तो कन्या के लिये शुभकारक होते हैं।

गोधूलिः -

तिथिवारेन्दुनक्षत्रं लग्नं तारादयो ग्रहाः ।
नानिष्टदा परिणये गोधूलिसमये सदा ।।१०६।।

वधूप्रवेशमुहूर्तः (मु० चि०) -

समाद्रिपंचाङ्कदिने विवाहाद् वधूप्रवेशोऽष्टिदिनान्तराले।
शुभः परस्ताद्विषमाब्दमासदिनेऽक्षवर्षात्परतो यथेष्टम् ।।११०।।

विवाह के बाद (१६ दिनों तक) सम दिनों में तथा ७,५,६वें दिनों में वधूप्रवेश करना शुभ होता है, तथा १६ दिनों के बाद विषम दिनों में, एक मास पूरा हो जाने पर विषम महीनों में तथा एक वर्ष के बाद विषम वर्षो में वधूप्रवेश करना शुभ होता है। तथा पाँच वर्ष के बाद सम-विषम वर्ष का विचार नहीं करना चाहिये जब शुभ मुहूर्त मिले वधूप्रवेश कर लेना चाहिये।।१०६-११०।।

वधूप्रवेशे नक्षत्रशुद्धिः (मु० चि०) -

ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रे वसुमूलमघानिले ।
वधूप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्तारार्के बुधे परैः ।।१११।।

ध्रुवसंज्ञक (३ उत्तरा, रोहिणी) क्षिप्रसंज्ञक (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्) मृदुसंज्ञक, (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा) श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा, स्वाती इन १७ नक्षत्रों में (रिक्ता ४।६।१४) तिथि भौम- रविवार इनको छोड़ अन्य तिथि वारों में वधूप्रवेश शुभ होता है। किसी आचार्य के मत से बुधवार को भी वधूप्रवेश करना निषिद्ध है।।१११।।

द्विरागमनमुहूर्तः -

चरेदथौजहायने घटालिमेषगे रवौ रवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे।
नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषे विलग्नके द्विरागमं लघुध्रुवे चरेऽस्रपे मृदुडुनि।।११२।।

विवाह से विषम वर्षो में कुम्भ, वृश्चिक, मेषराशि के सूर्य में, सूर्य बृहस्पति के शुद्ध रहने पर, शुभग्रह के वारों में, मिथुन, मीन, कन्या, तुला, वृष लग्नों में लघु (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्) ध्रुव (तीनों

उत्तरा, रोहिणी) चर (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा) मृदु (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा) संज्ञक नक्षत्रों में द्विरागमन शुभ होता है।।११२।।

द्विरागमने शुक्रशुद्धिः -

दैत्येज्यो ह्यभिमुखदक्षिणे यदि स्याद्गच्छेयुर्नहि शिशुगर्भिणीनवोढाः ।
बालश्चेद् व्रजति विपद्यते नवोढा चेद्वन्ध्या भवति च गर्भिणी त्वगर्भा।।११३।।
नवोढायास्तु वैधव्यं यदुक्तं सम्मुखे भृगौ।
तदुक्तं विबुधैर्ज्ञेयं केवलं तु द्विरागमे।।११४।।

शुक्र सम्मुख या दाहिने हो तो बालक, गर्भिणी और नवोढा (नई दुलहिन) यात्रा न करे। यदि बालक यात्रा करे तो विपत्ति को प्राप्त हो, नवोढा यात्रा करे तो वन्ध्या हो और गर्भिणी गर्भ रहित हो जाय। सम्मुख और दाहिने शुक्र में नवोढा की यात्रा में वैधव्य का होना जो लिखा है वह केवल द्विरागमन में ही पंडितों को समझना चाहिये (वधूप्रवेश में सम्मुख शुक्र का दोष कदापि नहीं होता है)।।११३-११४।।

प्रतिशुक्रापवादः (मू० चि०) -

नगरप्रवेशविषयाद्युपद्रवे करपीडने विबुधतीर्थयात्रयोः ।
नृपपीडने नववधूप्रवेशने प्रतिमार्गवो भवति दोषकृन्न हि ।।११५।।
पित्रे गृहे चेत्कुचपुष्पसम्भवः स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसम्भवः।
भृग्वङ्गिरोवत्सवसिष्ठकश्यपाऽत्रीणां भरद्वाजमुनेः कुले तथा ।।११६।।

नगर प्रवेश, देशोपद्रव, विवाह, देवता और तीर्थ की यात्रा, राजा के पीड़ा देने पर, नववधू प्रवेश (पहले पहल पति के गृह में वधू का प्रवेश चाहे जब कभी वह हो) इन कामों की यात्रा में सम्मुख और दाहिने शुक्र का दोष नहीं होता है और पिता के घर पर ही यदि कुच (स्तन) और पुष्प (रज) का प्रादुर्भाव हो जाय तो स्त्री (नवोढा) को सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता है। और भृगु, अंगिरा, वत्स, वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, भरद्वाज इन ऋषियों के कुल वालों को भी सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता है।

शुक्रान्धः -

रेवत्यादि-मृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः ।
तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः ।।११७।।

रेवती से लेकर मृगशिरा तक चन्द्रमा रहे तब तक शुक्र अन्धे रहते हैं यह सम्मुख और दाहिने रहने पर भी अनिष्ट नहीं होते।।११७।।

वधूप्रवेश-द्विरागमन विवेचन -

विवाह के बाद पहले पहल पति के घर में वधू के प्रवेश को वधूप्रवेश और वधूप्रवेश हो जाने के बाद पिता के घर लौट कर पुनः (दूसरी बार) पति के घर जाने को द्विरागमन तथा पितृगृह लौटकर पुनः तृतीय बार पति के घर जाने को द्वयंग यात्रा कहते हैं।

वधूप्रवेशःप्रथमः प्रवेशः पितुर्गृहाद्भर्तृगृहेऽङ्गनायाः ।
पितुर्गृहागत्य पुनर्गमो वै द्विरागमोऽयं निखिले निबन्धे ।।११८।।
उद्वाहसमये बाला व्रजेद्भर्तृगृहं प्रति
पुनस्तातगृहाद्यात्रा तद्द्विरागमनं स्मृतम् ।
जाते द्विरागमे पत्न्याः पुनः पतिगृहे गमः
पितुगेहे स्थितायाश्च स द्वयंग इह कीर्तितः ।।११९।।

वधूप्रवेश में चाहे वह जब हो शुक्र का विचार नहीं करना चाहिये। शुक्र का विचार केवल द्विरागमन (दूसरे बार पति के घर जाने) में ही करना चाहिये क्योंकि शास्त्रों मे स्पष्ट लिखा है।।११८-११९।।

स्वग्रामैकपुरात्मसद्‍मसु, चतुर्वक्त्रे चतुःशालके
तुद्वाहेषु वधूप्रवेशनृपभीर्दुर्भिक्षपीडासु च ।
तीर्थस्वामिनि देशयोर्भृगुवसिष्ठात्र्यङ्गिरःकाश्यपे
भारद्वाजसवात्सयोर्हितकरं यानं सितज्ञोन्मुखम् ।।१२०।।
रात्रौ विवाहभे शस्तः सन्मुहूर्ते स्थिरोदये
वधूप्रवेशो नैवात्र प्रतिशुक्राद्भयं विदुः।
नवोढायास्तु वैधव्यं यदुक्तं सम्मुखे भृगौ
तदैव विबुधैर्ज्ञेयं केवलं तु द्विरागमे ।।१२१।।

तथा च -

विवाहे गुरुशुद्धिः स्याच्छुक्रशुद्धिर्द्विरागमे ।
त्रिगमे राहुशुद्धिश्च चन्द्रशुद्धिश्चतुर्गमे ।।१२२।।

तथैव तल्लः -

स्वभवनपुरप्रवेशे देशानां विप्लवे तथोद्वाहे ।
नववध्वा गृहगमने प्रतिशुक्रविचारणा नास्ति ।।१२३।।

इन वचनों से स्पष्ट है कि वधूप्रवेश में चाहे वह जब हो शुक्र के सम्मुख-दक्षिण का विचार करना कदापि शास्त्रसम्मत नहीं है। विशेषता केवल यह है कि विलम्बित वधूप्रवेश मार्गशीर्ष, फाल्गुन और वैशाख इन महीनों में विवाह के अव्यवहित (वाद) का वधूप्रवेश वैवाहिक प्रत्येक महीनों में होता है। जैसा कि मुहूर्तमार्तण्ड के (५१) श्लोक से स्पष्ट सिद्ध है-

लग्नादिष्ट १६दिनान्ततः सममुनी ७प्व५ङ्क९द्युषूर्ध्वं त्वयुग्-
घस्रे मास्यपि हायने शरमिताद्वर्षात्परं स्वेच्छयाः।
वैफामार्गसिते जगुः श्रुतियुगोद्वाहर्क्षचित्राश्विनी-
ज्यर्क्षश्चानवमन्दिरे निशि वधूसंवेशमङ्गे स्थिरे ।।१२४।।

किसी-किसी देश में जव विवाह के वाद ही वधू अपने पति के घर नहीं जाती तो उसके वधूप्रवेश का लोप करके उसी (वधूप्रवेश ही) को द्विरागमन मान के उसमें शुक्र शुद्धि का विचार करते हैं। परन्तु यह वहाँ की लोकपरम्परा है इस विधि का शास्त्रों में कोई भी प्रमाण नहीं मिलता। तथा जो वधूप्रवेश के-

१. विवाह दिन से १६ दिन तक सम और ५,७,९ दिनों मैं
२. विवाह के १७वें दिन से १ मास तक,
३. मास के बाद १ वर्ष तक
४. एक वर्ष के वाद ५ वर्ष तक।

भेद माने जाते हैं वे केवल सम-विषम दिन, मास, वर्ष के विचार के लिये ही कल्पित हैं जैसा कि मूल में लिखा है। उनका अन्य कोई प्रयोजन शास्त्रों में कहीं भी नहीं उपलब्ध होता। निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु, निर्णयामृत, राजमार्तण्ड, ज्योतिर्निवन्ध, बृहद्दैवज्ञरञ्जन, ज्योतिर्विदाभरण, मुहूर्तचिन्तामणि (पियूष धारा), मुहूर्तमार्तण्ड इत्यादि ग्रन्थों में उसी उपर्युक्त मूल ही के अनुरूप वचन उपलब्ध होते हैं।

यह उपर्युक्त रीति कव और कैसे प्रचलित हुई, किसने इसका प्रचार किया इस बात की खोज शास्त्र मर्मज्ञ पण्डितों को पक्षपात रहित बुद्धि से लोकोपकार की दृष्टि से अवश्य करनी चाहिये। मैंने तो ऊहापोह (छानवीन) करने से जहाँ तक शास्त्रों में प्रमाण मिले हैं उन्हीं के आधार पर लिखा है। इसमें मेरा किसी प्रकार का दुराग्रह नहीं है। यह ज्योतिषशास्त्र वालकों का खेल नहीं है- आगम शास्त्र है। इसमें जहाँ कहीं

किसी विषय पर वचनों में द्वैविध्य आ पड़े वहाँ पूर्वापर वचनों की एकवाक्यता करनी चाहिये। यदि किसी प्रकार से एक वाक्यता न हो सके तो बहुमत को ग्रहण करना चाहिये। जहाँ पर सब ऋषियों और आचार्यों का मतैक्य हो वहाँ तो कहना ही क्या है। पूर्वाचार्यो ने कहा भी है।

ज्यौतिषमागमशास्त्रं विप्रतिपत्तौ न योग्यमस्माकम् ।

स्वयमेव कल्पयितुं किन्तु वहुनां मतं वक्ष्ये।।१२५।।

आर्य मतों को छोड़ अपने मनमाने मत का आश्रयण करने से कभी भी भलाई और कार्यसिद्धि नहीं हो सकती। क्योंकि श्रीकृष्ण भगवान् ने गीता में (१६।२३।२४) स्पष्ट शब्दों में कहा है। -

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।

न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न पराङ्गतिम्।।१२६।।

तस्माच्छास्त्रप्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ।

ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ।। इति।।१२७।।

कुछ आधुनिकों (पं० रामयत्न ओझाजी) का कहना है कि 'वधूप्रवेशार्थ' यात्रा को ही द्विरागमन कहते हैं, और १६ दिन के भीतर समय शुद्धि इत्यादि का विचार न करके केवल वधूप्रवेश का ही मुहूर्त देखना चाहिये। १६ दिन के बाद १ वर्ष तक विषम महीनों में मार्ग, फाल्गुन, वैशाख में द्विरागमन (वधूप्रवेशार्थ यात्रा) का मुहूर्त न देखकर केवल वधूप्रवेश का ही मुहूर्त देखना चाहिये। एक वर्ष के बाद (३,५) वर्षों में वधूप्रवेश और द्विरागमन (वधूप्रवेशार्थ यात्रा) दोनों का मुहूर्त देखना आवश्यक है।

परन्तु वधूप्रवेश और द्विरागमन का अर्थ पंकज शब्द की तरह बालक से लेकर वृद्ध तक सभी को ज्ञात है, जैसा कि पहले लिखा जा चुका है निर्विवाद सिद्ध है। शास्त्रों में कहीं भी वधूप्रवेशार्थ यात्रा का नाम द्विरागमन नहीं लिखा है यह निजी कोरी कल्पना है। यदि थोड़ी देर के वास्ते वधूप्रवेशार्थ यात्रा को ही द्विरागमन मान लिया जाय तो वह विवाहोत्तर जब कभी हो (चाहे १६ दिनाभ्यन्तर हो, या १६ दिनोत्तर हो मासपर्यन्त या तदुत्तर वर्ष पर्यन्त हो, वा वर्षोत्तर पाँच वर्ष तक या पाँच वर्ष के बाद हो) तभी द्विरागमन में शुक्र का विचार होना चाहिये। फिर जो १ वर्षाभ्यन्तर शुक्र शुद्धि न देखना उसके बाद सम्मुखादि रूप शुक्र शुद्धि देखना, उन्होने लिखा है, वह उनका नितान्त भ्रम है। क्योंकि उनके लेख की पुष्टि का शास्त्रों में कोई प्रमाण नहीं मिलता।।१२६-१२७।।

किन्तु जैसा कि विवाहाङ्ग कृत्यों को वैवाहिक नक्षत्रों में करते हैं जैसा कि-

शार्ङ्गिय ने - *विवाहकृत्यं सकलं विवाहभे विलोकयेत्रैव बलं हिमद्युतेः* -

रामदैवज्ञ ने - *दलनकण्डनं वारकं विवाहविहितोडुभिर्विरचयेत्*............

नारायण दैवज्ञ ने - *यस्याङ्गं यददोङ्गिनो गदितभे कुर्यात्*.............. *इत्यादि*

लिखा है उसी प्रकार वधूप्रवेशार्थ यात्रा को वधूप्रवेशोदित नक्षत्र में ही करना चाहिये और वधूप्रवेश तथा वधूप्रवेशार्थ यात्रा दोनों में शुक्र का सम्मुख वाम रूप शुद्धि नहीं देखनी चाहिये। जैसा कि उपर्युक्त 'रात्रौ विवाहभे.....' इत्यादि वचनों में वधूप्रवेश, स्वभवनपुरप्रवेश, नवनध्वा गृहागमन इत्यादि पदों से निर्विवाद स्पष्ट है। तथा आधुनिक महाशय ने जो कन्या के विवाह को ही कन्या की प्रथम यात्रा मानकर वधूप्रवेशार्थ यात्रा को द्वितीय यात्रा (द्विरागमन) मानते हुये शुक्र शुद्धि का विचार करना लिखा है और इसकी पुष्टि के लिये वात्स्यायन के -

स्त्रीविवाहः कुले निर्गमः कथ्यते पुंविवाहः प्रवेशो वशिष्ठादिभिः।

निर्गमादादितो न प्रवेशो हितस्तत्र संवत्सरान्तोऽवधिः कीर्तितः।।१२८।।

इस श्लोक को उपन्यस्त किया है वह भी उनकी नितान्त भूल है। वे इस श्लोक के अर्थ को एकदम नहीं जानते। अथवा जानबूझ कर अर्थ का अनर्थ कर डाले है। क्योंकि इसका वास्तविक अर्थ यह है कि- 'कुल में स्त्री के विवाह को निर्गम (यात्रा) और पुरुष विवाह को प्रवेश वशिष्ठादिकों ने कहा है।

निर्गम (कन्याविवाह) के पूर्व प्रवेश (पुत्र का विवाह) करना श्रेष्ठ नहीं। और इसकी अवधि संवत्सर पर्यन्त अथवा संवत् बदलने तक की है। अर्थात् पुत्र विवाह के बाद कन्या का विवाह संवत् बदलने तक नहीं करना चाहिये। इसलिये गोविन्द दैवज्ञ ने इस श्लोक को 'सुतपरिणयात्....' मु० चि० विवाह प्र० १६श्लोक की टीका में लिखा है।'

परन्तु और विषयों की तरह इसमें भी कुछ समयसंबंधी मतभेद है किसी ने एक वर्ष की किसी ने ६ मास की किसी ने संवत् बदलने तक की अवधि लिखी है जैसा कि नीचे उद्धृत वचनों से स्पष्ट है-

एकमातृजयोरेकवत्सरे पुरुषस्त्रियोः।
एकक्रिया न कर्तव्या क्रियाभेदो विधीयते ।।१२६।।

नारदः – *पुत्रोद्वाहात्परं पुत्रीविवाहो न ऋतुत्रये।*

संहितादीपके – *ऊर्ध्वं विवाहात्तनयस्य नैव कार्यो विवाहो दुहितुः समार्धम्।*

कात्यायन ने संज्ञापूर्वक स्पष्ट लिखा है –

पुत्रोद्वाहः प्रवेशाख्यः सुतोद्वाहस्तु निर्गमः।
मुण्डनं चौलमित्याहुर्व्रतोद्वाहौ तु मंगलम् ।।१३०।।
कुले ऋतुत्रयादर्वाङ्मण्डनान्नतु मुण्डनम्।
प्रवेशान्निर्गतो नेष्टो न कुर्यान्मंगलत्रयम् ।।१३१।।

और भी –

पुत्रोद्वाहान्नैव पुत्रीविवाहस्तु ऋतुत्रये।

एवं मु० चि० तथा मु० मा० में भी पुत्रोद्वाहान्तर ६ मास तक पुत्री के विवाह का निषेध लिखा है-

वेद, वेदांग, धर्मशास्त्र, पुराणादिकों में सर्वत्र लाघव के लिये नाना प्रकार की संज्ञायें कल्पना कर ली गयी है। अतः यहाँ भी लाघवार्थ पुत्री विवाह का नाम निर्गम और पुत्र के विवाह का नाम प्रवेश रख के आचार्यो ने पुत्रोद्वाहानन्तर पुत्री विवाह ६ मास तक करने का निषेध किया है। यहाँ आधुनिक के मतवाला पुत्री का विवाह कानाम यात्रा और पुत्र विवाह का नाम प्रवेश कदापि नहीं है।

यदि 'तुष्यतु दुर्जन' न्याय से निर्गम का योगार्थ कन्या के विवाह की प्रथमयात्रा और प्रवेश का अर्थ वधूप्रवेश मान लिया जाय तो निर्गम के पूर्व प्रवेश होना कालत्रय बाधित है। क्योंकि विना गमन के प्रवेश हो ही नहीं सकता, वल्कि यों कहना चाहिये कि तद्विषयक बुद्धि ही नहीं होती, कार्य होना तो दूर है।

यदि प्रवेशार्थ यात्रा को ही कन्या की द्वितीय यात्रा माने तो इसका यात्रोदित नक्षत्रों में ही होना अनिवार्य है। फिर यात्रोदित नक्षत्रों से भिन्न (३ उत्तरा, रोहिणी, स्वाती, शतभिषा, मूल, चित्रा) नक्षत्रों में कन्या की द्वितीय यात्रा करना आधुनिक महाशय ने किस प्रमाण से लिख डाला यह बात समझ में नहीं आती और उपर्युक्त नक्षत्रो में द्विरागमन करने का प्राचीनों का विधान भी व्यर्थ हो जाता है। तथा वधूप्रवेशार्थ यात्रा को द्विरागमन मानने और उसमें वर्षानन्तर शुक्र शुद्धि का विचार करने पर उपर्युक्त समस्त आर्ष वचनों पर एकदम पानी फिर जाता है। अतः आधुनिकों ने जो कुछ कहा है वह विल्कुल निर्मूल और दुराग्रहपूर्ण है। इसे विज्ञवर पक्षपात रहित बुद्धि से विचार करें यही मेरी करवद्ध प्रार्थना है।

द्वयंगयात्रामुहूर्तः –

आदित्यहस्ते ऽन्त्यमृगाश्विमैत्रे तथा धनिष्ठास्वपि वातपित्र्ये।
वध्वास्तृतीयं गमनं प्रशस्तं स्याद्योगिनी शूलतमोविशुद्धौ ।।१३२।।

पुनर्वसु, हस्त, रेवती, मृगशिरा, अश्विनी, अनुराधा, धनिष्ठा, स्वाती, मघा इन ९ नक्षत्रों में योगिनी, [1]राहु, शूल इनकी शुद्धि होने पर वधू के लिये पति के घर जाने की तीसरी यात्रा प्रशस्त होती है।।१३२।।

१. किसी के मत में त्रैमासिक किसी के मत में मासिक राहु द्वयंग यात्रा में देखे जाते हैं। परन्तु दैवज्ञरञ्जन में इस का निर्णय निम्नलिखित है। 'त्रैमासिकं तडागादौ मासिकं द्वयंगकर्मणि'

द्व्यंगयात्रायां राहुशुद्धिः -

आद्यर्के भ्रमते राहुः पूर्वाशादिचतुष्टये ।
सम्मुखे दक्षिणे त्याज्यस्तृतीयगमने स्त्रियाः ।।१३३।।

मेषादि राशियों में सूर्य के रहने पर क्रम से पूर्वादिक दिशा में राहु रहता है अर्थात् (१।५।९) राशि के सूर्य में पूर्व में, (२।६।१०) राशियों के सूर्य में दक्षिण में, (३।७।११) राशियों के सूर्य में पश्चिम में और (४।८।१२) राशियों के सूर्य में उत्तर दिशा में राहु रहता है। यह पिता के घर से पति के घर जाने के लिये वधू की तीसरी यात्रा में सम्मुख और दाहिने वर्जित है।।१३३।।

अथवा -

गमोक्ततिथ्यादिषु कारयेद् बुधो वध्वास्तृतीयं पतिवेश्मनो गमम् ।
तत्रालितस्त्रित्रिमसंस्थिते रवौ प्रागादिराहुर्न शुभोऽग्रदक्षे ।।१३४।।

यात्रोदित तिथि नक्षत्रादि मे पिता के घर से पति के घर जाने के लिये वधू की तीसरी यात्रा करनी चाहिये। इसमें वृश्चिक से तीन-तीन राशियों में सूर्य के रहने पर पूर्वादि दिशाओं में राहु रहता है अर्थात् (८।९।१०) राशि के सूर्य में पूर्व दिशा में (११।१२।१) इन राशियों के सूर्य में दक्षिण दिशा में (२।३।४) राशियों के सूर्य में पश्चिम दिशा में और ५।६।७ राशियों के सूर्य में उत्तर दिशा में राहु का निवास रहता है। यह सम्मुख और दाहिने शुभदायक नहीं है।।१३४।।

स्त्रीपुंसोः प्रथमसमागममुहूर्तः -

उत्तरात्रयरोहिण्यां पुष्ये मैत्रे करे मृगे ।
चित्रास्वातीविशाखासु पुन्नार्योः संगमः शुभः ।।१३५।।

तीनों उत्तरा, रोहिणी, पुष्य, अनुराधा, हस्त, मृगशिरा, चित्रा, स्वाती, विशाखा इन नक्षत्रों में (शुभवारों में रिक्ता पर्वादि छोड़ अन्य तिथियों में) स्त्री पुरुष का प्रथम समागम शुभ होता है।।१३५।।

नववध्वा नूतनपाकर्ममुहूर्तः -

मृगोत्तरातिष्यकृशानुशाक्रे श्रुतित्रये ब्राह्मद्विदैवपोष्णे।
शुभे तिथौ व्याररवौ प्रकुर्यान्नवा वधूनूतनपाकर्म ।।१३६।।
स्थिरे लग्ने सुखे शुद्धे सप्तमे च बलान्विते।
रन्ध्रे खेट विहीने च नवोढा पाकमाचरेत् ।।१३७।।

बालबोधज्योतिके विवाहप्रकरणम् पंचमं समाप्तम् ।।५।।

मृगशिरा, तीनों उत्तरा, पुष्य, कृत्तिका, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणी, विशाखा, रेवती इन नक्षत्रों में शुभ तिथियों में, रवि-भौम को छोड़ अन्य वारों में नई (वधू बहुरिया) को पहले पहल पति के घर पर रसोई बनाना शुभ होता है। स्थिर (२।५।८।११) लग्न हो, चौथा स्थान शुद्ध हो, सप्तम स्थान बलयुक्त और अष्टम स्थान ग्रहहीन हो तो नवोढ़ा का पाक कर्म करना शुभ होता है।।१३६-१३७।।

हिन्दीटीकायां विवाहप्रकरण् पंचमं समाप्तम् ।।५।।

यात्रा-प्रकरणम् ।।६।।

यात्राविचारः (बृहद्योगयात्रायाम्)

कथिततिथिवारर्क्षेष्वभिमतफलदा भवेच्च सामान्या ।
मसराह्वया च यात्रा योगविलग्नक्षितीशयोगेषु ।।१।।

आगे कहे हुए तिथि वारों में सामान्य यात्रा और राजयोगों में युद्धयात्रा अभिमत फल को देने वाली होती है।।१।।

यात्रायां मासाः (मु० चि०) -

धनुर्मेषसिंहेषु प्रशस्ता शनिज्ञोशनाराशिगे चैव मध्या ।
रवौ कर्कमीनालिसंस्थेऽतिदीर्घा जनुःपञ्चसप्तत्रितारश्च नेष्टाः ।।२।।

धनु, मेष, सिंह राशि के सूर्य में यात्रा प्रशस्त होती है। शनि, बुध और शुक्र की राशियों (१०।११।३।६।२।७) के सूर्य में मध्यम यात्रा होती है। कर्क, मीन, वृश्चिक राशि के सूर्य में दीर्घा यत्रा होती है। जन्म की, तीसरी, पाँचवी, सातवीं तारायें यात्रा में शुभदायक नहीं होती।।२।।

यात्रामुहूर्तः (मु० चि०) -

न षष्ठी न च द्वादशी नाष्टमी नो सिताद्या तिथिः पूर्णिमाऽमा न रिक्ता।
हयादित्यमैत्रेन्दुजीवान्त्यहस्तश्रवोवासवैरेव यात्रा प्रशस्ता ।।३।।
तिस्रोत्तरावारुणनैर्ऋतेन्दुपूर्वात्रयं ब्राह्ममयुग्दशैवम् ।
मध्यानि, नेष्टान्यनिलाऽनलेशद्विदैवचित्राहिमघान्तकानि ।।४।।

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, पूर्णिमा, अमावस्या, रिक्ता (४।६।१४) इन तिथियों को छोड़कर, अश्विनी, पुवर्नसु, अनुराधा, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा, इन ६ नक्षत्रों में ही यात्रा प्रशस्त होती है। तीनों उत्तरा, शतभिषा, मूल, ज्येष्ठा, तीनों पूर्वा, रोहिणी ये १० नक्षत्र यात्रा में मध्यम हैं। स्वाती, कृत्तिका, आर्द्रा, विशाखा, चित्रा, आश्लेषा, मघा, भरणी ये ८ नक्षत्र निषिद्ध है।।३-४

सर्वदिग्गमने हस्तः पूषाश्वौ श्रवणो मृगः।
सर्वसिद्धिकरः पुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा।।५।।

हस्त, रेवती, अश्विनी, श्रवण, मृगशिरा और पुष्य ये नक्षत्र विद्याध्ययन में गुरु के समान सब दिशाओं की यात्रा में सिद्धियों को देने वाले हैं।।५।।

दिक्षु चन्द्रवासस्तत्फलञ्च -

मेषे च सिंहे धनुषीन्द्रभागे वृषेऽङ्गनायां मकरे च याम्ये ।
कुम्भे तुलायां मिथुने प्रतीच्यां कर्कालिमीनेषु तथोत्तरायाम् ।।६।।
सम्मुखे चार्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः ।
पृष्ठे च शोकसन्तापौ वामे चन्द्रे धनक्षयः ।।७।।

मेष, सिंह और धनु राशि का चन्द्रमा पूर्व दिशा में, वृष, कन्या, मकर राशि का चन्द्रमा दक्षिण दिशा में, मिथुन, तुला, कुम्भ राशि का चन्द्रमा पश्चिम दिशा में एवं कर्क, वृश्चिक और मीन राशि का चन्द्रमा उत्तर दिशा में रहता है। यात्रा एवं कार्य करने के समय चन्द्रमा सम्मुख रहे तो अर्थ (धन) का लाभ करता है, दाहिने भाग में हो तो सुख और सम्पत्ति को देता है। पीछे के तरफ हो तो शोक और सन्ताप देता है। वाम भाग में चन्द्रमा हो तो धनक्षय करता है।।६-७।।

योगिनीविचार –

नवभूम्यः शिववह्नयोऽक्षविश्वेऽर्ककृताः शक्ररसास्तुरङ्गतिट्थ्यः ।

द्विदिशोऽमावसवश्च पूर्वतः स्युस्तिथयः सम्मुखवामगा न शस्ताः।।८।।

नीचे चक्र में लिखित तिथियों में पूर्वादिक दिशाओं में योगिनी का वास होता है। यात्रा में सम्मुख और बायें योगिनी का रहना शुभ नहीं है।।८।।

दिशा	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
तिथि	१ ९	३ ११	५ १३	४ १२	६ १४	७ १५	२ १०	८ ३०

कालपाशौ (मु० चि०) –

कौबेरीतो वैपरीत्येन कालो वारेऽर्काद्ये सन्मुखे तस्य पाशः।

रात्रावेतौ वैपरीत्येन गण्यौ यात्रायुद्धे सम्मुखे वर्जनीयौ ।।९।।

रव्यादिक वारों में उत्तर से उलटी दिशाओं में काल और उसके सम्मुख पास रहता है। रात्रि में इससे विपरीत होता है यह यात्रा और युद्ध में सम्मुख वर्जित है।।९।।

वारा	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	
काल	उत्तर	वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य	दक्षिण	अग्नि	पूर्व	दिवा
पाश	दक्षिण	अग्नि	पूर्व	ईशान	उत्तर	वायव्य	पश्चिम	

वारदिक्शूलः –

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणां च दिशं गुरौ ।

सूर्ये शुक्रे पश्चिमां च बुधे भौमे तथोत्तराम् ।।१०।।

सोम, शनिवार को पूर्व में, गुरुवार को दक्षिण में, रवि शुक्रवार को पश्चिम में, मंगल-बुधवार को उत्तर में वार दिक्शूल रहता है अतः दिक्शूल में गमन नहीं करना चाहिये।।१०।।

समयशूलः –

उषः कालो बिना पूर्वां गोधूलिः पश्चिमां विना ।

विनोत्तरं निशीथः स्याद्याने याम्यां विनाऽभिजित्' ।।११।।

उषाकाल में पूर्व दिशा, गोधूलि में पश्चिम दिशा दोपहर व रात्रि में उत्तर और अभिजित् में दक्षिण दिशा में यात्रा नहीं करना चाहिये।।११।।

---

१. अभिजिन्मुहूर्तकथनम् –

शंकुर्विंशांगुलः सूर्ये सोमे च षोडशांगुलः। कुजे तिथ्यंगुलः प्रोक्तो बुधे चेन्द्रांकुलस्तथा।।
त्रयोदशांगुलो जीवेऽर्कांगुलः शनिशुक्रयोः। शंकुमूले यदा छाया मध्याह्ने च प्रजायते।।
तदा चाभिजिदाख्याता घटिकैका सदा बुधैः। अत्र कार्याणि सर्वाणि सिद्धिं यान्ति कृतानि च।
जातोऽभिजिति राजा स्याद् व्यापारे सिद्धिरुत्तमा। महाक्रूरवियोगेन सर्वमंगलदायिनी।।

अन्य शुभ योगों के अभाव में सर्वसिद्धिदायक मुहूर्त (अभिजित्) का निरूपण करते हैं। रवि दिन २० अंगुल का, सोम दिन १६ अंगुल का, मंगल को १५ अंगुल का, बुध को १४ अंगुल का, गुरुवार में १३ अंगुल का एवं शुक्र शनि को १२ अंगुल को शंकु लेका मध्याह्न काल में समतल भूमि पर ठीक लम्ब रूप खड़ा करे ताकि उसका छायाग्र सर्वथा शंकुमूल ही में पड़े, उसी समय की एक घटी (३० पल आगे, ३० पल पहिले) का नाम अभिजित् मुहूर्त है। उसमें किये हुये सब काम सिद्ध होते हैं, उसमे का उत्पन्न जातक राजा होता है। व्यापार में पूरा लाभ होता है। इस मुहूर्त में कोई काम आरम्भ किया जाय तो अन्य दुर्योगों का प्रभाव नहीं रहता है।

नक्षत्रदिक्शूलः -

पुरहूतदिशं पुरन्दरर्क्षे नेयाद्याम्यदिशं त्वजाङ्घ्रिधिष्ण्ये।
ज्वलनारिदिशं पितामहर्क्षे शूलाख्यान्यथ सौम्यमर्यमर्क्षे।।१२।।

ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्व, पूर्वभाद्रपद में दक्षिण, रोहिणी में पशिचम और उत्तराफाल्गुनी में उत्तर दिशाा में शूल दोष होता है।।६।।

दिग्द्वारलग्नफलानि (मु० चि०) -

दिग्द्वारभे लग्नगते प्रशस्ता यात्राऽर्थदात्री जयकारिणी च ।
हानिं विनाशं रिपुतो भयं च कुर्यात्तथा दिक्प्रतिलोमलग्ने।।१३।।

दिग्द्वार राशि (मेष, सिंह, धनु, पूर्वेचन्द्र इत्यादि) लग्न में यात्रा प्रशस्त है और धन, जय को देने वाली है। पृष्ठ लग्न में (मेष लग्न में पशिचम दिशा जाने से) हानि, धननाश और शत्रु भय होता है।

लग्नशुद्धिः (मु० चि०) -

केन्द्रे कोणे सौम्यखेटाः शुभाः स्युर्याने पापास्त्रायषट्खेषु चन्द्रः।
नेष्टो लग्नान्त्यारिरन्ध्रे शनिः खेऽस्ते शुक्रो लग्नेट् नगान्त्यारिरन्ध्रे।।१४।।

केन्द्र (१।४।७।१०) कोण (५।६) में शुभग्रह ३।११।६।१० इन स्थानों में पापग्रह शुभदायक होते हैं। १।१२।६।८ इन स्थानों में चन्द्रमा, दशम में शनि, सप्तम में शुक्र, ७।८।६।१२ इन स्थानों में लग्न का स्वामी शुभदायक नहीं होते।।१४।।

सर्वांकविचारः (मु० चि०) -

तिथ्यृक्षवारयुतिरद्रिगजाऽग्नितष्टा
स्थानत्रयेऽत्र वियति प्रथमेऽतिदुःखी।
मध्ये धनक्षतिरथो चरमे मृतिः स्यात्
स्थानत्रयेऽङ्कयुजि सौख्यजयौ निरुक्तौ।।१५।।

तिथि, वार, नक्षत्रों के योग को तीन जगह रखके क्रम से ७,८,३ से भाग देना, यदि पहले जगह शून्य वचे तो दुखी, दूसरी जगह शून्य बचे तो धन हानि, तीसरी जगह शून्य बचे तो मृत्यु होती है, तथा यदि तीनों स्थानों में अंक वचे तो सौख्य जय होता है।।१५।।

उदाहरण - यथा - कार्तिक कृष्णपक्ष द्वितीया, बुधवार, पुष्य नक्षत्र का निकाला- तिथि १७, वार ४, नक्षत्र ८, इनका योग २६ हुआ। इसे ३ जगह रखा (१) २६÷७ शेष १, (२) २६÷८ शेष ५, (३) २६÷३ शेष २ वचा। तीनों स्थानों में अंक शेष वचे अतः उक्त तिथि का गमन सुख, विजय प्रदान करने वाला है।

युद्धयात्रायां कुलाकुलयोगः (मु० चि०) -

स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णकराऽनुराधा-
दित्यध्रुवाणि विषमास्तिथयोऽकुलाः स्युः।
सूर्येन्दुमन्दगुरवश्च कुलाकुला ज्ञो
मूलाम्बुपेशविधिमं दशषड्द्वितिथ्यः।।१६।।
पूर्वाश्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनद्वीशेन्द्रचित्रास्तथा
शुक्रारौ कुलसंज्ञकाश्च तिथयोर्काष्टेन्दुवेदैर्मिताः।
यायी स्यादकुले जयी च समरे स्थायी च तद्वत्कुले
सन्धिः स्यादुभयोः कुलाकुलगणे भूमीशयोर्युध्यतोः।।१७।।

---

१. दिग्द्वार लग्नार्थ संज्ञा प्रकरणस्य ११८ श्लोको दृष्टव्यः।

स्वाती, भरणी, आश्लेषा, धनिष्टा, रेवती, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र विषम (१।३।५।७।६।११।१३।१५) तिथियाँ सूर्य, शनि, सोम, गुरुवार अकुल संज्ञक हैं। बुधवार, मूल, शतभिषा, अभिजित् ये नक्षत्र १०।६।२ तिथियाँ कुलाकुल संज्ञक हैं। तीनों पूर्वा, अश्विनी, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृत्तिका, विशाखा, ज्येष्ठा, चित्रा नक्षत्र, शुक्र मंगलवार १२।८।१४।४ तिथियाँ कुल संज्ञक हैं। अकुल संज्ञक नक्षत्र में यायी (गमनकर्ता) की, और कुलसंज्ञक नक्षत्र में स्थायी की जय होती है। कुलाकुल गण में राजाओं का युद्ध हो तो दोनों में सन्धि (मेल) हो जाती है।।१६-१७।।

राहुपथिचक्रम् –

अश्विन्यादीनि चत्वारि गणयेत्सप्तधा पुनः।
अनुलोम-विलोमाभ्यां साभिजितं पुनः पुनः।।
धर्मार्थकाममोक्षाख्या मार्गाश्चत्वार एवच।।१८।।
धर्मगे भास्करे वित्तमोक्षे शशी वित्तगे धर्ममोक्षस्थितः शस्यते।
कामगे धर्ममोक्षार्थगः शोभनो मोक्षगे केवलं धर्मगः प्रोच्यते।।१६।।

अश्विनी आदि से ४,४ नक्षत्र अभिजित् सहित अनुलोम प्रतिलोम से ७ वार गिने तो क्रम से ध र्म, अर्थ, काम, मोक्ष मार्ग होते हैं। १. धर्म में सूर्य, वित्त या मोक्ष में चन्द्रमा हो, २. वित्त में सूर्य, ध र्म या मोक्ष में चन्द्रमा हो, ३. काममार्ग में सूर्य, धर्म, मोक्ष अर्थ में चन्द्रमा हो, ४. या मोक्ष में सूर्य, धर्म में चन्द्रमा हो तो शुभ होता है।।१८-१६।।

धर्म	अश्वि	पुष्य	आश्ले.	विशा.	अनु	धनिष्ठा	शत.
अथ	भरणी	पुन.	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्रवण	पू.भा.
काम	कृत्ति.	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.
मोक्ष	रोहि.	मृग.	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती

जीवपक्षादिसंज्ञा फलानि च (मू० चि०) –

तमोभुक्तताराः स्मृता विश्वसंख्याः शुभो जीवपक्षो मृतश्चापि भोग्याः।
तदाक्रान्तभं कर्तरीसंज्ञमुक्तं ततोऽक्षेन्दुसंख्यं भवेद् ग्रस्तनाम।।२०।।
जीवपक्षे क्षपानाथे मृतपक्षे रवौ तथा।
तस्मिन्काले शुभा यात्रा विपरीता तु हानिदा।।२१।।
उभौ चेज्जीवपक्षस्थौ यात्रा तत्रापि शोभना।
चेदुभौ मृत्युपक्षस्थौ रवीन्दू तत्र कष्टदौ।।२२।।
यायिनो जयदश्चन्द्रो जीवपक्षे व्यवस्थितः।
भानुमाञ्जीवपक्षस्थः स्थायिनो विजयावहः।।२३।।

राहु की भुक्त १३ नक्षत्रों की जीव पक्ष संज्ञा है, यह यात्रा में शुभद है। भोग्य १३ नक्षत्रों की मृत संज्ञा है। एवं जिस पर राहु वर्तमान हो उसकी कर्तरी और उससे १५वीं नक्षत्र को ग्रस्त संज्ञा आचार्यों ने कहा है। जीवपक्ष में चन्द्रमा मृतपक्ष में सूर्य हो तो यात्रा शुभ कही है, इससे विपरीत हानि देने वाली होती है। यदि दोनों जीवपक्ष में हों तो यात्रा शोभना, मृत्युपक्ष में हो तो कष्टदा होती है। जीवपक्ष में चन्द्रमा हो तो यायी को और जीवपक्ष में सूर्य हो तो स्थायी को जय देने वाला होता है।।२०-२३।।

युद्धयात्रायां शुभलग्नानि (मु० चि०) –

राशिः स्वजन्मसमये शुभसंयुतो यो यः स्वारिभात्रिधनगोऽपि च वेशिसंज्ञः।
लग्नोपगः स गमने जयदोऽथ भूपयोगैर्गमो विजयदो मुनिभिः प्रदिष्टः।।२४।।

जो राशि अपने जन्माकाल में शुभग्रहों से युक्त हो, और जो अपने शत्रु की राशि से अष्टम हो, जो [1]वेशिसंज्ञक (सूर्य से दूसरी राशि) हो वह यदि यात्रालग्न में पड़ जाय तो विजय देने वाली होती है। तथा राजयोगों में भी यात्रा करना श्रेष्ठ होता है ऐसा आचार्यों का मत है।।२४।।

अशुभलग्नानि च (वराहः) -

जननसमयलग्नान्नैधने जन्मभाद्वा निजरिपुभवनाद्वा शत्रुभे लग्नयाते ।
पतिभिरुत तदीयैर्लग्नगैःपार्थिवानां गमनमथ विषं वा भक्षितं तुल्यमेव ।।२५।।
कुम्भकुम्भांशकौ त्याज्यौ सर्वथा यत्नतो बुधैः ।
तत्र प्रयातुर्नृपतेरर्थनाशः पदे पदे ।।२६।। *(मू० चि०)*

जन्म लग्न या जन्म राशि से आठवीं राशि में, अथवा अपने शत्रु-राशि से छठी राशि में यात्रा करना विष भक्षण के तुल्य होता है। कुम्भलग्न और कुम्भलग्न का नवमांश यात्रा में सर्वथा वर्जित है, क्योंकि उसमें यात्रा करने से पग-पग पर अर्थ की हानि होती है।।२५-२६।।

अन्यः शुभयोगः (मु० चि०) -

लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमस्थे यात्रा प्रोक्ता वाञ्छितार्थैकदात्री ।
अम्भोराशौ वा तदंशे प्रशस्तं नौकायानं सर्वसिद्धिप्रदायि ।।२७।।

लग्न में अथवा वर्गोत्तम में चन्द्रमा हो तो यात्रा अद्वितीय अर्थ देनेवाली होती है। जल राशियों में तथा जलराशि के नवमांश में नौका की यात्रा शुभद होती है।।२७।।

प्रस्थानेन यात्रा -

मृगे गत्वा शिवे स्थित्वाऽदितौ गच्छञ्जयेद्रिपून् ।
मैत्रे प्रस्थाय शाक्रे हि स्थित्वा मूले व्रजँस्तथा।।२८।।
प्रस्थाय हस्तेऽनिलतक्षधिष्ण्ये स्थित्वा जयार्थी प्रवसेद् द्विदैवे।
वस्वन्त्यपुष्ये निजसीम्नि चैकरात्रोषितः क्ष्मां लभतेऽवनीशः।।२६।।

मृगशिरा में जाके आर्द्रा में ठहर के पुनर्वसू मे यात्रा करे तो शत्रु को जीत लेता है। अनुराधा में प्रस्थान करके ज्येष्ठा में ठहर के मूल में यात्रा करे तो भी शत्रु को जीत लेता है। एवं हस्त में प्रस्थान करके चित्रा-स्वाती में ठहर के विशाखा में यात्रा करने से, तथा धनिष्ठा, रेवती, पुष्य नक्षत्रों में अपनी सीमा (सेवान) में एक रात्रि टिक के यात्रा करने से, राजा भूमि को पाता है।।२८-२६।।

योग-अधियोग-योगाधियोगाः (मु० चि०) -

एको ज्ञेज्यसितेषु पञ्चमतपःकेन्द्रेषु योगस्तथा
द्वौ चेत्तेष्वधियोग एषु सकला योगाधियोगः स्मृतः ।
योगे क्षेममथाधियोगगमने क्षेमं रिपूणां वधं
चाथो क्षेमयशोऽवनीश्च लभते योगाधियोगे व्रजन् ।।३०।।

वुध, वृहस्पति, शुक्र इनमे रो एक ग्रह भी यदि पाँचवें, नववें या केन्द्र (१।४।७।१०) में हो तो योग, दो ग्रह उक्त (५।६।१।४।७।१०) स्थानों में हो तो अधियोग और सवके सव उक्त स्थानों में हो तो योगाधियोग होता है। योग में यात्रा करने से कल्याण, अधियोग में यात्रा करने से कल्याण और शत्रु का नाश एवं योगाधियोग में यात्रा करने से कल्याण, यश और पृथिवी की प्राप्ति होती है।।३०।।

---

१. वराहः - 'दिनकरयुताद् भाद् द्वितीयो वेशिः इति।'

जलयात्रायोगः –

लग्नास्तकर्महिबुकेषु शुभेक्षितेषु द्यूनान्त्यकर्मरहितेष्वशुभग्रहेषु ।
यातुर्भयं न भवति प्रतरेत्समुद्रं यद्यश्मना किमुत वारिसमागमेन।।३१।।

लग्न, सप्तम, दशम, चतुर्थ स्थानों में शुभग्रह देखता हो, सप्तम, द्वादश, दशम स्थानों में पापग्रह न हो तो यात्रा करने वाले को किसी प्रकार का भय नहीं होता है। यदि पत्थर पर चढ़ के जाय तो भी समुद्र पार कर लेता है।।३१।।

एकस्मिन्दिने यात्रा-प्रवेशविचारः (मु० चि०)–

यद्येकस्मिन्दिवसे महीपतेर्निर्गमप्रवेशौ स्तः ।
तर्हिः विचार्यः सुधिया प्रवेशकालो न यात्रिकस्तत्र ।।३२।।

यदि एक ही दिन में यात्रा-प्रवेश दोनों हों तो पण्डितों को चाहिये कि प्रवेश का ही मुहूर्त देखै, यात्रा का मुहूर्त न देखै।।३२।।

राज्ञां विजयदशमीसिद्धमुहूर्तः (मु० चि०) –

इषमासिसिता दशमीविजया शुभकर्मसु सिद्धिकारी कथिता।
श्रवणर्क्षयुता सुतरां शुभदा नृपतेस्तु गमे जयसन्धिकरी ।।३३।।

आश्विन सुदी १० को विजयादशमी कहते हैं। यह शुभ कर्मो के करने के लिये सिद्धिदायिका होती है। यदि श्रवण नक्षत्र से युक्त हो तो अत्यन्त शुभदायिका है। राजाओं को यात्रा में जयसिद्धि देनेवाली होती है।।३३।।

प्रस्थानप्रकारः (मु० चि०) –

कार्याद्यैरिह गमनस्य चेद्विलम्बो भूदेवादिभिरुपवीतमायुधं च ।
क्षौद्रं चामलफलमाशु चालनीयं सर्वेषां भवति यदेव हृत्प्रियंवा ।।३४।।

यदि कार्य के कारण यात्रा में विलम्ब हो तो ब्राह्मण को जनेऊ, क्षत्रिय को हथियार, वैश्य को शहद और शूद्रो को आमले का फल अथवा सवों को ज्यादा प्रिय हो वही वस्तु प्रस्थान में रखे।।३४।।

प्रस्थानदिनप्रमाणम् –

पूर्वे सप्त दिनान्येव याम्ये पञ्च दिनानि च ।
पश्चिमे दिवासांस्त्रीन्वै दिनानां द्वयमुत्तरे ।।३५।।

पूर्व में ७ दिन, दक्षिण में ५ दिन, पश्चिम में ३ दिन और उत्तर में २ दिनों तक प्रस्थान रहता है। अतः प्रस्थानोत्तर उक्त दिनों के अन्दर ही यात्रा कर देनी चाहिये।।३५।।

यातुर्नियमः –

क्रोधक्षौररतीश्रमामिषगुडद्यूताश्रुदुग्धासव–
क्षाराभ्यङ्गभयाऽसिताम्बरवमिस्तैलं कटूज्झेद्गमे ।
क्षीरक्षौररतीः क्रमात्त्रिशरसप्ताहं परं तद्दिने
रोगंस्त्र्यार्तवकं सितान्यतिलकं प्रस्थानकेऽपीति च।।३६।।

यात्रा करने वाले को चाहिये कि क्रोध, क्षौर बनवाना, मैथुन करना, परिश्रम, मांस, गुड़, जुआ खेलना, आँसू गिराना, दुग्ध, मद्य, खाराधान्य, उबटन, भय (शंका), काला वस्त्र, वमि (कय), तैल, कड़ुई चीज इन वस्तुओं को यात्रा में त्याज्य करै। इनमें दूध को ३ दिन, क्षौर को ५ दिन, मैथुन को ७ दिन पूर्व ही से और बाकी चीजों को यात्रा के दिन, रोग हो तो उसकी निवृत्ति पर्यन्त, स्त्री के ऋतु को वीर्यदान पर्यन्त, स्वेत से भिन्न तिलक को यात्रा के समय त्याग देना चाहिये।।३६।।

रत्नावल्यां -

कृत्वा यो मैथुनं रात्रौ प्रभाते ह्यधिगच्छति ।
नास्मै फलमवाप्नोति कृच्छेणापि निवर्तते ।।३७।।

जो मनुष्य रात को मैथुन करके प्रातःकाल यात्रा करता है वह यात्रा के फल को नहीं पाता, और यात्रा से बड़ी कठिनाई से लौटता है।।३७।।

यात्राविधिः (मु० चि०) -

अग्निं हुत्वा देवतां पूजयित्वा नत्वा विप्रानर्चयित्वा दिगीशम् ।
दत्त्वा दानं ब्राह्मणेभ्यो दिगीशं ध्यात्वा चित्ते भूमिपालोधिगच्छेत् ।।३८।।
देवगृहाद्वा गुरुसदनाद्वा स्वगृहान्मुख्यकलत्रगृहाद्वा ।
प्राश्य हविष्यं विप्रानुमतः पश्यन् श्रृण्वन्मंगलमीयात् ।।३६।।

अग्नि में हवन करके देवताओं का पूजन करके, ब्राह्मणों को नमस्कार करके, दिशाधीशों का पूजन करके, दैवज्ञ ब्राह्मणों को दान देकर दिगधीशों का ध्यान करके राजा यात्रा करे। देवता के, अथवा गुरु के, अथवा रानी (पटरानी) के मकान से हविष्य खाकर ब्राह्मण की अनुमति से मांगलिक वस्तुओं को देखता और मांगलिक शब्दों (ध्वनियों) को सुनता हुआ राजा यात्रा करे।।३८-३६।।

मनोविशुद्धावेव यात्रा कार्या -

चेतो निमित्तशकुनैरतिसुप्रशस्तै-
र्ज्ञात्वा विलग्नबलमुर्व्यधिपः प्रयाति ।
सिद्धिर्भवेदथ पुनः शकुनादितोऽपि
चेतोविशुद्धिरधिका न च तां विनेयात् ।।४०।।

चित्त-शुद्धि हो, निमित्त (लक्षण), शकुन अच्छे हों और लग्न बल उत्तम हो तो राजा को यात्रा करनी चाहिये। शकुनादि के अच्छे रहने पर भी यात्रा शुभदायिका होती है। पर हृदय की शुद्धि (हार्दिक उत्साह) का होना अधिक श्रेष्ठ है। उसके विना (शकुनादि के शुभ रहने पर भी) यात्रा करना श्रेष्ठ नहीं है।।४०।।

यात्रायामेव वर्ज्याः -

भद्रा याने परित्याज्या। जनुः सप्त पञ्चत्रितारा नेष्टाः। बाण पञ्चकं, व्यतीपात योगं, विष्टिकरणं, गण्डान्तं वैनाशिकादिषण्नक्षत्राणि यात्रायां वर्ज्याणि।।४१।।

भद्रा, ३,५,७ तारा, वाण पञ्चक, व्यतीपात योग, विष्ट करण, गण्डान्त, वैनाशिकादि छः नक्षत्र यात्रा में वर्जित करना चाहिये।

शुक्रे वास्तंगते जीवे चन्द्रे वास्तमुपागते ।
तयोर्बाल्ये बार्धके च सा यात्रा भयरोगदा ।।३६।।

जब शुक्र, वृहस्पति अथवा चन्द्रमा अस्तङ्गत हों अथवा जब उनका बाल्य वृद्धत्व हो तब यात्रा करने से भय तथा रोग होते हैं।

घातं तिथिं घातवारं घात नक्षत्रमेव च ।
यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञो ह्यन्यकर्मसुशोभनम् ।।४०।।

घात-तिथि-वार-नक्षत्रों में यात्रा नहीं करनी चाहिये। अन्य शुभ कर्मो में घात का विचार नहीं करना चाहिये।

सर्वघात चक्र –

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
मास	कार्ति.	मार्ग.	आषा.	पौष	ज्ये.	भाद्र	माघ	आश्वि.	श्रावण	वैशा.	चैत्र	फाल्गु.
तिथि	१-६ ११	५।१० १५	२।७ १२	२।७ १२	३।८ १३	५।१० १५	४।९ १४	१।६ ११	३।८ १३	४।९ १४	३।८ १३	५।१० १५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनु.	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहि.	आर्द्रा	आश्ले.
योग	विष्कु.	सुकर्मा	परिघ	व्याघा.	धृति	शुभ	शुल्क	व्यती.	वज्र	वैधृ.	गण्ड	वज्र
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
चन्द्र पु.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
चन्द्र स्त्री[1]	१	८	७	९	४	३	९	२	१०	११	५	१२

यात्रायां शुभशकुनाः (मु० चि०) –

विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्मांबरं
वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुला बद्धैकपश्वामिषम्।
सद्वाक्यं कुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणि मृत्कन्यका
रत्नोष्णीषसितोक्षमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः।।३८।।
आदर्शाञ्जनधौतवस्त्ररजका मीनाज्यसिंहासनं
शावं रोदनवर्जितं ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम्।
भारद्वाजनृयानवेदनिनदा माङ्गल्यगीताङ्कुशा
दृष्टाः सत्फलदाः प्रयाणसमये रिक्तो घटः स्वानुगः।।३९।।

ब्राह्मण, घोड़े, हाथी, फल (ऋतूद्भव), अन्न, दुग्ध, दधि, गौ, सरसो, कमल, वस्त्र, वेश्या, बाजा, मोर, चाष, (नीलकण्ठ) नकुल (न्यौला), बंधा हुआ अकेला पशु (गैया, बैल, भैंस इत्यादि) मांस, समीचीनवचन, फूल, ईख, जल से भरा घट, छाता, जमीन से उठी मिट्टी अर्थात् किसी के सर पर मिट्टी का बोझ, कन्या, रत्न, पगड़ी, सफेद बैल, मद्य, पुत्र सहित सौभाग्यवती स्त्री, प्रज्जवलित अग्नि, दर्पण, आँजन, धोया हुआ रजक (धोबी) वस्त्र, मत्स्य (मछली), घी, सिंहासन, रोदनरहित मुर्दा, पताका, शहद, बकड़ी, हथियार, गोरोचन, भरद्वाज (पक्षी), पालकी, वेदध्वनि, मांगलिक गीत, अंकुश, पीछे जाता हुआ खाली घड़ा ये पदार्थ यात्रा के समय देखने में आवे तो शुभ होते हैं।।४१।।

अथाशुभशकुनाः (वास्तुराजवल्लभे) –

तैलाङ्गारकमश्मभस्मफणिनः कार्पासलौहाजिनं
तक्रं तस्करकृष्णधान्यलवणं काष्ठास्थिविष्ठावसाः।
पिण्याकस्तुषरज्जुशृङ्खलगुडं पंको घटो रिक्तको
नासाहीनविनग्नमुण्डितवमत्प्रव्राजखर्वान्धकाः ।।४२।।
दीनः केशविमुक्त कोपिहदमानारूढको गर्दभं
सौष्ट्रः सौरिभवाहनोपि रुदितश्चेत्यादिकं वर्जयेत्।
द्वाराघातविडालयुद्धकलहं रक्ताम्बरव्यत्ययो
मा गच्छ क्व च यासि तिष्ठ वचनं यात्रानिषेधाय च।।४३।।

1. स्त्री चन्द्रघात विचार ज्योतिःशास्त्रसोपानम् आचार्यः अ. सीताराम झा

तैल, अंगारा (धूवे सहित आग), पत्थर, राख, साँप, कपास, लोह, मृगचर्म, मट्ठा, चोर, काला धान्य, नमक, काठ, अस्थि (हड्डी) विष्ठा, वसा (चर्बी) पिण्याक (मर्दित तिल) भूसी (धान, जौ, रहर इत्यादि की), रस्सी, सीकड़, गुड़, कीचड़, खाली घड़ा, नक्कटा, नंगा, (दिगम्बर) सिर मुड़ाये हुआ, वमन करता हुआ प्रव्राज (संयासी), खर्व (वामन) अंधा, दरिद्र, बाल खोले हुए, क्रोधी, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग करता हुआ, गदहा, ऊँट और भैसे पर चढ़ा हुआ, रोता हुआ, यात्रा में दीख पड़े तो अनिष्ट होता हैं। अचानक द्वार का बंद हो जाना, बिल्लियों का युद्ध (झगड़ा-लड़ाई) रक्तवस्त्र शुभदायक नहीं होता। मत जाओ, कहाँ जाते हो, (पीछे से टोकना) ठहरो! इत्यादि शब्द यात्रा के लिये अशुभ सूचक हैं।।४२-४३।।

शकुनान्तरम् –

गोधाजाहकसूकराहिशशकानां कीर्तनं शोभनं
नो शब्दो न विलोकनं च कपिऋक्षाणामतो व्यत्ययः।
नद्युत्तारभयप्रवेशसमरे नष्टार्थसंवीक्षणे
व्यत्यस्ताः शकुना नृपेक्षणविधौ यात्रादिताः शोभनाः।।४४।।

गोधा (गोह), जाहक (गात्र संकोची जीव), सूअर, साँप, खरगोश इत्यादि का यात्रा के समय कोई नाम ले तो शुभ है। किन्तु इनका शब्द और दर्शन शुभ नहीं है। बन्दर, भालुओं का इसके विपरीत जानना अर्थात् इनका शब्द और दर्शन शुभ है किन्तु कीर्तन शुभ नहीं है। नदी के पार जाने, भय, कार्य, प्रवेश, युद्ध, नष्ट वस्तु की खोज में यात्रा में कहे अशुभ शकुन नहीं होते हैं। राजा के दर्शन में यात्रा में कहे शुभ शकुन शुभ होते हैं।।४४।।

दुःशकुनापवादः (मु० चि०) –

आद्येऽपशकुने स्थित्वा प्राणानेकादश व्रजेत् ।
द्वितीये षोडशप्राणांस्तृतीये न क्वचिद्व्रजेत् ।।४५।।

यात्रा में पहले वार के अपशकुन में ११ श्वांस काल तक ठहर के दूसरे अपशकुन में १६ प्राण (श्वांस) तक ठहर कर यात्रा करे परन्तु तीसरे अपशकुन में कदापि यात्रा न करे।।४५।।

यात्रानिवृत्तस्य गृहप्रवेशमुहूर्तः (मू० चि०) –

यात्रानिवृत्तौ शुभदं प्रवेशनं मृदुध्रुवक्षिप्रचरैः पुनर्गमः ।
द्वीशेऽनले दारुणभे तथोग्रभे स्त्रीगेहपुत्रात्मविनाशनं क्रमात्।।४६।।

यात्रा से निवृत्त हो (लौट) कर मृदु (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा), ध्रुव (तीनों उत्तरा, रोहिणी) नक्षत्रों में गृहप्रवेश करना शुभ होता है। यदि क्षिप्रसंज्ञक (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्) चर संज्ञक (स्वाती, पुनर्वसू, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा) नक्षत्रों में प्रवेश करे तो फिर से यात्रा करनी पड़े। विशाखा, कृत्तिका, दारुणसंज्ञक (मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा) तथा उग्रसंज्ञक (तीनों पूर्वा, भरणी, मघा) में प्रवेश करे तो क्रम से स्त्री, गृह, पुत्र और अपना विनाश होता है।।४६।।

प्रसंगाद्वर्णस्वरचक्रम् (स्वरोदये) –

कादिहान्ताँल्लिखेद्वर्णान्स्वराधो ङञणोज्झितान् ।
तिर्यक्पंक्तिक्रमेणैव पञ्चत्रिंशत्प्रकोष्ठके ।।४७।।
नरनामादिमो वर्णो यस्मात्स्वरादधःस्थितः ।
स स्वरस्तस्य वर्णस्य वर्णस्वर इहोच्यते ।।४८।।
अस्वरो मेषसिंहालि इः कन्यायुग्मकर्कटाः ।
धनुर्मीनावुकारः स्यादेकारश्च तुलावृषौ ।।४९।।

ओस्वरो मृगकुम्भौ च राशीशास्तु ग्रहस्वराः ।
स्वराधः स्थापयेत्खेटान् राशेर्यो यस्य नायकः ।।५०।।
आकारे सप्त ऋक्षाणि रेवत्यादिक्रमेण च ।
पंच पंच इकारादावेवमृक्षस्वरोदयः ।।५१।।
अकारादिक्रमान्नयस्य नन्दादितिथिपंचकम् ।
दिनस्वरोदयो नित्यं स्वस्वतिथ्यादि जायते ।।५२।।
नभस्यमार्गवैशाखेष्वकारस्योदयो भवेत् ।
आश्विनश्रावणाषाढ़ेष्विकारो नायकः स्मृतः ।।५३।।
उकारश्चैत्रपौषे स्यादेकारो ज्येष्ठकार्तिके ।
ओकार उदयं याति माघफाल्गुनमासयोः ।।५४।।

बाल	कुमार	युवा	वृद्ध	मृत	स्वर
अ	इ	उ	ए	ओ	वर्ण
क	ख	ग	घ	च	वर्ण
छ	ज	झ	ट	ठ	वर्ण
ड	ढ	त	थ	द	वर्ण
ध	न	प	फ	व	वर्ण
भ	म	य	र	ल	वर्ण
व	श	स	ष	ह	वर्ण
नन्दा१।६।११	भद्रा२।७।१२	जया३।८।१३	रिक्ता४।९।१४	पूर्णा५।१०१५	तिथि
र.म.	बु.चं.	बृहस्पति	शुक्र	शनि	वार
रेवत्यादि७	आदित्यादि५	अर्यमादि५	मित्रादि५	श्रवणादि५	नक्षत्र
मे.सिं.वृश्चि.	कन्या,मि.कर्क	ध.मीन	तु.वृष	म.कुम्भ	लग्न
मार्ग.वै.भाद्र.	आ.श्र.आश्वि.	चैत्र,पौष	ज्ये.का.	मा.फा.	मास

आद्यो बालः कुमारश्च युवा वृद्धो मृतस्तथा ।
किञ्चिल्लाभकरो बालः कुमारस्त्वर्धलाभदः ।।५५।।
सर्वसिद्धो युवा प्रोक्तो वृद्धो मध्योऽधमोन्तिमः ।
युद्धकाले विचिन्त्येषु तिथिमार्गेण निश्चितम् ।।५६।।

ङ, ञ, ण वर्णों को छोड़कर अकारादि से हकार तक वर्णो को ३५ कोठे के चक्र में लिखे। मनुष्य के नाम का आदिम वर्ण जिस स्वर के नीचे पड़े वही उस मनुष्य का वर्णस्वर होता है।

अकार स्वर में मेष, सिंह, वृश्चिक, को इकार स्वर के नीचे कन्या, मिथुन, कर्क को उकार स्वर के नीचे धनु मीन को, एकार के नीचे तुला वृष को, ओकार के नीचे मकर कुम्भ को रखे। इन राशियों के स्वामी को भी तत्तत् स्वरों के नीचे रखै। रेवती से लेकर ७ नक्षत्र, अकार के नीचे, ५,५ नक्षत्र इ,उ,ए,ओ स्वरों के नीचे स्थापित करे। फिर अ,इ,उ,ए,ओ स्वरों के नीचे नन्दा, भद्रादि तिथियों का स्थापन करे। अपनी-अपनी तिथियों में नित्य स्वरोदय होता है।

भाद्रपद, अगहन, वैशाख इनमें अकार स्वर का उदय, आषाढ़, श्रावण, आश्विन में इकार स्वर

का उदय होता है। चैत्र, पौष में उकार, ज्येष्ठ कार्तिक में एकार, माघ-फाल्गुन मास में ओकार स्वर का उदय होता है। पहले स्वर का बाल, दूसरे का कुमार, तीसरे का युवा, चौथे का वृद्ध, पाँचवे का मृत नाम है। बाल स्वर थोड़ा लाभ, कुमार स्वर में आधा लाभ, युवा में सब प्रकार की सिद्धि, वृद्ध स्वर मध्यम फल देने वाला, मृत अधम फलदायक होता है, युद्धकाल में इसका विचार करना चाहिये।।४७-५६।।

जयपराजयज्ञानम् –

तेषामचां३ल१य३म२रा१यमिति हला च
नाम्नोरलां तु मिलिता महृता पृथक्सा ।
हीना मृतिं विजयमाह तथाधिकासा
तुल्यां समं च समरं यदि वापि सन्धिम् ।।५७।।

बालबोधज्योतिषे यात्राप्रकरणम् षष्ठं समाप्तम्।।६।।

इन स्वरों तथा व्यञ्जनों का क्रम से ३,१,४,२,१ अंक होता है। दोनों योद्धाओं के नाम अक्षरों के अंकों के योग में पाँच का भाग देने पर जिसका अधिक शेष हो उसकी जीत होती है। जिसका कम हो उसकी पराजय, सम होने पर समर हो या सन्धि होती है।।५७।।

हिन्दीटीकायां यात्राप्रकरणम् षष्ठं समाप्तम्।।६।।

जातक-प्रकरणम् ।।७।।

स्पष्टग्रहसाधनावश्यकत्वम् (सिद्धान्तशिरोमणौ) -

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम् ।
स्यात्साध्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृधा ।।१।।

यात्रा, विवाह, जातक (जन्मपत्र निर्माण) आदि में स्पष्ट ग्रह के अनुसार ही स्पष्ट फल मिलता है। अतः ग्रहों के स्पष्ट करने की क्रिया का साधन कहते हैं।।१।।

गतैष्यदिनज्ञानम् (ग्रन्थान्तरे) -

पंक्तिः स्वेष्टाद्भवेदग्रे पंक्त्यामिष्टं विशोधयेत् ।
तच्चालनमृणं ज्ञेयं व्यत्यये व्यत्ययं तथा ।।२।।

यदि इष्टकाल से पंक्ति आगे हो तो इष्टकाल की पंक्ति में घटाने से जो शेष बचेगा वह दिन, घटी, पल, ऋण (-) चालन होगा। इससे विपरीत अर्थात् पंक्ति से इष्टकाल आगे हो तो इष्टकाल में पंक्ति के घटाने पर जो शेष बचे वह दिनादि धन (+) चालन होगा।।२।।

पंचांगस्थितमैश्रिकग्रहादैष्टिकग्रहानयनम् (नी० क०) -

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निहनी खषड्हृता ।
लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद् ग्रहः ।।३।।

गत दिवसादि (ऋण चालन) से अथवा एप्य दिवसादि (धन चालन) से पंचांग स्थित ग्रह की स्पष्टगति को गुणा करके ६० से भाग देने पर लब्ध अंशादि (अंश, कला, विकला) होगा। इस अंशादि को गत दिवसादि (ऋणचालन) होने पर पंचांग में लिखे मिश्रकालिक या औदयिकस्पष्ट ग्रह मे घटा देने से तथा ऐप्यदिवसादि (धनचालन) हो तो पंचांगस्थित स्पष्टग्रह के अंशादि में जोड़ देने से तात्कालिक स्पष्ट ग्रह हो जाता है।

यहाँ इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि 'वक्री ग्रह में तथा राहु-केतु में ऋण चालन रहने पर जोड़ने, धन-चालन रहने पर घटाने से स्पष्ट ग्रह होता है।'

स्पष्टग्रहसाधनोदाहरणम् -

श्रीविक्रमसंवत् १९८६ ज्येष्ठ शुल्क १० रविवासरे घट्यादि ५२।३३ हस्त नक्षत्र घट्यादि ११।४४ उसके बाद चित्रा नक्षत्र, वरीयान् योग घ० ३३।५६ है। उस दिन श्रीसूर्योदय से ३२।३४ इष्ट घट्यादि पर श्रीमान् का जन्म हुआ। उस समय सूर्यादि ग्रहों का साधन करना है तो जन्मकालिक वारादि १।३२।३४ में भारतभूषण पंचांगस्थित मिश्रकाल ०।४८।६ को घटाया तो (१।३२।३४)-(०।४८।६)=०।४४।२८ शेष सावनात्मक ऐप्यदिनादि (धनचालन) हुआ। इससे पंचांगस्थित मैश्रिवस्पष्ट सूर्य की गति ५६।५७ को गुणने के लिये न्यासः - गुणनफल=(०।४४।२८) x (५६।५७) = ०।२४६४।१५६८

<u>०।२५०८।१५६६</u>

= ०।२४६४।४०७६।१५६६० = ४२।१२।२२।३६ हुआ।

इसमें ६० का भाग दिया तव लब्ध ०।४२।१२ अंशादि हुआ। इसको। पंचांगस्थित स्पष्टसूर्य २।१।१२।२५ में ऐप्य दिवसादि होने के कारण जोड़ दिया तो स्फुट सूर्य २।१।५४।३७ हुआ। इसीप्रकार सव ग्रहों का साधन करना चाहिये।।३।।

भयातभभोगानयनम् -

गतर्क्षघट्यूनखतर्कदण्डैर्युतेष्टनाडीति भवेद्भयातम् ।
ताभिर्घटीभिः सहिता निजर्क्षनाडीति ज्ञेयो विबुधैर्भभोगः ।।४।।

गतर्क्षनाड्योयदि सावनेष्टात्समाप्यतेऽर्वाक्किल तत्र शोध्याः ।
ता एव घट्यादिकसावनेष्टाच्छेषं भवद्यातमभीष्टमस्यः ।।५।।

गत नक्षत्र की घटी को ६० घटी में घटा के जो बाकी बचे उसको सूर्योदय से लेकर जितनी इष्ट घटी पलादि हो उसमें जोड़ देने से भयात हो जाता है। एवं उसी (६० में गतर्क्षघटी को घटाने से बचे शेष) को वर्तमान नक्षत्र की घटी में जोड़ देने से भभोग हो जाता है। (विशेषता यह है कि) यदि सावनेष्ट काल से पूर्व ही गत नक्षत्र की घाटियाँ समाप्त हो जायँ तो इष्टकाल में ही गत नक्षत्र की घटी को घटा देने से भयात हो जायेगा। यहाँ पर भी भभोग का साधन पूर्ववत् ही करना चाहिये।

उदाहरणम् :-

यहाँ इष्टकाल (३२।३४) के पूर्व ही गत नक्षत्र हस्त की घटियाँ ११।४४ बीत जाती हैं। इसलिये इष्टकाल मे गतर्क्ष घटी को घटाया तब -

इष्टकाल-गतर्क्षघटी= ३२।३४ - ११।४४ = २०।५० = भयात हुआ गतार्क्षघटी को ६० में घटा के ६० - ११।४४ = ४८।१६ वर्तमान नक्षत्र की घटी में जोड़ दिया तो ४८।१६ + १३।३४ = ६१।५० भभोग हो गया।।४-५।।

चन्द्रस्फुटीकरणम् (नीलकण्ठ्याम्) -

खषट्घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत्खतर्कघ्नधिष्णेषु युक्तं द्विनिघ्नम्।
नवाप्तं शशी भागपूर्वस्तु भुक्तिः खखाभ्राष्टवेदा भभोगेन भक्ताः।।६।।

पलात्मक भयात को ६० से गुण के पलात्मक भभोग से भाग देने पर जो लब्ध हो उसकी गत नक्षत्र की संख्या को ६० से गुणा करके जो फल आवे उसमें जोड़ कर दूना करे। फिर नव का भाग देने से जो लब्ध हो वह अंश होगा। शेष को ६० से गुणा करके नव से भाग देने पर लब्ध कला होगी, फिर शेष को ६० से गुणा करके नव से भाग देन पर लब्ध विकला होगा। अतएव अंशादि स्पष्टचन्द्रमा हो जायगा (अंश में ३० से भाग देने पर लब्ध राशि, शेष अंश होगा)। अड़तालिस हजार ४८००० में घट्यादि भभोग का भाग देने में चन्द्रमा की स्पष्ट भुक्ति (गति) होगी।

स्पष्टचन्द्रसाधनोदाहरणम् -

घट्यादि २०।५० भयात को ६० से गुणा कर दिया तव पलात्मक भयात १२५० हुआ। एवं घट्यादि ६१।५० भभोग को ६० से गुणा कर दिया तो पलात्मक ३७१० भभोग हुआ। अब पलात्मक १२५० भयात को ६० से गुणा कर दिया तो १२५०x६०=७५००० गुणनफल हुआ। इसमें पलात्मक ३७१० भभोग से भाग देने पर २०।१२।५६=लब्ध हुआ। १०४०=शेष को प्रयोजनाभाव से त्याग दिया। अब लब्ध २०।१२।५६ को नक्षत्र हस्त की संख्या १३ को ६० से गुण के गुणनफल १३x६०=७८० में जोड़ ७८०+(२०।१२।५६)=८००।१२।५६ को दो से गुण दिया तो -

(८००।१२।५६) x २=१६००।२५।५२ गुणनफल हुआ। इसमें नव से भाग देने से लब्ध १७७।४६।३२= अंशादि स्फुटचन्द्र हुआ।

प्रथमांक में ३० से भाग देने पर लब्ध ५ राशि शेष २७ अंश हुआ। अतः राश्यादि स्फुट चन्द्रमा ५।२७।४६।३२ हुआ। अड़तालिस हजार को साठ से गुणा करके पलात्मक भभोग ३७१० का भाग दिया तो लब्ध कलादि चन्द्रमा की स्पष्टगति ७७३।२० हुई।।६।।

पलभाचरखण्डयोर्ज्ञानम् (ग्रहलाघवे) -

मेषादिगे सायनभागसूर्ये दिनार्द्धजा भा पलभा भवेत्सा ।
त्रिष्ठा हताः स्युर्दशभिर्भुजङ्गैर्दिग्भिश्चरार्द्धानि गुणोद्धृतान्त्या।।७।।

सायन मेष की संक्रान्ति के दिन दोपहर को १२ अंगुल के शंकु की जो (अपने-अपने देश में) छाया हो उसको पलभा कहते हैं। उस पलभा को तीन जगह रखके क्रम से पहली जगह १० से, दूसरी जगह ८ से, तीसरी जगह १० से गुणा करके फिर तीसरी जगह तीन से भाग दे देवे तो क्रम से (मेष, वृष, मिथुन एवं उत्क्रम से कर्कादि का) चरखण्ड हो जायेगा।

उदाहरणम् -

वाराणसी की पलभा ५।३६ को तीन जगह ५।३६, ५।३६, ५।३६ रखकर क्रम से १०,८,१० से गुणा कर दिया तो गुणनफल ५६।३०, ४५।१२, ५६।३० हुये। तीसरी जगह ३ से भाग दे दिया और सब जगह "अर्धाधिके रूपं ग्राह्यमर्धाल्पे त्याज्यं", इस नियम के अनुसार दूसरे अंकों को त्याग दिया तब क्रम से तीन चरखण्ड ५६,४५,१९ हो गये।।७।।

अयनांशज्ञानम् (मकरन्दे) -

भूनेत्रवेदोनशको दशांशवीनः खषड्भिर्निहतोऽयनांशाः ।
त्रिघ्नोर्कराशिः स्वदलेन युक्तास्तावन्मिताभिर्विकलाभिराढ्याः।।८।।

वर्तमान शकाब्द में ४२१ घटा के जो शेष बचे उसका दशमांश उसी में घटा के ६० से भाग देने पर वर्षारम्भ का अयनांश होता है। (यदि सूर्य, राशियों को भी भोग चुका हो तो) सूर्य की वर्तमानराशिसंख्या को तीन से गुणा करके उसी का आधा उसमें जोड़ के जो हो उतनी विकलाओं को वर्षारम्भकालिक अंशादि अयनांश में जोड़ देना तो सूर्य की वर्तमान राशि संबंधी स्वल्पान्तर से अयनांश स्पष्ट हो जायेगा।।८।।

उदाहरणम् -

वर्तमान शालिवाहनशक १८५१ में ४२१ घटाया तो १४३० शेष रहा फिर इसमें उसी का दशमांश घटाकर १४३०-१४३=१२८७ शेष में ६० का भाग दिया तो लब्ध अंशादि २१।२७।० वर्षारम्भकालिक अयनांश हुआ। अब सूर्य की राशि २ को तीन से गुणा किया २x३=६, इसी ६ का आधा ३ इस ६ में जोड़ दिया =९ तो विकलादि अयनांश हुआ उसको वर्षारम्भकालिक अयनांश २१।२७।० में जोड़ दिया तो (२१।२७।०)+९ वर्तमान सामयिक स्पष्टानांश २१।२७।९ हुआ।।८।।

लंकोदयज्ञानं ततः स्वदेशोदयज्ञानञ्च (करणकुतूहले) -

लंकोदया नागतुरंगदस्रा गोंकाश्विनो रामरदा विनाड्यः ।
क्रमोत्क्रमस्थैश्चरखण्डकैः स्वैः क्रमोत्क्रमस्थैश्च विहीनयुक्ता।।९।।
मेषादिषण्णामुदया स्वदेशे तुलादितोऽमी च षडुत्क्रमस्थाः।

२७८ पल मेष का, २९९ वृष का, ३२३ मिथुन का लंकोदयमान होता है। एवं ३२३ कर्क का, २९९ सिंह का, २७८ कन्या का लंकोदयमान जानना चाहिये। इन मेष, वृष, मिथुन के लंकोदय विघटिका को क्रम से तथा उत्क्रम से रखके उनमें मेषादि के चरखण्डों को क्रम से तथा उत्क्रम से रखके प्रथम तीन स्थानों में घटा देने से फिर तीन स्थानों में उत्क्रम से जोड़ देने से मेषादि ६ राशियों के स्वदेशीयोदय मान हो जाते हैं। यही उत्क्रम से (उलटे) तुलादि ६ राशियों के भी उदयमान होते हैं।।९।।

वाराणसी का उदयमान -

लंकोदय	२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८
चरखण्ड	-५६	-४५	-१९	+१९	+४५	+५६
स्वदेशीयोदय	२२३ मेष-मीन	२५४ वृष-कुंभ	-३०४ मिथु.,मकर	३४२ कर्क-धनु	३४४ सिंह-वृशि.	३३५ कन्या-तुला

लग्नस्फुटीकरणम् (करणकुतूहले) -

तात्कालिकोऽर्कोऽयनभागयुक्तस्तद्भोग्यभागैरुदयो हतः स्वः ।।१०।।
खाग्न्युद्धृतस्तं रविभोग्यकालं विशोधयेदिष्टघटीपलेभ्यः ।
तदग्रतो राश्युदयाँश्च शेषमशुद्धहृत्वाग्निगुणं लवाद्यम् ।।११।।
अशुद्धपूर्वैर्भवनैरजाद्यैर्युक्तं तनुः स्यादयनांशहीनम् ।
भोग्याल्पकाले खगुणाहतेऽर्कः स्वीयोदयाप्तांशयुतो विलग्नम् ।।१२।।

तात्कालिक स्पष्ट सूर्य में स्पष्टायनांश जोड़ के भोग्यांश बनाना। उस भोग्यांश को अपने देश के उदयमान से गुणा करके ३० से भाग देने पर सूर्य का भोग्यकाल होगा। इस सूर्य के भोग्यकाल को इष्टघटी के पल (सूर्योदय से पलात्मक इष्टकाल) में घटावें, उसके बाद जिन-जिन राशियों का उदयमान् घट जाय उन-उन का उदयमान घटा देवे। अन्त में जो शेष बचे उसको ३० से गुणा करके अशुद्धोदयमान से भाग देने पर जो लब्ध अंशादिक हो उसको घटी हुई मेषादिक राशि की संख्या में जोड़ के उसमें अंशादि अयनांश को घटा देवे तो राश्यादि स्पष्टलग्न हो जायेगा। यदि पूर्वानीत सूर्य के भोग्यकाल से इष्टकाल कम हो तो उसको ३० से गुणा करके अपने उदयमान से भाग देने पर जो लब्ध अंशादि हो उसको स्पष्टसूर्य में जोड़ कर अयनांश घटा देने से वही स्पष्टलग्न हो जायेगा।

लग्नानयनोदाहरणम् -

तात्कालिक स्पष्टसूर्य = २।१।५४।३७

अयनांश = ०।२१।२७।६ सायनार्क = २।२३।२१।४६ भोग्यांश = ६।३८।१४

भोग्यांश x स्वदेशीयोदय = ६।३८।१४ x ३०४ = १८२४।११५५२।४२५६=२०१७।४२।५६

इसमें ३० का भाग दिया = $\frac{२०१७।४२।५६}{३०}$ = ७६।१५।२५।५२

इसको अभीष्टनाड़ी पल में घटाने पर शेष = (३२।३४)-(६७।१५।२५।५२)

= १६५४-(६७।१५।२५।५२) = १८८६।४४।३४।८

शेष में कर्क से लेकर वृश्चिक तक के उदयमान को घटाने पर शेष = १८८६।४४।३४।८

- ३४२+३४६+३३६+३३६+३४६ = १८८६।४४।३४।८ - १७०६

= १८०।४४।३४।८

शेष x ३० = १८०।४४।३४।८ x ३०=५४२२।१७।४

अशुद्धोदय से भाग देने पर लब्ध = $\frac{५४२२।१७।४}{३४२}$ =१५।५१।१४

सायन लग्न हुई = शुद्धराशिसंख्या+लब्ध = ८।१५।५१।१४

इसमें अयनांश घटाया तब स्पष्ट लग्न = ८।१५।५१।१४ - ०।२१।२७।६ = ७।२४।२४।५ हुई।

नतज्ञानम् (नीलकण्ठचाम्) -

पूर्वं नतं स्याद्दिनरात्रिखण्डं दिवानिशोरिष्टघटीविहीनम् ।
दिवानिशोरिष्टघटीषुशुद्धंद्युरात्रिखण्डं त्वपरं नतं स्यात् ।।१३।।

दिन अथवा रात्रि का इष्टकाल यदि दिनार्द्ध वा रात्र्यार्द्ध में घट जाय तो पूर्वनत होता है। एवं दिन या रात्रि के इष्टकाल में यदि दिनार्द्ध या रात्र्यार्द्ध घट जाय तो परनत होता है।

उदाहरणम् -

जैसे यहाँ इष्टकाल में ३२।३४ दिनमान ३३।५५ का आधा १६।५७।३० घट गया तो शेष १५।३६।३० दिन में परनत हुआ।।१३।।

दशमसाधनम् (श्रीपतिपद्धतौ) -

लंकोदयैः पूर्वनतादृणाख्यं प्रत्यङ् नतात्तच्च भवेद् धनाख्यम्।
लग्नं तदूचुः खलु मध्यलग्नं षड्भाधिकं तच्च रसातलाख्यम्॥१४॥

पूर्व हो तो लंकोदय पर ऋण (भुक्तांश) प्रकार से, परनत में धन (भोग्यांश) प्रकार से जो लग्न आवेगी उसको मध्यलग्न (दशमलग्न) कहते हैं। इसमें ६ राशि जोड़ देने पर चतुर्थ लग्न हो जाती है।

दशमलग्नसाधनोदाहरणम् -

स्पष्टसायनसूर्यः = २।२३।२१।४६ भोग्यांश = ६।३८।१४

लंकोदय भोग्यांश x स्वोदय = ६।३८।१४।३२३ = १६३८।१२२७४।४५२२ =२१४३।४६।२२

३० से भाग देने पर = <u>२१४३।४६।२२</u> = ७१।२७।३६
३०

परनत = १५।३६।३० = ६३६।३०

पूर्वानीतफल को घटाने से शेष = ६३६।३० - ७१।२७।३६ = ८६५।२।२१

इसमें कर्क+सिंह का मान घटाने पर शेष = ८६५।२।२१ - ३२३+३२३

= ८६५।२।२१ - ६४६ = २४३।२।२१

<u>शेष x ३०</u> = <u>(२४३।२।२१) ३०</u> = <u>७२६४।१०।३०</u> = २६।१४।१७ = फल
अशुद्धोदय २७८ २७८

सायनमध्यलग्न = शुद्धोदयसंख्या + फल = ५।२६।१४।१७

चूंकि स्पष्ट मध्यलग्न = सायनमध्यलग्न अयनांश

= ५।२६।१४।१७ - २१।२७।६ = ५।४।४७।८

फिर ६ राशि घटाने पर चतुर्थलग्न = ११।४।४७।८ हुआ।

दशमसाधने विशेषः -

प्राङ्नतस्योन्नतं कृत्वा रविं कृत्वा सषड्भकम्।
लंकोदयैर्धनाख्येन कर्मणा स्यात्खभं स्फुटम्॥१५॥

पूर्वनत का उन्नतकाल साधन करके तथा सूर्य में ६ राशि जोड़ के लंकोदय पर से जो धन (भोग्यांश) प्रकार से लग्न होता है वह (भी) दशम लग्न स्पष्ट हो जाता है।।१५।।

ससन्धीनां द्वादशभावानां साधनम् (श्रीपतिपद्धतौ) -

लग्नं चतुर्थाद्धिबुकं कलत्राज्जामित्रभं मध्यविलग्नतश्च।
खभं विलग्नाच्च विशोध्य शेषं तत्र्यंशमेकद्विगुणं विदध्यात्॥१६॥
लग्नाम्बुजामित्रनभोगृहेषु तदन्तरालोद्भवभावसिद्ध्यै।
सिद्ध्यन्ति भावा द्विगुणाः षडेव शुभाशुभं चिन्त्यमशेषमेभिः॥१७।

लग्न को चतुर्थ भाव में से, चतुर्थ भाव को सप्तम भाव में से, सप्तम भाव को दशम भाव में से, दशम भाव को लग्न में से घटाने पर जो शेष बचै उनका तृतीयांश लेकर, १ और २ से गुणा करके क्रम से लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम भावों में, उन (लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम) के बीच के भावों की सिद्धि के लिये जोड़ देना चाहिये तो १२ भाव सिद्ध होते हैं। इन्हीं १२ भावों से सम्पूर्ण शुभाशुभ फलों का विचार बुद्धिमानों को करना चाहिये।।१६-१७।।

उदाहरणम् -

चतुर्थभाव-लग्न = ११।४।४७।८ - ७।२४।२४।५ = ३।१०।२३।३ का तृतीयांश = <u>३।१०।२३।३</u>
३

लिया तो १।३।२७।४१ हुआ इसको १,२ से गुणा करके लग्न में जोड़ दिया तो

लग्न+तृतीयांश = ७।२४।२४।५+१।३।२७।४१ अर्थात् द्वितीयभाव = ८।२७।५१।४६

एवं तृतीय भाव = १०।१।१६।२७ हुआ एवं शेष भावों का भी आनयन करके सन्धि का साधन करना चाहिये।।१६-१७।।

वदन्तिं भावैक्यदलं हि सन्धिस्तत्र स्थितः स्यादफलो ग्रहेन्द्रः ।
ऊनस्तु सन्धेर्गतभावजातानागामिजं चाभ्यधिकः करोति।।१८।।
भावांशतुल्यः खलु वर्तमानो भावोद्भवं पूर्णफलं विधत्ते ।
भावोनके वाभ्यधिके च खेटे त्रैराशिकेनात्र फलं प्रकल्प्यम्।।१९।।
भावप्रवृत्तौ हि फलप्रवृत्तिः पूर्णं फलं भावसमांशकेषु ।
ह्रासक्रमाद्भावविरामकाले फलस्य नाशः कथितो मुनीन्द्रैः ।।२०।।
जन्म-प्रयाण-व्रतबन्ध-चौल-नृपाभिषेकादिकरग्रहेषु ।
एवं ही भावाः परिकल्पनीयास्तैरेव योगोत्थफलं प्रकल्प्यम्।।२१।।

आसन्नस्थ दो-दो भावों के योग के आधे को सन्धि कहते हैं। उस (सन्धि) में स्थित ग्रह विफल (फल प्रदान करने में असमर्थ) होता है। ग्रह सन्धि से कम रहने पर (पूर्व भाव) का और सन्धि से अधिक रहने पर (आगामी) भाव का फल करता है। भावों के अंश तुल्य जब ग्रह रहता है तो भाव सम्बन्धित पूर्ण फल देता है। भावों से कम या अधिक ग्रह हों तो त्रैराशिक से उसके फल की कल्पना करें। (क्योंकि) भाव की प्रकृति (प्रारम्भ) से फल का भी प्रारम्भ होता है, भाव के समान रहने पर पूर्ण फल होता है, ह्रास के क्रम से भाव के विराम काल में फल का भी नाश (विराम) हो जाता है। ऐसा मुनियों ने कहा है। जन्मकाल में, यात्रा के समय, व्रतबन्ध, चौल, राज्यभिषेक कार्य विवाह इत्यादि में ऐसे ही भाव साधन करना चाहिये और इन्ही भावों पर से योग संबंधी फ़लादेश करना चाहिये।।१८-२१।।

पञ्चधामैत्री (सारावल्याम्) -

व्ययाम्बुधनखायेषु तृतीये सुहृदः स्थितः ।
तत्कालरिपवः षष्ठसप्ताष्टैकत्रिकोणगाः ।।२२।।
हितसमरिपुसंज्ञा ये निसर्गात्निरुक्ता
हिततमहितमध्यास्ते ऽपि तत्कालमित्रैः ।
रिपुसमसुहृदाख्याः सूतिकाले ग्रहेन्द्रा
अधिरिपुरिपुमध्याः शत्रुभिश्चिन्तनीयाः ।।२३।।

तत्काल में जो ग्रह १२,४,२,१०,११,३ स्थानों में रहता है, वह मित्र होता है। शेष (६।७।८।१।५।६) स्थानों में रहता है वह शत्रु होता है। जो ग्रह स्वभाविक मित्र, सम, शत्रु है वह यदि तत्काल में मित्र हो जायं तो क्रम से अधिमित्र, मित्र, सम होते हैं। एवं जो ग्रह स्वभाविक शत्रु, सम मित्र हैं वे यदि तत्काल में शत्रु हो जायं तो क्रम से अधिशत्रु, शत्रु, सम होते हैं। इसप्रकार आचार्यों ने विचार कर कहा है।।२३

विंशोत्तरीयदशाभेदाः -

दशा चान्तर्दशा चैव विदशोपदशा तथा ।
प्राणाख्या च फलं तासां वदेच्छास्त्रा ऽनुसारतः।।२४।।

१. दशा, २. अन्तर्दशा, ३. विदशा (प्रत्यन्तर्दशा), ४. उपदशा (सूक्ष्मदशा) और ५. प्राणदशा ये पाँच प्रकार के दशा के भेद होते हैं इनका फल शास्त्रानुसार कहना चाहिये।।२४।।

महादशाज्ञानाम् -

स्युः कृत्तिकादिनवकत्रिकके (भे) रवीन्दुभौमा ऽगुजीवशनिविच्छिखिमार्गवानाम् ।
षड्६दिङ्१०नगे७मविधु१८भूप१६नवेन्दु१९शैल भू१७भूधरा७नख२०मिताः क्रमतोः दशाब्दाः।।२५।।

कृत्तिकादि नक्षत्र ने ६-६ नक्षत्र तीन आवृत्ति गिनने पर क्रम से सूर्य, चन्द्रमा, भौम, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु और शुक्र इन ग्रहों की क्रम से ६,१०,७,१८,१६,१६,१७,७ और २० वर्ष की दशा होती है। जैसे कृत्तिका में जन्म हो तो सूर्य की दशा ६ वर्ष की, रोहिणी में जन्म हो तो चन्द्रमा की दशा १० वर्ष की, ऐसे ही आगे भी जानो।।२५।।

दशास्फुटीकरणम् –

भयातमानेन हता दशाब्दा भभोगमानेन हृताः फलं स्यात् ।
समादिकं भुक्तमनेन हीनं दशामितिर्भोग्यमितिः स्फुटा स्यात् ।।
ततः प्रभृत्येव दशाफलानि विचिन्तनीयानिबुधै र्ग्रहाणाम् ।।२६।।

दशा वर्ष को पलात्मक भयात से गुणा करके पलात्मक भभोग से भाग देने पर लब्ध वर्ष होगा। फिर शेष को १२ से गुणा करके फिर पलात्मक भभोग से भाग देने पर लब्ध मास होगा। फिर मास शेष को ३० से गुणा करके उसी पलात्मक भभोग से भाग देने पर लब्धि दिन होगा। फिर दिन शेष को ६० से गुणा करके पलात्मक भभोग से भाग देने पर लब्ध घटी होगी। शेष घटी को ६० से गुणित करके उसी पलात्मक भभोग से भाग देने पर लब्ध पल होगा। जिसे जन्मकालिक दशा का भुक्त सौरात्मक वर्ष, मास, दिन, घटी, पल बनाकर दशा वर्ष में घटा देने पर दशा का भोग्य सौर वर्षादि होगा। उस अवशिष्ट भोग्य दशा का फल कहना चाहिये, तथा उसके वाद जिस-जिस ग्रह की दशा भोग्य है उसका फल कहना चाहिये।

उदाहरणम् –

चित्रा नक्षत्र का भयात २०।२५ और भभोग ६१।५० है। पूर्वकथित विधि से भयात् २०।५०x ६०=१२५० पलात्मक में चित्रा नक्षत्र में भौम ग्रह की महादशा वर्ष ७ x १२५०=८७५० भयात् पलात्मक हुआ। ६१।५० x ६०=३७१० पलात्मक भभोग से भाग देने पर लब्ध २ गतवर्ष मिला। शेष १३३० को १२ से गुणा करके १५६६० उसी पलात्मक ३७१० भभोग से भाग दिया तो लब्ध ४ मास हुआ। फिर शेष ११२० को ३० से गुणा करके ३३६०० उसी भाजक ३७१० से भाग देने पर लब्ध ६ गत दिन हुए। फिर दिन शेष २१० को ६० से गुणा करके १२६०० को उसी पलात्मक भभोग ३७१० से भाग दिया तो लब्ध ३ गत घटिका होगी। पुनः घटी शेष १४७० को ६० से गुणा करके ८८२०० को पूर्व भाजक से भाग दिया तो लब्ध २४ पल हुये। शेष का प्रयोजनाभाव से छोड़ दिया तो इस प्रकार मंगल की महादशा का भुक्त वर्षादि २।४।६।३।२४ हुआ। इसको महादशा ७ वर्ष में घटाने से शेष भोग्य वर्षादि हुआ ४।७।२०।५६।३६ यहाँ से आगे की दशाओं का फल कहना चाहिये।।२६।।

भोग्यदशाज्ञानार्थमन्यो विधिः –

यदि भयात को पहले ही भभोग में घटाकर जो नक्षत्र की घटी शेष बचे उसकी पूर्वविधि (दशामान से गुणाकर के भभोग से भाग देने पर) दशा का भोग्य वर्षादि मान हो जायेगा।

अन्तर्दशाज्ञानम् –

दशादशाघातभवस्य योऽङ्क आद्यः से धीरैस्त्रिगुणो विधेयः।
तावन्मिताःस्युर्दिवसाश्च मासाः शेषाङ्कतुल्याःसुधियावगम्याः।।२७।।

जिस ग्रह की महादशा में अन्तर्दशा का आनयन करना हो तो उन दोनों ग्रहों के महादशा के वर्ष के मानों को परस्पर गुणा करने से जो गुणनफल हो उसके प्रथम अंक (इकाई) को तीन से गुणा करने पर अन्तर्दशा के दिन की संख्या हो जायेगी। जो शेष अंक बचे उतने मास होंगे (मास में १२ का भाग देने पर लब्ध वर्ष शेष मास होगां) इस तरह सब ग्रहों के अन्तर्दशा का मान हो जायेगा।

अन्तर्दशानयनोदाहरणम् –

जैसे राहु की महादशा में राहु का अन्तर लाना है तो महादशा का वर्ष १८, अन्तर्दशेश का वर्ष १८ दोनों का गुणा किया तो ३२४ हुए। इसमें पहले ४ अंक (इकाई) को ३ से गुणा किया तो १२ दिन हुए। वाकी ३२ दो अंक बचे ये मास हुये। इसलिये राहु की महादशा में वर्षादि २।८।१२ राहु की

जन्म कालिक चन्द्रसंचार द्वारा भुक्त विंशोत्तरीमहादशा आनयन सारणी नं० १

राशि	मेष (राशीश : मंगल)									वृषभ (राशीश : शुक्र)									मिथुन (राशीश : बुध)									कर्क (राशीश : चन्द्रमा)								
नक्षत्र	अश्विनी				भरणी				कृत्तिका				रोहिणी				मृगशिर				आर्द्रा				पुनर्वसु				पुष्य				आश्लेषा			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
चन्द्र संचार राशि	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४
चन्द्र संचार अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
चन्द्र संचार कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

राशि	सिंह (राशीश : सूर्य)									कन्या (राशीश : बुध)									तुला (राशीश : शुक्र)									वृश्चिक (राशीश : मंगल)								
नक्षत्र	मघा				पूर्वा फाल्गुनी				उत्तरा फाल्गुनी				हस्त				चित्रा				स्वाती				विशाखा				अनुराधा				ज्येष्ठा			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
चन्द्र संचार राशि	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८
चन्द्र संचार अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
चन्द्र संचार कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

राशि	धनु (राशीश : गुरु)									मकर (राशीश : शनि)									कुम्भ (राशीश : शनि)									मीन (राशीश : गुरु)								
नक्षत्र	मूल				पूर्वा षाढ़ा				उत्तरा षाढ़ा				श्रवण				धनिष्ठा				शतभिषा				पूर्व भाद्रपद				उत्तरा भाद्रपद				रेवती			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
चन्द्र संचार राशि	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१२
चन्द्र संचार अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
चन्द्र संचार कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
विंशोत्तरी महादशा	केतु ७ वर्ष				शुक्र २० वर्ष				सूर्य ६ वर्ष				चन्द्र १० वर्ष				मंगल ७ वर्ष				राहू १८ वर्ष				गुरु १६ वर्ष				शनि १९ वर्ष				बुध १७ वर्ष			
भुक्त वर्ष	१	३	५	७	५	१०	१५	२०	१	३	४	६	२	५	७	१०	१	३	५	७	४	९	१३	१८	४	८	१२	१६	४	९	१४	१९	४	८	१२	१७
भुक्त मास	९	६	३	०	०	०	०	०	६	०	६	०	६	०	६	०	९	६	३	०	६	०	६	०	०	०	०	०	९	६	३	०	३	६	९	०

जन्म कालिक चन्द्रसंचार द्वारा भुक्त विंशोत्तरीमहादशा आनयन सारणी नं० २

चंद्र संचार	सूर्य			चंद्रमा			मंगल			राहू			गुरू			शनि			बुध			केतु			शुक्र		
कला	मा०	दि०	घ०	मा०	दि०	घ०	मा०	दि०	घ०	मा०	दि०	घ०	मा०	दि०	घ०	मा०	दि०	घ०	मा०	दि०	घ०	मा०	दि०	घ०	वर्ष	मास	दिन
१	०	२	४२		४	३०		३	९		८	६		७	१२		८	३३		७	३९		३	९			९
२	०	५	२४		९	०		६	१८		१६	१२		१४	२४		१७	६		१५	१८		६	१८			१८
३	०	८	६		१३	३०		९	२७		२४	१८		२१	३६		२५	३९		२२	५७		९	२७			२७
४	०	१०	४८		१८	०		२२	३६	१	२	२४		२८	४८	१	४	१२	१	०	३६		१२	३६		१	६
५	०	१३	३०		२२	३०		१५	४५	१	१०	३०	१	६	०	१	१२	४५	१	८	१५		१५	४५		१	१५
६	०	१६	१२		२७	०		१८	५४	१	१८	३६	१	१३	१२	१	२१	१८	१	१५	५४		१८	५४		१	२४
७	०	१८	५४	१	१	३०		२२	३	१	२६	४२	१	२०	२४	१	२९	५१	१	२३	३३		२२	३		२	३
८	०	२१	३६	१	६	०		२५	१२	२	४	४८	२	२७	३६	२	८	२४	२	१	१२		२५	१२		२	१२
९	०	२४	१८	१	१०	३०		२८	२१	२	१२	५४	२	४	४८	२	१६	५७	२	८	५१		२८	२१		२	२१
१०	०	२७	०	१	१५	०	१	१	३०	२	२१	०	२	१२	०	२	२५	३०	२	१६	३०	१	१	३०		३	०
२०	१	२४	०	३	०	०	२	३	०	५	१२	०	४	२४	०	५	२१	०	५	३	०	२	३	०		६	०
३०	२	२१	०	४	१५	०	३	४	३०	८	३	०	७	६	०	८	१६	३०	७	१९	३०	३	४	३०		९	०
४०	३	१८	०	६	०	०	४	६	०	१०	२४	०	९	१८	०	११	१२	०	१०	६	०	४	६	०	१	०	०
५०	४	१५	०	७	१५	०	५	७	३०	१३	१५	०	१२	०	०	१४	७	३०	१२	२२	३०	५	७	३०	१	३	०
(१अंश)६०	५	१२	०	९	०	०	६	९	०	१६	६	०	१४	१२	०	१७	३	०	१५	९	०	६	९	०	१	६	०
२ अंश	१०	२४	०	१८	०	०	१२	१८	०	३२	१२	०	२८	२४	०	३४	६	०	३०	१८	०	१२	१८	०	३	०	०
३ अंश	१६	०६	०	२७	०	०	१८	२७	०	४८	१८	०	४३	०६	०	५१	१९	०	४५	२७	०	२५	२७	०	४	६	०
विकला	दि०	घ०	प०	दि०	घ०	प०	दि०	घ०	प०	दि०	घ०	प०	दि०	घ०	प०	दि०	घ०	प०	दि०	घ०	प०	दि०	घ०	प०	मा०	दि०	घ०
१		२	४२		४	३०		३	९		८	६		७	१२		८	३३		७	३९		३	९			९
२		५	२४		९	०		६	१८		१६	१२		१४	२४		१७	६		१५	१८		६	१८			१८
३		८	६		१३	३०		९	२७		२४	१८		२१	३६		२५	३९		२२	५७		९	२७			२७
४		१०	४८		१८	०		१२	३६		३२	२४		२८	४८		३४	१२		३०	३६		१२	३६			३६
५		१३	३०		२२	३०		१५	४५		४०	३०		३६	०		४२	४५		३८	१५		१५	४५			४५
६		१६	१२		२७	०		१८	५४		४८	३६		४३	१२		५१	१८		४५	५४		१८	५४			५४
७		१८	५४		३१	३०		२२	३		५६	४२		५०	२४		५९	५१		५३	३३		२२	३		१	३
८		२१	३६		३६	०		२५	१२	१	४	४८		५७	३६	१	८	२४	१	१	१२		२५	१२		१	१२
९		२४	१८		४०	३०		२८	२१	१	१२	५४	१	४	४८	१	१६	५७	१	८	५१		२८	२१		१	२१
१०		२७	०		४५	०		३१	३०	२	२१	०	१	१२	०	१	२५	३०	१	१६	३०		३१	३०		१	३०
२०		५४	०	१	३०	०	१	३	०	२	४२	०	२	२४		२	५१	०	२	३३	०	१	३	०		३	०
३०	१	२१		२	१५	०	१	३४	३०	४	३	०	३	३६		४	१६	३०	३	४९	३०	१	३४	३०		४	३०
४०	१	४८		३	०	०	२	६	०	५	२४	०	४	४८		५	४२	०	५	६	०	२	०६	०		६	०
५०	२	१५		३	४५	०	२	३७	३०	६	४५	०	६	०		७	७	३०	६	२२	३०	२	३७	३०		७	३०
६०	२	४२		४	३०	०	३	९	०	८	६	०	७	१२		८	३३	०	७	३९	०	३	९	०		९	०

अन्तर्दशा हुई। इसी तरह से राहु की दशा में सब ग्रहों की अन्तर्दशा का साधन करना चाहिये।।२७।।

अथवान्तरादीनामेक एवं प्रकारः -

स्वैः स्वैर्गताब्दैर्गुणितं दशादिवर्षादिकं विंशतियुक्शतेन ।

भजेच्च लब्धं तु निजान्तरान्तर्दशादिमानं कथितं ग्रहाणाम् ।।२८।।

जिस ग्रह की दशा, अर्न्तदशा इत्यादि से अन्तर्दशा, प्रत्यन्तरंदशा इत्यादि निकालना हो उसके दशावर्ष की दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा इत्यादि के वर्ष मासादि को गुणा करके १२० से भाग देने पर अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा इत्यादि का वर्षादि होता है।

अन्तर्दशानयनोदाहरणम् -

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा निकालना है तो महादशेश के वर्ष १८ को अन्तर्दशेश के वर्ष १८ से गुणा करके ३२४ गुणनफल में १२० का भाग देने पर लब्ध २ राहु की अन्तर्दशा का वर्ष हुआ। फिर शेष ८४ को १२ से गुणा करके गुणनफल १००८ में १२० का भाग दिया तो लब्ध ८ मास हुए। पुनः मास शेष ४८ को तीस से गुणा करके गुणनफल १४४० में १२० का भाग दिया तो लब्ध १२ दिन हुये। यह वर्षादि २।८।१२ राहु की महादशा में राहु के अन्तर्दशा का मान पूर्वानीता अन्तर्दशा मान के तुल्य हुआ।

प्रत्यन्तरदशानयनोदाहरणम् -

अन्तर्दशा-दशा-प्रत्यन्तरेशाब्द हतिहृता ।

शून्यवेदैः फलं प्रत्यन्तरे तु दिवसादिकम् ।।२९।।

जिसकी महादशा में जिसकी अन्तर्दशा में जिसका प्रत्यन्तर जानना हो उन तीनों ग्रहों के महादशा वर्षों का परस्पर गुणा करके, गुणनफल में ४० से भाग देने पर लब्धि दिनादिक प्रत्यन्तरकाल आवेगा। दिनस्थान में ३० से अधिक संख्या हो तो ३० से भाग देकर लब्धि मास शेष दिन रहेगा।

उदाहरणम् -

राहु की अन्तर्दशा में राहु का प्रत्यन्तर निकालना हो तो १८ x १८ x १८ = ५८३२ ÷ ४०= ४ मास २५ दिन ४८ घटिका राहु का प्रत्यन्तर होगा। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह का प्रत्यन्तर निकलेगा।

सूक्ष्मानयनोदाहरणम् -

जैसे राहू की प्रत्यन्तर्दशा में सूर्य का सूक्ष्म लाना है तो सूर्य के दशा वर्ष ६ से राहु की प्रत्यन्तर्दशा के दिनादि १४५।४८ को गुणा करके गुणनफल ८७४।४८ में १२० का भाग दिया तो लब्ध राहु की महादशा मे राहु की अन्तर्दशा में राहु के ही प्रत्यन्तर में सूर्य का सूक्ष्म दिनादि ७।१७।२४ हुआ। ऐसे ही प्राण का उदाहरण भी जानना।।२८।।

अन्तर्दशानयने विशेषः -

यदि जन्म समय से ही अन्तर्दशा का ज्ञान करना हो तो जन्मकालिक दशा के भोग्य वर्षादि पर से जिस ग्रह की अन्तर्दशा वर्तमान हो उस अन्तर्दशा को लिखना चाहिये।

योगिनीदशाज्ञानम् -

जन्मभं त्रियुतं तष्टमष्टभिः शेषतो दशा।

मंगलाद्या अब्दवृद्ध्या संकटाष्टौ समा मताः।।२९।।

आसामीशाःक्रमाच्चन्द्रभान्वीज्यकुजचन्द्रजाः।

मन्दास्फुजित्सैंहिकेया विज्ञेयाः खलु विद्वरैः।।३०।।

जन्म की नक्षत्र संख्या में ३ जोड़ के आठ का भाग देने पर एकादि शेष बचे तो क्रम से १ मंगला, २ पिंगला, ३ धान्या, ४ भ्रामरी, ५ भद्रिका, ६ उल्का, ७ सिद्धा, ८ संकटा योगिनी दशा होती है। जिनके स्वामी क्रम से चन्द्रमा, सूर्य, गुरु, मंगल, बुध, शनि, शुक्र और राहु-केतु होते हैं।।२९-३०।।

१मंगलान्त	२पिंगलान्त	३धान्यान्त	४भ्रामर्य्यन्त	५भद्रिकान्त	६उल्कान्त	७सिद्धान्त	८संटकान्त
द. मा. दि.	द. मा. दि.	द. मा. दि.	द. मा. दि.	द. मा. दि.	द. व. मा.	द. व मा. दि.	द. व. मा. दि.
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १ ०	सिं. १ ४ १०	सं. १ ९ १०
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सिं. १ २	स. १ ६ २०	मं. ० २ २०
धा. १ ०	भ्रा. २ १०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	स. १ ४	मं. ० २ १०	पिं. ० ५ १०
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	स. १ १०	मं. ० २	पिं. ० ४ २०	धा. ० ८ ०
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	स. १० २०	मं. १ २०	पिं. ० ४	धा. ० ७ ०	भ्रा. ० १० २०
उ. २ ०	सि. ४ २०	स. ८ ०	मं. १ २०	पिं. ३ १०	धा. ० ६	भ्रा. ० ९ १०	भ. १ १ १०
सि. २ १०	स. ५ १०	मं. ९ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ० ८	भ. ० ११ २०	उ. १ ४ ०
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. ० १०	उ. १ २ ०	सिं. १ ६ २०

होरालग्नानयनम् –

द्विघ्नेष्टनाड्यः पंचाप्तः भं शेषं च पलीकृतम् ।
दशाप्तमंशास्ते युक्ता रवौ होरोदयं भवेत् ।।
विषमेङ्के रवौ योज्यं समेङ्के लग्नभादिषु ।।३१।।

बालबोधज्योतिषे जातकप्रकरणम् सप्तमं समाप्तम्।।७।।

इष्टकाल घटी पल को २ से गुणा करके ५ से भाग देने पर लब्धि राशि होगी। शेष का पल बना के १० से भाग देने से जो लब्धि आवेगी वह अंश होगा। (पुनः शेष को ६० से गुणा करके १० से भाग देने पर कला हो जायेगी) फिर इस राश्यादि को सूर्य की राश्यादि में जोड़ देने से स्पष्ट होरालग्न हो जायेगा। यहाँ विशेषता यह है कि यदि विषम जन्मलग्न हो तो लब्ध राश्यादि को स्पष्ट सूर्य में, यदि समसंख्यक जन्मलग्न हो तो लब्ध राश्यादि को जन्मलग्न में जोड़ने से होरा लग्न होता है।

उदाहरणम् –

स्पष्ट सूर्य २।१।५४।३७ लग्न ७।२४।२४।५ सावनेष्ट ३२।३४ है यहाँ इष्ट काल ३२।३४ को २ से गुणा ६५।८ करके ५ का भाग देने पर लब्धि १३ राशि हुई। शेष ०।८ बचा इसके पल बनाके १० दश का भाग दिया तो लब्धि ० अंश आया। पुनः शेष ८ को ६० से गुणा करके १० से भाग दिया तो कला आई। इस लब्ध राश्यादि १।०।४८ को जन्मलग्न सम होने के कारण जन्मलग्न में जोड़ दिया तो - जन्मलग्न = ७।२४।२४।५ + लब्ध राश्यादि = १।०।४८।० = स्पष्ट होरालग्न = ८।२५।१२।५ हुई इसके बाद जैमिनीयसूत्रानुसार स्पष्टायुर्दाय का साधन करना चाहिये।।३१।।

(१.) आयुः पितृदिनेशाभ्याम्। (२.) प्रथमयोरुत्तरयोर्वा दीर्घम्। (३.) प्रथमद्वितीययोरन्त्ययोर्वा मध्यम्। (४.) मध्ययोराद्यन्तयोर्वा हीनम्। (५.) एवं मन्दचन्द्राभ्याम्। (६.) पितृकालतश्च। (७.) संवादात्प्रामाण्यम् (८.) विसंवादे पितृकालतः। (९.) पितृलाभगे चन्द्रे मन्दचन्द्राभ्याम्।

१. लग्नेश और अष्टमेश यदि चरराशि में हो वा एक स्थिर में, दूसरा द्विस्वभाव में हो तो दीर्घायु। दोनों द्विस्वभाव में हो या एक चर में दूसरा स्थिर राशि में हो तो मध्यायु। एवं दोनों स्थिरराशि में हो या एक चर में दूसरा द्विस्वभाव में हो तो अल्पायु जानना।

२. लग्न या सप्तम में यदि चन्द्रमा हो तो लग्न-चन्द्रमा से अन्यथा शनि-चन्द्रमा से एवं ३. जन्मलग्न-होरालग्न से आयुर्दाय का विचार करना चाहिये। इनमें तीनों प्रकार से वा दो प्रकार से जो आयु प्राप्त हो उसी को ग्रहण करना। यदि तीनों प्रकार से भिन्न-भिन्न आवे तो जन्मलग्न-होरालग्न पर से आई हुई आयुर्दाय को ग्रहण करना चाहिये। ४. जन्मलग्न विषम हो तो द्वितीय-अष्टमेषों में से, जन्मलग्न सम हो तो षष्ठेश-द्वादशेशों में से जो बलवान् हो उसके केन्द्र में रहने पर दीर्घायु, पणफर में रहने पर मध्यायु और आपोक्लिम में रहने पर अल्पायु जानना।

हिन्दीटीकायां जातकप्रकरणम् सप्तमं समाप्तम्।।७।।

विंशोत्तरी महादशायाम् अन्तर्दशा

सूर्यदशावर्ष६ कृ.उ.फा.उ.षा.				चन्द्रदशावर्ष१० रो.ह.श्रवण				मौमदशावर्ष७ मृग.चित्रा,ध.			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	वृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	वृ.	१	४	०	श.	१	१	९
वृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	वु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	वु.	१	५	०	के.	०	४	२७
वु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष१८ आर्द्रा,स्वा.शत.				गुरुदशावर्ष१६ पुन.वि.पू.भा.				शनिदशावर्ष१९ पुष्य,अनु.,उ.भा.			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	वृ.	२	१	१८	श.	३	०	३
वृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	वु.	२	८	९
श.	२	१०	६	वु.	२	३	६	के.	१	१	९
वु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१०	रा.	२	४	२४	वृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष१७ आश्ले.,ज्ये.रे.				केतुदशावर्ष७ मघा,मू.,अश्वि.				शुक्रदशावर्ष२० पू.फा.पू.षा.भ.			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
वु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	वृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	वृ.	०	११	६	श.	३	२	०
वृ.	२	३	६	श.	१	१	९	वु.	२	१०	०
श.	२	८	९	वु.	०	११	२७	के.	१	२	०

विंशोत्तरी सूर्य महादशा (वर्ष ६) यामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

सूर्यान्तर (०।३।१८) में				चन्द्रान्तर (०।६।०) में				भौमान्तर (०।४।६) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
सू.	०	५	२४	चं.	०	१५	०	मं.	०	७	२१
चं.	०	९	०	मं.	०	१०	३०	रा.	०	१८	५४
मं.	०	६	१८	रा.	०	२७	०	गु.	०	१६	४८
रा.	०	१६	१२	गु.	०	२४	०	श.	०	१९	५७
गु.	०	१४	२४	श.	०	२८	३०	वु.	०	१७	५१
श.	०	१७	६	वु.	०	२५	३०	के.	०	७	२१
वु.	०	१५	१८	के.	०	१०	३०	शु.	०	२१	०
के.	०	६	१८	शु.	१	०	०	सू.	०	६	१८
शु.	०	१८	०	सू.	०	९	०	चं.	०	१०	३०

रास्वन्तर (०।१०।२४) में				गुर्वन्तर (०।९।१८) में				शन्यन्तर (०।११।१२) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
रा.	१	१८	३६	गु.	१	८	२४	श.	१	२४	९
गु.	१	१३	१२	श.	१	१५	३६	वु.	१	२८	२७
श.	१	२१	१८	वु.	१	१०	४८	के.	०	१९	५७
वु.	१	१५	५४	के.	०	१६	४८	शु.	१	२७	०
के.	०	१८	५४	शु.	१	१८	०	सू.	०	१७	६
शु.	१	२४	०	सू.	०	१४	२४	चं.	०	२८	३०
सू.	०	१६	१२	चं.	०	२४	०	मं.	०	१९	५७
चं.	०	२७	०	मं.	०	१६	४८	रा.	१	२१	१८
मं.	०	१८	५४	रा.	१	१३	१२	गु.	१	१५	३६

बुधान्तर (०।१०।६) में				केत्वन्तर (०।४।६) में				शुक्रान्तर (१।०।०) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
वु.	१	१३	२१	के.	०	७	२१	शु.	२	०	०
के.	०	१७	५१	शु.	०	२१	०	सू.	०	१८	०
शु.	१	२१	०	सू.	०	६	१८	चं.	१	०	०
सू.	०	१५	१८	चं.	०	१०	३०	मं.	०	२१	०
चं.	०	२५	३०	मं.	०	७	२१	रा.	१	२४	०
मं.	०	१७	५१	रा.	०	१८	५४	गु	१	१८	०
रा.	१	१५	५४	गु.	०	१६	४८	श.	१	२७	०
गु.	१	१०	४८	श.	०	१९	५७	वु.	१	२१	०
श.	१	१८	२७	वु.	०	१७	५१	के.	०	२१	०

विंशोत्तरी चन्द्रमा महादशा (वर्ष १०) यामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

चन्द्रान्तर (०।१०।०) में				भौमान्तर (०।७।०) में				राह्वन्तर (१।६।०) में				गुर्वन्तर (१।४।०) में				शन्यन्तर (१।७।०) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
चं.	०	२५	०	मं.	०	१२	१५	रा.	२	२१	०	गु.	२	४	०	श.	३	०	१५
मं.	०	१७	३०	रा.	१	१	३०	गु.	२	१२	०	श.	२	१६	०	बु.	२	२०	४५
रा.	१	१५	०	गु.	०	२८	०	श.	२	२५	३०	बु.	२	८	०	के.	१	३	१५
गु.	१	१०	०	श.	१	३	१५	बु.	२	१६	३०	के.	०	२८	०	शु.	३	५	०
श.	१	१७	३०	बु.	०	२९	४५	के.	१	१	३०	शु.	२	२०	०	सू.	०	२८	३०
बु.	१	१२	३०	के.	०	१२	१५	शु.	३	०	०	सू.	०	२४	०	चं.	१	१७	३०
के.	०	१७	३०	शु.	१	५	०	सू.	०	२७	०	चं.	१	१०	०	मं.	१	३	१५
शु.	१	२०	०	सू.	०	१०	३०	चं.	१	१५	०	मं.	०	२८	०	रा.	२	२५	३०
र.	०	१५	०	चं.	०	१७	३०	मं.	१	१	३०	रा.	२	१२	०	गु.	२	१६	०

बुधान्तर (१।५।०) में				केत्वन्तर (०।७।०) में				शुक्रान्तर (१।०।८) में				सूर्यान्तर (०।६।०) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
बु.	२	१२	१५	के.	०	१२	१५	शु.	३	१०	०	सू.	०	६	०
के.	०	२९	४५	शु.	१	५	०	सू.	१	०	०	चं.	०	१५	०
शु.	२	२५	०	सू.	०	१०	३०	चं.	१	२०	०	मं.	०	१०	३०
सू.	०	२५	३०	चं.	०	१७	३०	मं.	१	५	०	रा.	०	२७	०
चं.	१	१२	३०	मं.	०	१२	१५	रा.	३	०	०	गु	०	२४	०
मं.	०	२९	४५	रा.	१	१	३०	गु.	२	२०	०	श.	०	२८	३०
रा.	२	१६	३०	गु.	०	२८	०	श.	३	५	०	बु.	०	२४	३०
गु.	२	८	०	श.	१	३	१५	बु.	२	२५	०	के.	०	१०	३०
श.	२	२०	४५	बु.	०	२९	४५	के.	१	५	०	शु.	१	०	०

विंशोत्तरी मंगल महादशा (वर्ष ७) यामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

भौमान्तर (०।४।२७) में					राह्वन्तर (१।०।१८) में				गुर्वन्तर (०।११।६) में				शन्यन्तर (१।१।९) में				
ग्र.	मा.	दि.	घ.	प.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	प.
मं.	०	८	३४	३०	रा.	१	२६	४२	गु.	१	१४	४८	श.	२	३	१०	३०
रा.	०	२२	३	०	गु.	१	२०	२४	श.	१	२३	१२	बु.	१	२६	३१	३०
गु.	०	१९	३६	०	श.	१	२९	५१	बु.	१	१७	३६	के.	०	२३	१६	३०
श.	०	२३	१६	३०	बु.	१	२३	३३	के.	०	१९	३६	शु.	२	६	३०	०
बु.	०	२०	४९	३०	के.	०	२२	३	शु.	१	२६	०	सू.	०	१९	५७	०
के.	०	८	३४	३०	शु.	२	३	०	सू.	०	१६	४८	चं.	१	३	१५	०
शु.	०	२४	३०	०	सू.	०	१८	५४	चं.	०	२८	०	मं.	०	२३	१६	३०
सू.	०	७	२१	०	चं.	१	१	३०	मं.	०	१९	३६	रा.	१	२९	५१	०
चं.	०	१२	१५	०	मं.	०	२२	३	रा.	१	२०	२४	गु.	१	२३	१२	०

बुधान्तर (०।११।२७) में					केत्वन्तर (०।४।२७) में					शुक्रान्तर (१।२।०) में				सूर्यान्तर (०।४।६) में				चन्द्रान्तर (०।७।०) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	प.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	प.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
बु.	१	२०	३४	३०	के.	०	८	३४	३०	शु.	२	१०	०	सू.	०	६	१८	चं.	०	१७	३०
के.	०	२०	४९	३०	शु.	०	२४	३०	०	सू.	०	२१	०	चं.	०	१०	३०	मं.	०	१२	१५
शु.	१	२९	३०	०	सू.	०	७	२१	०	चं.	१	५	०	मं.	०	७	२१	रा.	१	१	३०
सू.	०	१७	५१	०	चं.	०	१२	१५	०	मं.	०	२४	३०	रा.	०	१८	५४	गु	०	२८	०
चं.	०	२९	४५	०	मं.	०	८	३४	३०	रा.	२	३	०	गु.	०	१६	४८	श.	१	३	१५
मं.	०	२०	४९	३०	रा.	०	२२	३	०	गु.	१	२६	०	श.	०	१९	५७	बु.	०	२९	४५
रा.	१	२३	३३	०	गु.	०	१९	३६	०	श.	२	६	३०	बु.	०	१७	५१	के.	०	१२	१५
गु.	१	१७	३६	०	श.	०	२३	१६	३०	बु.	१	२९	३०	के.	०	७	२१	शु.	१	५	०
श.	१	२६	३१	३०	बु.	०	२०	४९	३०	के.	०	२४	३०	शु.	०	२१	०	सू.	०	१०	३०

विंशोत्तरी राहु महादशा (वर्ष १८) यामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

राह्वन्तर (२।८।१२) में				गुर्वन्तर (२।४।२४) में				शन्यन्तर (२।१०।६) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
रा.	४	२५	४८	गु.	३	२५	१२	श.	५	१२	२७
गु.	४	९	३६	श.	४	१६	४८	बु.	४	२५	२१
श.	५	३	५४	बु.	४	२	२४	के.	१	२९	५१
बु.	४	१७	४२	के.	१	२०	२४	शु.	५	२१	०
के.	१	२६	४२	शु.	४	२४	०	सू.	१	२१	१८
शु.	५	१२	०	सू.	१	१३	१२	चं.	२	२५	३०
र.	१	१८	३६	चं.	२	१२	०	मं.	१	२९	५१
चं.	२	२१	०	मं.	१	२०	२४	रा.	५	३	५४
मं.	१	२६	४२	रा.	४	९	३६	गु.	४	१६	४८

बुधान्तर (२।६।१८) में				केत्वन्तर (१।०।१८) में				शुक्रान्तर (३।०।०) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
बु.	४	१०	३	के.	०	२२	३	शु.	६	०	०
के.	१	२३	३३	शु.	२	३	०	सू.	१	२४	०
शु.	५	३	०	सू.	०	१८	५४	चं.	३	०	०
सू.	१	१५	५४	चं.	१	१	३०	मं.	२	३	०
चं.	२	१६	३०	मं.	०	२२	३	रा.	५	१२	०
मं.	१	२३	३३	रा.	१	२६	४२	गु.	४	२४	०
रा.	४	१७	४२	गु.	१	२०	२४	श.	५	२१	०
गु.	४	२	२४	श.	१	२९	५१	बु.	५	३	०
श.	४	२५	२१	बु.	१	२३	३३	के.	२	३	०

सूर्यान्तर (०।१०।२५) में				चन्द्रान्तर (१।६।०) में				भौमान्तर (१।०।१८) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
सू.	०	१६	१२	चं.	१	१५	०	मं.	०	२२	३
चं.	०	२७	०	मं.	१	१	३०	रा.	१	२६	४२
मं.	०	१८	५४	रा.	२	२१	०	गु	१	२०	२४
रा.	१	१८	३६	गु.	२	१२	०	श.	१	२९	५१
गु.	१	१३	१२	श.	२	२५	३०	बु.	१	२३	३३
श.	१	२१	१८	बु.	२	१६	३०	के.	०	२२	३
बु.	१	१५	५४	के.	१	१	३०	शु.	२	३	०
के.	०	१८	५४	शु.	३	०	०	सू.	०	१८	५४
शु.	१	२४	०	सू.	०	२७	०	चं.	१	१	३०

विंशोत्तरी बृहस्पति महादशा (वर्ष १६) यामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

गुर्वन्तर (२।१।१८) में				शन्यन्तर (२।६।१२) में				बुधान्तर (२।३।६) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
गु.	३	१२	२४	श.	४	२४	२४	बु.	३	२५	३६
श.	४	१	२३	बु.	४	९	१२	के.	१	१७	३६
बु.	३	१८	४८	के.	१	२३	१२	शु.	४	१६	०
के.	१	१४	४८	शु.	५	२	०	सू.	१	१०	४८
शु.	४	८	०	सू.	१	१५	३६	चं.	२	८	०
सू.	१	८	२४	चं.	२	१६	०	मं.	१	१७	३६
चं.	२	४	०	मं.	१	२३	१२	रा.	४	२	२४
मं.	१	१४	४८	रा.	४	१६	४८	गु.	३	१८	४८
रा.	३	२५	१२	गु.	४	[illegible]	३६	श.	४	९	१२

केत्वन्तर (०।११।६) में				शुक्रान्तर (२।८।०) में				सूर्यान्तर (०।९।१८) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
के.	०	१९	३६	शु.	५	१०	०	सू.	०	१४	२४
शु.	१	२६	०	सू.	१	१८	०	चं.	०	२४	०
सू.	०	१६	४८	चं.	२	२०	०	मं.	०	१६	४८
चं.	०	२८	०	मं.	१	२६	०	रा.	१	१३	१२
मं.	०	१९	३६	रा.	४	२४	०	गु.	१	८	२४
रा.	१	२०	२४	गु.	४	८	०	श.	१	१५	३६
गु.	१	१४	४८	श.	५	२	०	बु.	१	१०	४८
श.	१	२३	१२	बु.	४	१६	०	के.	०	१९	४८
बु.	१	१७	३६	के.	१	२६	०	शु.	१	१८	०

चन्द्रान्तर (१।४।०) में				भौमान्तर (०।११।६) में				राह्वन्तर (२।४।२४) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
चं.	१	१०	०	मं.	०	१९	३६	रा.	४	९	३६
मं.	०	२८	०	रा.	१	२०	२४	गु	३	२५	१२
रा.	२	१२	०	गु.	१	१४	४८	श.	४	१६	४८
गु.	२	४	०	श.	१	२३	१२	बु.	४	२	२४
श.	२	१६	०	बु.	१	१७	३६	के.	१	२०	२४
बु.	२	८	०	के.	०	१९	३६	शु.	४	२४	०
के.	०	२८	०	शु.	१	२६	०	सू.	१	१३	१२
शु.	२	२०	०	सू.	०	१६	४८	चं.	२	१२	०
सू.	०	२४	०	चं.	०	२८	०	मं.	१	२०	२४

विंशोत्तरी शनि महादशा (वर्ष १९) यामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

शन्यन्तर (३।०।३) में					बुधान्तर (२।८।९) में					केत्वन्तर (१।१।९) में				
ग्र.	मा	दि.	घ.	प.	ग्र.	मा	दि.	घ.	प.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	प.
श.	५	२१	२८	३०	बु.	४	१७	३६	३०	के.	०	२३	१६	३०
बु.	५	३	२५	३०	के.	१	२६	३१	३०	शु.	२	६	३०	०
के.	२	३	१०	३०	शु.	५	११	३०	०	सू.	०	१९	५७	०
शु.	६	०	३०	०	सू.	१	१८	२७	०	चं.	१	३	१५	०
र.	१	२४	९	०	चं.	२	२०	४५	०	मं.	०	२३	१६	३०
चं.	३	०	१५	०	मं.	१	२६	३१	३०	रा.	१	२९	५१	०
मं.	२	३	१०	३०	रा.	४	२५	२१	०	गु.	१	२३	१२	०
रा.	५	१२	२७	०	गु.	४	९	१२	०	श.	२	३	१०	३०
गु.	४	२४	२४	०	श.	५	३	२५	३०	बु.	१	२६	३१	३०

शुक्रान्तर (३।२।०) में				सूर्यान्तर (०।११।१२) में				चन्द्रान्तर (१।७।०) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
शु.	६	१०	०	सू.	०	१७	६	चं.	१	१७	३०
सू.	१	२७	०	चं.	०	२८	३०	मं.	१	३	१५
चं.	३	५	०	मं.	०	१९	५७	रा.	२	२५	३०
मं.	२	६	३०	रा.	१	२१	१८	गु.	२	१६	०
रा.	५	२१	०	गु.	१	१५	३६	श.	३	०	१५
गु.	५	२	०	श.	१	२४	९	बु.	२	२०	४५
श.	६	०	३०	बु.	१	१८	२७	के.	१	३	१५
बु.	५	११	३०	के.	०	१९	५७	शु.	३	५	०
के.	२	६	३०	शु.	१	२७	०	सू.	०	२८	३०

भौमान्तर (१।१।९) में					राह्वन्तर (२।१०।६) में				गुर्वन्तर (२।६।१२) में			
ग्र.	मा	दि.	घ.	प.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा	दि.	घ.
मं.	०	२३	१६	३०	रा.	५	३	५४	गु	४	१	३६
रा.	१	२९	५१	०	गु.	४	१६	४८	श.	४	२४	२४
गु.	१	२३	१२	०	श.	५	१२	२७	बु.	४	९	१२
श.	२	३	१०	३०	बु.	४	२५	२१	के.	१	२३	१२
बु.	२	२६	३१	३०	के.	१	२९	५१	शुं.	५	२	०
के.	०	२३	१६	३०	शु.	५	२१	०	सू.	१	१५	३६
शु.	२	६	३०	०	सू.	१	२१	१८	चं.	२	१६	०
सू.	०	१९	५७	०	चं.	२	२५	३०	मं.	१	२३	१२
चं.	१	३	१५	०	मं.	१	२९	५१	रा.	४	१६	४८

विंशोत्तरी बुध महादशा (वर्ष १७) यामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

बुधान्तर (२।४।२७) में					केत्वन्तर (०।११।२७) में					शुक्रान्तर (२।१०।०) में			
ग्र.	मा	दि.	घ.	प.	ग्र.	मा	दि.	घ.	प.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
बु.	४	२	४९	३०	के.	०	२०	४९	३०	शु.	५	२०	०
के.	१	२०	३४	३०	शु.	१	२९	३०	०	सू.	१	२१	०
शु.	४	२४	३०	०	सू.	०	१७	५१	०	चं.	२	२५	०
सू.	१	१३	२१	०	चं.	०	२९	४५	०	मं.	१	२९	३०
चं.	२	१२	१५	०	मं.	०	२०	४९	३०	रा.	५	३	०
मं.	१	२०	३४	३०	रा.	१	२३	३३	०	गु.	४	१६	०
रा.	४	१०	३	०	गु.	१	१७	३६	०	श.	५	११	३०
गु.	३	२५	३६	०	श.	१	२६	३१	३०	बु.	४	२४	३०
श.	४	१७	१६	३०	बु.	१	२०	३४	३०	के.	१	२९	३०

सूर्यान्तर (०।१०।६) में				चन्द्रान्तर (१।५।०) में				भौमान्तर (०।११।२७) में				
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा	दि.	घ.	ग्र.	मा	दि.	घ.	प.
सू.	०	१५	१८	चं.	१	१२	३०	मं.	०	२०	४९	३०
चं.	०	२५	३०	मं.	०	२९	४५	रा.	१	२३	३३	०
मं.	०	१७	५१	रा.	२	१६	३०	गु.	१	१७	३६	०
रा.	१	१५	५४	गु.	२	८	०	श.	१	२६	३१	३०
गु.	१	१०	४८	श.	२	२०	४५	बु.	१	२०	३४	३०
श.	१	१८	२७	बु.	२	१२	१५	के.	०	२०	४९	३०
बु.	१	१३	२१	के.	०	२९	४५	शु.	१	२९	३०	०
के.	०	१७	५१	शु.	२	२५	०	सू.	०	१७	५१	०
शु.	१	२१	०	सू.	०	२५	३०	चं.	०	२९	४५	०

राह्वन्तर (२।६।१८) में				गुर्वन्तर (२।३।६) में				शन्यन्तर (२।८।९) में				
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	प.
रा.	४	१७	४२	गु.	३	१८	४८	श.	५	३	२५	३०
गु.	४	२	२४	श.	४	९	१२	बु.	४	१७	१६	३०
श.	४	२५	२१	बु.	३	२५	३६	के.	१	२६	३१	३०
बु.	४	१०	३	के.	१	१७	३६	शु.	५	११	३०	०
के.	१	२३	३३	शु.	४	१६	०	सू.	१	१८	२७	०
शु.	५	३	०	सू.	१	१०	४८	चं.	२	२०	४५	०
सू.	१	१५	५४	चं.	२	८	०	मं.	१	२६	३१	३०
चं.	२	१६	३०	मं.	१	१७	३६	रा.	४	२५	२१	०
मं.	१	२३	३३	रा.	४	२	२४	गु	४	९	१२	०

विंशोत्तरी केतु महादशा (वर्ष ७) यामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

केत्वन्तर (०।४।२७) में					शुक्रान्तर (१।२।०) में				सूर्यान्तर (०।४।६) में				चन्द्रान्तर (०।७।०) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	प.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
के.	०	८	३४	३०	शु.	२	१०	०	सू.	०	६	१८	चं.	०	१७	३०
शु.	०	२४	३०	०	सू.	०	२१	०	चं.	०	१०	३०	मं.	०	१२	१५
र.	०	७	२१	०	चं.	१	५	०	मं.	०	७	२१	रा.	१	१	३०
चं.	०	१२	१५	०	मं.	०	२४	३०	रा.	०	१८	५४	गु.	०	२८	०
मं.	०	८	३४	३०	रा.	२	३	०	गु.	०	१६	४८	श.	१	३	१५
रा.	०	२२	३	०	गु.	१	२६	०	श.	०	१९	५७	बु.	०	२९	४५
गु.	०	१९	३६	०	श.	२	६	३०	बु.	०	१७	५१	के.	०	१२	१५
श.	०	२३	१६	३०	बु.	१	२९	०	के.	०	७	२१	शु.	१	५	०
बु.	०	२०	४९	३०	के.	०	२४	३०	शु.	०	२१	०	सू.	०	१०	३०

भौमान्तर (०।४।२७) में					राह्वन्तर (१।०।१८) में				गुर्वन्तर (०।११।६) में				शन्यन्तर (१।१।९) में					बुधान्तर (०।११।२७) में				
ग्र.	मा.	दि.	घ.	प.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	प.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	प.
मं.	०	८	३४	३०	रा.	१	२६	४२	गु.	१	१४	४८	श.	२	३	१०	३०	बु.	१	२०	३४	३०
रा.	०	२२	३	०	गु.	१	२०	२४	श.	१	२३	१२	बु.	१	२६	३१	३०	के.	०	२०	४९	३०
गु.	०	१९	३६	०	श.	१	२९	५१	बु.	१	१७	३६	के.	०	२३	१६	३०	शु.	१	२९	३०	०
श.	०	२३	१६	३०	बु.	१	२३	३३	के.	०	१९	३६	शु.	२	६	३०	०	सू.	०	१७	५१	०
बु.	०	२०	४९	३०	के.	०	२२	३	शु.	१	२६	०	सू.	०	१९	५७	०	चं.	०	२९	४५	०
के.	०	८	३४	३०	शु.	२	३	०	सू.	०	१६	४८	चं.	१	३	१५	०	मं.	०	२०	४९	३०
शु.	०	२४	३०	०	सू.	०	१८	५४	चं.	०	२८	०	मं.	०	२३	१६	३०	रा.	१	२३	३३	०
सू.	०	७	२१	०	चं.	१	१	३०	मं.	०	१९	३६	रा.	१	२९	५१	०	गु	१	१७	३६	०
चं.	०	१२	१५	०	मं.	०	२२	३	रा.	१	२०	३४	गु.	१	२३	१२	०	श.	१	२६	३१	३०

विंशोत्तरी शुक्र महादशा (वर्ष २०) यामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

शुक्रान्तर (३।४।०) में				सूर्यान्तर (१।०।०) में				चन्द्रान्तर (१।८।०) में				भौमान्तर (१।२।२०) में				राह्वन्तर (३।०।०) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
शु.	६	२०	०	सू.	०	१८	०	चं.	१	२०	०	मं.	०	२४	३०	रा.	५	१२	०
सू.	२	०	०	चं.	१	०	०	मं.	१	५	०	रा.	२	३	०	गु.	४	२४	०
चं.	३	१०	०	मं.	०	२१	०	रा.	३	०	०	गु.	१	२६	०	श.	५	२१	०
मं.	२	१०	०	रा.	१	२४	०	गु.	२	२०	०	श.	२	६	३०	बु.	५	३	०
रा.	६	०	०	गु.	१	१८	०	श.	३	५	०	बु.	१	२९	३०	के.	२	३	०
गु.	५	१०	०	श.	१	२७	०	बु.	२	२५	०	के.	०	२४	३०	शु.	६	०	०
श.	६	१०	०	बु.	१	२१	०	के.	१	५	०	शु.	२	१०	०	सू.	१	२४	०
बु.	५	२०	०	के.	०	२१	०	शु.	३	१०	०	सू.	०	२१	०	चं.	३	०	०
के.	२	१०	०	शु.	२	०	०	सू.	१	०	०	चं.	१	५	०	मं.	२	३	०

गुर्वन्तर (२।८।०) में				शन्यन्तर (३।२।०) में				बुधान्तर (२।१०।०) में				केत्वन्तर (१।२।०) में			
ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.	ग्र.	मा.	दि.	घ.
गु.	४	८	०	श.	६	०	३०	बु.	४	२४	३०	के.	०	२४	३०
श.	५	२	०	बु.	५	११	३०	के.	१	२९	३०	शु.	२	१०	०
बु.	४	१६	०	के.	२	६	३०	शु.	५	२०	०	सू.	०	२१	०
के.	१	२६	०	शु.	६	१०	०	सू.	१	२१	०	चं.	१	५	०
शु.	५	१०	०	सू.	१	२७	०	चं.	२	२५	०	मं.	०	२४	३०
सू.	१	१८	०	चं.	३	५	०	मं.	१	२९	३०	रा.	२	३	०
चं.	२	२०	०	मं.	२	६	३०	रा.	५	३	०	गु	१	२६	०
मं.	१	२६	०	रा.	५	२१	०	गु.	४	१६	०	श.	२	६	३०
रा.	४	२४	०	गु.	५	२	०	श.	५	११	३०	बु.	१	२९	३०

ताजिकप्रकरणम् ।।८।।

वर्षप्रवेशेष्टकालज्ञानं (नीलकण्ठवाम्)-

गताः समाः पादयुताः प्रकृतिघ्नसमागणात् ।
खवेदाप्तघटीयुक्ता जन्मावारादिसंयुताः ।।१।।
अब्दप्रवेशे वारादि सप्तवष्टेऽत्र निर्दिशेत् ।
तत्कालेऽर्को जन्मकालरविणा स्याद्यतः समः ।।२।।

गत वर्षो की संख्या में उसके चौथाई को जोड़ कर, उसमें गतवर्ष को २१ से गुणा करके ४० से भाग देने पर जो लब्ध घट्यादि प्राप्त हो, उसको जोड़ दे, तथा उसमें जन्म का वार घटी पलं जोड़ दे, फिर वार की संख्या में सात का भाग देने पर जो शेष हो वही वारादि वर्षकालिक सावनेष्ट हो जाता है। क्योंकि तात्कालिक सूर्य जन्मकालिक सूर्य के राश्यादि के बराबर हो जाते हैं।।१-२।।

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
होरा	सू. चं.	चं. सू.	सू. चं.	चं. सू.	सू. चं.	चं. सू.	सू. चं.	चं. सू.	सू. चं.	चं. सू.	सू. चं.	चं. सू.
द्रेष्काण	१ मं. ५ सू. ९ बृ.	२ शु. ६ बु. १० श.	३ बु. ७ शु. ११ श.	४ चं. ८ मं. १२ बृ.	५ सू. ९ बृ. १ मं..	६ बु. १० श. २ शु.	७ शु. ११ श. ३ बु.	८ मं. १२ बृ. ४ चं..	९ बृ. १ मं. ५ सू.	१० श. २ शु. ६ बु.	११ श. ३ बु. ७ शु.	१२ बृ. ४ चं. ८ मं.
चतुर्थांशः	१ मं. ४ चं. ७ शु. १० श.	२ शु. ५ सू. ८ मं. ११ श.	३ बु. ६ बु. ९ बृ. १२ बृ.	४ चं. ७ शु. १० श. १ मं.	५ सू. ८ मं. ११ श. २ शु.	६ बु. ९ बृ. १२ बृ. ३ बु.	७ शु. १० श. १ मं. ४ चं.	८ मं. ११ श. २ शु. ५ सू.	९ बृ. १२ बृ. ३ बु. ६ बु.	१० श. १ मं. ४ चं. ७ शु.	११ श. २ शु. ५ सू. ८ मं.	१२ बृ. ३ बु. ६ बु. ९ बृ.

द्वादशवर्गी-

क्षेत्रं होरात्र्यब्धिपंचाङ्गसप्तवस्वङ्काशेशार्कभागाः सुधीभिः ।
विज्ञातव्या लग्नसंस्थाःशुभानां वर्गाःश्रेष्ठाः पापवर्गास्त्वनिष्टाः ।।३।।

राशि, होरा, तृतीयांश, चतुर्थांश, पञ्चमांश, षष्ठांश, सप्तमांश, अष्टमांश, नवमांश, दशमांश, एकादशमांश तथा द्वादशांश ये १२ वर्ग पण्डितों ने कहा है। लग्न में शुभग्रहों का वर्ग शुभ, पापग्रहों का वर्ग अशुभ होता है।।३।।

होराद्रेष्काणचतुर्थांशेशाः -

ओजे रवीन्द्वोः सम इन्दुरव्योर्होरे गृहार्द्धप्रमिते विचिन्त्ये ।
द्रेष्काणपाः स्वेषुनवर्क्षनाथास्तुर्यांशपाः स्वर्क्षजकेन्द्रनाथाः ।।४।।

विषम राशियों में पहली होरा सूर्य की, दूसरी चन्द्रमा की, समराशियों में पहली चन्द्रमा की दूसरी सूर्य की होरा १५,१५ अंशों की होती है। अपनी पाँचवी और नवमीं राशि के स्वामी क्रम से १०,१० अंश के द्रेष्काण स्वामी होते है। एवं अपनी २ राशि से चारों केन्द्रों (१।४।७।१०) के स्वामी साढ़े सात २ अंश के चतुर्थांश पति होते है।।४।।

वर्षप्रवेशसारणीयम्। जन्मवारेष्टघंटीपलेषु प्रतिवर्ष क्षेपकं वारादिकम्।																																
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	ग.व
१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	वा.
१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	घ.
३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	प.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	वि.
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	ग.व
६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	वा.
३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	घ.
१९	५१	२२	५६	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	६७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	प.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	वि.
६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	ग.व
४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	वा.
४९	४	२०	३५	५१	६	२१	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	घ.
७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	प.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	वि.

पञ्चमांशद्वादशांशेशाः –

ओजर्क्षे पञ्चमांशेशाः कुजार्कीज्यज्ञ भार्गवाः ।
समभे व्यत्ययाज्ज्ञेया द्वादशांशाः स्वभात्स्मृताः ।।५।।

द्वादशांश

अं.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
२।३०	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ वृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ.
५।३०	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ वृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ.	१ मं.
७।३०	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ.	१ मं.	२ शु.
१०।०	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ वृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.
१२।३०	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ वृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.
१५।०	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ वृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.
१७।३०	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.
२०।०	८ मं.	९ वृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.
२२।३०	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.
२५।०	१० श.	११ श.	१२ वृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ वृ.
२७।३०	११ श.	१२ वृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ वृ.	१० श.
३०।०	१२ वृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ वृ.	१० श.	११ श.

विषम राशियों (१।३।५।७।९।११) में ६,६ अंशों के क्रम से मंगल, शनि, वृहस्पति, वुध, शुक्र और समराशियों में विपरीत (अर्थात् प्रथम ६ अंश के शुक्र फिर ६ अंश के बुध.......इत्यादि) पञ्चमांशेश होते है। प्रत्येक राशियों में अपनी ही राशि के क्रम से द्वादशेश होते हैं।।५।।

पञ्चमांश

अं.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
६	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.
१२	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.
१८	वृ.	वृ.	वृ.	वृ.	वृ.	वृ.	वृ.	वृ.	वृ.	वृ.	वृ.	वृ.
२४	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.
३०	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.

लवीकृतव्योमचरोङ्गशैलवस्वङ्कदिग्रुद्रगुणाः खरामैः ।
भक्तोगतास्तर्कनगाष्टनन्ददिग्रुद्रभागाः कुयुताः क्रियात्स्युः ।।६।।

अन्यांशानामधीशाः- राश्यादि ग्रह को अंशादि बना के, क्रम से ६ जगह रखकर ६,७,८,९,१०,११ गुण के ३० से भाग देने पर जो लब्ध आवे उसमें १ जोड़ देना तो मेषादि के क्रम से षष्ठांशेश, सप्तामांशेश, अष्टमांशेश नवमांशेश, दशमांशेश और एकादशेश होते हैं।।६।।

५ अथ नवमांशचक्रमिदम् : -

अ–क	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
३।२०	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.
६।४०	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.
१०।०	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.
१३।२०	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.
१६।४०	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.
२०।०	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.
२३।२०	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.
२६।४०	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.
३०।०	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.

एवं द्वादशवर्गी स्याद् ग्रहाणां बलसिद्धये ।
स्वोच्चमित्रशुभाः श्रेष्ठा नीचारिक्रूरतोऽशुभाः ।।७।।

इस प्रकार से ग्रहों के बल की सिद्धि के लिये द्वादशवर्गी बनाना चाहिये। जो शुभ ग्रह अपने उच्च में, मित्र में, मित्र के गृह में अपनी राशि में रहता है वह शुभ और जो ग्रह अपने नीच, शत्रु की राशि में रहता है और क्रूर होता है वह अशुभ फल को देने वाला होता है।।७।।

द्वादशवर्गीविंशोपकबलज्ञानम्–

शतं कलाःस्वे भवनादिके च मैत्रे तदर्धं रिपौ तदर्धम् ।
तदैक्यमभ्राङ्गहृदर्कवर्ग्या विंशोपका वीर्ययुता भवन्ति ।।८।।

अपने भवनादि में ग्रह रहता है तो १०० कला बल, मित्र के राश्यादि में रहने से उसका आधा (५० कला) बल, शत्रु के राश्यादि में रहने से उसका आधा (अर्थात् २५ कला) बल होता है। सब बलो का ऐक्य करके ६० का भाग देने पर द्वादशवर्गी में विशोंपक बल होता है।।८।।

पञ्चवर्गी–

स्वगृहं स्वोच्चहद्दत्रैराशिकमथ मुसल्लहं चेति ।
पंच ग्रहाधिकारा विनाधिकारं ग्रहो न बली ।।९।।

अपनी राशि, अपना उच्च, अपनी हद्दा, अपना द्रेष्काण, और अपना नवमांश ये ५ अधिकार होते है। विना इन पाँचो अधिकारों में स्थित ग्रह बली नहीं होता है।९।।

उच्चबलम् (हायनरत्ने)

मेषो वृषोऽथ मकरं मृगदृक्कुलीरो मीनस्तुलादिनपपूर्वखगोच्चकानि।
आ१० शाग्नि३ पिण्ड२८ तिथि१५ पायु५ भ२७ विंश२० तुल्या
स्तुंगा लवा स्वनगगास्तु भवन्ति नीचाः।।१०।।

सूर्यादिग्रहों का मेष, वृष, मकर, कन्या, कर्क, मीन, तुला इन राशियों के १०,३,२८,१५,५,२७,२० अंशो पर परमोच्च होता है। इससे सप्तम में नीच होता है।।१०।।

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
उच्च	० १०	१ ३	९ २८	५ १५	३३ ५	११ २७	६ २०
नीच	६ १०	७ ३	३ २८	११ १५	६ ५	५ २७	० २०
दीप्तांश	१५	१२	८	७	९	७	९
हर्षबलं	९	३	६	१	११	५	१२

नीचग्रहान्तरं कार्यं षड् भादल्पं यथा भवेत् ।
तदंशाङ्कलवः स्वोच्चबलं स्यात्ताजिके स्फुटम् ।।११।।

नीच-ग्रह का अन्तर ऐसा करना चाहिये कि जिसमें ६ राशि से कम अन्तर (बाकी) बचे। उसका नवमांश (नववाँ हिस्सा) उच्च बल होता है। यह ताजिक शास्त्र में स्पष्ट है।।११।।

हद्दा–

मेषेंगतर्काष्टशरेषुभागा जीवास्फुजिज्ज्ञारशनैश्चराणाम् ।
वृषेऽष्टषण्नागशरानऽलांशाः शुक्रज्ञजीवार्किकुजेशहद्दाः ।।१२।।
युग्मे षडंगेषुनगाङ्गभागाः सौम्याऽऽस्फुजिज्जीवकुजार्किहद्दाः ।
कर्केऽद्रितर्काङ्गनगाब्धिभागाःकुजास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम् ।।१३।।
सिंहेंऽगभूताद्रिरसांगभागा देवेज्यशुक्रार्किबुधारहद्दाः ।
स्त्रियां नगाशाब्धिनगाक्षिभागाः सौम्योशनोजीवकुजार्किनाथाः ।।१४।।
तुले रसाष्टाद्रिनगाद्विभागाः कोणज्ञजीवास्फुजिदारनाथाः ।
कीटे नगाब्ध्यष्टशराङ्गभागा भौमास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम् ।।१५।।
चापे रवीष्वंबुधिपंचवेदा जीवास्फुजिज्ज्ञारशनैश्चराणाम् ।
मृगे नगाद्र्यष्टयुगश्रुतीनां सौम्येज्यशुक्रार्किकुजेशहद्दाः ।।१६।।
कुम्भे नगांगाद्रिशरेषु भागाः शुक्रज्ञजीवारशनैश्चराणाम् ।
मीनेऽर्कवेदाऽनलनन्दपक्षाः सितेज्यसौम्यारशनैश्चराणाम् ।।१७।।

हद्दाचक्रमिदम् ।।

रा.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
अंशाः	६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२
स्वामी	गु.	शु.	बु.	मं.	बृ.	बु.	श.	मं.	बृ.	बु.	शु.	शु
अशाः	६	६	६	६	५	१०	८	४	५	७	६	४
स्वामी	शु.	बु.	शु.	शु.	शु.	शु.	बु.	शु.	शु.	बृ.	बु.	बृ.
अंशाः	८	८	५	६	७	४	७	८	४	८	७	३
स्वामी	बु.	बृ.	बृ.	बु.	श.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	शु.	बृ.	बु.
अंशाः	५	५	७	७	६	७	७	५	५	४	५	९
स्वामी	मं.	श.	मं.	बृ.	बु.	मं.	शु.	बृ.	मं.	श.	मं.	मं.
अंशाः	५	३	६	४	६	२	२	६	४	४	५	२
स्वामी	श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	श.

द्रेक्काणेश्वराः -

आद्याः कुजाद्या रवितोऽपि मध्यमाः।
सितात्तृतीयाः क्रियतो द्रेकाणापाः।।१८।।

प्रत्येक राशि में दश, दश अंश के तीन द्रेक्काण होते हैं। मेषादि राशियों में से क्रम से प्रथम द्रेक्काणों के स्वामी भौमादि, द्वितीय द्रेक्काणों के स्वामी रव्यादि और तृतीय द्रेक्काणों के स्वामी शुक्रादि ७ ग्रह होते हैं। स्फुटता के लिये चक्र देखिये।।२८।।

अथ मेषादि राशीनां द्रेक्काणचक्रम्।

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
अंशः	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
पतयः	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
अंशः	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०
पतयः	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.
अंशः	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
पतयः	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	मं.

नवांशकाः पूर्वोक्ता (६ श्लो०)बोध्याः -

विंशोपकबलज्ञानम्-

त्रिंशत्स्वभे विंशतिरात्मतुङ्गे हद्देक्षचन्द्रा दशकं दृकाणे।
मुसल्लहे पंचलवा प्रदिष्टा विंशोपका वेदसलवैः प्रकल्प्याः।।१९।।
स्वस्वाधिकारोक्तबलं सुहृद्भे पादोनमर्धं समभेऽरिभेऽङ्घ्रिः।
एवं समानीय बलं तदैक्ये वेदोद्धृते हीनबलः शरोनः।।२०।।

सत्यावश्यके हर्षबलादिकमपि साध्यम्।

अपनी राशि में स्थित ग्रह ३० बल, अपने उच्च में स्थितग्रह २० बल, अपने हद्दा में १५ बल, अपने द्रेष्काण में १० बल, अपने नवमांश में ५ बल देता है। सव वलों का ऐक्य (जोड़) करके ४ का भाग देने पर विंशोपक बल होता हैं। एवं अपने २ अधिकार में ग्रह के रहने पर उक्त बल होता है, मित्र के घर में रहने पर चतुर्थांश कम, सम ग्रह के राशि में रहने से आधा बल और शत्रु के अधिकार में रहने पर चतुर्थांश बल होता है। इस तरह सव ग्रहों के वल का ऐक्य करके ४ का भाग देने पर यदि ५ से कम विंशोपक वल आवे तो ग्रह हीनवली होता है।।१९-२०।।

ताजिके मित्रसमशत्रवः -

त्रिपंचनवमायेषु स्थितो मित्रग्रहो भवेत्।
केन्द्रषु शत्रुर्विज्ञेयो ह्यन्यस्थाने समो भवेत्।।२१।

जिस ग्रह का मित्र सम शत्रु देखना हो उस ग्रह से तीसरे, पाँचवें, नववें, ग्यारहवें स्थान में स्थितग्रह उसका मित्र होता है। केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानों में स्थित ग्रह शत्रु और शेष (२।६।८।१२) स्थानों में स्थित ग्रह सम होता है।।२१।।

मुन्थाज्ञानम्-

स्वजन्मलग्नात्प्रतिवर्षमेकैकराशिभोगान्मुथहा भ्रमेण।
स्वजन्मलग्नं रवितष्टजातशरद्युतं सा भमुखेन्थिहा स्यात्।।२२।।

अपने जन्मलग्न से एक २ राशि में एक एक वर्ष में मुंथहा का भ्रमण होता है। अतः अपने जन्मलग्न मे गतवर्षसंख्या को जोड़ के १२ से भाग देने पर जो शेष राश्यादि बचे वही राश्यादि स्पष्ट मुन्था हो जाती है।

वर्षेशार्थं त्रिराशिपाः -

त्रिराशिपाः सूर्यासिताऽर्किशुक्रा दिने निशोज्येन्दुबुधक्षमाजाः।
मेषाच्चतुर्णां हरिभाद्विलोमं नित्यं परेष्वार्किकुजेज्यचन्द्राः ।।२३।।

मेषादि चार (मेष, वृष, मिथुन, कर्क) राशि का वर्ष लग्न हो तो दिन में सूर्य, शुक्र, शनि, शुक्र और रात्रि में गुरु, चन्द्र, बुध, मंगल त्रिराशिपति होते हैं। सिंहादि राशियों में इससे विपरीत जानना (धनुरादि चार राशियों में सर्वदा (दिन-रात दोनों में) शनि, मङ्गल, गुरु, चन्द्रमा त्रिराशिपति होते हैं। स्पष्ट ज्ञान के लिये चक्र देखिये।।२३।।

अथ त्रिराशिपाः -

लग्न	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिवा	र.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.
रात्रौ	गु.	चं.	बु.	मं.	र.	शु	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्षेशार्थं पंचाधिकारिणः -

जन्मलग्नपतिरब्दलग्नपो मुन्थहाधिप इतस्त्रिराशिपः।
सूर्यराशिपतिरह्नि चन्द्र भाधीश्वरो निशि विमृश्य पंचकम्।।२४।।

१ जन्मलग्न का स्वामी, २ वर्षलग्न का स्वामी, ३ मुन्था का स्वामी, ४ त्रिराशिपति, ५ दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्याधिष्ठित राशि का स्वामी और रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्रमा क्रान्त (चन्द्रमाधिष्ठित) राशि का स्वामी ये ही पाँचों वर्षपति होने के अधिकारी हैं।।२४।।

वर्षेशनिर्णयः -

बली य एषां तनुमीक्षमाणः स वर्षपो लग्नमनीक्षमाणः ।
नैवाब्दपोदृष्ट्यतिरेकतः स्याद् बलस्य साम्ये विदुरेवमाद्याः ।।२५।।
दृगादिसाम्येऽप्यथ निर्बलत्वे वर्षाधिपः स्यान्मुथहेश्वरस्तु ।
पंचापि चेन्नो तनुमीक्षमाणा वीर्याधिकोऽब्दस्य विभुर्विचिन्त्यः।।२६।।
बलादिसाम्ये रविराशिपोऽह्नि निशीन्दुराशीडिति केचिदाहुः ।
येनेत्थशाल्यऽब्दविभुःशशी स वर्षाधिपश्चन्द्रमपोऽन्यथात्वे ।।२७।।

पूर्वोक्त इन पाँच अधिकारियों में जो ग्रह पञ्चवर्गी में अधिक बलवान् होकर लग्न को देखता हो उसको वर्ष का स्वामी जानना और वली होता हुआ भी लग्न को न देखे तो वर्षपति नहीं होता है। तथा यदि पञ्चाधिकारी ग्रहों का वल बराबर हो तो लग्न पर जिसकी दृष्टि अधिक हो उसको वर्षेश पूर्वाचार्यो ने कहा है। पूर्वोक्त पाँचों अधिकारियों की दृष्टि लग्न पर बराबर हो, आदि शब्द से बल भी बराबर हो अथवा पाँचों निर्बल हों तो मुन्थहा का स्वामी ही वर्षेश होता है। तथा जो पाँचों अधिकारियों में कोई भी लग्न को न देखता हो तो उनमें जो अधिक बलवान् हो उसे स्वामी निश्चित करना चाहिये। पाँचों अधिकारियों का पञ्चवर्गी में बल समान हो, तथा लग्न पर समान दृष्टि हो तो ऐसी अवस्था में दिन में वर्ष-प्रवेश होने से सूर्याधिष्ठित राशि का स्वामी और रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्रमा जिस राशि पर स्थित हो उस राशि का स्वामी वर्षेश्वर होता है ऐसा कोई २ आचार्य कहते हैं। जो वर्ष का स्वामी किसी प्रकार से चन्द्रमा हो तो चन्द्रमा जिस ग्रह के साथ इत्थशाल करता हो वह वर्षेश होता है अन्यथा (इत्थशाल के अभाव होने पर) चन्द्रमा जिस राशि पर स्थित हो उस राशि का स्वामी वर्षेश होता है (क्योंकि चन्द्रमा वर्षेश का अधिकारी नहीं होता)।।२५-२७।।

त्रिपताकिचक्रम् -

रेखात्रयं तिर्यगथोर्ध्वसंस्थं ह्यन्योन्यविद्धाग्रकमीशकोणात् ।
स्मृतं बुधैस्तत्त्रिपताकिचक्रं प्राङ्मध्यरेखाग्रगवर्षलग्नात् ।।२८।।
न्यसेद्भचक्रं किल तत्र सैकां याताब्दसंख्यां विभजेन्नभोगैः ।
शेषोन्मिते जन्मगचन्द्रराशेस्तुल्ये च राशौ विलिखेच्छशाङ्कम् ।।२९।।
परे चतुर्भाजितशेषतुल्ये स्थाने स्वराशेः खचरास्तु लेख्याः ।
स्वर्भानुविद्धे हिमगौ तु कष्टं तापोर्कविद्धे रुगिनात्मजेन ।
महीजविद्धे तु शरीरपीडा शुभैश्च विद्धे जयसौख्यलाभः ।।३०।।

तीन रेखा सीधी (उर्ध्वाधर) और तीन रेखा त्रिर्यक् (वेडी) करके फिर ईशान कोण से रेखाओं के अग्रभाग से वेध रेखायें करना। इसको पण्डितलोग त्रिपताकिचक्र कहते हैं। अव इस बने चक्र के पूर्व (बीच) में वर्षारम्भ कालिक लग्न को रख के अपने वायें क्रम से वारहों राशियों की स्थापना करें। गतवर्ष की संख्या में एक जोड़ के नव का भाग देने पर जो शेष वचे जन्मराशि से उतनी संख्या पर चन्द्रमा को लिखे। और वार्का ग्रहों के लिये गतवर्ष में १ जोड़ के ४ से भाग देने पर जो शेष बचे तत्तुल्य जन्मकालिक ग्रह जिस राशि पर स्थित हो वहाँ से आगे की राशि पर तत्तद्ग्रहों की स्थापना करें। (राहु-केतु को उलटे लिखे।) इस त्रिपताकि चक्र में चन्द्रमा राहु से विद्ध हो तो कष्ट होता है। चन्द्रमा का सूर्य से वेध हो तो ताप, शनि से वेध हो तो रोग, भौम से वेध हो तो शारीरिक पीड़ा होती है। शुभ ग्रहों से चन्द्रमा का वेध हो तो जय; सौख्य और नाना प्रकार का लाभ होता है।।२८-३०।।

विंशोत्तरीयमुद्दादशा-

जन्मर्क्षसंख्या सहिता गताब्दैर्द्विगूनिता नन्दहृतावशेषात् ।
आचंकुराजीशबुकेशुपूर्वा भवन्ति मुद्दादशिका क्रमोऽयम् ।।३१।।

जन्मनक्षत्र की संख्या को गतवर्ष में जोड़ के दो कम करना फिर ९ से भाग देने पर जो शेष बचे वह क्रम से सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु और शुक्र इनकी दशा वर्षारम्भकाल में होती है। विंशोत्तरी दशा में जितने वर्ष ग्रहों के लिखे हैं उस वर्षसंख्या को ३ से गुणा करने पर वर्ष पत्र में उस ग्रह के दशा की दिनसंख्या हो जाती है।।३१।।

सूर्यादीनां दीप्तांशाः -

तिथ्यर्काष्टनगाङ्काद्रिनवदीप्तांशकाः रवेः ।
पुरः पृष्ठे स्वदीप्तांशैर्विशिष्टं दृक्फलं विदुः ।।३२।।

बालबोधज्योतिषे ताजिकप्रकरणम् अष्टमं समाप्तम् ।।८।।

सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों के क्रम से १५,१२,८,७,९,७,९, दीप्तांश होते हैं। ग्रह जितने अंश पर बैठ के किसी स्थान को देखता है उस स्थान के ग्रहाधिष्ठितांशतुल्य अंशो में दीप्तांश तुल्य आगे पीछे उस ग्रह की पूर्ण दृष्टि मानी जाती है। ऐसी स्थिति में ग्रह का पूर्ण दृष्टिफल होता है, दीप्तांश के वाद मध्यम फल पण्डितों ने कहा है।।३२।।

हिन्दीटीकायां ताजिकप्रकरणम् समाप्तम् ।।८।।

प्रकीर्ण-प्रकरणम् ।।६।।

कार्यसिद्धिप्रश्नः -

स्थिरराशौ लग्नगते स्थानप्राप्तिं वदेन्न चागमनम् ।
रोगोपशमो नाशो द्रव्याणां स्यात्पराभवो नाऽत्र ।।१।।
चरराशौ विपरीतं मिश्रं वाच्यं द्विमूर्त्युदये ।
स्थिरवत्प्रथमेऽर्धे स्यादपरे चरराशिवत्सर्वम् ।।२।।

स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ) के लग्न में यदि प्रश्नकर्त्ता पूछै कि स्थान की प्राप्ति होगी?, विदेशी घर आयेगा?, रोग की शान्ति होगी... इत्यादि तो कहना चाहिये कि स्थान की प्राप्ति नहीं होगी, विदेशी घर नहीं आवेगा, रोग की शान्ति नहीं होगी.....। (अर्थात् प्रश्नकर्त्ता के मनोनुकूल सिद्धि नहीं होगी)। यदि चर राशि (मेष, कर्क, तुला और मकर) में प्रश्न करै तो इससे विपरित फल (अर्थात् कार्य सिद्धि) होती है। एवं द्विस्वभाव राशि (मिथुन, कन्या, धनु और मीन) का लग्न हो तो मिश्रित (अर्थात् पूर्वार्ध में स्थिरराशिवत् उत्तरार्ध में चरराशिवत्) फल कहना चाहिये।।१-२।।

तथा च-

केन्द्रत्रिकोणेषु शुभस्थितेषु पापेषु केन्द्राष्टमवर्जितेषु ।
सर्वार्थसिद्धिं प्रवदेन्नराणां विपर्ययस्थेषु विपर्ययः स्यात् ।।३।।

केन्द्र (१।४।७।१०) त्रिकोण (५।९) में शुभ ग्रह हों, केन्द्र और अष्टम को छोड़ कर अन्य स्थानों में पापग्रह बैठे हों तो कार्यसिद्धि होती है अन्यथा कार्यसिद्धि नहीं होती।।३।।

अक्षरोपरि कार्यसिद्धि प्रश्न-

प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं सैकयुग्वह्निभिर्माजितम् ।
एके सिद्धिर्द्विके स्थैर्यं शून्ये शून्यफलं भवेत् ।।

चौरप्रश्न-

स्थिरोदये स्थिरांशे वा वर्गोत्तमगतेऽपि वा ।
स्थितं तत्रैव तद्द्रव्यं स्वकीयेनैव चोरितम् ।।५।।
आदिमध्यावसानेषु द्रेक्काणेषु विशेषतः ।।
द्वारदेशेऽथवा मध्ये गृहान्ते च वदेद्धनम् ।।६।।

स्थिर राशि का प्रश्नलग्न हो वा प्रश्नलग्न में स्थिर राशि का नवमांश हो अथवा प्रश्न समय में वर्गोत्तम नवमांश हो तो 'खोया हुआ द्रव्य खोये हुये स्थान के पास ही है और किसी अपने खास व्यक्ति ने लिया है' ऐसा कहना चाहिये, एवं प्रश्नलग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो द्वार देश में, द्वितीय द्रेष्काण हो तो गृह के बीच में एवं तृतीय द्रेष्काण हो तो गृहान्त में द्रव्य है ऐसा कहना चाहिये।।४-५।।

नष्टलाभालाभज्ञानम् -

पूर्णः शशी लग्नगतः शुभो वा शीर्षोदये सौम्यनिरीक्षितश्च ।
नष्टस्य लाभं कुरुते तदाशु लाभोपयातो बलवान् शुभश्च ।।६।।

पूर्ण चन्द्रमा अथवा शुभग्रह प्रश्नलग्न मे बैठा हो अथवा शीर्षोदय लग्न हो उसको शुभग्रह देखते हों अथवा प्रश्नलग्न से ग्यारहवें स्थान में बलवान् शुभग्रह बैठा हो तो खोई हुई वस्तु का शीघ्र लाभ होता है।

मेषादिलग्नवशाच्चौरज्ञानम् -

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रोऽथ स्वजनोऽङ्गना ।
भ्राता पुत्रोऽथ भृत्यश्च स्नुषा स्यान्मूषकोऽस्वभूः ।।
मेषादीनां क्रमाच्चौरनामैषां राशिशादृशम् ।।७।।

यह स्पष्टार्थ है।।७।।

दिगध्वनोः प्रमाणम् -

दिग्वाच्या केन्द्रगतैरसम्भवे वा वदेद्विलग्नर्क्षात् ।
मध्याच्च्युतैर्विलग्नान्नवांशकैर्योजना वाच्याः ।।८।।

प्रश्न लग्न से केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानों में जो ग्रह पड़ा हो उस ग्रह की दिशा में खोई हुई या चुराई हुई वस्तु गई है अर्थात् चारों केन्द्रों में से किसी केन्द्र में सूर्य पड़ा हो तो पूर्व में, शुक्र पड़ा हो तो अग्निकोण में, मंगल पड़ा हो तो दक्षिण दिशा में, राहु पड़ा हो तो नैऋत्य कोण में, शनि पड़ा हो तो पश्चिमदिशा में, चन्द्रमा पड़ा हो तो वायव्य कोण में, बुध पड़ा हो तो उत्तर दिशा में एवं गुरू पड़ा हो तो ईशान कोण में खोई वस्तु गई है ऐसा कहना चाहिये। यदि अनेक ग्रह केन्द्र में पड़े हों तो जो सर्वाधिक बलवान् हो उस ग्रह की दिशा में खोई वस्तु गई होती है।

यदि कोई ग्रह केन्द्रवर्ती न हो तो लग्न राशिवश (दिग्द्वारराशि वश) से दिशा का ज्ञान करना चाहिये। अर्थात् प्रश्नलग्न मेष, सिंह, धनुराशि का हो तो पूर्व दिशा में, वृष, कन्या, मकर राशि का हो तो दक्षिण दिशा में, मिथुन, तुला, कुम्भ का हों तो पश्चिम दिशा में एवं कर्क, वृश्चिक, मीन राशि का हो तो उत्तर दिशा में खोई वस्तु गई है ऐसा कहना चाहिये।

प्रश्नकाल में प्रश्नलग्न का जो नवमांश वर्तमान हो उससे मध्यनवांश (पंचमनवांश) से योजन बताना चाहिये।।८।।

धातुमूलजीवानां मध्ये कस्य चिन्ता तत्परिज्ञानम् -

प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं एकेन च समन्वितम् ।
वह्निभिस्तु हरेद्भागं शेषे चिन्तां विनिर्दिशेत् ।।१०।।
विषमांके जीवचिन्ता समे धातुः प्रकीर्तिता ।
शून्ये मूलं विजानीयाच्चिन्त-लक्षणमीरितम् ।।११।।

प्रश्न के अक्षरों को २ से गुणनकर के १ जोड़ कर ३ का भाग देने पर १ शेष बचे तो जीवचिन्ता २ शेष बचे तो धातु चिन्ता और शून्य बचे तो मूल चिन्ता समझनी चाहिये है।।१०-११।।

अन्यच्च -

प्रश्नाक्षरं षड्गुणितं अष्टभिस्तु विमिश्रितम् ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषे तात्कालिको ग्रहः ।।१२।।
ग्रहोपरि वदेत्सर्वं धातुमूलादिलक्षणम् ।
चन्द्रे शुक्रे तथा जीवे जीवचिन्तां विनिर्दिशत् ।।१३।।
भानौ बुधे तथा केतौ धातुचिन्तां वदेद् बुधः।
कुज-राहु-शनिष्वेव मूलचिन्ता मनीषिभिः ।।१४।।

प्रश्न के अक्षरों को ६ से गुणाकर के ८ जोड़ कर ९ का भाग देने से शेष सूर्यादिग्रहों की संख्या होती है। चन्द्र, शुक्र और गुरु हो तो जीवचिन्ता, सूर्य, बुध, केतु में धातु चिन्ता और मंगल शनि और राहु में मूल चिन्ता समझनी चाहिये।।१२-१४।।

अन्यप्रकारेण चौरप्रश्नः –

इष्टो दशघ्नोऽर्कयुतःशरघ्नो बाणेन्दुयुक्तः शरपक्षभक्तः ।
लब्धं त्रिगुण्यं दलितं तु शेषे सभासु चौरं प्रवदन्ति सन्तः ।।

सूर्योदय से घट्यादि इष्टकाल को १० से गुणा करके उसमें १२ जोड़ देना फिर ५ से गुणाकर के १५ जोड़ के २५ से भाग देने से जो लब्धि आवे उसको ३ से गुणा करके गुणनफल का आधा करे। जो आधा करने पर शेष बचे चोरों का नाम क्रम से लिखकर गिने जिसके नाम पर शेष गिरे वही निःसन्देह चोर होता है। यह प्रश्न श्रद्ध विश्वासपूर्वक प्रश्न करने पर अवश्य सत्य होता है।।

प्रश्नलग्नवशाद्दोषज्ञानम् –

देवस्य मेषे गवि पितृपक्षादाकाशदेव्या मिथुनेऽथ कर्के ।
स्याच्छाकिनी क्षेत्रपतेस्तु सिंहे स्त्रियां कुलार्हा च तुले च मातुः ।।
नागस्त्वलौ यक्षपतिर्धनुष्ये नक्रेऽम्बुदेव्यास्तु घटेऽथ पक्षी ।
झषे कुलोपासितदैवतस्य दोषं भवेद्धर्मबहिष्कृतस्य ।।१६।।

यदि प्रष्टा मेष लग्न में प्रश्न करे तो देवता सम्बन्धी वाधा, वृषलग्न में पितृ बाधा, मिथुन में आकाश देवी की बाधा, कर्कलग्न में शाकिनी बाधा, सिंह लग्न में क्षेत्रपाल की बाधा, कन्या लग्न में कुलदेव की बाधा, तुला लग्न में मातृ का गण की बाधा, वृश्चिक लग्न में नागवाधा, धनु लग्न में यक्षपति की बाधा, मकर लग्न में जल देवी की बाधा, कुम्भ लग्न में पक्षियों की बाधा और मील लग्न में प्रश्न हो तो वंशपरम्परा से उपासित देवता की बाधा से मनुष्य को कष्ट हो रहा है।

जिस देव की बाधा हो उसके उपचार से बाधा शान्त होती हैं और मानव सुखी और स्वस्थ रहता है।

अथान्यप्रकारेण बाधाज्ञानम् –

तिथिवारं च नक्षत्रं लग्नं यामं च मिश्रितम् ।
वसुभिश्च हरेद्भागं शेषे बाधां विनिर्दिशेत् ।।१७।।
हयाग्नौ देवबाधा स्यात्पित्रोश्च नेत्रदन्तिनौ ।
षट्चतुर्थे भूतबाधा ग्रहाणामेकपञ्चमे ।।१८।।
भक्तं द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ।
रामबाणरसेभाङ्करुद्रेषु धुजीवति ध्रुवम् ।
शेषेषु मरणं विद्यादिति गर्गादिसम्मतम् ।।१६।।

प्रश्नकाल के तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न और प्रहर की संख्याओं का योग करके आठ का भाग देना चाहिये। यदि ७।३ शेष बचे तो देववाधा, २।८ शेष बचे तो पितृबाधा, ६।४ बचे तो भूतबाधा एवं १।५ शेष बचे तो ग्रहबाधा कहनी चाहिये, तथा उसी योग में १२ का भाग देने से ३।५।६।८।६।११ शेष बचे तो जीवन और १।२।४।७।१०।१२ शेष बचे तो मृत्यु कहना चाहिये।।१७-१६।।

अन्यप्रकार प्रश्नेपित्रादिदोषविचारः –

पितृजनकृतदोषोदाहतृष्णाऽपि चिंता ज्वरवमन शिरोऽर्तिर्मेषलग्नेऽङ्गपीडा।
द्विजवर-कृतभोज्यं तर्पणं पिंडदानं जलघटदिन-पंच-पिप्पलः पूजनीयः।।

प्रश्न कुंडली मे मेष लग्न हो तो पितृ दोष समझना, उससे शरीर में दाह, तृष्णा, चिंता, ज्वर, उल्टी और मस्तक की पीडा होती है उसकी शान्ति के लिए ब्राह्मण भोजन, तर्पण, पिंडदान और पाँच दिनों तक एक एक घड़ा जल पीपल पर चढ़ाना, और उसकी पूजा करना इससे पितृदोष की शान्ति होती है।

वृषे गोत्रदोषो ज्वरं तापतृष्णा बलं निर्बलं कर्णनेत्रे विकारः ।
कृते शक्तिपाठे च नैवेद्यदाने कृते क्षीरहोमादिके रोगनाशः ।।

वृषभ लग्न हो तो गोत्र का दोष जानना और उससे ज्वर, ताप, तृष्णा, शक्ति का नाश, तथा कान और नेत्र का विकार होता है, उसकी शांति के लिए चंडी पाठ, नैवेद्य और देवी के निमित्त खीर का होम करने से रोग का नाश होता है।।

सदा शक्तिदोषो यदा युग्मलग्ने व्यथा हस्तयोरंगभंगो भ्रमश्च।
घटस्थापनं पूजनं पिंडदानं शताष्टाहुतीर्गुग्गुलस्यापि कुर्यात्।।

मिथुन लग्न हो तो देवी का दोष समझना उससे हाथों में पीड़ा अंग-भंग और भ्रम होता हैं। उसकी शान्ति के लिए देवी का कलश पर स्थापन करके पूजा करनी चाहिये। पिंडदान और गुग्गुल की १०८ आहुति अग्नि में देनी चाहिये।।

कर्कोदये शाकिनीदोष उग्रो ह्यजीर्णवाता मुखशीर्षपीडा।
नैवेद्यदानं पयसापि माषैः र्धृतप्रदीपकृत दोषनाशः।।

कर्क लग्न हो तो भयंकर शाकिनी दोष लगता है उससे अजीर्ण, वायु तथा मुख और सिर की पीड़ा होती है, उसकी शान्ति के लिए दूध और माष (उडद) का नैवेद्य लगाना और घी का दीपक जलाना चाहिये जिससे दोषों का नाश हो जाता है।

सिंहोदये प्रेतमलीनदोषो ह्यग्निप्रकोपं वमनातिसारम्।
दर्भैः कृतं पुत्तलिकाविधानं भोज्यं च पिंडास्तिलतर्पणं च।।

सिंह लग्न हो तो मलीन प्रेतों का दोष जानना, उससे अग्नि का प्रकोप, उल्टी और अतिसार होता है। कुश का पुत्तलविधान करके ब्राह्मणों को भोजन, पिण्डदान और तिल से तर्पण करने से दोष की शान्ति होती है।।

कन्याविलग्ने कृतकर्मदोषः प्रलापमूर्छाभ्रमदाहतापाः।
षडंगजाप्ये दशमांशहोमे कृतेऽभिषेके खलु दोषनाशः।।

कन्या लग्न हो तो पहले किये कर्मो का दोष जानना, उससे असंवद्ध प्रलाप, मूर्छा, भ्रम, ताप और दाह उत्पन्न होता है। उसकी शान्ति के लिए शिव पंचाक्षर मंत्र का जप और अभिषेक तथा उसका दशांश होम करना चाहिये उससे दोष का नाश होता है।

तुले क्षेत्रपालकृतो दोषदुष्टो ज्वरश्चांगपीडा तथा नेत्ररक्तम्।
घृतै रक्तपुष्पैश्च सिंदूरयुक्तं द्विजेंद्राय दानं तिलामाषलोहम्।।

तुला लग्न हो तो क्षेत्रपाल सम्वन्धी दोष जानना। उससे ज्वर, अंग पीडा और नेत्र लाल रहते हैं। उसकी शांति के लिये घी, लाल पुष्प, सिंदूर, तिल, उर्द और लोहे का दान ब्राह्मण को देना चाहिये, उससे दोष की शान्ति होती है।

वैतालदोषोऽलिलग्ने प्रकुर्यात् ज्वरप्रलापं भ्रमनेत्रपीडाम्।
तस्य प्रशांत्यै करवीरपुष्पं शताष्टाहुतीर्गुग्गुलस्य प्रकुर्यात्।।

वृश्चिक लग्न हो तो वैताल का दोष जानना, उससे ज्वर, बक्वास, भ्रम और नेत्र की पीड़ा होती है। उसकी शांति के लिये कनेर का फूल और गुग्गुल सहित घी की १०८ आहुति देने से दोष का नाश होता है।

महामारिदोषो धने चैव लग्ने शीर्षे च पीडा ज्वरो गात्रभंगः।
शान्त्यर्थ कृत्वा पुत्तलं क्षेत्रपालं चंडीविधाने कृते दोषनाशः।।

धन लग्न हो तो महामारी का दोष जानना, उससे मस्तक में पीड़ा, ज्वर और शरीर का भंग होता है, उसकी शांति के लिये पुत्तल विधान करके क्षेत्रपाल का पूजन और चंडी विधान करना चाहिये। उससे दोष की शांति होती है।

मृगे मार्गिणीक्षेत्रपालस्य दोषो सदा नेत्रभंगो ज्वरो देहभंगः।
कृतं पुत्तलं रक्तपुष्पैर्युतं च कृतस्नानरुद्रीकृते दोषनाशः।।

मकर लग्न हो तो मार्गिणी और क्षेत्रपाल का दोष जानना, उससे आँख में पीड़ा, ताप और शरीर का टूटना होता है, उसकी शांति के लिए स्नान करके दर्भ से बनाये पुतले की लाल पुष्प से पूजा करके रुद्राभिषेक करने से दोष का नाश होता है।

घटे पूर्वजो गोत्रदेव्यादिदोषो ज्वरोद्वेगशोकातिसारस्तथैव ।
जलं पिप्पले दीयते पिंडदानं तिलस्तर्पणं ब्रह्मभोज्यादिकं च ।।

कुंभ लग्न हो तो पूर्वज का और कुल देवी का दोष जानना। उससे ताप, उद्वेग, शोक, अतिसार आदि होते है। उसकी शांति के लिए पीपल पर पानी चढ़ाना, पिण्ड दान करना, तिल से तर्पण और ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिये।

मीने शाकिनीकर्कशादोष उग्रो हृदि जाठरे दाहपीडा ज्वरश्च ।
कृते पारणं ब्रह्मभोज्यादिकं च शताष्टाहुतीर्गुग्गुलस्य प्रकुर्यात् ।।

मीन लग्न हो तो कर्कशा शाकिनी का दोष जानना। उससे हृदय और पेट में पीड़ा, दाह तथा ज्वर होता है, उसकी शांति के लिए ब्राह्मण भोजन कराना और गुग्गुल की १०८ आहुति देना चाहिये।

रोगिप्रश्नः –

दूतप्रश्नाक्षरं ग्राह्यं दूतनामाक्षरैर्युतम् ।
रोगिनो नामवर्णश्च एकीकृत्य त्रिधा न्यसेत् ।
द्वित्रिचतुर्भिर्गुणितं रससप्ताष्टभाजितम् ।।२०।।
एकेन साध्यो रोगः स्या द्वाभ्यां कष्टं विनिर्दिशेत्।
त्रिशून्ये मरणं ज्ञेयं भाषितं रुद्रयामले ।।२१।।

दूत (रोगी के विषय में पूँछने वाले व्यक्ति) के प्रश्नों के अक्षर, दूत के नाम के अक्षर और रोगी के नाम के अक्षरों का योग करके तीन स्थानों में रखे और क्रम से २।३।४ से गुणा करके ६।७।८ से भाग देने पर यदि एक स्थान में शून्य बचे और अन्य स्थानों में अंक बचे तो रोग साध्य होता है। यदि दो स्थानों में शून्य और एक स्थान में अंक बचे तो रोग कष्टसाध्य होता है, एवं तीनों स्थानों में शून्य शेष बचे तो रोगी की मृत्यु होती है।।२१।।

अथान्यः प्रश्नः –

उदयाद्घटिका द्विघ्नास्तिथिवारेण मिश्रिताः ।
सूर्यैश्च विभजेच्छेषैर्विज्ञेयं मृत्युजीवनम् ।।२२।।
रामबाणरसैः सिद्धिर्नन्दरुद्रैश्च जीवनम् ।
रूपपक्षयुगद्वीपदशसूर्यैर्न जीवनम् ।।२३।।

सूर्योदय काल से वर्तमान घटी की संख्या को २ से गुणा करके प्रश्न समय की तिथि और वार के संख्या को जोड़ देवे और १२ का भाग दे यदि ३।५।६ शेष बचे तो औषधादिकों से लाभ होगा, ३।११ शेष बचे तो जीवन कहे और १।२।४।७।८।१०।१२ शेष बचे तो मृत्यु कहना चाहिये।।२०-२३।।

क्व मृत्युरिति प्रश्ने –

छिद्रे चरे स्थिरे द्व्यङ्गे परे स्वे पथि च व्यसुः ।
शुभे वाऽर्केऽथ वा रन्ध्रे तीर्थे वा केन्द्रगैः शुभैः ।।२५।।

यदि प्रश्नलग्न से आठवें स्थान में चर (मेष, कर्क, तुला और मकर) राशि हो तो दूसरे के घर में, स्थिर (मेष, सिंह, वृश्चिक, और कुम्भ) राशि पड़ी हो तो अपने ही घर में एवं द्विस्वभाव (मिथुन, कन्या, धनु और मीन) राशि व्यवस्थित हो तो मार्ग में मृत्यु कहना। यदि शुभ ग्रह वा सूर्य आठवें स्थान में पड़े हों या केन्द्र (१।४।७।१०) में शुभग्रह बैठे हों तो तीर्थ में मृत्यु होती है।।२५।।

गर्भिणीप्रश्नः -

कान्ताभिधानं गुणितं मुनीन्द्रैस्तिथ्या युतं नागहृतं च शेषे।
समे च कन्या विषमे च पुत्रो निःशेषभागे मरणाय नूनम् ।।२६।।

स्त्री के नाम के अक्षर को ७ से गुणा करके प्रश्न समय के तिथि संख्या को उसमें जोड़ के ८ से भाग देना चाहिये। यदि सम संख्या (२।४।६) शेष बचे तो कन्या, विषम संख्या (१।३।५।७) शेष बचे तो पुत्र का जन्म कहना। एवं शून्य शेष हो तो मृत्यु होती है।।२६।।

१५ यन्त्रस्थकार्यसिद्धिः प्रश्नः -

नवैकबाणसंख्यासु कार्यसिद्धिररं भवेत् ।
द्वितीयेऽष्टौ च कार्याणि न सिद्ध्यन्ति कदाचन ।।२७।।
वेदे रसे च घटिकात्रयेणैव सुसिद्ध्यति ।
सप्तमे त्रितये चैव वार्ता वाच्या विचक्षणैः ।।२८।।

नवकोष्ठकों में १५हाँ यन्त्र बनाके उसमें ईश्वर का स्मरण करके दूब या उँगली रखे। यदि १।५।६ अंक में पड़े तो कार्य की सिद्धि होती है। २।८ में पड़े तो कदापि कार्य की सिद्धि नहीं होती। ६।४ में पड़े तो तुरन्त कार्य की सिद्धि होती है, एवं ७।३ में पड़े तो उस कार्य के लिये बातचीत (प्रयत्न के द्वारा) अंतिम में सफलता प्राप्त होती है।।२७-२८।।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

विदेशस्थस्य प्रश्न -

प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं त्रयोदशसमन्वितम् ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषे प्रश्नस्य लक्षणम् ।।२९।।
एकेन गमनं वाच्यं द्वितीये मार्ग एवं च।
तृतीये चार्धमार्गे च चतुर्थे द्वारमार्गतः ।।३०।।
पंचमे पुनरावृत्तिः षष्ठे व्याधिसमन्वितः ।
सप्तमे शून्यता वृत्तिरष्टमे मरणं ध्रुवम् ।।३१।।

प्रश्नकर्ता के प्रश्नाक्षर संख्या को २ से गुणा करके १३ मिला देवे पुनः ८ का भाग देने से १ शेष बचे तो यात्रा, २ बचे तो मार्ग में स्थिति, ३ बचे तो आधे मार्ग में, ४ बचे तो दरवाजे पर आया हुआ जाने, ५ शेष बचे तो विदेशी फिर से लौट कर आवे। ६ बचे तो व्याधि से पीड़ित जाने, ७ शेष बचे तो अभी नहीं आयेगा एवं ८ शेष बचे तो मृत्यु जाने।।२९-३१।।

युद्धप्रश्न -

सूर्यभाच्चन्द्रभं यावद्गण्यं सप्तविभाजितम् ।
शून्यसशिवशेषे विज्ञेयं महायुद्धं द्वयोः सदा।
त्रिषट्के दीर्घकालान्तं युद्धं शेषेषु नो भवेत् ।।३२।।

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिन के ७ का भाग देने से यदि ०।२ शेष बचे तो घोर युद्ध, ३।६ शेष बचे तो साधारण किन्तु कुछ काल तक युद्ध होता रहे और (१।४।५) शेष बचे तो युद्ध न हो ऐसा कहना चाहिये।।३२।।

युद्ध प्रश्ने जयपराजयज्ञानम् -

उभयोस्त्रिगुणितं नाम तत्कालतिथिनाडियुक् ।
वह्निहृद्यत्र शेषः स्यादधिकः जयवान् भवेत् ।।३३।।

प्रश्न काल में यायी और स्थायी दोनों के नामाक्षर संख्या को पृथक्-पृथक् ३ से गुणा करकें तात्कालिक तिथि संख्या और इष्टघटी की संख्या जोड़ के ३ का भाग देना चाहिये जिस का शेष अधिक हो वही विजयी होता है।।३३।।

अंगस्फुरणफलम् –

नेत्रे नेत्रप्रियप्राप्तिः कर्णे कर्णसुखं भवेत् ।
नासिकायां सुगन्धाप्तिः कपोले तु वराङ्गना ।।३३।।
ओष्ठे वा कलहो ज्ञेयो जिह्वायामिष्टभोजनम् ।
भुजेषु भवनक्रीडा जानुदेशे महद्भयम् ।।३४।।
कण्ठस्थं भूषणं कण्ठे ग्रीवायां जागरो भवेत् ।
पृष्ठे परोक्षवार्ता च स्कन्धयोश्च धनागमम् ।।३५।।
हृदये वाञ्छिता सिद्धिर्जठरे भाग्यसम्पदः ।
वाहनाप्तिः कटिदेशे गुह्ये परवधूरतिः ।।
ऊरुयुग्मेऽतिवस्त्राप्तिः पादयोर्गमनं भवेत् ।।३६।।

नेत्र फरकै तो नेत्र की कोई प्रिय वस्तु प्राप्त हो। कान फरकै तो बढ़िया बात सुनने में आवे। नासिका स्फुरण हो तो सुगन्ध की प्राप्ति हो। गाल फरकै तो सुन्दरी स्त्री का समागम हो। आठो फरकै तो कलह हो। जीभ फरकै तो मिष्टान्न भोजन प्राप्त हो। भुजा फरकै तो भवन में आनन्द मिलै। जानु फरकै तो विशेष भय प्राप्त हो, कण्ठ फरके तो कण्ठ का भूषण मिलै। एवं ग्रीवा में जागरण, पीठ फरकने से परोक्ष की वात, कन्धा फरकने से धन लाभ, हृदय फरकने से मनोवांक्षित की प्राप्ति, पेट फरकने से भाग्यवृद्धि, कटि प्रदेश फरकने से वाहन (सवारी) की लब्धि, गुह्य फरकै तो दूसरे की वधू से सम्पर्क, ऊरू फरकै तो सुन्दर-सुन्दर वस्त्रों का लाभ और पैर फरकै तो यात्रा होती है।।३३-३६।।

नेत्रस्फुरणफलम् –

नेत्रस्योर्ध्वं हरति सकलं मानसं दुःखजालं
नेत्रोपान्ते दिशति च धनं नासिकान्ते च मृत्युः ।
नेत्रस्याधः स्फुरणमसकृत्सङ्गरे भङ्गहेतु-
र्वामे चैतत्फलमवि फलं दक्षिणे वैपरीत्यम् ।।३७।।

नेत्र के ऊपरी भाग फरके तो सम्पूर्ण मानसिक कष्ट दूर हो जाते हैं। नेत्रोंपान्त फरकै तो धनलाभ, नासिका का अन्तभाग फरके तो मृत्यु, नेत्र का निचला हिस्सा फरके तो युद्ध में बार-बार पराजय होती है। यह सब वाम नेत्र के फरकने का फल है। दक्षिण नेत्र फरके तो इससे विपरीत फल जानना चाहिये।।३७।।

खञ्जनदर्शनफलम् –

वित्तं ब्रह्मणि कार्यसिद्धिरतुला शक्रे हुताशे भयं
याम्ये रोगभयं सुरारिकलहं लक्ष्मीः समुद्रालये ।
वायव्ये वरवस्त्रलाभमखिलं दिव्याङ्गना चोत्तरे
ईशान्ये मरणं ध्रुवं निगदितं दिग्लक्षणं खञ्जने ।।३८।।
अब्जेषु गोषु गजवाजिमहोरगेषु राज्यप्रदः कुशलदः शुचिशाद्वलेषु ।
भस्मास्थिकेशतुषचर्मनखेषु दृष्टः दुःखं ददाति बहुशः खलु खञ्जरीटः ।।३९।।

इनके अर्थ स्पष्ट हैं।।३८-३६।।

स्थानानि	ब्रह्मस्थान	पूर्व	अग्नि	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशान
फलानि	धनलाभ	कार्य सिद्धि	अग्नि भय	रोग भय	कलह	लक्ष्मी प्राप्ति	वरवस्त्र लाभ	दिव्यांग नाप्राप्ति	मृत्यु

पल्लीपतन-सरटारोहणफलम् –

दक्षाङ्गोदरनाभिहृत्सु पतिता पल्ली वराङ्गे हनुं
त्यक्त्वा नुः शुभदा स्त्रियाः फलमिदं वामेतरव्यत्ययात् ।
इत्याहुः सरटप्ररोहणफलं पातेऽन्यथैके वृथा
पल्यारोहणकेऽपि वस्त्रसहितः स्नात्वाचरेच्छान्तिकम् ।।४०।।

पुरुष के दाढ़ी को छोड़कर दाहिने भाग पर और नाभि, हृदय तथा शिर पर और स्त्रियों के इसके विपरीत अंगो पर पल्ली (छिपकली) गिरे तो शुभदा होती है। जो फल पल्ली के गिरने का है वही गिरगिट के चढ़ जाने से होता है। यदि गिरगिट गिर पड़े तो पल्ली चढ़ जाय तो उसका कुछ फल नहीं होता। पल्ली शुभ या अशुभ अंग पर गिरे तो वस्त्र सहित स्नान करके शान्ति करनी चाहिये।।४०।।

छिक्काविचार –

छिक्काप्रश्नं प्रवक्ष्यामि पूर्वस्यामशुभं भवेत् ।
आग्नेय्यां शोकदुःखं स्यादरिष्टं दक्षिणे तथा ।।४१।।
नैर्ऋत्यां च शुभं प्रोक्तं पश्चिमे मिष्टभक्षणम् ।
वायव्ये धनलाभस्तु उत्तरे कलहस्तथा ।।४२।।
ईशान्यां च शुभं क्षेमं आत्मछिक्का महद्भयम् ।
ऊर्ध्वं चैव शुभं ज्ञेयं मध्ये चैव महद्भयम् ।।४३।।
आसने शयने चैव दाने चैव तु भोजने ।
वामाङ्गे पृष्ठतश्चैव षट्सु छिक्काः शुभावहाः ।।४४।।

बालबोधज्योतिषे प्रकीर्णप्रकरणम् नवमं समाप्तम्।।६।।

मनुष्य के किसी कार्यारम्भ करने के समय उस के पूर्व दिशा में छींक हो जाय तो अशुभफल, अग्निकोण में कोई छींक दे तो शोक दुःख की प्राप्ति, दक्षिण दिशा में छिंक हो तो अनिष्ट, नैऋत्य दिशा में छींक हो तो शुभफल, वायव्य कोण में छींक हो तो धन का लाभ, उत्तर दिशा में छींक होने से कलह और ईशान कोण में छींक हो तो शुभफलदायक होती है। अपनी छींक आ जाय तो महद्भय समुपस्थित होता है। ऊपर छींक हो तो शुभ फल, मध्य में छींक हो तो महद्भय होता है। आसना पर वैठते समय, शयन के समय, दान के समय, भोजन के समय, बाये भाग में और पीछे इन छ अवसरों पर छींक का होना सफलता सूचक होता है।।४१-४४।।

हिन्दीटीकायां प्रकीर्णप्रकरणम् समाप्तम्।।६।।

अक्षांश–रेखांश सारिणी अनुक्रमणिका

# चरसारणी (मिनट, सेकेण्ड में फल) क्रान्त्यंश 	१-२० अक्षांश

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४	८	१३	१७	२१	२५	३०	३४	३८	४२	४६	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२	४७
२	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	८	१६	२५	३३	४२	५१	०	८	१७	२६	३६	४५	५५	४	१४	२४	३४
३	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५
	१३	२५	३८	५०	३	१६	२८	४१	५४	७	२०	३३	४६	०	१३	२६	४०	५४	८	२२	३७	५१	६	२०
४	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७
	१७	३४	५०	७	२४	४१	५८	१५	३२	५०	७	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३१	५०	९	२८	४८	८
५	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८
	२१	४२	३	२४	४५	६	२८	४९	१०	३२	५४	१६	३८	०	२२	४४	७	३०	५४	१८	४२	६	३१	५६
६	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०
	२५	५०	१६	४१	६	३२	५८	२३	४९	१४	४१	७	३४	०	२७	५४	२२	४९	१८	४६	१५	४४	१४	४४
७	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
	२९	५९	२८	५८	२८	५८	२७	५७	२७	५८	२८	५९	३०	१	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२१	५३	२६
८	०	१	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४
	३४	८	४१	१५	४९	२३	५७	३२	६	४१	१६	५१	२६	२	३८	१४	५१	२८	६	४४	२२	१	४१	२१
९	०	१	१	२	३	३	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६
	३८	१६	५४	३२	१०	४९	२७	६	४५	२४	३	४३	२३	३	४४	२४	६	४८	३०	१३	५६	४०	२५	१०
१०	०	१	२	२	३	४	४	५	६	७	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८
	४२	२४	७	५०	३२	१४	५८	४१	२४	८	५१	३६	२०	५	५०	३६	२२	८	५५	४३	३२	२०	१०	०
११	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९
	४६	३३	२०	७	५४	४१	२८	१६	३	५१	४०	२८	१७	७	५६	४७	३८	२९	२१	१४	७	१	५६	५२
१२	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
	५१	४२	३३	२४	१६	७	५९	५१	४३	३६	२८	२१	१५	९	४	५८	५४	५०	४६	४५	४३	४२	४२	४३
१३	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
	५५	५१	४६	४२	३८	३४	३०	२७	२३	२०	१७	१५	१३	१२	११	११	१२	१४	१७	२०	२४	३०	३७	३६
१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२४	२५
	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	१२	१५	१९	२३	२९	३५	४१	४७	५७	८	१८	३०
१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२६	२७
	४	८	१३	१८	२२	२७	३२	३८	४४	५०	५६	४	११	१९	२८	३८	४७	५८	१०	२२	३६	५२	७	२४
१६	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२६	२७	२९
	११	१८	२६	३६	४५	५४	४	१४	२५	३६	४७	५८	११	२४	३८	५२	७	२३	४०	५८	१६	३७	५८	२०
१७	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३१
	१३	२७	४०	५४	८	२२	३६	५१	६	२२	३८	५४	१२	२९	४८	७	२७	४८	११	३४	५७	२३	५०	१९
१८	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१८	३६	५४	१२	३१	५०	९	२८	४८	८	३०	५०	१२	३५	५९	२३	४८	१४	४२	८	३७	१०	४२	२०
१९	१	२	४	५	६	८	९	११	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	३५
	२३	४५	८	३१	५४	१८	४२	६	३०	५५	२१	४६	१४	४१	१०	३९	९	४१	१४	४८	२४	५९	३७	१६
२०	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३३	३५	३७
	२७	५५	२२	५०	१८	४६	१५	४४	१३	४३	१४	४५	१८	५०	२३	५५	३०	८	४७	२७	८	५०	३३	१८

चरसारणी (मिनट, सेकेण्ड में फल) क्रान्त्यंश २१-४० अक्षांश

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
२१	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	३०	३२	३३	३५	३७	३९
	३२	४	३७	९	४२	१५	४८	२२	५६	३२	७	४३	२०	५८	३६	१६	५६	३७	१९	२	५०	४१	३०	२२
२२	१	३	४	६	८	९	११	१३	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१
	३७	१४	५१	२८	६	४४	२३	१	४०	२०	१	४२	२४	८	५२	३७	२३	१०	५८	५०	४१	३५	३०	२७
२३	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
	४२	२४	६	४८	३१	१४	५७	४१	२५	१०	५६	४२	३०	१८	७	५८	४९	४२	३७	३३	३०	२७	३४	३५
२४	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५
	४७	३४	२१	८	५६	४४	३२	२१	१०	०	५२	४३	३६	३०	२४	२०	१९	२०	२१	२३	२५	२६	३४	४०
२५	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४७
	५२	४४	३६	२८	२१	१४	८	२	५६	५२	४८	४५	४३	४२	४३	४४	४७	५१	५८	५	१५	२६	४०	५३
२६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०
	५७	५४	५२	४९	४७	४५	४३	४३	४३	४४	४६	४८	५२	५६	२	९	१८	२८	४०	५४	१०	२८	४८	१०
२७	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३८	४०	४२	४५	४७	४९	५२
	२	५	७	१०	१३	१७	२१	२६	३१	३७	४४	५२	१	१२	२३	३६	५०	०	२५	४५	७	३२	५८	२७
२८	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४७	४९	५२	५४
	७	१५	२३	३१	४०	४९	५८	८	१९	३१	४४	५७	१२	२८	४६	४	२५	४९	१२	३६	२	३०	४	३८
२९	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३४	३६	३९	४१	४४	४६	४९	५१	५४	५७
	१३	२६	४०	५३	७	२१	३६	५२	९	२६	४४	४	२४	४६	१०	३५	१	३०	०	३२	८	४६	२६	९
३०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२०	२३	२५	२८	३०	३३	३५	३८	४०	४२	४५	४८	५१	५३	५६	५९
	१८	३७	५६	१५	३५	५५	१६	३७	५९	२२	४६	१२	३८	५	३४	७	४०	१५	५२	३१	१३	५८	४६	३५
३१	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२९	३१	३४	३७	३६	४२	४५	४७	५०	५३	५६	५९	६२
	२४	४८	१३	३८	३	२९	५६	२२	५०	२०	५०	२१	५४	२८	४	४१	२०	२	४६	३२	२०	१२	६	४२
३२	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६४
	३०	०	३०	१	३२	४	३६	९	४३	१८	५४	३२	११	५२	३३	१७	३	५२	४२	३५	३१	३०	३३	३७
३३	२	५	७	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२६	२९	३१	३४	३७	४०	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३	६७
	३६	१२	४८	२४	१	३९	१८	५७	३८	१८	०	४४	३०	१६	५	५६	४९	४४	४१	४१	४४	४६	५४	४
३४	२	५	८	१०	१३	१६	१९	२१	२४	२७	३०	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६३	६६	६९
	४२	२४	६	४९	३२	१२	०	४६	३१	१९	८	५८	५०	४४	३९	३६	३६	३८	४३	५१	१	१५	३३	५४
३५	२	५	८	११	१४	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	६२	६५	६९	७२
	४८	३६	२५	१४	३	५३	४४	३५	२८	२२	१७	१३	१३	१३	१५	२०	२७	३६	४७	०	२२	४४	१०	४०
३६	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	६१	६४	६८	७१	७५
	५४	४९	४४	३९	३४	३१	२८	२६	२६	२७	२८	३२	३८	४४	५४	६	२०	३७	५७	२०	४६	१७	५१	३०
३७	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	४०	४३	४६	४९	५३	५६	६०	६३	६७	७०	७४	७८
	१	२	३	५	७	१०	१४	१९	२५	३२	४६	५२	४	१९	३६	५५	१७	४१	९	४०	१५	५४	३७	२५
३८	३	६	९	१२	१५	१८	२२	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४८	५१	५५	५८	६२	६६	६९	७३	७७	८१
	८	१५	२३	३२	४१	५०	१	१३	२६	४०	५६	१४	३४	५५	२०	४३	१७	४९	२५	४	४८	३६	२८	२५
३९	३	६	९	१२	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३६	३९	४३	४६	५०	५३	५७	६१	६४	६८	७२	७६	८०	८४
	१४	२८	४४	५९	१५	३०	५२	८	२८	५०	१४	३९	५	३६	८	४२	२०	१	४६	३४	३०	२३	२५	३२
४०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२७	३०	३४	३७	४१	४४	४८	५१	५५	५९	६३	६७	७१	७५	७९	८३	८७
	२१	४३	५	२७	५०	१०	३९	५	३३	२	३३	६	४८	१८	५८	४१	२८	१७	१०	८	२०	१६	२१	४५

वेलान्तर सारिणी

दि.	जन.	फर.	मार्च	अप्रै.	मई	जून	जुलाई	अग.	सित.	अक्टू.	नव.	दिस.
१	०३/३२	१३/३०	१२/२६	४/२	२/५२	२/१६	३/४२	६/१८	०/८	१०/११	१६/२२	११/८
२	४/००	१३/४०	१२/१७	३/४२	२/५६	२/१०	३/५३	६/१४	०/१६	१०/३०	१६/२४	१०/४५
३	४/२८	१३/५०	१२/५	३/२६	३/६	२/०	४/४	६/१०	०/३१	१०/४६	१६/२५	१०/२२
४	४/२५	१३/५६	११/५२	३/८	३/१२	१/५०	४/१५	६/४	०/५१	११/७	१६/२४	६/५८
५	५/२२	१४/१	११/३६	२/५१	३/१८	१/४०	४/२६	५/५६	१/१०	११/२६	१६/२४	६/३४
६	५/४५	१४/५	११/२५	२/३४	३/२२	१/२६	४/३६	५/५२	१/३०	११/४४	१६/२२	६/६
७	६/६	१४/६	११/११	२/१७	३/२७	१/१६	४/४६	५/४६	१/५१	१२/२	१६/१६	८/४४
८	६/३४	१४/१२	१०/५६	२/०	३/३१	१/६०	४/५६	५/३६	२/११	१२/१६	१६/१६	८/१७
९	७/०	१४/१४	१०/४१	१/४३	३/३५	०/५६	५/५	५/३१	२/३२	१२/३६	१६/१२	७/५१
१०	७/२४	१४/१५	१०/२५	१/२६	३/३८	०/४४	५/१३	५/२२	२/५३	१२/५२	१६/६	७/२४
११	७/४८	१४/१६	१०/१०	१/१०	३/४०	०/३२	५/२२	५/१३	३/१४	१३/८	१६/००	६/५७
१२	८/११	१४/१५	६/०	५४/०	३/४२	०/२०	५/३०	५/३	३/३५	१३/२३	१५/५३	६/२६
१३	८/३५	१४/१५	६/३८	०/३८	३/४३	०/८	५/३७	४/५३	३/५६	१३/३८	१५/४६	६/१
१४	८/५७	१४/१३	६/२१	०/२४	३/४३	०/१३	५/४४	५/५२	३/१७	१४/५२	१५/२८	५/२
१५	६/१६	१४/११	६/५	०/६	३/४३	०/१७	५/५१	५/३१	४/३८	१४/६	१५/२८	५/३
१६	६/३६	१४/८	८/४८	०/१४	३/४२	०/३०	५/५७	४/१६	५/०	१४/१०	१५/१७	४/३४
१७	१०/००	१४/४	८/३१	०/२०	३/४१	०/४३	६/२	४/७	५/२१	१४/३२	१५/६	४/५
१८	१०/१६	१४/०	८/१३	०/३३	३/३६	०/५६	६/७	३/५४	५/४२	१४/४३	१४/५४	३/५६
१९	१०/३८	१३/५५	७/५६	०/४७	३/३७	१/६	६/१२	३/४१	६/३	१४/५५	१४/४१	३/०
२०	१०/५६	१३/४६	७/३८	१/०	३/३३	१/२२	६/१६	३/२७	६/२४	१५/००	१४/२७	२/३७
२१	११/१४	१३/४२	७/२१	१/१३	३/३०	१/३६	६/२०	३/१३	६/४६	१५/१३	१४/१३	२/७
२२	११/३०	१३/३४	७/०३	१/२४	३/२६	१/४६	६/२३	२/५८	७/०७	१५/२५	१३/५७	१/३७
२३	११/४७	१३/२७	६/४५	१/३६	३/२२	२/२	६/२५	२/४३	७/२८	१५/३४	१३/४२	१/७
२४	१२/०२	१३/१६	६/२७	१/४७	३/१६	२/१५	६/२६	२१/१७	७/४६	१५/४२	१३/२	०/३७
२५	१२/१७	१३/१०	६/६	१/५८	३/११	२/२८	६/२८	२/१३	८/६	१५/५०	१३/८	०/७
२६	१२/३०	१३/००	५/५१	२/८	३/४	२/४०	६/२८	१/५५	८/३०	१५/५६	१२/४६	०/२६
२७	१२/४३	१२/५१	५/३३	२/१८	३/५८	२/५३	६/२८	१/३८	८/५१	१६/३	१२/३०	०/५२
२८	१२/५४	१२/४०	५/१४	२/२७	२/५१	३/६	६/२७	१/२०	६/११	१६/८	१२/१०	१/२२
२९	१३/६	१३/३४	४/५६	२/३६	२/४४	३/१८	६/२६	१/३	६/३१	१६/१३	११/५०	१/५१
३०	१३/१६		४/३८	२/४४	२/३५	३/३०	६/२५	०/४५	६/५१	१६/१७	१२/६	२/२०
३१	१३/२६		४/२०					०/२७		१६/२०		२/४६

अक्षांशादि सारणी

अण्डेमान एवं निकोवार द्वीपसमूह (Andaman & Nicobar Islands)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
क्काना	09	07	92	49	41	16
कोयहोआ	08	12	93	29	43	56
कारनिकोबार द्वी.	09	10	92	47	41	08
चनुम्ना	08	19	93	05	42	20
नचुग	10	45	92	22	39	28
पोर्टब्लेअर	11	41	93	43	40	52
टिल्लानचांग(द्वी.)	08	30	93	37	44	28
डाकोआंक	07	02	93	43	44	52
निकोबारछोटा(द्वी)	07	20	93	40	44	40
हैवलॉक (द्वी)	07	20	93	40	44	40
हैवलॉक (द्वी).	11	58	93	00	42	00

आन्ध्र प्रदेश (ANDHRA PRADESH)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Addanki	15	50	80	01	10	00
Addatigala	17	31	82	03	01	48
Adilabad	19	37	78	30	-16	00
Adoni	15	38	77	19	-20	44
Alampur	15	55	78	11	-17	16
Allagadda	15	08	78	30	-16	00
Allur	14	41	80	04	-09	44
Alur	15	24	77	15	-21	00
Amalapuram	16	36	82	03	-01	48
Amaravati	16	50	80	20	-08	40
Anakapalle	17	42	83	03	+02	12
Anantapur	14	42	77	05	-19	29
Armur	18	49	78	15	-17	00
Atmakur (Kurnool)	15	56	78	43	-15	08
Atmakur (Nellore)	14	39	79	43	-11	08
Balkonda	19	05	78	20	-16	40
Banganapalle	15	19	78	17	-16	52
Banswada	18	20	77	54	-18	24
Bapatla (Parkasam)	15	54	80	30	-08	00
Bellamkonda	16	35	80	04	-09	44
Bhadrachalam	17	40	80	56	-06	16
Bhainsa	19	08	77	59	-18	04
Bhaisa	19	00	77	59	-18	04
Bhimavaram	16	34	81	35	-03	40
Bhongir	17	33	78	55	-14	20
Bobbili	18	34	83	25	-03	40
Bodhan	18	40	77	51	-18	36
Bukkapatanm	14	12	77	46	-18	56
Chandragiri	13	36	79	20	-12	40
Chandru-patia	18	34	80	23	-08	28
Chinna-Ganjam	15	43	80	26	-08	16
Chinnur	19	07	79	43	-11	08
Chittoor	13	12	79	07	-13	32
Chodavaram	17	28	81	50	-02	40
Coringa	16	48	82	16	-00	56
Cuddapah	14	30	78	50	-14	32
Dharmarao-pet	18	23	79	54	-10	24
Darsi	15	47	79	43	-11	08
Devalpalli	16	57	79	28	-12	08
Devarkonda	16	43	78	58	-14	08
Dharmava-ram	14	24	77	00	-22	00
Dornakal	17	26	80	13	-09	08
Dhumma-gudum	17	51	80	57	-06	12
Elamanchlli	17	33	82	55	+01	40
Elluru	16	45	81	10	-05	20
Gadwal	16	15	77	50	-18	40
Gajapathina-garam	18	20	83	29	+03	56
Giddalur	15	23	78	56	-14	16
Godavricape	16	41	82	25	-00	20
Golkonda	17	24	78	27	-16	12
Gooty	15	08	77	41	-19	16
Gudiwada	16	27	81	00	-06	00
Gudur (Kurnool)	14	10	79	54	-10	24
Gudur-(Nellore)	15	45	78	30	-16	00
Guntakal	15	11	77	24	-20	24
Guntur	16	18	80	29	-08	04
Guruzalla	16	32	78	56	-14	16
Hanam-konda	18	04	79	34	-11	44
Hasanparti	18	10	79	46	-10	56
Hindupur	13	49	77	32	-19	52
Huzurabad	18	13	79	22	-12	32
Huzurnagar	17	02	79	58	-10	08
Hyderabad	17	22	78	26	-16	16
Ichchapuram	19	10	84	43	+08	52
Jaggayyapeta	16	52	80	08	-09	28
Jagtial	18	48	79	09	-13	24
Jammala-madugu	14	51	78	25	-16	20
Jangaon (Warrangal)	17	44	79	10	-13	20
Jangaon-(adilabad)	19	22	79	21	-12	36
Kakinada	16	57	82	15	-0	00
Kalabgur	17	39	78	02	-17	52
Kalahasti	13	48	79	42	-11	12
Kalyandurg	14	33	77	05	-21	04
Kamalpuram	14	38	78	40	-15	20
Karnul	16	29	78	20	-16	40
Kaligiri	14	51	79	40	-11	20
Kalingapatnam	18	20	84	10	+06	40
Kamareddi	18	19	78	22	-16	32
Kambham	15	34	79	19	12	44
Kandukur	15	12	79	57	-10	12
KarimNagar	18	27	79	06	-13	36
Kaulas	18	19	77	38	-19	28
Kavali	14	57	80	03	-09	48
Kohir	17	36	77	38	-19	38
Koilkonda	16	45	77	50	-18	40

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Koilkuntla	15	27	78	16	-16	56
Kolhapur	16	06	78	16	-16	56
Kondapalle	16	38	80	36	-07	36
Korangal	17	08	77	36	-19	36
Koratla	18	43	78	41	-15	16
Kosgi (Mehboob-nagar)	17	01	77	43	-19	08
Kosgi (Kurnool)	15	51	77	16	-20	56
Kotipalle	16	44	82	03	-01	48
Kottagudom	17	30	80	39	-07	24
Kovbur	17	01	81	44	-03	04
Kuppam	12	45	78	20	-16	40
Kuppiti	18	13	83	58	+05	52
Kurnool	15	50	78	03	-17	48
Kurupam	18	56	83	37	+04	28
Machili-patnam	16	09	81	12	-05	12
Mahabuba-bad	17	37	80	01	-09	56
Mahabu nagar	16	44	77	59	-18	04
Mahadeopur	18	44	80	04	-09	44
Makhtal	16	30	77	28	-20	08
Mancheral	18	52	79	26	-12	16
Mangahpett	18	16	80	33	-07	48
Mangalagiri	16	29	80	35	-07	40
Manthani	18	40	79	40	-11	20
Markapur	15	44	79	17	-12	52
Medak	18	03	78	15	-17	00
Medchal	17	41	78	27	-16	12
Mirijguda	16	53	79	33	-11	48
Mudhol	19	00	77	54	-18	24
Mulug	18	14	79	57	-10	12
Nagar-jun-sagar Dam	16	50	79	17	-12	52
Nagawaram	17	16	81	22	-04	32
Nalgonda	17	04	79	02	-13	52
Nandigama	16	46	80	19	-08	44
Nandikotkur	15	52	78	17	-16	52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Nandyal	15	29	78	30	-16	00
Narasan-napeta	18	25	84	03	+06	12
Narasapur	16	27	81	45	-03	00
Narasaraopet	16	14	80	06	-09	36
Narayanpet	16	46	77	27	-20	12
Narayanpet	16	46	77	27	-20	12
Narsapur	19	03	78	10	-17	20
Narsipatnam	17	40	82	38	+00	36
Nayudupet	13	56	80	00	-10	00
Nayudupet	13	56	80	00	-10	00
Nellore	14	27	80	00	-10	00
Nidagunda	17	46	79	15	-13	00
Nirmal	19	06	78	25	-16	20
Nizamsa-garlake	18	10	77	58	-18	08
Nizamabad	15	40	78	10	-17	20
Niozam-patnam	15	54	80	44	-07	04
Ongole	16	30	80	06	-09	36
Pakala	13	30	79	00	-14	00
Palakollu	16	31	81	48	-02	48
Palkonda	18	36	83	48	+05	12
Kalinga-patnam	18	21	84	11	+06	44
Parvathi-puram	18	48	83	28	+03	52
Patancheru	17	37	78	20	-16	40
Pedapalli	18	40	79	25	-12	20
Peddapuram	17	06	82	13	-01	08
Pentakota	17	10	82	42	+00	48
Penugonda	16	40	81	44	-03	44
Penukonda	14	05	77	38	-19	28
Pithapuram	17	07	82	20	-00	40
Podili	15	36	79	39	-11	24
Polavaram	17	15	81	43	-03	08
Porumamilla	15	01	79	00	-14	00
Proddatur	14	45	78	34	-15	44
Pulivendla	14	26	78	16	-16	56
Pullampet	14	10	79	15	-13	00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Punganuru	13	25	78	35	-15	40
Pyapali	15	14	77	47	-18	52
Rajahmundry	17	01	81	48	-02	48
Rajampet	14	11	79	10	-13	20
Ramachandra-puram	16	54	82	03	-01	48
Ramalakotta	15	35	78	02	-17	52
Ramayam-pet	18	05	78	25	-16	20
Rapur	14	12	79	35	-11	36
Rayachoti	14	04	78	50	-14	40
Rayadurg	14	42	76	53	-22	28
Razam	18	27	83	48	+05	12
Rekapalle	17	33	81	20	-04	40
Renigunta	13	40	79	31	-11	56
Repur	14	12	79	36	-11	36
Sadaseopet	17	40	77	59	-18	04
Salur	18	31	83	16	+03	04
Samalkot	17	03	82	15	-01	00
Sangareddipet	17	35	78	04	-17	44
Santepilly	18	05	83	47	+05	08
Sattenapalle	16	27	80	10	-09	20
Secundrabad	17	27	78	30	-16	00
Shahabad	17	08	76	56	-22	16
Shamsabad	17	13	78	42	-15	12
Siddhavaram	14	28	79	01	-13	56
Siddipet	18	07	78	51	-14	36
Sirpur	19	32	79	45	-11	00
Sirsilla	18	24	78	48	-14	48
Sirvel	15	20	78	32	-15	52
Sitarampuram	15	11	79	10	-13	20
Sri Harikota	13	45	80	20	-08	40
Srikakulam	18	19	84	00	+06	00
Srikalhasti	13	48	79	42	-11	12
Sri Sailam	16	06	78	54	-14	24
Srungava-rapukota	18	05	83	11	+02	44
Suluru	13	42	80	01	-09	56
Suriapet	17	09	79	19	-12	44
Tadpatri	14	55	77	19	-18	04

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्वी) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Tandur-						
(KarimNagar)	19	10	79	25	-12	20
Tandur(Hyd.)	17	17	77	30	-20	00
Tekmal	17	59	78	02	-17	53
Tanuku	16	45	81	45	-03	00
Tenali	16	15	80	36	07	36
Tirupati	13	39	79	20	-12	40
Tiruttani	13	12	79	35	-11	40
Tudaram	18	51	79	30	-12	00
Turi	17	21	82	33	+00	12
Udayagiri	14	54	79	18	-12	48
Uravakonda	14	57	77	15	-21	00
Vardannapet	17	47	79	34	-11	44
Vayalpad	13	48	78	40	-15	20
Veldurti	15	35	77	55	-18	20
Velpura	16	53	81	38	-03	28
Vemalwada	18	30	78	53	-14	28
Vempalle	14	20	78	26	-16	16
Venktagiri	13	59	79	35	-11	40
Venkatagiri-						
(Kota)	13	00	78	34	-15	44
Vishakha-						
patnam	17	42	83	18	+03	12
Vijayavada	16	31	80	39	-07	24
Vizianagarom	18	07	83	25	+03	40
Vontimitta	14	24	79	00	-14	00
Vuyyuru	16	23	80	51	-06	36
Waltair	17	44	83	23	+03	32
Wanparti	16	22	78	04	-17	44
Warangal	18	00	79	40	-11	20
Yanam	16	44	82	13	-01	08
Yemagudeon	17	01	81	34	-03	44
Zahirabad	17	41	77	37	-19	32
अरुणाचल प्रदेश						
Along	28	12	94	96	49	04
Anini	28	50	95	54	53	36
Basar	27	58	94	42	48	48
Bomdila	27	19	92	25	39	40
Bomdo	28	43	94	52	49	28
Bruini	29	10	96	11	54	44

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्वी) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Changlang	27	05	95	38	52	32
Daporijo	28	01	94	10	46	40
Gocham	27	44	94	12	46	48
Itanagar	27	05	93	35	44	20
Kalaktang	27	07	92	07	38	28
Karko	28	33	95	04	50	16
Kherewa	27	37	93	03	42	12
Khonsa	26	58	95	32	52	08
Kimin	27	20	93	58	45	52
Minutang	28	13	96	32	56	08
Pangal						
MehboobNagar	16	17	78	05	-17	40
Pangal-	17	10	79	18	-12	48
(Nalgonda)						
Palin	27	42	93	35	44	20
Pangin	28	14	94	58	49	52
Pangin	28	14	94	58	49	52
Pasighat	28	05	95	20	51	20
Riang	27	32	92	55	41	40
Seppa	27	21	93	04	42	16
Tali	28	03	93	39	44	36
Tato	28	38	94	19	47	16
Tawal	27	46	96	50	57	20
Tawang	27	35	91	52	37	28
Watong	28	07	96	58	57	52
Ziro	27	32	93	47	45	08
असाम (Assam)						
Abhaypuri	26	20	90	40	32	40
Along	28	12	94	52	49	28
Amatulla	26	59	92	06	38	24
Ameengaon	26	13	91	45	37	00
Asnoli	28	44	95	35	52	20
Balipada	26	09	92	09	38	36
Barpathar	26	16	93	50	45	20
Barpeta	36	20	91	03	34	12
Bishemnagar	28	02	96	01	54	04
Bishnath	26	37	93	11	42	44
Boga	28	25	94	39	48	36
Bomdilla	27	15	92	25	39	40
Bongaigaon	26	30	90	35	32	20
Brahmkund	27	52	96	23	55	32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्वी) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Chabua	27	30	95	09	50	36
Chengele	28	44	96	18	55	12
Chonkham	27	48	96	03	54	12
Chutia	26	45	93	00	42	00
Cosigon	26	50	94	17	47	08
Damorh	28	24	95	17	51	08
Damga	26	51	91	26	35	44
Dhaluakhana	17	13	94	26	47	44
Dhekijuli	26	49	92	28	39	52
Dhemoji	27	28	94	37	44	28
Dhuburi	26	02	92	02	30	08
Dibrugarh	27	29	94	56	49	44
Digboi	27	33	95	40	52	40
Dimapur	25	54	93	45	45	00
Diphu	25	50	93	25	43	40
Dispur	26	09	91	50	37	20
Dudhnai	25	59	90	43	32	52
Dullabchara	24	25	92	22	39	28
Dumduma	22	35	88	23	23	32
Fakirgram	26	22	90	15	31	00
Gauhati	26	10	91	45	37	00
Goalpara	26	10	90	41	32	44
Golaghat	26	30	93	59	45	56
Guwahati	देखें Gauhati					
Gyarisingh	28	59	95	44	52	56
Haflong	25	11	93	02	42	08
Hailakandi	24	41	92	34	40	16
Hapoli	27	43	93	50	45	20
Harangajo	25	07	92	51	41	24
Helam	27	50	93	20	43	20
Helem	26	52	93	30	44	00
Jaipur	27	14	95	25	51	36
Jaram	28	02	94	10	46	40
Jogighopa	26	14	90	35	32	20
Jorhat	26	45	94	16	47	04
Kalkalighat	24	31	92	16	39	04
Kalkalighat	24	31	92	16	39	04
Kambang	28	12	94	40	48	40
Karimganj	24	48	92	30	40	00
Kokrajhar	26	25	90	18	31	12

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Kronli	28	25	95	50	53	20
Laju	26	55	94	36	52	24
Lakhimpurn	27	14	94	07	46	28
Langting	25	28	93	10	42	40
Lumding	25	46	93	10	42	40
Mahur	25	11	93	07	42	28
Maibang	25	16	93	10	42	40
Mairabari	26	28	92	26	39	44
Makum	27	28	95	28	51	52
Mancachar	25	35	89	54	29	36
Mara	28	11	94	14	46	56
Mangaldi	26	28	92	05	38	20
Marigaon	26	15	92	19	39	16
Margherita	27	17	95	40	52	40
Minutang	28	14	96	32	56	08
Mukki	28	04	94	16	47	04
Murkong-Selek	27	49	95	16	51	04
Nagaon	26	21	92	45	41	00
Nakhola	26	07	92	11	38	44
Nalbari	26	26	91	35	36	20
Namrup	27	12	95	20	51	20
Ninging	28	58	94	49	49	16
Pasighat	28	01	95	20	51	20
Patakata	25	50	90	00	30	00
Patharughat	26	21	91	54	37	36
Pointong	27	33	92	30	40	00
Raha	26	19	92	30	40	00
Ramsing	28	40	94	58	49	52
Rangapara	26	50	92	44	40	56
Rangia	26	28	91	35	36	20
Rikor	28	50	94	51	49	24
Ripu	26	45	90	09	30	36
Rupa	27	19	92	21	39	24
Rushon	28	50	95	59	53	56
Sadiya	27	49	95	42	52	48
SaikohaGhat	27	46	95	38	52	32
Shaluni Mt.	28	58	96	02	54	08
Sibsagar	26	58	94	39	48	36
Silchar	24	49	92	51	41	24
Silghat	26	36	92	56	41	44
Singrimari	25	45	89	57	29	48
Sonari	27	00	95	04	50	16
Tangla	26	40	91	57	37	48
Tawang	27	34	91	54	37	36
Tezpur	26	38	92	49	41	16
Tinsukia	27	28	95	20	51	20
Udalguri	26	46	92	08	38	32
Umlaiteng	25	48	92	03	38	12

त्रिपुरा (Tripura)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Agartala	23	50	91	25	35	40
Ampi Bazar	23	40	91	38	36	32
Barjala	23	37	91	21	35	24
Bisalgarh	23	42	91	17	35	08
Belonia	23	15	91	28	35	52
DharmaNagar	24	22	92	10	38	40
Dumbur	23	27	91	42	36	48
Jatrapur	23	24	91	17	35	08
Kamalpur	24	12	91	50	37	20
Khowai	24	04	91	36	36	24
Kumarghat	24	07	92	02	38	08
Lungthung	23	13	91	33	36	12
Manu Bazar	23	03	91	37	36	28
Melaghar	23	29	91	20	35	20
Puran-Rajbari	23	10	91	21	35	24
Radhakis-horepur	23	32	91	30	36	00
Sabrom	23	01	91	43	36	52
Sidhai	23	58	91	27	35	48
Teliamura	23	51	91	37	36	28
Tiratha-mukh	23	20	91	47	37	08
Udaipur	23	32	91	29	35	56

नागालैण्ड (NAGALAND)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Bhandari	26	18	94	08	46	32
Chantongia	26	35	94	40	48	40
Chizami	25	36	94	23	47	32
Dimapur	25	53	93	43	44	52
Hemma	25	22	93	37	44	28
Kohima	25	39	94	08	46	32
Mokokchung	26	19	94	32	48	08
Mon	26	42	95	04	50	16
Naginmara	26	47	94	42	48	48
Phek	25	42	94	28	27	52
Tuensang	26	17	94	48	49	12
Wokha	26	07	94	17	47	08
Zunheboto	26	02	94	31	48	04

मणिपुर (MANIPUR)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Bishnupur	24	38	93	47	45	08
Chakpik-rong	24	12	93	57	45	48
Chandel	24	15	94	10	46	04
Chingai	25	15	94	31	48	04
Chudach-andour	24	19	93	40	44	40
Henglep	24	28	93	25	43	40
Hanspip	24	07	93	13	42	52
Imphal	24	48	93	54	45	36
Kasom-Khullan	24	40	94	18	47	12
Mayang	24	35	93	55	45	40
Moirang	24	28	93	48	45	12
Mom New	24	05	93	58	45	52
Moreh	24	15	94	18	47	12
Nungba	24	49	93	27	43	48
Parbung	24	14	93	07	42	28
Senapati	25	14	94	07	46	28
Tadubi	25	27	94	09	46	36
Tamei	25	08	93	41	44	44
Tamma	25	10	93	45	45	00
Tamenglong	24	58	93	31	44	04
Tengnoupal	24	23	94	10	46	40
Thinghot	24	07	93	37	44	28
Thoubal	24	38	94	02	46	08
Tousem	25	07	93	29	43	32
Ukhrul	25	07	94	23	47	32

मिज़ोरम (MIZORAM)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Aizawl	23	36	93	00	42	00
Champhai	23	27	93	20	43	20

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Chawngte	22	37	92	42	40	48
Demagiri	22	52	92	27	39	48
Lunglei	22	53	92	40	41	16
Lungsen	22	53	92	35	40	20
Phaileng	23	41	92	30	40	00
Saiha	22	28	92	58	41	52
Seling	23	43	92	52		28
Shermun	22	20	92	38	40	32

मेघालय (MEGHALAYA)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Amlarem	25	18	92	07	32	28
Baghmara	25	12	90	38	32	32
Cherrapunji	25	17	91	42	36	48
Jowai	25	28	92	13	38	52
Khliehriat	25	20	92	25	39	40
Laskein	25	30	92	26	39	44
Mairang	25	33	91	35	36	20
Nongstoin	25	31	91	16	35	04
Riangdo	25	38	91	07	34	28
Rongram	25	37	90	17	31	08
Selsella	25	40	90	03	30	12
Shillong	25	36	91	53	37	32
Tura	25	30	90	13	30	52
William-Nagar	25	32	90	33	32	12
Zikzak	25	23	89	53	29	32

सिक्किम (SIKKIM)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Chhubakha	27	52	88	40	24	40
Gangtok	27	20	88	36	24	24
Gezing	27	18	88	13	22	56
Gogong	28	01	88	32	24	08
Goma	27	52	88	13	22	52
Gyalshing	27	20	88	14	22	56
Kondri	27	23	88	17	23	08
Lachen	27	46	88	31	24	04
Lachung	27	43	88	43	24	52
Lambi	27	32	88	10	22	40
Lungma	28	06	88	33	24	12
Maidong	27	25	88	20	23	20
Mangan	27	31	88	35	24	20
Namchi	27	12	88	24	23	36
Nathang	27	18	88	47	25	08
Naya Bazar	27	08	88	15	23	00
Rangli	27	13	88	40	24	40
Rangpo	27	12	88	28	23	52
Tashiding	27	20	88	17	23	08
Temi	27	14	88	23	23	32
Yaksham	27	24	88	13	22	52
Yumthang	27	49	88	42	24	48
Yathang	27	52	88	32	24	08

उड़ीसा (ORISSA)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Ambo	21	08	86	16	+15	04
Ampani	19	34	82	40	+00	40
Anandapur	21	14	86	10	+14	40
Angul	20	48	85	04	+10	04
Athamalik	20	55	84	30	+08	00
Athgarh	20	31	85	41	+12	44
Badamgarh	21	50	85	22	+11	28
Balangir	20	40	83	29	+03	56
Balasore	21	31	86	59	+17	56
Baleshwar	21	31	86	54	+17	36
Balligurha	20	12	82	58	+01	52
Banapur	19	50	85	14	+11	00
Bangriposi	22	10	86	32	+16	08
Banki	20	20	85	35	+12	20
Baragarh	21	25	83	35	+04	20
Barakot	21	33	85	01	+10	04
Barhamba	20	24	85	22	+11	28
Baripada	21	56	86	48	+17	12
Bauda	20	50	84	52	+09	28
Brahampur	19	21	84	51	+09	24
Bhadrakh	21	03	86	33	+16	12
Bhawanipatna	19	58	83	10	+02	40
Bhuban	20	05	85	51	+13	24
Bhubaneshwar	20	13	85	50	+13	20
Borasambar	20	58	83	00	+02	00
Chhatrapur	19	21	85	00	+10	00
Chikatake	19	35	85	20	+11	20
Cuttack	20	26	85	56	+13	44
Daspalla	20	20	84	58	+09	52
Deogarh	21	32	84	46	+09	04
Dhamra	20	49	86	58	+17	52
Dharamsala	20	45	86	13	+14	52
Dhenkanal	20	40	85	39	+12	36
Dholpur	20	38	84	27	+07	48
Galleri	20	06	84	36	+08	24
Ganjam	19	22	85	00	+10	00
Gantapara	20	34	83	42	+04	48
Gopalpur	19	20	85	00	+10	00
Gunupur	19	04	83	52	+05	28
Hindol	20	36	85	14	+10	56
Hirakundkhm	21	31	83	57	+05	48
Honda	21	22	85	39	+12	36
Jagatsinghpur	20	15	86	10	+14	40
Jajpur	20	50	86	25	+15	40
Jaleshwar	21	48	87	14	+18	56
Jeypore	18	52	82	38	+00	32
Jharsuguda	21	56	84	04	+06	16
Junagarh	19	50	83	00	+02	00
Kankhyamgar	20	52	85	30	+12	00
Kanhpur	20	25	85	15	+11	00
Karanjia	21	43	87	07	+18	20
Kendrapara	20	30	86	25	+15	40
Kendujhargarh	21	30	85	30	+12	00
Khandparah	20	15	85	11	+10	44
Khariar	20	19	82	50	+01	20
Khichina	21	54	85	54	+13	36
Khordha	20	10	85	42	+12	48
Khurda	20	10	85	42	+12	48
Kolabira	21	49	84	14	+06	56
Konark	19	54	86	07	+14	28
Koraput	18	48	82	41	+00	44
Kotapad	19	04	82	26	-00	16
Laichanpur	21	12	86	42	+16	48
Madanpur	20	20	83	35	+04	20
Mahendragiri Mt.	19	00	84	19	+07	16
Malkanagiri	18	22	81	57	+02	12

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Mankam-acha Mt.	21	46	85	16	+11	04
Meghas-ani Hills	21	38	86	26	+15	44
Milsika	20	19	83	50	+05	20
Mundagor	20	01	83	30	+04	00
Nabaran-gapur	19	15	82	39	+00	36
Nandapur	18	32	82	52	+01	28
Naraj Dam	20	25	85	46	+13	04
Narasingh-apura	20	28	85	08	+10	32
Nawapara	20	46	82	33	+00	12
Nayagarh	20	10	85	08	+10	32
Nilgiri	21	29	86	49	+17	16
Nunkapasi	20	54	84	40	+08	40
Pallahara	21	28	85	10	+10	40
Palmyras Pt.	20	46	87	02	+18	08
Pappadahandi	19	22	82	34	+00	16
Paradevip	20	17	86	42	+16	48
Parala-Khemundi	18	45	84	10	+06	40
Patna	20	43	83	12	+02	48
Phulbani	20	30	84	18	+07	12
Pottangi	18	35	83	03	+02	12
Puri	19	48	85	52	+13	28
Raigarh	19	51	82	06	-01	36
Raja-Ranapur	20	08	85	22	+11	28
Ramagiri-Udayagiri	19	04	83	55	+05	40
Rampur	21	05	84	22	+07	28
Raurkela	22	25	85	00	+10	00
Rayagada	19	10	83	28	+03	52
Rhambha	19	31	85	10	+10	40
Sambalpur	21	28	84	01	+06	04
Sarada	19	45	84	29	+07	56
Sohela	21	18	83	24	+03	36
Sonapur	20	50	83	58	+05	52
Sundargarh	22	07	84	00	+06	00
Surada	19	46	84	29	+07	56
Talcher	20	57	85	18	+11	12
Tigiria	20	28	84	34	+08	16
Tikarpara-Dam	20	32	84	56	+09	44
Titilagarh	20	18	83	11	+02	44
Tumudib-andh	19	59	83	46	+05	04
Udayagiri	19	08	84	10	+06	40
Umarkot	19	39	82	18	-00	48
Uperbada	22	10	86	07	+14	28
उत्तरप्रदेश और उत्तरांचल						
अकबरपुर	26	26	82	33	+00	12
अच्छनेरा	27	11	77	46	-18	56
अतरौली	28	02	78	17	-16	52
अनूपशहर	28	22	78	16	-16	56
अफजलगढ़	29	24	78	41	-15	16
अमरोहा	28	54	78	30	-16	00
अमेठी	26	08	81	50	-02	40
अयोध्या	26	48	82	12	-01	12
अल्लापुर	27	54	79	19	-12	44
अलीगंज	27	30	79	11	-13	16
अलीगढ़	27	54	78	05	-17	40
अल्मोड़ा	29	37	79	40	-11	20
अहरौरा	25	01	83	01	+02	04
आगरा	27	10	78	05	-17	40
आजमगढ़	26	04	83	13	+02	52
इटावा	26	47	79	02	-13	52
इतवा	27	20	82	42	+00	48
इलाहाबाद	25	28	81	54	-02	24
इशानगर	27	54	81	13	-05	08
उझानी	28	01	79	01	-13	56
उत्तरकाशी	30	18	78	27	-16	12
उत्तरौला	27	19	82	28	-00	08
उन्नाव	26	32	80	30	-08	00
उसका	27	14	83	10	+02	40
ऋषिकेश	30	07	78	18	-15	12
एटा	27	35	78	40	-15	20
ऐतमादपुर	27	15	78	12	-17	12
औरैया	26	28	79	31	-11	56
औराई	25	59	79	30	+12	00
कच्छवा रोड	25	13	82	43	+00	52
कतरनियां घाट	28	20	81	09	-05	24
कन्नौज	27	04	79	58	-10	28
करहल	27	01	79	57	-14	12
कर्णप्रयाग	30	13	79	17	-12	52
कर्वी	25	14	80	54	-06	24
कसिया	26	45	83	55	+05	40
काठगोदाम	29	05	79	52	-10	32
कादीपुर	26	10	82	23	-00	28
कानपुर	26	28	80	21	-08	36
काम्पिल	27	37	79	17	-12	52
काल्पी	26	07	79	44	-11	04
काशीपुर	29	13	78	57	-14	12
कसिया	26	45	83	55	+05	40
कासगंज	27	47	78	39	-15	24
किच्छौच्छा	26	24	82	50	+01	20
कीरतपुर	29	31	78	12	-17	12
कुण्डा	25	43	81	31	-03	56
कुरौली	27	24	78	59	-14	04
कुलपहाड़	25	19	79	39	-11	24
कूँच	25	58	79	08	-13	28
केदारनाथ	30	44	79	04	-13	44
कैसरगंज	27	18	81	33	-03	48
कैप्टनगंज	26	55	83	42	+04	48
कैराना	29	24	77	12	-21	12
कायमगंज	27	34	79	21	-12	36
कोटद्वार	29	45	78	82	-15	52
कौपागंज	26	01	83	34	+04	16
कोरा	26	05	80	26	-08	16
कोरियालाट	28	22	81	04	-05	44
कोसीकलाँ	27	48	77	26	-20	16
खतौली	29	17	77	43	-19	08
खागा	25	47	81	06	-05	36
खिलचीपुर	24	20	76	34	-23	44
खुर्जा	28	13	77	50	-18	40
खेड़ी	27	54	80	48	-06	48
खैर	27	57	77	50	-18	40
खैरागढ़	26	56	77	52	-18	32
खैराबाद	27	32	80	45	-07	00

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
गंगापुर	26 29	76 43	-23 08	जसवन्त नगर	26 53	78 55	-14 20	नरैना	25 11	80 29	-08 04
गंगोत्तरी	30 36	79 02	-13 52	जहांगीराबाद	28 25	78 06	-17 36	नरोरा (राजघाट)	28 11	78 12	-17 12
गंगोह	29 46	77 15	-21 00	जहानाबाद	25 13	84 59	+09 56	नवाबगंज	28 33	79 38	-11 28
गंजडुण्डवाड़ा	27 44	78 57	-14 12	जायस	26 15	81 32	-03 52	नवाबगंज-गोंडा	26 52	82 08	-01 28
गढ़मुक्तेश्वर	28 48	78 06	-17 36	जालौन	26 09	79 21	-12 36	नवाबगंज-			
गरौठा	25 34	79 18	-12 48	जिगनी	25 44	79 25	-12 20	(गोरखपुर)	26 56	82 13	-01 08
गाजियाबाद	28 40	77 26	-20 16	जोशीमठ	30 34	79 34	-11 44	नानपाड़ा	27 52	81 30	-04 00
गाजीपुर	25 35	83 34	+04 16	जौनपुर	25 44	82 41	+00 44	निघासन	28 14	80 52	-06 32
गुन्नौर	28 14	78 28	-16 08	झवानी	27 36	84 31	+08 04	निहटौर	29 20	78 23	-16 28
गुरसहायगंज	25 37	79 11	-13 16	झांसी	25 26	78 35	-15 40	नैनीताल	29 23	79 30	-12 00
गुलावठी	28 36	77 47	-18 52	टनकपुर	29 05	80 07	-09 32	नौगढ़ (बस्ती)	27 18	83 05	-69 30
गोण्डा	27 08	82 01	-01 56	टप्पल	28 03	70 35	-19 40	नौतनवा	27 26	83 25	+02 20
गोरखपुर	26 45	83 22	+03 28	टाण्डा	26 33	82 39	+00 36	पट्टी	25 55	82 12	-01 12
गोलागोकर्णनाथ	28 05	80 28	-08 08	(अकबरपुर)-				पडरौना	26 55	83 59	+05 56
गोवर्धन	27 30	77 28	-20 08	टाण्डा	28 59	78 56	-14 16	पयागपुर	27 25	81 48	-02 48
गौरीफण्टा	28 41	80 33	-07 48	टूण्डला	27 12	78 17	-16 52	पवायां	28 04	80 06	-09 36
चकराता	30 42	77 51	-18 36	टेहरी(गढ़वाल)	30 20	78 53	-14 28	पिथौरागढ़	29 32	80 15	-09 00
चकला	25 04	83 12	+02 48	टैकारी	24 56	84 50	+09 20	पिलखुआं	28 43	77 39	-19 24
चकिया(चन्दौली)	26 25	85 03	+10 12	ठाकुरद्वारा	29 12	78 51	-14 36	पिहानी	27 38	80 12	-09 12
चन्दनचौकी	28 33	80 47	-06 52	डिबाई	28 13	78 15	-17 00	पीपलकोटी	30 26	79 27	-12 12
चन्दौसी	28 27	78 46	-14 56	डेरापुर	26 26	79 48	-10 48	पीलीभीत	28 38	79 51	-10 36
चमोली	30 24	79 17	-12 52	ताजपुर	29 10	78 29	-16 04	पुखरायां	26 14	79 51	-10 36
चम्पावत	29 20	80 06	-09 36	तालबहाट	25 03	78 27	-16 12	पुरवा	26 28	80 50	-06 40
चरखारी	25 24	79 45	-11 00	तिहार	27 58	79 44	-14 04	पूरनपुर	26 28	80 50	-06 40
चित्रकूट धाम	25 11	80 52	-06 32	तेजम	29 57	80 08	-09 28	पैलानी	28 31	80 09	-09 24
चिरगांव	25 35	78 49	-14 44	दतिया	25 42	78 30	-16 00	पौड़ीगढ़वाल	25 44	80 23	-08 28
चुनार	25 08	82 56	+01 44	दरियाबाद	26 53	81 33	-03 48	प्रतापगढ़	25 34	81 59	-02 04
चोपन	24 31	83 02	+02 28	दाऊदनगर	25 02	84 24	+07 36	फतेहपुर	25 56	80 52	-06 32
छपरा	24 40	76 50	-22 40	डालमऊ	26 04	81 02	-05 52	फतेहपुरसीकरी	27 06	77 40	-19 20
छाता	27 44	77 28	-20 08	दुद्धी	24 13	83 15	+03 00	फतेहाबाद	27 01	78 19	-16 44
छितौनी घाट	27 09	83 58	+05 52	देवगांव	25 45	83 00	+02 00	फरीदनगर	28 46	77 37	-19 32
छिबड़ामऊ	27 09	79 31	-11 56	देवबन्द	29 42	77 41	-19 16	फरीदपुर	28 13	79 33	-11 48
जगदीशपुर	25 29	84 25	+07 40	देवरिया	26 23	83 42	+04 48	फर्रुखाबाद	27 24	79 34	-11 44
जंघई	25 34	82 17	-00 52	देहरादून	30 19	78 02	-17 52	फिरोज़ाबाद	27 09	78 24	-16 24
जमुनोत्तरी	31 01	78 27	-16 12	दोहरी घाट	26 16	83 31	+04 04	फूलपुर	25 33	82 06	-01 36
जरवा	27 39	82 31	+00 04	धनौरा	28 58	78 15	-17 00	फैज़ाबाद	26 47	82 08	-01 28
जलालपुर	26 19	82 44	+00 56	धामपुर	29 19	78 31	-15 56	बगहा	27 06	84 05	+06 20
जलालाबाद	27 43	79 40	-11 20	नगीना	29 27	78 27	-16 12	बदायूं	28 03	79 07	-13 32
जलेसर	27 29	78 19	-16 40	नजीबाबाद	29 38	78 20	-16 40	बद्रीनाथ	30 44	79 29	-12 04
जसरा	25 17	81 48	-02 48	नरेन्द्रनगर	30 10	78 20	-16 40	बनारस	देखो वाराणसी		

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
वर्वाना	25	15	78	28	-16	08
वहजोई	28	24	78	37	-15	32
वहराइच	27	35	81	36	-03	36
वहादुरगंज	27	32	82	50	+01	20
वहेड़ी	28	47	79	30	-12	00
वरवासागर	25	23	78	44	-15	04
वरहज	26	16	83	45	+05	00
वरौट	29	06	77	16	-20	56
वलिया	25	45	84	10	+06	40
वरेली	28	22	79	27	-12	12
वलरामपुर	27	26	82	11	-01	16
वस्ती	26	48	82	42	+01	00
वाघपत	28	57	77	13	-21	08
वाड़ी	26	39	77	36	-19	36
वादशाहपुर	25	47	82	49	+01	16
वाँदा	25	29	80	20	-08	40
वारावांकी	26	55	81	12	-05	12
वालामऊ	27	15	80	23	-08	28
वांसगांव	26	32	83	27	+03	48
वांसडीह	25	55	84	14	+06	56
वांसी	27	11	82	56	+01	44
विजनौर	29	22	78	11	-17	16
विजोरी	28	06	82	20	-00	40
विठुर	26	37	80	19	-08	44
विंदकी	26	02	80	33	07	48
विधूना	26	49	79	31	-11	56
विलग्राम	27	11	80	02	-09	52
विलसी	28	08	78	55	-14	20
विलारी	28	38	78	48	-14	48
विलासपुर	28	53	79	16	-12	56
वीसलपुर	28	18	79	48	-10	48
वुलन्दशहर	28	24	77	54	-18	24
वेरी	28	42	76	35	-23	40
वेलारगंज	25	56	81	59	-02	04
वेला(प्रतापगढ़)	25	56	82	01	-01	56
वैज़नाथ	29	55	79	37	-11	32
भदोही	25	25	82	38	+00	19
भरथाना	26	45	79	14	-13	04
भाण्डेर	25	44	78	45	-15	00
भिनगा	27	43	81	56	-02	16

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
भैरहवा	27	31	83	24	-03	36
भो गांव	27	15	79	11	-13	16
भोवाली	29	23	79	31	-11	56
मऊऐम्मा	25	42	81	55	-02	20
मऊनाथभंजन	25	57	83	33	+04	12
मऊरानीपुर	25	15	79	08	-13	28
मखदूमनगर	26	28	82	46	+01	04
मंगलौर	29	48	77	52	-18	32
मछलीशहर	25	41	82	27	-00	12
मथुरा	27	28	77	41	-19	16
मन्दावर	29	30	78	08	-17	28
मवाना	29	06	77	55	-18	20
मलीहावाद	26	55	80	43	-07	08
मसूरी	30	27	78	07	-17	32
महमूदावाद	27	18	81	07	-17	32
महरौनी	24	35	78	43	-15	08
महाराजगंज	26	07	84	29	+07	56
महोवा	25	17	79	55	-10	20
मानिकपुर	25	04	81	07	-05	32
मिर्जापुर	25	09	82	35	+00	20
मिसरिख	27	27	20	31	-07	56
मुंगरा-वादशाहपुर	25	40	82	11	-01	16
मुज़फ्फरनगर	29	28	77	44	-19	04
मुग़लसराय	25	18	83	07	+02	28
मुवारकपुर	27	05	83	18	+03	12
मुरादावाद	28	50	78	47	-14	52
मुसाफिरखाना	26	22	81	47	-02	52
मस्करा	25	40	79	48	-10	48
मुहम्मदावाद	26	02	83	23	+03	32
मुहम्मदी	27	57	80	13	-09	08
मेजा	25	09	82	05	-01	40
मेरठ	28	59	77	45	-19	00
मेहनगर	25	53	83	07	+02	28
मेहन्दावाल	26	59	83	10	+02	40
मैनपुरी	27	14	79	01	-13	56
मैलानी	28	17	80	21	-08	36
मोहनलालगंज	26	41	81	02	-05	52
मौदहा	25	41	80	07	-09	32
मीरवाँ	26	25	80	55	-06	20

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
रसरा	25	51	83	51	+05	24
राजाखेड़ा	26	55	78	11	-17	16
राठ	25	25	79	34	-11	44
रानीखेत	29	39	79	33	-11	48
रावर्ट्सगंज-(सोनभद्र)	24	42	83	04	+02	16
रामनगर	29	24	79	07	-13	32
रामनगर	25	17	83	02	+02	08
रामपुर	28	49	79	02	-13	52
रामसनेहीघाट	26	45	81	30	-04	00
रायपुर	30	19	78	06	-17	36
रायवरेली	26	14	81	16	-04	56
रुड़की	29	52	77	53	-18	28
रुदौली	26	45	81	45	-03	00
रेणकूट	24	13	83	05	02	20
लक्सर	29	48	78	02	-17	52
लखनऊ	26	51	80	55	-06	20
लखीमपुर(खीरी)	27	57	80	49	-06	44
ललितपुर	24	22	78	28	-16	08
लहरपुर	27	38	80	57	-06	12
लालकुआं	29	04	79	33	-11	48
लूसा	24	53	82	53	+01	32
लैंस-डाऊन	29	50	78	41	-15	16
वाराणसी	25	20	83	00	+02	00
वृन्दावन	27	33	77	44	-19	04
शाहगढ़	24	19	79	08	-13	28
शाहगंज	26	03	82	41	+00	44
शाहजहांपुर	27	53	79	55	-10	20
शाहावाद	27	30	80	05	-09	40
शिकोहावाद	27	06	78	36	-15	36
शेरकोट	29	21	78	38	-15	28
श्रीनगर(गढ़वाल)	30	13	78	47	-14	52
सगरी	26	08	83	19	+03	16
सदावाद	27	27	78	03	-17	48
संभल	28	35	78	37	-15	32
सरधाना	29	09	77	37	-19	32
सरीला	25	47	79	42	-11	12
सलोन	26	03	81	25	-04	20
सहसवान	28	05	78	45	-15	00
सहारनपुर	29	58	77	23	-20	28

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
साफीपुर	26 47	80 23	-08 28	Arkalgud	12 47	76 03	25 48	Dalwad	16 35	74 38	31 28
साण्डिला	27 05	80 31	-07 57	Arsikere	13 20	76 13	25 08	Dandeli	15 15	74 37	31 32
सारनाथ	25 24	83 01	+02 04	Athni	16 44	75 07	29 32	Devangere	14 30	75 52	26 32
सासनी	27 43	78 05	-17 40	Atnur	17 16	76 27	24 12	Devadurga	16 25	77 00	22 00
सिकन्दराबाद	28 27	77 42	-19 12	Aurad	18 17	77 27	20 12	Devanhalli	13 14	77 40	19 20
सिकन्दराराऊ	27 42	78 27	-16 12	Badami	15 55	75 45	27 00	Dharwar	15 27	75 04	29 44
सिंगरामऊ	25 57	82 23	-00 28	Bagalkot	16 12	75 45	27 00	DodBallapur	13 18	77 32	19 52
सिधौली	27 15	80 50	-06 40	Basavana-				Gadag	15 26	75 42	27 12
सिरसागंज	27 03	78 42	-15 12	Bagepalli	13 46	77 28	18 48	Gangawati	15 30	76 36	23 36
सिराथू	25 40	81 17	-04 52	Bagevadi	16 34	76 04	25 44	Gauribi-			
सिसवाबाजार	27 09	83 46	+05 04	Bangion	12 58	77 38	19 28	danur	13 37	77 30	20 00
सीतापुर	27 32	80 43	-07 08	Banglore	13 00	77 35	19 40	Gokak	16 11	74 54	30 24
सुआर	29 02	79 03	-13 48	Bankapur	14 55	75 23	28 28	Gokarn	14 34	74 21	32 36
सुल्तानपुर	26 16	82 07	-01 32	Bantwal	12 54	75 05	29 40	Gubbi	13 20	76 56	22 16
सेमरिआ	24 16	79 54	-10 24	Belgaum	15 52	74 36	31 36	Gugi	16 43	76 42	23 12
सैदपुर	25 33	83 16	+03 04	Bellary	15 09	76 54	22 24	Gulbarga	17 20	76 54	22 24
सोनवां	27 40	81 45	-03 00	Belur	13 08	75 51	26 36	Gunderi	13 59	76 09	25 24
हमीरपुर	25 57	80 12	-09 12	Bhadravati	13 52	75 40	27 20	Gundlupet	11 48	76 41	23 16
हरदोई	27 25	80 10	-09 20	Bidar	17 56	77 39	19 24	Hadgalli	15 04	75 54	26 24
हरपालपुर	25 17	79 20	-12 40	Bijapur	16 50	75 45	27 00	Haliyal	15 21	74 51	30 36
हरिनागव	27 09	84 19	+07 16	Birur	13 38	76 00	26 00	Hampi	15 20	76 30	24 00
हरैया	26 47	82 36	+00 24	Byadgi	14 38	75 31	26 56	Harihar	14 33	75 52	26 32
हल्द्वानी	29 13	79 31	-11 56	Castle rock	15 25	74 22	32 32	Hariharpur	13 31	75 14	29 04
हलिया	24 48	82 20	-00 40	Challakere	14 19	76 40	23 20	Harnahalli	13 15	76 13	25 08
हसनपुर	28 43	78 17	-16 52	Chamrajnagar	11 56	77 00	22 00	Harpana-			
हाता	26 43	83 48	+05 12	Channagiri	14 03	75 54	26 24	halli	14 48	75 56	26 16
हाथरस-				Channapatna	12 35	77 14	21 04	Hassan	13 01	76 10	25 20
(महामायानगर)	27 36	78 06	-17 36	Channaray-				Haveri	14 46	75 26	28 16
हापुड़	28 43	77 50	-18 40	a patna	12 43	77 14	21 04	Hirekerur	14 29	75 26	28 16
हैदरगढ	26 37	81 22	-04 32	Chick-				Hiriyur	13 56	76 40	23 20
कर्णाटक (KARNATKA)				Ballapur	13 28	77 44	19 04	Hole-			
Agumbe	13 30	75 02	29 52	Chikma-				Narsipur	12 47	76 15	25 00
Aimangula	14 09	76 30	24 00	galur	13 19	75 47	26 52	Homnabad	17 44	77 11	21 16
Aland	17 35	76 35	23 40	Chiknayak-				Honavar	14 17	74 27	32 12
Alikhar	17 47	77 16	20 56	anhalli	13 26	76 40	23 20	Honawalli	13 20	76 22	24 32
Allikher	16 10	77 14	21 04	Chikodi	16 27	74 37	31 32	Honnali	14 15	75 41	27 16
Andola	16 55	76 45	22 52	Chincholi	16 29	77 26	20 16	Honwad	16 49	75 30	28 00
Anekal	12 44	77 41	19 16	Chintamani	13 26	78 05	17 40	Hosanagara	13 56	75 00	30 00
Anagundi	15 21	76 33	23 48	Chitnadurga	14 14	76 24	24 24	Hosdurga	13 49	76 20	24 40
Ankola	14 40	74 18	32 48	Coondapoor	13 50	74 42	31 12	Hoskote	13 06	77 47	18 52

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Hospet	15	16	76	26	24	16
Hubli	15	20	75	14	29	04
Hungund	16	04	76	09	25	24
Indi	17	13	76	01	25	56
Jagalur	14	32	76	18	24	48
Jaldrug	16	17	76	29	24	04
Jalsur	12	35	75	20	28	40
Jamkhandi	16	31	75	21	28	36
Janwada	18	01	77	32	29	52
Kadur	13	34	76	01	25	56
Kaladgi	16	12	75	35	27	40
Kalghatgi	15	11	75	00	30	00
Kalyani	17	53	76	57	22	12
Kamalnagar	18	13	77	15	21	00
Kanakapura	12	33	77	25	20	20
Karkal	13	13	74	59	30	04
Karwar	14	48	74	09	33	24
Kerur	16	01	75	36	27	36
Khanpur	15	41	74	38	31	28
Kittur	15	38	74	53	30	28
Kolar	13	10	78	10	17	20
Kollegal	12	08	77	09	21	24
Koppa	13	31	75	20	28	40
Kopbal	15	21	76	13	25	08
Kotturu	14	49	76	13	25	08
Krishna-rajpet	12	40	76	25	24	20
Kudchi	16	39	74	54	30	24
Kudligi	14	55	76	22	24	32
Kudremukh-Park	13	09	75	15	29	00
Kundgol	15	15	75	19	28	44
Lakshme-shwar	15	08	75	24	28	24
Lingsugur	16	07	76	33	23	48
Madikeri	12	26	75	47	26	52
Malavalli	12	23	77	05	21	40
Mandya	12	34	76	55	22	20
Mangalore	12	52	74	53	30	28
Manjarabad	12	56	75	41	27	16

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Manvi	15	57	76	59	22	04
Manwat	19	18	76	30	24	00
Mercara	12	25	75	44	27	04
Molakmuru	14	45	76	48	22	48
Mudabidri	13	05	74	57	30	12
Mudde-Bihal	16	20	76	10	25	20
Mudgal	16	01	76	27	24	12
Mudhol	16	21	75	18	28	48
Mudigere	13	11	75	36	27	26
Mullbagal	13	10	78	14	17	04
Mundargi	15	16	75	53	26	28
Mysore	12	18	76	42	23	12
Nagama-ngala	12	50	76	45	23	00
Nagar	13	49	74	59	30	04
Nandi	13	22	77	44	19	04
Nanjangud	12	07	76	44	23	20
Naregal	15	40	75	53	26	28
Nelaman-gala	13	04	77	24	20	24
Nimbal	17	07	75	56	26	16
Nipani	16	27	74	28	32	08
Pandava-pura	12	29	76	40	23	20
Pavagada	14	06	77	15	21	00
Ponnampet	12	08	75	58	26	08
Puttur	12	44	75	10	29	20
Raichur	16	12	77	20	20	40
Ramana-garam	12	45	77	12	21	12
Ramdurg	15	57	75	24	28	24
Ranibennur	14	33	75	40	27	20
Robert-Sonepat	12	58	78	16	16	56
Ron	15	44	75	47	26	52
Sagar-(Gulbarga)	16	37	76	51	22	36
Sakleshpur	12	59	75	43	27	07
Sandur	15	02	76	36	23	36

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Saundatti	15	47	75	10	29	20
Sawanur	14	58	75	27	28	12
Seram	17	13	77	14	21	04
Seringa-patam	12	25	76	42	23	12
Shahabad	17	07	76	58	22	08
Shahapur	15	51	74	34	31	44
Shiggaon	15	00	75	28	28	08
Shikarpur	14	16	75	24	28	24
Shimoga	13	56	75	38	27	28
Shrirangap-atta nam	12	25	76	41	23	16
Sidlaghatta	13	25	77	53	18	28
Sindhnur	15	46	76	44	23	04
Sira	13	45	76	57	22	12
Sirsi	14	36	74	54	30	24
Siruguppa	15	41	76	53	22	28
Sivasamu-dram Island	12	16	77	13	21	08
Somnathpur	12	25	76	50	22	40
Sorab	14	28	75	09	29	24
Sringeri	13	26	75	13	29	08
Talikota	16	31	76	20	24	40
Taliparamba	12	03	75	21	28	36
Tarikere	13	43	75	49	26	44
Tiptur	13	16	76	29	24	04
Tirthapalli	13	41	75	10	29	20
Tumkur	13	21	77	05	21	40
Turuvanur	14	27	76	26	24	16
Udipi	13	20	74	45	31	00
Uppinan-gadi	12	50	75	13	29	08
Virarajen-drapet	12	12	75	46	26	56
Wadi	17	00	77	00	22	00
Yadgir	16	46	77	08	21	28
Yalvigi	15	10	75	16	28	56
Yedatore	12	28	76	22	24	32
Yelandur	12	03	77	00	22	00
Yellapur	14	59	74	46	30	56

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Yergara	16	05	17	27	20	12
Zalki	17	18	75	50	26	40
केरल (Kerala)						
Alappuzha	09	30	76	23	24	28
Alwa	10	07	76	24	24	24
Ambalapulai	09	27	76	24	24	24
Angadi-pwam	10	58	76	15	25	00
Attingal	08	42	76	51	22	36
Azhikode	11	59	75	21	28	36
Badagava	11	36	75	34	27	44
Beypore	11	11	75	49	26	44
Calicut	देखें Kozhikode					
Cannanore	11	51	75	22	28	32
Changan-acheri	09	28	76	33	23	48
Chirayinkil	08	40	76	50	22	40
Chittur	10	42	76	46	22	56
Cochin	09	58	76	14	25	04
Cranganur	10	12	76	11	25	16
Ernakulam	10	00	76	16	24	56
Ettumanur	09	39	76	34	23	44
Haripad	09	18	76	28	24	08
Irinjalak-Kaifratta	11	30	76	07	25	32
Kannur	11	52	75	25	28	20
Karunag-apalli	09	03	76	33	23	48
Kasaragod	12	30	75	00	30	00
Kayan-kulam	09	10	76	31	23	56
Kokkan-iserri	12	08	75	13	29	08
Kollam	08	54	76	38	23	28
Kollangod	10	36	76	45	23	08
Kottamkara	08	59	76	45	23	00
Kottayam	09	36	76	34	23	44
Kottayam-(Malabar)	11	49	75	32	27	52
Kozhikode	11	15	75	49	26	44

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Kumbla	12	37	74	57	30	12
Malappuram	11	00	76	02	25	52
Mambat	11	15	76	11	25	16
Manjesh-wara	12	42	74	53	30	28
MattanCheri	09	57	76	16	24	56
Mavelikara	09	14	76	33	23	48
Mundak-ayam	09	32	76	52	22	32
Nilambun	11	17	76	15	25	00
Nileshw-aram	12	18	75	07	29	32
Olavakkod	10	49	76	37	23	32
Ottappalam	10	46	76	23	24	28
Palakkad	10	46	76	42	23	12
Palghat	10	46	76	42	23	12
Pallivasal	09	55	77	02	21	52
Parui	08	48	76	41	23	16
Parur	10	10	76	13	25	08
Pathanama-chitha	09	19	76	49	22	44
Pattana-puram	09	10	76	46	22	56
Periyar-Lake	09	30	77	20	20	40
Piramed	09	30	77	02	21	52
Pirawam	09	49	76	38	23	28
Ponnani	10	46	75	57	26	12
Punalur	09	02	76	55	22	20
Quilon	08	54	76	38	23	28
Shertally	09	42	76	20	24	40
Shoranur	10	46	76	15	25	00
Tanur	10	59	75	52	26	32
Thalassery	11	45	75	32	27	52
Tiruvanant-hapuram	08	30	76	58	22	08
Tiruvalla	09	23	76	34	23	44
Travancore	09	00	77	00	22	00
Trichur	10	30	76	14	25	04
Thrissur	देखें-Trichur					

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Trivendrum	देखें Thiruvananthapuram					
Vaikam	09	46	76	27	24	12
Vayittiri	11	31	76	02	25	52
गुजरात						
अंकलेश्वर	21	38	73	02	37	52
अठोई	23	25	70	32	47	52
अदेसार	23	36	70	58	46	08
अमरापुर	21	45	70	02	49	52
अमरेली	21	36	71	18	44	48
अमोद	21	59	72	54	38	24
अरामदा	22	28	69	08	53	28
अहमदाबाद	23	03	72	40	39	20
अहवा	20	48	73	41	35	16
आनन्द	22	32	73	01	37	56
आनन्दपुर	22	10	71	08	45	28
ईडर	23	50	73	03	37	48
उंझा	23	45	72	24	40	24
उमरपाड़ा	21	26	73	33	35	48
उमरेठ	22	42	73	07	37	32
ओखा	22	15	69	10	53	02
ओलपाड़	21	20	72	49	38	44
कच्छ (भुज)	22	50	70	25	48	20
कड़ी	23	20	72	22	40	32
कपड़वंज	23	03	73	09	37	24
कलोल(महेसाणा)	23	15	72	32	39	52
कलोल-(पंचमहल)	22	28	73	32	35	52
काटपुर	21	29	72	46	38	56
काण्डला	23	00	70	11	49	16
कादना	23	22	73	52	34	32
कावि	22	11	72	41	39	16
केशोद	21	18	70	15	49	00
कुंकावाव	21	38	71	05	45	40
कुटियाना	21	38	69	59	50	04
कुडा	23	08	71	30	44	00
कुरंगा	22	07	69	12	53	12
कैम्बे	22	19	72	39	39	24
कोटरापीठा	20	57	71	18	44	48
कोडिनार	20	47	70	42	47	12

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
कोरल	21	55	73	12	37	12	झालोद	23	07	74	08	33	28	नवीबन्दर	21	26	69	52	50	32
खगरेड़ा	24	03	72	04	41	44	झिंझूवाड़ा	23	29	71	39	43	24	नान्दोड़	21	52	73	32	35	52
खम्भात	22	19	72	39	39	24	झंडू	23	10	71	58	42	08	नारा	23	40	69	10	53	20
खम्भालिया	22	12	69	39	51	24	टूना	22	59	70	04	49	44	नालिया	23	19	68	51	54	36
खावड़ा	23	50	69	43	51	08	डाकोर	22	48	73	13	37	08	न्यूकांडला	23	00	70	11	49	16
खिजारिया	21	44	71	14	45	04	दीसा	24	14	72	13	41	08	पड़ाना	22	22	69	54	50	24
खेडब्रह्मा	24	03	73	03	37	48	ढोला	20	50	71	49	42	44	पदरा	22	15	73	06	37	36
खेड़ा	22	45	72	45	39	00	ढोलेरा	22	15	72	15	41	00	परांतीज	23	26	72	55	38	20
खेरालू	23	54	72	40	39	20	ढोल्का	22	44	72	29	40	04	पाटन	23	50	72	09	41	24
गढदा-							तनखला	21	58	72	50	38	40	पाटरी	23	10	71	10	45	20
(भावनगर)	21	59	71	40	43	20	तारा	24	00	71	51	42	36	पालनपुर	24	12	72	29	40	04
गढदा (कच्छ)	23	50	70	25	48	20	तालाजा	21	20	72	08	41	28	पालिताना	21	30	71	50	42	40
गढिया	21	11	71	13	45	08	तेरवाड़ा	24	02	71	43	43	08	पालियाड़	22	16	71	39	43	24
गढका	22	08	69	28	52	08	थराड	24	23	71	37	43	32	पितार	22	42	70	35	47	40
गवरा	20	53	71	00	46	00	दभोई	22	08	73	28	36	08	पिम्परी	20	54	73	42	35	12
गान्धीधाम	23	06	70	08	49	28	दाथा	21	12	72	01	41	56	पिहिज	22	40	72	52	38	32
गान्धीनगर	23	15	72	45	39	00	दान्ता	24	13	72	50	38	40	पेटलाद	22	28	72	48	38	48
गोगोलापोर्ट	20	43	71	08	45	28	दासदा	23	18	71	55	42	00	पैकरी	21	13	73	14	37	04
गोपा	21	40	72	20	40	40	देदान	21	01	71	22	44	32	पोरबन्दर	21	37	69	49	50	44
गोंडल	21	56	70	50	46	40	दिव	20	42	71	01	45	56	पोर्टएल्बर्टविक्टर	21	00	71	35	43	40
गोधरा	22	45	73	40	35	20	देलवाड़ा	20	46	71	15	45	00	पोल	24	00	73	20	36	40
घंटवार	20	56	70	50	46	40	देहज	21	42	72	40	39	20	फोर्ट संगाद	21	12	73	42	35	12
घंटिला	23	10	71	19	44	44	देवदार	24	28	71	50	42	40	बचाऊ	23	22	72	20	48	40
चन्दोद	22	00	73	30	36	00	देवगढ़वाडिया	22	42	73	54	34	24	बजाना	23	06	71	47	42	52
चरकरादोई	23	57	69	20	52	40	दोहाद	22	53	74	18	32	48	बड़दोलि	21	07	73	07	37	32
चित्रोद	23	25	70	42	47	12	दोलिया	22	30	71	24	44	24	बड़ोदा	22	00	73	16	36	56
चोटीला	22	23	71	18	44	48	द्वारिका	22	14	69	02	53	52	बरोच	21	40	72	58	38	08
चोरवाड़	21	00	70	19	48	44	धनेरा	24	29	72	08	41	28	बांटवा	21	31	70	09	49	24
छोटाउदयपुर	22	19	74	08	33	28	धरोल	22	33	70	30	48	00	बावलियारी	22	02	72	16	40	56
जखाऊ	23	15	68	48	54	48	धर्मपुर	20	31	73	13	37	08	बिलिमोरा	20	45	72	57	38	12
जम्बूसार	22	00	72	50	38	40	धान्दुका	22	21	72	02	41	52	बुलसार	20	36	72	56	38	16
जलालपुर	20	58	72	59	38	04	धारी	21	20	71	00	46	00	बेदी	22	32	70	02	49	52
जसदान	22	04	71	13	45	08	धुले	20	54	74	47	30	52	बेर	23	24	68	38	55	28
जाफराबाद	20	51	71	27	44	12	धोराजी	21	45	70	37	47	32	बोताड़	22	12	71	44	43	04
जामनगर	22	28	70	06	49	36	चोरी	23	25	69	46	50	56	बोरसाद	22	24	72	59	38	04
जारोद	22	25	73	21	36	36	ध्रांगध्रा	22	59	71	29	44	04	भंगोर	22	03	69	55	50	20
जूनागढ़	21	32	70	34	47	44	नख्तराना	23	26	69	15	53	00	भचाऊ	23	12	71	20	44	40
जेतपुर	21	43	70	42	47	12	नडियाद	22	42	72	55	38	20	भरूच	21	40	73	01	37	56
जेतलसार	21	42	70	40	47	20	नवसारी	21	07	73	40	35	20	भाभर	24	08	71	42	43	12
जोड़िया	22	42	70	18	48	48	नवालखी	22	56	70	30	48	00	भावनगर	21	46	72	10	41	20

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
भुज	23	16	69	41	50	44
भोगत	21	59	69	16	52	56
महेसाणा	23	42	72	37	39	32
महुआ	21	10	71	45	43	00
मागोरी	23	17	73	23	36	28
मांगरोल	21	07	70	14	49	28
मांडवी (कच्छ)	22	50	69	28	52	08
मांडवी (सूरत)	21	16	73	22	36	32
माधवपुर	21	18	70	01	49	56
मनसा	23	24	72	42	39	12
मालपुर	23	20	73	26	36	16
मालसार	22	00	73	22	36	32
मालिया	23	09	70	52	46	32
मियानी	21	50	69	26	52	16
मुंजपुर	23	34	71	57	42	12
मुंदरा	22	50	69	52	50	32
मुलिला	20	05	70	21	48	36
मूली	22	40	71	34	43	44
मेंदारदा	21	19	70	26	48	16
मोदासा	23	28	73	20	36	40
मोभा	22	05	73	00	38	00
मोरवी	22	50	70	50	46	40
रतनपुर	21	43	73	16	36	56
राजकोट	22	18	70	53	46	28
राजपिपला	21	55	73	36	35	36
राजुला	21	01	71	34	43	44
राधनपुर	23	50	71	38	43	28
रादेड़	21	15	72	50	38	40
रापा	23	32	70	40	47	20
रापड़	23	33	70	38	47	28
रामपुर	23	11	73	56	34	16
लख़तार	22	53	70	53	46	28
लखपत	23	49	68	47	54	52
लाठी	21	45	71	28	44	08
लिम्बडा	21	49	71	43	43	08
लिम्बड़ी	22	34	71	53	42	28
लूनावाड़ा	23	08	73	37	35	32
लोदरानी	23	52	70	40	47	20
लोधिका	22	05	70	41	47	16
वडोदरा	22	18	73	13	37	08

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
वनसदा	20	45	73	25	36	20
वल्लभीपुर	20	52	71	58	42	08
वल्साड	20	40	72	55	38	20
वाकानेर	22	33	71	00	46	00
वागरा	21	46	72	48	38	48
वाजपुर	21	21	73	43	35	08
वादनगर	23	48	72	40	39	20
वार्डाया	22	41	22	55	38	20
वाराही	23	48	71	29	44	04
वाव	24	22	71	32	43	52
विन्झन	23	04	69	02	53	52
विरपुर	21	51	70	46	46	56
विरामग्राम	23	08	72	07	41	32
विसनगर	23	41	72	36	39	36
विसवादार	21	22	70	52	46	32
बीजापुर	23	34	72	45	39	00
वेरावल	20	53	70	28	48	08
वेलाछा	21	26	73	06	37	36
व्यारा	21	09	73	08	36	08
सचिन	21	03	72	59	38	04
सवरा	23	20	73	48	34	52
सन्तालपुर	23	45	71	10	45	20
समराए	23	01	69	11	53	16
सरदिया	21	35	70	03	49	48
सरोत्रा	24	24	72	36	39	36
सलाया	22	20	79	40	51	20
सानन्द	22	59	72	23	40	28
सावली	22	33	73	16	36	56
सुईगांव	24	10	71	23	44	28
सूतड़ी	23	02	68	56	54	16
सुरेन्द्रनगर	22	42	71	41	43	16
सूरत	21	10	72	50	38	40
सिद्धापुर	23	45	72	37	39	32
सिलवासा	20	17	73	00	38	00
सिहोर-भावनगर	21	43	71	59	42	04
सोनगढ़	21	42	71	58	42	08
सोमनाथ	21	00	70	30	48	00
हडोल	23	55	73	13	37	08
हरजी	23	45	71	56	42	16
हलवाड़ा	23	02	71	18	44	48
हिम्मतनगर	23	42	73	00	38	00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
गोवा (Goa)						
पंजिम	15	29	73	50	34	40
पानाजि	देखें पंजिम					
मडगांव	15	18	73	57	34	12
मरमागाओ	15	25	73	43	35	08
वास्को-डी गामा	15	24	73	54	34	24
चण्डीगढ़(U.T.)						
कर्सान (ग्राम)	30	42	76	47	22	52
कलाग्राम	30	43	76	50	22	40
किशनगढ़	30	44	76	50	22	40
कजहेड़ी	30	43	76	44	23	04
केहरडेरा	30	42	76	44	23	04
कैम्बवाला	30	46	76	49	22	44
खुड्डाअलीशेर	30	47	76	49	22	44
खुड्डाजस्सू	30	47	76	46	22	56
ग्रेनमार्केट	30	44	76	49	22	44
चुंगिया	30	46	76	50	22	40
डडूमाजरा	30	46	76	44	23	04
दरिया	30	42	76	49	22	44
धनाश	30	47	76	45	23	00
पल्सोरा	30	44	76	43	23	08
वहलाना	30	41	76	48	22	48
भगवान् पुरा	30	50	76	45	23	00
मखन माजरा	30	41	76	49	22	44
मनीमाजरा	30	43	76	51	22	36
मलोया (ग्राम)	30	46	76	43	23	08
मौली जगरां	30	42	76	50	22	40
रायपुर कला	30	42	76	50	22	40
रायपुर खुर्द	30	41	76	49	22	44
रेल्वेकॉलोनी	30	43	76	50	22	40
रेल्वे स्टेशन	30	43	76	49	22	44
लहोरा (ग्राम)	30	47	76	46	22	56
जम्मू-काश्मीर						
अखनूर	32	53	74	45	31	00
अनन्तनाग	30	44	75	17	28	52
अमरनाथगुफा	34	13	75	32	27	52
अवन्तिपुरा	33	57	75	01	29	56
इष्कुमान	36	35	73	50	34	40
उड़ी	34	05	74	01	33	56
उपशी	33	52	77	50	18	40

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
ऊधमपुर	32	54	75	06	29	36
कटरा	32	59	74	57	30	13
कठुआ	32	17	75	36	27	36
करगिया	33	00	77	17	20	52
करजोक	32	59	78	16	16	56
काजीगुण्ड	33	37	75	09	29	24
कारगिल	34	31	76	13	25	08
किश्तवाड़	33	19	75	48	26	48
कुर्द	33	05	75	17	28	52
कुमदोक	33	32	78	10	17	20
कुलगाम	33	41	75	03	29	48
केरन	34	39	73	58	34	08
कोटली	33	30	73	55	34	20
कोलाहोई	34	12	75	21	28	36
खपलू	35	10	76	20	24	40
खरताक्षो	34	53	76	14	25	04
खरना	33	36	77	31	19	56
खलात्से	34	23	76	50	22	40
गिलगित	35	55	74	21	32	36
गुफिस	36	13	73	30	36	00
गुराईस	34	38	74	56	30	16
गुलमर्ग	34	15	74	25	32	20
गोम्पा	35	02	77	20	20	40
गोर	35	34	74	31	31	56
चिलास	35	26	74	07	33	32
चुंगतास	35	37	78	37	15	32
चूमर	32	38	78	35	15	40
जंगला	33	40	77	01	21	56
जम्मू	32	43	74	54	30	24
जसरोटा	32	29	75	27	28	12
टक्से	34	03	78	13	17	08
टिथवाल	34	24	73	47	34	52
टोलटी	35	03	76	04	25	44
डोडा	33	10	75	35	27	40
तेरू	36	11	72	45	39	00
देमचीक	32	40	79	27	12	12
दरास	34	27	75	46	26	56
नवांशहर	32	37	74	44	31	04
नुनकुन	33	59	76	01	25	56
नोशेरा	33	13	74	15	33	00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
न्योमा	33	12	78	40	15	20
पदम	33	28	76	53	22	28
पलन्दी	33	44	73	42	35	12
पहलगाँव	34	01	75	25	28	20
पामपुर	34	01	74	56	30	16
पासु	36	30	74	52	30	32
पुंछ	33	51	74	06	33	36
बनिहाल	33	30	75	18	28	48
बटोटी	33	06	75	19	28	44
बड़गाम	34	01	74	42	31	12
बाँदीपुरा	34	50	75	35	31	40
बल्टीस्तान	35	30	76	00	26	00
बसोली	32	29	75	50	26	40
बाओ	32	41	75	55	30	20
बाघ	33	59	73	50	34	40
बारामूला	34	10	74	30	32	00
भद्रवाह	33	04	75	40	27	20
भिम्बर	33	00	74	05	33	40
मनावर	32	47	74	23	32	28
मरखा	33	51	77	23	20	28
मरोल	34	43	76	18	24	48
मिनिमर्ग	34	48	75	03	29	48
मीरपुर	33	12	73	51	34	36
मीरवाली	36	33	73	25	36	20
मुजफ्फराबाद	34	23	73	22	36	32
मुजवेचर	34	22	76	22	24	32
मेन्धर	33	39	74	09	33	24
राजौरी	33	24	74	17	32	52
रामनगर	32	52	75	21	28	36
रामबन	33	15	75	15	29	00
रियासी	33	03	74	52	30	32
रोन्दू	35	37	75	06	29	36
लाथो	33	42	77	43	19	08
लेह	34	09	77	40	19	20
वैष्णो देवी	33	02	74	57	30	12
शक्सगम	36	08	76	31	23	56
शरड़ी	34	47	74	14	33	04
शिंगशल	36	29	75	19	28	44
शुकपाकुजंग	34	24	78	21	16	36
शुपियां	33	42	74	52	30	32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
शुशोत	34	03	77	40	19	20
शेरकिला	36	06	74	04	33	44
श्योक	34	13	78	10	17	20
श्रीनगर	34	07	74	50	30	40
साम्बा	32	32	75	08	29	28
सियारी	34	55	76	43	29	08
सूतक	33	11	77	28	20	08
सोनामर्ग	34	18	75	18	28	48
सोन्दर	33	28	75	55	26	20
सोपुर	34	19	74	30	32	00
हान्ले	32	46	79	01	13	56
तामिलनाडु (Tamil Nadu)						
Alangudi	10	22	78	59	14	04
Alapakkam	11	36	79	44	11	04
Ambasamu-dram	08	45	77	27	20	12
Ambaturai	10	18	77	57	18	12
Ambur	12	48	78	44	15	04
Anamalai	10	24	76	40	23	20
Andiyur	11	36	77	37	19	32
Arakkonam	13	05	79	40	11	20
Arani	12	40	79	19	12	52
Arantangi	10	10	79	00	14	00
Arcot(North)	12	54	79	24	12	24
Ariyalur	11	08	79	04	13	44
Aarkonam	13	05	79	40	11	20
Arkot	12	56	79	20	12	40
Arni	12	41	79	19	12	44
Aruppu-kottai	09	31	78	06	17	36
Attur-(Madurai)	10	16	77	52	18	32
Atur (Salem)	11	36	78	39	15	24
Bargur	11	49	77	33	19	48
Bhavani	11	28	77	41	19	16
Bhuvanagiri	11	28	79	38	11	28
Bodinayak-kanur	10	01	77	24	20	24
Chengam	12	20	78	46	14	56
Chennai	13	05	80	18	08	48

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर		नगर	अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर		नगर	अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अं.	क.	अं.	क.	मि.	से.		अं.	क.	अं.	क.	मि.	से.		अं.	क.	अं.	क.	मि.	से.
Cheyur	12	22	80	01	09	56	Kalidaikuri-							Mannargudi	10	40	79	29	12	04
Chidam-							chchi	08	41	77	29	20	04	Mayuroam	11	08	79	40	11	20
baram	11	25	79	42	11	12	Kallakkuri-							Melur	10	04	78	23	16	28
Chengalputtu	12	42	80	01	09	56	chchi	11	44	78	58	14	08	Metoor	11	47	77	48	18	48
Chinnamanur	09	50	77	24	20	24	Kambam	09	44	77	19	20	44	Mettuppa-						
Coimbatore	11	00	76	58	20	08	Kamudi	09	25	78	23	16	28	layam	11	18	76	57	22	12
Comorin-							Kanchi-							Mettur	11	50	77	51	18	36
Cape	08	04	77	35	19	40	puram	12	50	79	44	11	04	Mimisal	09	55	79	09	13	24
Conoor	11	21	76	46	22	56	Kangayam	11	01	77	35	19	40	Morappur	12	09	78	23	16	28
Coonoor	11	21	76	46	22	56	Kanniya-							Musiri	10	58	78	26	16	16
Covelong-							kumari	08	05	77	34	19	44	Mutupet	10	24	79	32	11	52
Bach	12	46	80	15	09	00	Karaikal	10	55	79	50	10	40	Nagapat-						
Cuddalore	11	43	79	49	10	44	karaikkudi	10	04	78	47	14	52	tinam	10	45	79	50	10	40
Devakottai	09	55	78	55	14	20	Kardikal	10	55	79	52	12	32	Nagercoil	08	10	77	29	20	04
Devipattinam	09	29	78	55	14	20	Karur	10	58	78	07	17	32	Nagore	10	49	79	50	10	40
Dhanushko-							Kattuputtur	11	00	78	13	17	08	Namakkal	11	12	78	12	17	20
di	09	12	79	25	12	20	Kayalpatnam	08	34	78	10	17	20	Nanguneri	08	29	77	42	19	12
Dharamp-							Kodaikanal	10	13	77	32	19	52	Nattam	10	14	78	11	17	16
uram	10	45	77	33	19	48	Kodaiya-							Nazareth	08	34	77	58	18	08
Dharmapuri	12	08	78	13	17	08	nallur	09	05	77	21	20	36	Nillikuppam	11	46	79	40	11	20
Dindigul	10	23	78	00	18	00	Kodiapattam	08	07	77	21	20	36	Nilakottai	10	07	77	53	18	28
Erode	11	21	77	47	19	08	Konnur	13	06	80	13	09	08	Olakur	12	21	79	46	10	56
Ettaiya-							Kotagiri	11	26	76	54	22	44	Ootacamund	11	28	76	42	23	12
puram	09	09	78	01	17	56	Kottaipa-							Ottapidaram	08	55	78	05	17	40
Fort St.-							ttinam	09	57	79	11	13	16	Padmanabha-						
David	11	46	79	50	10	40	Krishnagiri	12	32	78	14	17	04	puram	09	06	76	50	20	40
Fort St.-							Kulasekhra-							Palayam-						
George	13	03	80	17	08	52	patinam	08	23	78	05	17	40	kottai	08	42	77	46	18	56
Gingee	12	16	79	24	12	24	Kumba-							Palladam	10	59	77	18	20	48
Gudalur-							konam	10	59	79	24	12	24	Pallavaram	12	56	80	11	09	16
(Madurai)	09	41	77	18	20	48	Kuttalam	08	55	77	17	20	52	Palani	10	27	77	31	19	56
Godalur-							Lalgudi	10	52	78	52	14	32	Pamban	09	20	79	15	13	00
(Nilgiris)	11	30	76	30	24	00	Madurai	09	58	78	10	17	20	Panruti	11	47	79	35	11	40
Gudiyattam	12	57	78	55	14	20	Maduran-							Papanasam-	10	54	79	12	13	12
Hasanur	11	40	77	06	21	36	takam	12	31	79	54	10	24	(Thanjavur)						
Hosur	12	45	77	51	18	36	Mahabali-							Papanasam-						
Ilaliyankudi	09	38	78	38	15	28	puram	12	37	80	12	09	12	(Tirunelvelli)	08	46	77	23	20	28
Iluppur	10	32	78	37	15	32	Manamdurai	09	40	78	27	16	12	Pattukkottai	10	26	79	22	12	32
Jalarpet	12	35	78	33	15	48	Manapparai	10	36	78	25	16	20	Perambalur	11	14	78	56	14	16
Jolarpettai	12	34	78	35	15	40	Maniyachi	08	51	77	56	18	16	Perambar	13	10	80	16	08	56

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
Periyakulam	10	07	77	33	19	48	Tevar	09	55	77	18	20	48	Virudunagar	09	36	77	58	18	08
Podanur	10	57	77	00	22	00	Thanjavur	10	46	79	09	13	24	Vriddhac-						
Pollachi	10	38	77	00	22	00	Tindivanam	12	15	79	41	11	16	halam	11	32	79	24	12	24
Polur	12	30	79	08	13	28	Tirubanna-							Walajapet	12	56	79	23	12	28
Ponneri	13	21	80	10	09	20	malai	12	43	79	04	13	44	**दिल्ली**						
Poonamalle	13	02	80	04	09	44	Tirchchirap-							असलतपुर	28	38	77	05	21	40
Porto Nova	11	30	79	45	11	00	palli	10	49	78	46	14	56	आदर्शनगर	28	44	77	10	21	20
Proddattur	14	45	78	35	15	40	Tiruchendur	08	29	78	07	17	32	आदिलाबाद	28	30	77	17	20	52
Pudukkottai	10	23	78	49	14	44	Tiruchengodu	11	23	77	56	18	16	उद्योग नगर	28	41	77	06	21	36
Puliyangudi	09	10	77	25	20	20	Tirukkoyilur	11	59	79	13	13	08	ओखला	28	33	77	17	20	52
Radhapuram	08	16	77	43	19	08	Tirumanlam	09	50	79	01	13	56	कनाट प्लेस	28	38	77	13	21	08
Rajamatam	10	18	79	21	12	36	Tirumayam	10	15	78	46	14	56	करावलनगर	28	45	77	16	20	56
Rajapalayam	09	26	77	36	19	36	Tirunelvelli	08	45	77	43	19	08	किशनगढ़	28	31	77	08	21	28
Ramanatha-							Tirupattur-							कुतुबमीनार	28	31	77	12	21	12
puram	09	23	78	53	14	28	(Ramnad)	10	07	78	39	15	24	कोंडली	28	37	77	19	20	44
Ramesh-							Tirupattur-							खिचड़ीपुर	28	37	77	19	20	44
waram	09	18	79	22	12	32	(N.Acrcot)	12	29	78	34	15	44	गाजीपुर	28	38	77	19	20	44
Rasipuram	11	28	78	10	17	20	Tiruppur	11	05	77	20	20	40	गान्धीनगर	28	40	77	16	20	56
Sadras	12	33	80	10	09	20	Tirutturaip-							चिल्लासरोदा	28	35	77	18	20	48
Saidapet	13	01	80	16	08	56	pundi	10	32	79	39	11	24	जगतपुर	28	44	77	14	21	04
Salem	11	38	78	12	17	12	Tiruvalur	10	45	79	40	11	20	जनकपुरी	28	37	77	06	21	36
Salem-							Tiruvallur	13	07	79	54	10	24	जहांगीरपुर	28	44	77	13	21	08
Junction	11	41	78	06	17	36	Tiruvanna-							तुगलकाबाद	28	31	77	16	20	56
Sankaranay-							malai	12	15	79	07	13	32	त्रिलोकपुरी	28	38	77	18	20	48
inarkovil	09	10	77	32	19	48	Tiruvetti-							देवली	28	30	77	14	21	04
Sankaridrug	11	30	77	52	18	32	puram	12	40	79	33	11	48	दौलतपुर	28	44	77	06	21	36
Sattur	09	23	77	56	18	16	Tisatyanvilai	08	20	77	53	18	28	धारीपुर	28	44	77	12	21	12
Satyaman-							Tondi	09	44	79	04	13	44	नंगलोई	28	41	77	04	21	44
galam	11	31	77	15	21	00	Tuticorin	08	48	78	11	17	16	निथारी	28	35	77	21	20	36
Sembiem	13	07	80	15	09	00	Turaiyur	11	09	78	38	15	28	बगरौला	28	34	77	04	21	44
Shengottai	08	59	77	15	21	00	Udagaman-							बिड़लामन्दिर	28	38	77	12	21	12
Shivaganga	09	51	78	32	15	52	dalam	11	24	76	42	23	12	मालसवा	28	44	77	10	21	20
Singanallur	11	01	77	02	21	52	Udaiyarpa-							मयूर विहार	28	37	77	18	20	48
Sivaganga	09	50	79	32	11	52	layam	11	11	79	20	12	40	महरौली	28	31	77	11	21	16
Sivakasi	09	26	77	50	18	48	Vaniyambadi	12	41	78	37	15	32	मुकन्दपुर	28	44	77	10	21	20
Srirangam	10	52	78	44	15	04	Vedaranniyan	10	22	79	51	10	36	राष्ट्रपति भवन	28	37	77	13	21	08
Srivilli-							Vedasandur	10	33	77	58	18	08	रिथाला	28	43	77	06	21	36
puttur	09	31	77	38	19	28	Vellore	12	56	79	09	13	24	रेल्वेकालोनी	28	41	77	09	21	24
Tambram	12	55	80	07	19	32	Vilattikulam	09	10	78	11	17	16	रोहिणी	28	44	77	08	21	28
Tenkasi	08	58	77	22	20	32	Villupuram	11	56	79	32	11	52	लालकुआं	28	30	77	17	20	52

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
शंकरपुर	28 38	77 17	20 52	गांगनापुर	23 09	88 38	24 32	नवापाड़ा	23 29	88 15	23 00
शम्सपुर	28 36	77 17	20 52	गोकर्णा	24 03	88 07	18 28	नईहाटी	22 54	88 25	23 40
शादीपुर	28 44	77 08	21 28	गोपीबल्लवपुर	22 13	86 54	17 36	पांचाल	23 15	87 18	19 12
शाहदरा	28 40	77 18	20 48	गोबरडांगा	22 53	88 45	25 00	पानीहाटी	22 42	88 22	23 28
शिवपुरी	28 40	77 17	20 52	गोयेरकाटा	26 42	89 02	26 08	पुरुलिया	23 20	86 25	15 40
साहिबाबाद	28 45	77 04	21 44	घाटल	22 40	87 43	20 52	पूर्वस्थली	23 28	88 21	23 24
प. बंगाल				चम्पदानी	22 48	88 21	23 24	पोर्ट केनिंग	22 18	88 40	24 40
अज़ीमगंज	24 14	88 15	23 00	चम्पाहाटी	22 23	88 29	23 56	पल्टा	22 17	88 07	22 28
अण्डाल	23 36	87 12	18 48	चन्दननगर	22 51	88 25	23 40	बड़ानगर	22 38	88 22	23 28
अंबिकानगर	22 57	86 46	17 04	चन्द्रकोना	22 44	87 31	20 04	बनगांव	23 04	88 49	25 16
अलीपुर	22 32	88 24	23 36	चांदपाड़ा	22 56	88 55	25 40	बर्दवान	23 16	87 52	21 28
अलीपुर द्वार	26 29	89 44	28 56	चित्तरंजन	23 50	87 00	18 00	बसीरहाट	22 40	88 53	25 32
आद्रा	23 33	86 37	16 38	चुंचुरा	22 53	88 24	23 36	बहरामपुर	24 07	88 19	23 16
आरामबाग	22 53	87 50	21 20	चेतला	22 31	88 47	25 08	बागडंगा	24 02	88 32	24 08
आसनसोल	23 41	86 59	17 56	जंगीपुर	24 28	88 04	22 16	बांकुड़ा	23 15	87 07	18 28
इंगराज बाजार	25 00	88 09	22 36	जयनगर	22 12	88 25	23 40	बादुरिया	22 44	88 47	25 08
इच्छापुर	22 50	88 24	23 36	जलपाईगुड़ी	26 31	88 44	24 56	बैरकपुर	22 46	88 24	23 36
इस्लामपुर	26 15	88 12	22 48	जियागंज	24 14	88 16	23 04	बारासत	22 43	88 29	23 56
उलबारिया	22 28	88 06	22 24	जीग्राम	23 06	88 05	22 20	बारुईपुर	22 21	88 27	23 48
एगरा	21 54	87 32	20 08	झारग्राम	22 27	86 59	17 56	बेलूरघाट	25 13	88 46	25 04
काकद्वीप	21 53	88 11	22 44	झालदा	23 22	85 58	13 52	बांसबारिया	22 58	88 24	23 36
काटोया	23 38	88 08	22 32	टीटागढ़	22 45	88 22	23 28	विष्णुपुर	23 05	87 23	19 32
काण्ठी	21 47	87 46	21 04	डायमंडहार्बर	22 12	88 12	22 48	बरनपुर	23 42	86 58	17 52
काण्डी	23 58	88 03	22 12	डालकोला	25 52	87 51	21 24	बेलडांगा	23 56	88 15	23 00
कालना	23 13	88 22	23 28	ढोशा	22 15	88 33	24 12	बेलूर	22 38	88 18	23 12
कारिसियांग	26 53	88 18	23 12	तामलुक	22 18	87 55	21 40	बेहाला	22 31	88 19	23 16
कलिम्पोंग	27 00	88 29	23 56	तारकेश्वर	22 54	88 02	22 08	बोलपुर	23 40	87 43	20 52
कालियागंज	25 38	88 19	23 16	तालडांगरा	23 02	87 07	18 24	वैद्यबाटी	22 47	88 20	23 20
कुमारग्राम	26 37	89 50	29 20	तूफानगंज	26 19	89 40	28 40	भद्रेश्वर	22 50	88 21	23 24
कुल्टी	23 44	86 51	17 24	तीलीगंज	22 30	88 23	23 32	मांगर	22 31	88 37	24 28
कूचबिहार	26 19	89 29	27 56	दार्जीलिंग	27 02	88 16	23 04	भाटपाड़ा	22 54	88 24	23 36
कृष्णनगर	23 24	88 33	24 12	दिगम्बरपुर	21 57	88 22	23 28	भावटा	23 59	88 15	23 00
कोटालपुर	23 02	87 36	20 24	दिनहाटी	26 08	89 28	27 52	मंगलकोट	23 33	87 54	21 36
कोलकाता	22 34	88 24	23 36	दुबराजपुर	23 48	87 23	19 32	मानबाजार	23 04	86 39	16 39
खड़गपुर	22 30	87 20	19 20	दुर्गापुर	23 29	87 20	19 20	मालदा	25 03	88 09	22 36
खरदा	22 44	88 22	23 28	दैनहाट	23 37	88 04	22 16	मुर्शिदाबाद	24 11	88 19	23 16
खातरा	22 59	86 51	17 24	धातृग्राम	23 15	88 20	23 20	मेखलीगंज	26 20	88 55	25 40
गंगासागर	21 38	88 05	22 20	नयाग्राम	22 02	87 11	18 44	मेदिनीपुर	22 25	87 20	19 20
गढ़नेटा	22 51	87 19	19 16	नलहाटी	24 18	87 49	21 16	रघुनाथपुर	23 33	86 43	16 52
गदाधरपुर	24 01	87 43	20 52	नवद्वीप	23 25	88 22	23 28	राजवाड़ी	22 25	88 48	25 12

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
राजमहल	25 03	87 50	21 20
रानाघाट	23 11	88 35	24 20
रानीगंज	23 52	87 52	21 28
रामगढ़	22 42	87 04	18 16
रामपुरहाट	24 10	87 47	21 08
रामसागर	23 05	87 17	19 08
रायगंज	25 37	88 07	22 28
रायडिंगी	22 00	88 26	23 44
लक्ष्मीकान्तपुर	22 07	88 20	23 20
लालवाग	24 13	88 17	23 08
शान्तिपुर	23 15	88 29	23 56
शिलीगुड़ी	26 42	88 29	23 56
श्रीरामपुर	22 45	88 21	23 24
समुद्रगढ़	23 21	88 20	23 20
सांकरैल	22 34	88 14	22 56
सियुड़ी	23 55	87 34	20 16
सीतलकूची	26 10	89 11	26 44
सुताहाटी	22 08	88 07	22 28
सूरी	23 55	87 32	20 08
सोनामुखी	23 18	87 25	19 40
सोनारपुर	22 26	88 25	23 40
हरिहरपाड़ा	24 02	88 27	23 48
हालिशहर	22 56	88 25	23 40
हावड़ा	22 35	88 23	23 32
हासनाबाद	22 35	88 55	25 40
पंजाब			
अकालगढ़	29 50	75 53	26 28
अमरगढ़	30 28	76 01	25 56
अमलोह	30 37	76 14	25 04
अमृतसर	31 37	74 55	30 20
अवोहर	30 09	74 11	33 16
अहमदगढ़	30 41	75 50	26 40
आनन्दपुरसाहिव	31 15	76 34	23 44
ऊना	31 32	76 18	24 48
उमरटांडा	31 40	76 41	27 28
ककराला	30 04	76 07	25 32
कपूरथला	31 23	75 25	28 20
करतारपुर	31 27	75 30	28 00
क़ादियां	31 49	75 23	28 28
कीरतपुर साहिव	31 11	76 34	23 44

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
कुराली	30 50	76 35	23 40
कोटकपूरा	30 36	74 54	30 24
खमाणोंकलां	30 50	76 20	24 40
खेमकरण	30 08	74 34	31 44
गंगूवाल	31 17	76 28	24 08
गढ़दिवाला	31 44	75 45	27 00
गढ़शंकर	31 13	76 11	25 16
गुरदासपुर	32 02	75 27	28 12
गोविन्दगढमण्डी	30 40	76 18	24 48
चण्डीगढ़	30 45	76 50	22 40
चमकौर साहिव	30 55	76 24	24 24
जगरांव	30 47	75 29	28 04
जलालाबाद	30 37	74 15	33 00
जालन्धर	31 19	75 34	27 44
जीरा	30 58	74 59	30 04
टाण्डाउरमर	देखें- उरमरटांडा		
डबवाली	29 58	74 47	31 00
डकाला	30 13	76 21	24 36
डेरा वावा नानक	32 02	75 04	29 44
तरनतारन	31 27	74 58	30 08
तलवण्डी साहव	30 51	74 56	30 16
दसूहा	31 49	75 42	27 12
दीनानगर	32 09	75 31	27 56
दोराहा मण्डी	30 49	76 02	25 52
धारीवाल	31 57	75 19	28 44
नकोदर	31 07	75 29	28 04
नंगल डैम	31 23	76 21	24 36
नवांशहर	31 07	76 08	25 28
नाभा	30 22	76 08	25 28
नूरपुर बेदी	31 09	76 29	24 04
नौगावां	30 44	76 26	24 16
पटियाला	30 20	76 25	24 20
पट्टी	31 17	74 51	30 36
पठानकोट	32 17	75 42	27 12
फगवाड़ा	31 14	75 46	26 56
फतेहगढ़ साहिव	30 39	76 23	24 28
फरीदकोट	30 40	74 57	30 12
फाज़िल्का	30 25	74 04	33 44
फिरोज़पुर	30 55	74 40	31 20
फिल्लौर	31 01	75 47	26 52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
वंगा	31 11	75 59	26 04
बटाला	31 48	75 12	29 12
बरनाला	30 23	75 33	27 48
बेला	30 56	76 23	24 28
बोरास	30 36	76 32	23 52
भटिण्डा	30 11	75 00	30 00
भवानीगढ़	30 16	76 02	25 52
भाखड़ा डैम	31 24	76 30	24 00
भैणी की माली	30 56	76 02	25 52
मजीठा	31 46	74 57	30 12
मण्डी गोविन्दगढ़	देखें- गोविन्दगढ़मण्डी		
मलकाणा	29 56	75 02	29 52
मानकी	30 48	76 13	25 08
मालेरकोटला	30 31	75 05	26 04
मुकेरियां	31 57	75 37	27 32
मुक्तसर	30 29	74 43	31 08
मुबारिकपुर	30 37	76 51	22 36
मोगा	30 48	75 10	29 20
मोरिण्डा	30 48	76 30	24 00
मोहाली	30 43	76 42	23 12
राजपुरा	30 29	76 36	23 36
रामपुरा फूल	30 17	75 14	29 04
रायकोट	30 39	75 36	27 36
रूपनगर	30 57	76 32	23 52
रोपड़	देखें-रूपनगर		
रौणी	30 36	76 05	25 40
लुधियाना	30 55	75 54	26 24
सादूलगढ़	29 42	75 14	29 04
संगरूर	30 12	75 53	26 28
संघोल	30 47	76 23	24 28
समराला	30 51	76 11	25 16
समाना	30 09	76 12	25 12
सरहिन्द	30 38	76 29	24 04
साधुगढ़	30 35	76 27	24 12
सुनाम	30 08	75 48	26 48
सुल्तानपुर	31 58	77 07	29 12
हरिके पत्तन	31 30	74 57	30 12
होशियारपुर	31 32	75 57	26 12
पाण्डिचेरी (Pondicherry)			
Karikal	10 55	79 50	10 40
Pondicherry	11 58	79 54	10 24

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
Mahe	11 42	75 32	27 52	जोरापोखर	22 26	85 46	13 04	वेतिया	26 48	84 33	08 12
Yanam	16 44	82 13	01 08	जोगवनी	26 26	87 13	-18 52	वैद्यनाथ धाम	24 29	86 42	16 48
बिहार और झारखण्ड				झरिया	23 50	86 33	16 12	वोकारो	23 51	86 02	14 08
अकवरपुर	24 43	83 59	-05 56	झाझा	24 46	86 22	15 28	वोधगया	24 41	84 58	09 52
अरेरिया	26 10	87 30	-20 00	डुमरांव	25 33	84 12	-06 48	मवुआ	25 03	83 37	04 28
आरा	25 32	84 35	08 20	डाल्टनगंज	24 02	84 04	06 16	भागलपुर	25 15	87 02	18 08
औरंगावाद	24 45	84 25	07 40	तेंघरा	25 29	85 57	13 48	मधेपुरा	25 57	86 54	17 24
कटिहार	25 30	87 40	20 40	दरभंगा	26 10	85 57	13 48	मधुपुर	24 16	86 37	16 28
किशनगंज	26 10	87 02	18 08	वरुखरिका	24 00	85 33	12 12	मधुवनी	26 22	86 05	14 20
कोडरमा-		.		दलसिंहसराय	25 40	85 50	13 20	मनिहारी	25 21	87 38	20 32
(झुमरी तलैया)	24 29	85 36	-12 24	दानापुर	25 38	85 05	10 20	मनोहरपुर	22 23	85 12	10 48
कोरंजो	22 27	84 28	07 52	दुम्का	24 20	87 15	19 00	महाराजगंज	26 07	84 29	07 56
खगरिया	25 30	86 29	15 56	देवघर	24 30	86 45	16 44	मुंगेर	25 23	86 30	16 00
खुण्डी	23 05	85 17	11 08	देहरी	24 57	84 11	06 44	मुजफ्फरपुर	26 07	85 27	11 48
गया	24 49	85 01	10 04	दोरण्डा	23 22	85 20	11 20	मुरलीगंज	25 54	86 59	17 56
गढवा	24 10	83 52	05 28	धनवाद	23 47	86 30	16 00	मुस्ताफावाद	26 12	84 34	08 16
गिरिडिह	24 10	86 21	15 24	नवादा	24 53	85 35	12 20	मोकामा	25 24	85 57	13 48
गुआ	22 12	85 23	11 32	नालन्दा	25 09	85 25	11 40	मोतीहारी	26 40	84 57	09 48
गुमिया	23 47	85 49	13 16	निरमाली	26 19	86 35	16 20	रंकाकलां	23 58	83 48	05 12
गुम्ला	23 06	84 30	08 00	नेतर हाट	23 29	86 16	07 04	रजौन	25 01	86 58	17 52
गोगरी	25 27	86 38	16 32	नोमुण्डी	21 10	85 32	12 08	राजमहल	25 03	87 53	-21 32
गोड्डा	24 50	87 13	18 52	पटना	25 37	85 13	10 52	रामगढ़	23 38	85 34	-12 16
गोपालगंज	26 28	84 26	07 44	पतरातु	23 38	85 17	11 08	राजगीर	25 03	85 24	-11 36
घाटसिला	22 36	86 29	15 56	पलामू	23 52	84 17	07 08	रांची	23 23	85 23	11 32
चक्रधरपुर	22 42	85 38	12 32	पाकोर	24 38	87 54	21 36	रैक्सौल	27 00	84 51	-09 24
चप्पापुर	24 02	86 31	16 04	पारसनाथ	24 00	86 11	-14 44	लख्वीसराय	25 12	86 10	-14 40
चम्पारन	26 50	84 40	08 40	पालकोट	22 52	84 41	08 44	लहरियासराय	26 07	85 54	13 36
चान्दिल	22 58	86 03	14 12	पुरनिया	25 49	87 31	20 04	लोहारडंगा	23 26	84 42	08 48
चितरंजन	23 52	86 52	17 28	फोरवेसगंज	26 18	87 15	19 00	वैशाली	26 01	85 07	-10 28
चतरा	24 12	84 56	09 44	वक्सर	25 34	83 59	05 56	शिवहर	26 25	85 27	-11 48
चाइवासा	22 34	85 51	13 24	वगहा	27 06	84 05	06 20	शेखूपुरा	25 09	85 53	13 32
छपरा	25 47	84 47	09 08	वठनाहा	26 22	87 14	18 56	सगौली	26 47	84 48	09 12
छोटा नागपुर	23 00	85 00	-10 00	वरकाना	23 37	85 29	11 56	समस्तीपुर	25 55	85 50	13 20
जमशेदपुर	22 50	86 10	14 40	वरौनी	25 26	86 00	14 00	सराय किला	22 42	85 58	-13 52
जमालपुर	25 19	86 32	16 08	वाँकीपुर (पटना)	25 40	85 12	-10 48	सहरसा	25 55	86 35	16 20
जमुई	24 59	86 13	14 52	वहादुरगंज	27 32	82 50	01 20	सासाराम	24 57	84 03	06 12
जयनगर	26 35	86 09	-14 36	विहारीगंज	25 44	86 59	17 56	साहिवगंज	25 13	87 40	20 40
जरिडिह	23 38	86 04	14 16	विहारशरीफ	25 11	85 32	12 08	सिपडेगा	23 37	84 31	08 04
जहानावाद	25 13	84 59	08 56	वून्दु	23 11	85 35	12 20	सिमरिया	24 05	84 58	-09 52
जामतारा	23 57	86 48	17 12	वेगुसराय	25 25	86 08	14 32	सिंघभूमि	22 24	85 30	-12 00

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
सिन्दरी	23	45	86	42	16	48
सीतामढ़ी	26	35	85	32	12	08
सीवांन	26	12	84	23	07	32
सुपौल	26	07	86	32	16	08
सुल्तानगंज	25	14	86	45	17	00
सोनपुर	25	42	85	12	10	48
सोनबरसा	26	51	85	32	-12	08
हज़ारीबाग	23	59	85	25	11	40
हाजीपुर	25	41	85	14	10	56

मध्य प्रदेश और वनांचल

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
आगर	23	44	76	04	-25	44
अजयगढ़	24	53	80	15	-09	00
अंजद	22	03	75	03	-29	48
अंजहेड़ा	22	32	75	07	-29	32
अदेगांव	22	38	79	30	-12	00
अमरकण्टक	22	40	81	45	-03	00
अमला	21	55	78	07	-17	32
अम्बाह	26	43	78	14	-17	04
अम्बिकापुर	23	10	83	12	+02	48
अरंग	21	12	81	58	-02	08
अलीपुरा	25	10	79	22	12	32
अलीराजपुर	22	11	74	24	-32	24
अशोकनगर	24	33	77	43	-19	08
इच्छापुर	21	10	76	09	-05	24
इच्छावर	23	01	77	01	-21	56
इटारसी	22	37	77	45	-19	00
इटावा	24	10	78	12	-17	12
इन्दौर	22	44	75	50	-26	40
इन्द्रगढ़	25	55	78	34	-15	44
उज्जैन	23	09	75	43	-27	08
उमरिया	23	32	80	53	-06	28
उमरी	26	31	78	57	-14	12
ओबैदुल्लागंज	22	59	77	36	-19	36
ओरछा	25	21	78	38	-15	28
कटंगी	21	47	79	51	-10	36
कटनी	23	47	80	27	-08	12
करकनार	19	17	8/1	36	-03	36
कांकेर	20	17	81	32	-03	52
काठघोड़ा	22	30	82	33	+00	12
किडंदुल	18	40	81	15	-05	00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
कामटी	21	14	79	15	13	00
कुक्शी	22	12	74	45	-31	00
कुतरु	19	03	80	53	-06	28
कुरसेकोढ़ी	20	13	80	48	-06	48
कृष्णनगर	23	47	83	05	+03	40
केरार	23	02	81	37	-03	32
कोईलारी	23	57	81	45	-03	00
कोंगुर	19	53	81	27	-04	12
कोठी	24	45	80	40	-07	20
कोण्डागांव	19	37	81	41	-03	16
कोरबा	22	22	82	42	+00	48
कोरवई	24	07	78	03	17	48
क्षिप्रा	22	54	76	00	-26	00
खजुराहो	24	52	79	52	-10	32
खण्डवा	21	50	76	23	-24	28
खनियाधान	25	02	78	07	-17	32
खमरियां	23	36	80	32	-07	52
खरगोन	21	52	75	32	-27	52
खरोरा	26	22	77	39	-19	24
खाचरोद	23	25	75	17	-28	52
खिलचीपुर	24	03	76	31	-23	32
खुरई	24	03	78	23	-16	28
खेतिया	21	41	74	41	-31	16
खैरागढ़	21	25	80	59	-06	04
गरनावर	24	38	81	02	-05	52
गरौंली	25	05	79	24	-12	24
गाडरवाड़ा	22	56	78	50	-14	40
गुना	24	40	77	20	-20	40
गोल्लपल्ली	17	55	81	05	-05	40
गोहद	26	25	78	29	-16	04
गौहरगंज	23	01	77	04	-19	20
ग्वालियर	26	14	78	10	-17	20
घुघरी	22	40	80	41	-27	16
चन्दाओरा	23	37	81	37	-03	32
चंदिया	23	38	80	42	-07	12
चन्देरी	24	43	28	11	17	16
चाचोरा	24	11	76	59	22	04
चापई	19	42	81	31	03	56
चापरा	22	43	76	20	-24	40
चाम्पा	22	02	82	43	+00	52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
छतरपुर	24	54	79	38	+11	28
छिनारी	19	34	81	26	-04	16
छिन्दवाड़ा	22	03	78	58	-14	08
छुई खदान	21	13	81	02	-05	52
जगदलपुर	19	05	82	04	-01	44
जनकपुर	23	43	81	47	-02	52
जबलपुर	23	10	79	59	-10	04
जशपुरनगर	22	53	84	12	+06	48
जओरा	23	43	75	08	-29	28
जावद	24	37	74	52	-30	32
जोबत	22	29	74	37	-31	32
झालवाड़ा	23	47	80	43	-07	08
झाबुआ	22	45	74	38	-31	28
टीकमगढ़	24	45	78	53	-14	28
डिंडोरी	22	57	81	41	-03	16
डूंगरगढ़	21	12	80	50	-06	40
तक्खतपुर	22	08	81	53	-02	28
तिरोदी	21	40	79	43	-11	08
तेंदुखेड़ा	23	10	78	52	-14	32
थाडला	23	01	74	34	-31	44
दतरौदा	24	00	76	17	-24	52
दतिया	25	39	78	27	-16	12
दनतेवाड़ा	18	54	81	28	-04	04
दमोह	23	50	79	29	-12	04
दिगऊकलां	24	03	75	09	-29	24
दुर्ग	21	11	81	21	-04	36
देवरी	23	23	79	02	-13	52
देवास	22	58	76	06	-25	36
धमतरी	20	42	81	34	-03	44
धर्मजयगढ़	22	28	83	13	+02	52
धर्मावरम्	18	14	80	55	-06	20
धवलपुरकलां	20	23	82	16	-00	56
धार	22	35	75	20	-28	40
नगर	23	18	82	28	-00	08
नयागांव	25	53	77	10	-21	20
नरसिंहगढ़	23	44	77	08	-21	28
नरसिंहपुर	22	57	79	15	-13	00
नवापाड़ा	20	57	81	53	-02	28
नबावबासौदा	23	37	78	14	-17	04
नसरुल्लागंज	22	42	77	17	-20	52

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर		नगर	अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर		नगर	अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अं.	क.	अं.	क.	मि.	से.		अं.	क.	अं.	क.	मि.	से.		अं.	क.	अं.	क.	मि.	से.
नागदा	23	27	75	25	-28	20	विजना	25	27	79	05	-13	40	मुरवाड़ा	23	51	80	02	-09	52
नागोद	24	33	80	37	-07	32	विजयपुर	26	04	77	22	-20	32	मुरैना	26	23	78	04	-17	44
नालखेड़ा	23	51	76	15	-25	00	विजावर	24	38	79	32	-11	52	मुलताई	21	47	78	15	-17	00
निमाड़	18	54	80	51	-06	36	विलासपुर	22	05	82	13	-01	08	मोहम्मदगढ़	23	39	78	13	-17	08
नीमच	24	27	74	52	-30	32	बीजापुर	18	48	80	49	-06	44	मैनपुरखुर्द	20	18	82	15	-01	12
नीलवाड़	19	34	81	34	-03	44	बीना	24	10	78	12	-17	12	मैहर	24	16	80	49	-06	44
नेमावर	22	30	76	59	-22	04	वीरसिंहपुर	24	48	80	59	-06	04	मोरार	26	13	78	14	-17	04
नेवाली	21	43	74	55	-30	20	बुरहानपुर	21	18	76	14	-25	04	मोहगांवकलां	21	43	79	55	-10	20
नैनपुर	22	26	80	08	-09	28	बेरनूर	19	41	81	27	-04	12	रघुगढ़	24	27	77	12	-21	12
पंचमढ़ी	22	30	78	22	-16	32	बैकुण्ठपुर	23	15	82	33	-00	12	रतनपुर	22	17	82	14	-01	16
पठारिया	23	53	79	10	-13	20	बैतूल	21	21	77	54	-18	24	रतलाम	23	31	75	07	-29	32
पण्डरिया	22	14	81	26	-04	16	बैरागढ़	23	15	77	20	-20	40	रम्भापुर	22	55	74	35	-31	40
पन्ना	22	44	80	14	-09	04	बोरियाटिब्बा	20	28	80	53	-06	28	राजगढ़	24	01	76	45	-23	00
परतावपुर	19	59	80	50	-06	40	भदौरा	24	48	77	24	-20	24	राजनन्दगांव	21	05	81	05	-05	40
परलकोट	19	45	80	48	-06	48	भरतपुर	23	45	81	45	-03	00	राजपुर	23	19	83	26	+03	44
पाटन	23	18	79	42	-11	12	भरेण्डा	19	48	81	13	-05	08	राजिम	20	58	81	55	-02	20
पांधुरना	21	36	78	32	-15	52	भातापाड़ा	21	44	81	55	-20	20	रामनगर(मण्डल)	22	36	80	31	-07	56
पिछोर	25	58	78	24	-16	24	भानपुरा	24	32	75	43	-27	08	रामनगर (रीवां)	24	12	81	12	-05	12
पिपरिया	22	47	78	20	-16	40	भानपुरी	19	22	81	50	-02	40	रामपुरा	23	28	75	30	-28	00
पिरथीपुर	25	13	78	45	-15	00	भामगढ़	21	50	76	30	-24	00	रामाकाना	21	43	78	52	-14	32
पुसवरा	20	16	81	37	-03	32	भिण्ड	26	35	78	46	-14	56	रामनुजगंज	23	48	83	42	+04	48
फुलझर	21	14	82	54	+01	36	भिलाई	21	13	81	26	-04	16	रायगढ़	21	54	83	26	+03	44
फूपकलां	26	38	78	52	-14	32	भैंसदेही	21	38	77	37	-19	32	रायपुर	21	15	81	41	-03	16
फोपनारकलां	21	13	76	18	-24	48	भोपाल	23	16	77	36	-19	36	रायसेन	23	15	77	50	-18	40
बगीचा	22	57	83	38	+04	32	भोपालपत्तनम्	18	51	80	24	-08	24	राहतगढ़	23	47	78	22	-16	32
बनवाराकलां	23	46	80	33	-07	48	मऊगंज	24	40	81	56	-02	16	रीवाँ	24	31	81	19	-04	44
बन्दा	24	03	78	57	-14	12	मकराई	22	04	77	06	-21	36	रेहली	23	38	79	05	-13	40
बरखेड़कलां	23	53	75	25	-28	20	मझगवां	24	55	80	57	-06	52	लक्ष्मणपुर	22	58	83	03	+02	12
बरगवा	24	33	82	27	-00	12	मण्डला	22	43	80	35	-08	40	लखनादाने	22	36	79	39	-11	24
बरदी	24	30	82	26	-00	16	मनावर	22	14	75	06	-29	36	लश्कर	26	12	78	12	-17	12
बरनगर	23	03	75	23	-28	28	मन्दसौर	24	05	75	06	-29	36	लामटा	22	08	80	07	-09	32
बरवानी	22	02	74	57	-30	12	महाराजपुर	25	01	79	43	-11	08	लालवाग	21	20	76	12	-25	12
बरवाह	22	16	76	04	-25	44	महाराजपुरडीह	21	58	81	04	-05	44	लुगासी	25	05	79	34	-11	44
बलोदावाज़ार	21	38	82	16	-00	56	महासमुन्द	21	06	82	06	-01	36	विदिशा	23	32	77	50	-18	40
बस्तर	19	10	81	30	-04	00	महिदपुर	23	29	75	42	-27	12	वेटेहिया	19	52	80	42	-07	20
बाम्ही	19	32	81	38	-03	28	महू	22	33	75	45	-27	00	शहडोल	23	00	81	30	-04	00
बारासेओनी	21	46	80	03	-09	48	महेन्द्रगढ़	23	21	82	21	-00	36	शाजापुर	23	26	76	18	-24	48
बालाघाटा	21	48	80	15	-09	00	महेश्वर	22	11	75	35	-27	40	शाहपुर	21	13	76	13	-25	08
बासोदा	23	52	77	55	-18	20	मांकरी	19	45	81	55	-02	20	शाहपुरा	23	10	80	43	-07	08
बिछिया	22	27	80	42	-07	12	मानपुर	22	24	75	40	-27	20	शिवनीगुड़ा	19	18	81	53	-02	28

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
शिवपुर	25	39	76	41	-23	16
शिवपुरी	25	26	77	44	-19	04
श्योपुर	25	40	76	40	-23	20
सक्ति	22	01	82	58	+01	52
सतना	24	34	80	55	-06	20
सनावद	22	11	76	04	-25	44
सबलगढ़	26	15	77	24	-20	24
सरदारपुर	22	39	74	59	-30	04
सागर	23	50	78	50	-14	40
साँची	23	29	77	44	-19	04
सारंगपुर	23	35	76	31	-23	56
सारंगगढ़	21	36	83	07	+02	28
सिरोंज	24	07	77	42	-19	12
सिहोरा	23	29	80	09	-09	24
सीतामऊ	24	01	75	23	-28	28
सीधी	24	20	81	54	-02	24
सीहोर	23	12	77	00	-22	00
सुवसरा	24	03	75	38	-27	28
सूरजपुर	23	13	82	53	+01	32
सुजालपुर	23	24	76	34	23	44
सेओनी	22	06	79	35	-11	40
सेओनी (मालवा)	22	28	77	29	-20	04
सेओन्धा	26	13	78	47	-14	52
सेओरी नारायण	21	44	82	35	+00	20
सेंधवा	21	42	75	06	-29	36
सोनहाट	23	29	82	30	00	00
सोनावल	24	00	83	23	+03	32
सोहागपुर	22	42	78	10	-16	52
सोहावल	24	35	80	50	-06	40
सौसर	21	38	78	48	-14	48
हट्टा	24	07	79	36	-11	36
हरदाखास	22	21	77	06	-21	36
होशंगाबाद	22	46	77	45	-19	00
महाराष्ट्र						
अकलकोट	17	31	76	51	22	36
अकोला (अहमदनगर)	19	32	74	03	33	48
अकोला (अमरावती)	20	42	77	02	21	52
अकोट	21	06	77	08	21	28

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
अगाशी	19	30	72	50	38	40
अचलपुर	21	19	77	33	19	48
अजन्ता	20	33	75	48	26	48
अन्जनगांव	21	11	77	21	20	36
अन्जनवेल	17	36	73	10	37	20
अजरा	16	08	74	17	32	52
अंजी	20	52	78	34	15	44
अतपड़ी	17	28	78	02	29	52
अन्तुर	20	26	75	18	28	48
अमरावती	20	56	77	48	18	48
अमलनेर-(जलगांव)	21	01	75	09	29	24
अमलनेर (बीड़)	18	57	75	24	28	24
अमांगाव	21	24	80	18	08	48
अम्बजोगई	18	44	76	23	44	28
अम्बागांव	20	38	80	00	10	00
अम्बाड	19	33	75	50	26	40
अरपल्ली	19	45	79	58	10	08
अरमोरी	20	30	80	01	09	56
अरगांव	21	10	77	04	21	44
अर्जुनी	21	04	80	15	09	00
अरवी	21	00	78	18	16	48
अष्टा	17	06	74	34	31	44
अष्टी-चन्दा	19	52	79	52	10	32
अष्टी (बीड़)	18	50	75	14	29	04
अष्टी (वर्धा)	21	13	78	15	17	00
असुंडी	19	52	80	20	08	40
अस्साय	20	15	75	59	26	04
अलीपुर	20	32	78	41	15	16
अलीबाग-(रायगढ़)	18	38	72	55	38	20
अहमदनगर	19	05	74	48	30	48
अहमदपुर	18	40	76	57	22	12
अहीरि	19	26	80	04	09	44
इगतपुरी	19	41	73	35	35	40
इन्दापुर	18	00	74	50	30	40
उड़ान	18	51	72	59	38	04
उदगीर	18	25	77	10	-21	20
उमरखेड़	13	36	77	46	18	56
उमरेड़	20	18	79	21	12	36

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
उल्हासनगर	19	20	73	10	37	20
उस्मानाबाद	18	09	76	06	25	36
एरन्डोल	20	53	75	23	28	28
एलिचपुर	28	18	77	33	19	48
एलोरा	20	02	75	15	29	00
ओस्मानाबाद	18	09	76	06	25	36
औंध	17	33	74	27	32	12
औरंगाबाद	19	52	75	22	28	32
औसा	18	15	76	34	23	44
कतोल	21	16	78	25	15	40
कनहेरगांव	19	56	77	11	21	16
कन्दाहार	18	54	77	14	21	04
कन्नड़	20	18	75	12	29	12
कयार	19	54	78	59	14	04
कराड़	17	15	74	12	33	12
करकम्ब	17	51	75	21	28	36
करजत (कोंकण)	18	54	73	23	36	28
करंजा	20	28	77	32	19	52
करंजाद्वीप	18	52	72	45	39	00
करमाला	18	25	75	15	29	00
करसगांव	21	21	77	40	19	20
कलमनूरी	19	42	77	21	20	36
कालमेश्वर	21	15	79	01	13	56
कलवन	20	30	74	06	33	36
कलाम	20	28	78	20	16	40
कल्याण	19	14	73	11	37	16
कल्लाम	18	31	76	00	26	00
काटो	21	48	74	20	33	52
कादिराबाद	19	15	75	56	26	16
कापसी	18	58	77	25	20	20
काम्पटी	21	14	79	16	12	56
कामथा	21	30	80	23	08	28
कासा	19	56	73	02	37	52
किनवत	19	38	78	16	16	56
किर्की	18	33	73	54	34	24
कुदाल	16	01	73	44	35	04
कुन्दनवाड़	16	40	74	40	31	20
कुरदुवाड़ी	18	06	75	31	27	56
कुरहाद	20	10	78	13	17	08
कुरुन्दवाड़	16	40	73	40	31	20

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
केलोद	21	30	78	58	14	08
केसलावोरी	20	24	79	20	12	40
कोंडलवाड़ी	18	15	77	44	19	04
कोपारगांव	19	55	74	32	31	52
कोरगांव-सतरार	17	42	42	16	32	56
कोतवान	18	36	73	35	35	40
कोल्हापुर	16	42	74	16	32	56
कैज	18	36	76	05	25	40
खड़की	18	34	73	52	34	32
खडग-वासला	18	32	73	45	35	00
खण्डाला-पूना	18	45	73	25	36	20
खण्डाला-सतारा	18	01	74	04	33	44
खपा	21	25	79	02	13	52
खामगांव	20	42	76	37	23	32
खरडा	18	38	75	32	27	52
खरडी	19	35	73	27	37	12
खानापुर	17	19	74	45	31	00
खार (मुम्बई)	19	02	72	51	38	36
खुआगांव	20	11	80	15	09	00
खुलदाबाद(रौज़ा)	20	01	75	16	28	56
खेड़ (पूणे)	18	51	73	56	34	16
खेड़ (रत्नागिरी)	17	45	73	25	36	20
खोलापुर	21	00	77	52	18	32
गंगाखेर	18	54	76	43	23	08
गंगापुर	19	45	75	04	29	44
गढ़चिराली	20	12	80	00	10	00
गुणसंगारी	19	30	76	02	25	52
गेवराई	19	18	75	48	26	48
गोंडिया ग्रेटर-	21	28	80	29	08	44
मुम्बई						
घुगस	19	57	79	12	13	12
घेरड़ी	17	17	75	22	28	32
घोड़	19	04	73	50	34	40
घोलवाड़	20	03	72	48	38	48
चन्द्रपुर	19	57	79	21	12	36
चान्दा	19	58	79	21	12	36
चन्दोर	20	20	74	18	32	48
चालिसगांव	20	33	75	10	29	20
चिकालदा	21	24	77	21	20	36
चिखली	20	21	76	15	25	00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
चिचगढ़	20	54	80	26	08	16
चिपलून	17	32	73	32	35	52
चिमुर	20	28	79	22	12	32
चेम्बूर	19	03	72	54	38	24
चोपड़ा	21	15	75	20	28	40
चौल	18	35	72	57	38	12
चौसाइया	18	38	75	40	27	20
जंजीरा	18	18	72	59	38	40
जमखेड़	18	44	75	24	28	24
जयगढ़	17	18	73	13	37	08
जलगांव	21	05	75	39	27	24
जलगांव-						
(अकोला)	21	01	76	35	23	40
जव्हार	19	52	73	19	36	44
जामनेर	20	47	75	52	26	32
जालना	19	50	75	58	26	08
जिन्तुर	19	38	76	40	23	20
जियुर	18	15	75	14	29	04
जुन्नार	19	15	75	58	34	08
जैतगढ़	20	58	78	40	45	20
ट्रांबे	19	01	72	58	38	08
डफलापुर	16	59	75	09	29	24
डमतेल	17	40	73	10	37	20
डहानु	19	59	72	46	38	56
डांडा	19	05	72	50	38	40
डापोली	17	49	73	12	37	12
डिंडोरी	20	12	73	54	34	24
ढालगांव	17	08	75	00	30	00
ढोंड	18	32	74	40	31	20
ढोंडा	16	20	73	40	35	20
तलवले	18	26	76	10	25	20
तापल	21	29	75	05	29	40
तारापुर	19	52	72	42	39	12
तालेगांव (पूना)	18	41	74	14	33	03
तालेगांव (वर्धा)	20	20	78	10	17	20
तालोडा	21	34	74	19	32	44
तासगांव	17	04	74	41	31	16
तुमसार	21	15	80	19	08	44
तुलजापुर	18	03	76	10	25	20
थाने	19	12	73	07	37	52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
थेर	18	22	76	14	25	04
दरयापुर	20	56	77	20	20	40
दरवाहा	20	19	77	46	18	56
दिगरस	20	06	77	48	18	48
दिगलूर	18	33	77	33	19	36
देवगढ़	16	24	73	25	36	20
देवरुख	17	05	73	40	35	20
देयूलगावराजा	20	01	76	10	25	20
देवला	20	06	79	08	13	28
देवलाली	19	58	73	52	34	32
देवली	20	39	78	32	15	52
दौलतावाद	19	57	75	16	28	48
धुलिया	20	58	74	50	30	40
धुले	20	58	74	47	30	52
नन्दगांव	20	17	74	43	31	08
नन्दुवा	21	23	74	18	32	48
नागपुर	21	10	79	10	13	20
नागमीर	20	33	79	55	10	20
नान्देड	19	09	77	21	20	36
नारखेड़	21	30	78	34	15	44
नालदुर्ग	17	49	76	20	24	40
नासिक	20	02	73	50	34	40
निफाड़	20	04	75	10	33	20
निलंगा	18	07	76	45	23	00
नेरपिंगली	21	14	78	03	17	48
नेरवाल	20	05	73	20	36	40
नेरि	20	28	79	31	11	46
नेवासा	19	38	74	58	30	08
नेसरि	16	02	74	25	32	20
नैदुर्ग	17	44	76	15	25	00
पंजहारा	20	58	74	18	32	48
पढरपुर	17	42	75	24	28	24
पथारड़ी	19	06	75	10	29	20
पद्मपुर	21	19	80	28	08	08
पनवेल	18	59	73	10	37	20
पनहाल	16	45	74	02	32	52
परतूर	19	30	76	12	25	12
परनेर	19	01	74	30	32	00
परभनी	19	08	76	51	22	36
परली	18	53	76	36	23	36

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
परातवाड़ा	21 21	77 29	20 04
परेन्दा	18 60	75 30	28 00
पलान्दुर	20 50	80 20	08 40
पालाम	19 01	76 59	22 04
पाचोरा	20 38	75 29	28 04
पाटन	17 24	73 57	34 12
पाटन- (महसाणा)	23 51	72 11	71 16
पातुर	20 28	77 02	21 52
पातोड़ा	18 48	75 32	27 52
पाथड़ी	19 20	76 30	24 00
पाली	18 34	73 18	36 48
पाल्सी	19 54	77 05	21 40
पिकालडाडी	19 14	80 05	09 40
पिम्पलनेर	20 59	74 09	33 24
पुणे (पूना)	18 31	73 55	34 20
पुरन्दर	18 15	74 04	33 44
पुरणा	19 11	77 05	21 40
पुसाद	19 56	77 38	19 28
पुलगांव	20 40	78 22	16 32
पैंठ	17 05	74 21	32 36
पेंडुव	16 04	73 41	35 16
पैठन	19 29	75 26	28 16
पोतेगांव	19 59	80 12	09 12
पौनी	20 45	79 42	11 12
फल्टान	17 59	74 29	32 04
वडनेरा	20 52	77 44	19 04
वनकोट	17 57	73 04	37 44
वम्बई	देखें मुम्बई		
वसिम	20 10	77 11	21 16
वरसीटकली	20 30	77 06	21 36
वल्हार शाह	19 55	79 23	-12 28
वसीन	19 21	72 56	38 16
वान्दरा	19 03	72 52	38 32
वारसी	18 14	75 44	27 04
वारामती	18 12	74 39	21 24
वालापुर	20 42	76 51	22 36
वासमत	19 22	77 10	21 20
विलोली	18 47	77 42	19 12
वीड़	18 59	75 50	26 40

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
बुल्डाना	20 31	76 14	25 04
बोरी	20 55	79 04	13 44
ब्रह्मपुरी	20 40	79 57	10 12
भंडक	20 08	79 10	13 20
भंडारा	21 10	79 41	11 16
भदनारा	21 22	79 37	11 32
भिवंडी	19 18	73 04	37 44
भींगर	19 05	74 53	30 28
भुसावल	21 01	75 47	26 52
भोकरदान	20 18	75 50	26 40
भोर	18 10	73 55	34 20
मंगरूल	20 36	77 52	18 32
मंगलवेढ़ा	17 32	75 32	27 52
मजालगांव	19 09	76 14	25 04
मढ़ा	18 03	75 35	27 40
मथेरान	18 59	73 18	36 48
मनगांव	18 15	73 20	36 40
मनमाड	20 15	74 29	32 04
मनवात	19 20	76 32	23 52
मनसार	21 24	79 19	12 44
मरगाव	15 50	73 59	34 04
मल्कापुर- (बुल्डाना)	20 52	76 18	24 48
मल्कापुर (कोल्हापुर)	16 57	74 00	34 00
महाद	18 05	73 29	36 04
महाबलेश्वर	17 58	73 42	35 12
मान	17 49	74 32	31 52
मायनी	17 26	74 35	31 40
मालवान	16 05	73 30	36 00
माहुर	19 50	77 59	18 04
माहिन (मुम्बई)	19 05	72 53	38 28
मालेगांव- (नासिक)	20 30	74 38	31 28
मलेगांव- (ओस्मानावाद)	18 47	76 57	22 12
मिराज	16 51	74 42	31 12
मुखेर	18 42	77 24	20 24
मुम्बई	18 55	72 54	38 24
मुरुद	18 19	72 58	38 08

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
मुर्तजापुर	20 44	77 23	20 28
मुल	20 04	79 42	11 12
मेनकर	20 05	76 32	23 52
मेरपट्टी	19 08	80 11	09 16
मेलघाट	21 44	77 12	21 12
मेहेकट	20 11	76 39	23 24
मैंदरगी	17 26	76 15	25 00
मोरम	17 46	76 32	23 52
मोरसी	21 21	78 04	17 44
मोहारी	21 19	79 42	11 12
मोहोल	17 53	75 38	27 28
मौंडा	21 10	79 30	12 00
म्हासवाड़	17 40	74 50	30 40
यवतमाल	20 24	78 11	17 16
रंगी	20 23	80 16	08 56
रत्नागिरि	17 08	73 19	36 44
रहिमतपुर	17 37	74 17	32 52
राजगढ़- (अलीबाग)	18 16	73 46	34 56
राजापुर	16 39	73 33	-35 48
राजपीपला	21 55	73 26	36 16
राजुरा चान्दा	19 45	79 25	12 20
रामटेक	21 24	79 20	12 40
रावेर	21 15	76 05	25 40
रोहा	18 25	73 08	37 28
लवाड़ा	18 00	76 23	24 28
लादूर	18 24	76 34	23 44
लाहिर	19 25	80 48	06 48
लोनार	19 59	76 38	23 28
लोनावाला	18 45	73 27	36 12
वडगांव- (अकोला)	20 32	77 00	22 00
वडगांव (पुणे)	18 46	73 41	35 16
वयार	17 56	74 14	33 04
वरोण्डा	19 27	77 59	18 04
वरोड़ा	20 15	79 05	13 40
वर्धा	20 45	78 40	15 20
वल्हा	18 15	74 13	33 08
वसाई	19 21	72 48	38 48
वाई	17 57	73 57	34 12

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
वाडा	19	40	73	11	37	16
वारूद	21	29	78	22	16	32
वालपोय	15	32	74	05	33	40
वाशिम	20	06	77	09	21	24
वासी	18	33	75	50	26	40
विरदल	21	20	74	44	31	04
विशालगड	16	55	73	46	34	56
विसापुर	18	53	74	42	31	12
विजय दुर्ग	16	26	73	26	-36	16
वीटा	17	17	74	33	31	48
वुन	20	00	78	58	14	08
वैजापुर	19	58	74	46	30	56
वैरागढ़	20	28	80	09	09	24
शहादा	21	32	74	30	32	00
शाहापुर	19	25	73	20	36	40
शिरपुर	21	21	74	53	30	28
शेगाव	20	48	76	46	22	56
शेवेगांव	19	21	75	14	29	04
शोलापुर	17	43	75	56	26	16
श्रीगोण्डा	18	41	74	44	31	04
श्रीवर्धन	18	04	78	03	17	48
सकोली	21	05	80	02	09	52
संगमेश्वर	17	13	73	35	35	40
संगीर	21	02	74	51	30	36
संगोल	17	30	75	15	29	00
संजेली (मुम्बई)	23	05	73	56	34	16
सतना	20	38	74	12	33	12
सतारा	17	43	74	02	33	52
ससवाड	18	20	74	01	33	56
सांगली	16	52	74	37	31	32
संगमनेर	19	32	74	18	32	48
सान्ताक्रुज	19	07	72	53	38	28
सावन्तवाड़ी	15	55	73	52	34	32
सिन्दखेट	19	58	76	10	25	20
सिन्दखेड़ा	21	17	74	47	30	52
सिन्नर	19	50	74	02	33	52
सिरपुर	24	10	77	04	21	44
सिरसुंडी	20	28	80	28	08	08
सिरूर	18	50	74	23	32	28
सिरोंचा	18	52	80	01	09	56

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
सिलोद	20	20	75	42	27	12
सिहोरा	21	28	79	58	10	08
सुरगना	20	32	73	20	36	40
सुरजागढ़	19	36	80	28	08	08
सेंओर्नी	19	38	79	50	10	40
सोनपेट	19	03	76	31	23	56
सोनाला	20	52	77	01	21	56
सोलापुर	17	40	75	56	26	16
सीदा	21	05	75	58	26	08
हरनाई	17	45	73	07	37	32
हरिसाल	21	30	77	05	21	40
हडगांव	19	30	77	42	19	12
हिंगनघाट	20	34	78	52	14	32
हिंगोली	19	42	77	12	21	12
हिवारखेड़	21	10	76	58	22	08
होतगी	17	37	76	03	25	48
राजस्थान						
अकलेरा	24	23	76	36	23	36
अजमेर	26	27	74	42	31	12
अनूपगढ़	29	07	73	06	37	36
अमेट	25	20	73	59	34	04
अलवर	27	34	76	38	23	28
अलीगढ़	25	58	76	07	25	30
आबू	24	40	72	45	39	00
आबूरोड	24	29	72	47	38	52
आमेर	26	59	75	52	26	32
आसपुर	23	58	74	03	33	48
आहोर	25	23	72	52	38	32
इन्द्रगढ़	25	40	76	15	25	00
उतारनी	26	06	71	58	42	08
उदयपुर	24	30	73	50	34	40
एकलिङ्गजी	24	43	73	43	35	08
एरिनपुरा	25	09	73	06	37	36
ओसियां	26	43	72	55	38	20
करौली	26	30	77	01	21	56
कांकरोली	25	04	73	54	34	24
कामन	27	39	77	16	20	56
किशनगढ़	26	34	74	52	30	32
कुशालगढ़	23	10	74	27	32	12
कुचामन	27	09	74	52	30	32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
कूंरी	26	42	70	40	47	20
केकड़ी	25	56	75	20	29	40
कोटरा	24	22	73	10	37	20
कोटा	25	10	75	52	26	32
कोलायत	27	55	73	15	37	00
खण्डेला	27	36	75	32	27	52
खेतरी	27	59	75	47	26	52
खेरवाड़ा	24	00	73	37	35	40
गंगानगर	29	49	73	50	34	40
गंगापुर-भीलवाड़ा	25	13	74	16	32	56
गंगापुर (टोंक)	26	29	76	46	22	56
गागरिया	25	44	70	42	47	12
घोटारु	27	18	70	04	49	44
चात्सू	26	36	75	59	26	04
चारनवाला	27	53	72	10	41	20
चित्तौड़गढ़	24	54	74	40	31	20
चिड़ावां	28	15	75	38	27	28
चूरू	28	19	75	01	29	56
चोमू	27	08	75	47	26	52
छबरा	24	40	76	50	22	40
छोटीसादड़ी	24	24	74	42	31	12
जयपुर	26	55	75	52	26	32
जयसमन्दर	24	12	73	56	34	16
जसरासर	27	45	73	50	34	40
जसवंतपुरा	24	48	72	30	40	00
जहाजपुर	25	38	75	12	29	12
जाएल	27	15	74	12	33	12
जालौर	25	22	72	58	38	08
जैसलमेर	26	55	70	57	46	12
जोधपुर	26	18	73	04	37	44
जोधासर	28	07	73	50	34	40
झालरापाटन	24	33	76	10	25	20
झालावाड़	24	11	76	09	25	24
झुंझुनु	28	06	75	20	27	12
टोडगढ़	25	42	74	00	34	00
टोडारायसिंह	26	00	75	42	27	12
टौंक	26	11	75	50	26	40
डीग	27	28	77	20	20	40
डीड़वाना	27	24	74	34	31	44
डूंगरपुर	23	50	73	50	34	40

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
डेगाना	26	50	74	15	33	00
तिजारा	27	55	76	50	22	40
थानाकस्वा	25	13	77	20	20	40
थानागाज़ी	27	25	76	19	24	44
दान्ता	24	12	72	47	38	52
देओरा	26	30	70	42	47	12
देवलिया	24	38	74	24	32	24
देवली	25	46	75	25	28	20
देवीकोट	26	38	71	07	45	32
देशनोके	27	50	73	15	37	00
दौसा	26	22	76	28	24	08
देसुरी	25	20	73	37	35	32
धौलपुर	26	42	77	53	18	28
नरैना	26	50	74	11	33	16
नवलगढ़	27	51	75	18	28	48
नसीराबाद	26	18	74	46	30	56
नागौर	27	11	73	40	35	20
नाचना	27	29	71	45	43	00
नाथद्वारा	24	56	73	50	34	40
निम्बहेड़ा	24	37	74	45	31	00
नीम का थाना	27	44	75	48	26	48
नेवा	25	45	25	57	26	12
नोखा	27	35	72	35	39	40
नोहर	29	11	74	49	30	44
पचपदरा	25	55	72	21	40	36
प्रतापगढ़	24	02	74	47	30	52
प्रसाद	24	11	73	42	35	12
पर्वतसर	26	52	74	47	30	52
पल्लू	28	56	74	13	33	08
पाटन	22	49	76	01	25	56
पाली	25	46	73	25	36	20
पिपलोदा	23	35	74	50	30	40
पिरावा	24	13	76	03	25	48
पिलानी	28	23	75	35	27	40
पीपाड़	26	52	73	35	35	40
पुनासर	27	02	73	02	37	52
पुष्कर	26	30	74	37	31	32
पूगल	28	31	72	47	38	52
पोखरन	26	55	71	58	42	08
फतेहपुर	28	00	75	00	30	00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
फुलौदी	27	09	72	22	40	32
फुलेरा	26	52	75	16	28	56
बड़ी सादड़ी	24	25	74	28	32	08
वनस्थली	26	23	75	50	26	40
वयाना	26	54	77	17	20	52
व्यावर	26	06	74	20	32	40
बान्दनवाड़ा	26	09	74	42	31	12
वास्वा	27	07	76	32	23	52
वान्दीकुई	27	03	76	34	23	44
बाड़मेर	25	45	71	25	44	20
बाड़ी	26	39	77	36	19	36
बाप	27	22	72	22	40	32
बारन	25	06	76	30	24	00
बांसवाड़ा	23	30	74	24	32	24
बाली	25	50	74	05	33	40
बालोतरा	25	49	72	14	41	04
विरसलपुर	28	10	72	15	41	00
विलारा	26	10	73	42	35	12
बीकानेर	28	01	73	20	36	40
बून्दी	25	27	75	40	27	20
भरतपुर	27	15	77	30	20	00
भवारी	25	43	72	52	38	32
भंवरगढ़	25	06	76	50	22	40
भाद्रा	29	07	75	09	29	24
भीम	25	39	74	09	33	24
भीलवाड़ा	25	21	74	40	31	20
मकराना	27	03	74	43	31	08
मण्डलगढ़	25	12	75	09	29	24
महाजन	28	48	73	56	34	16
मांगरोल	25	20	76	30	24	00
मारवाड़जं	25	43	73	45	35	00
मालपुरा	26	18	75	25	28	20
मावली	24	47	73	58	34	08
मेडता	26	39	74	06	33	36
मेड़तारोड	26	43	73	55	34	20
मुकन्दवाड़ा	24	49	75	59	26	04
मुनवा	25	43	70	15	49	00
मोदड़ी	24	25	73	25	36	20
मोहनगढ़	27	17	71	18	44	48
रतनगढ़	28	05	74	39	31	24

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.	से.
राजगढ़	28	39	75	26	28	16
राजसमन्दर	25	10	73	50	34	40
रानीवाड़ा	24	45	72	13	41	08
रामगढ़ (जयपुर)	27	15	75	10	29	20
रामगढ़(जैसलमेर)	27	22	70	30	48	00
रामदेवरा	27	00	71	52	41	34
रायसिंहनगर	29	32	73	27	36	12
रिखभदेव	24	04	73	40	35	20
रींगस	27	21	75	34	27	44
रूपनगर	26	48	74	54	30	24
रेनी	28	41	75	05	29	40
रेनिवाल	24	46	72	11	41	16
रैवतसर	29	16	74	26	32	16
लछमनगढ़	27	50	75	04	29	44
लाटी	27	03	71	30	44	00
लाडनूं	27	39	74	23	32	28
लालसोत	26	34	76	23	24	28
लूनी	26	00	72	52	38	32
लोहारिया	23	48	74	15	33	00
शाहगढ़	27	08	69	57	50	12
शाहपुरा(जयपुर)	27	23	75	58	26	08
शाहपुरा(भीलवाड़ा)	25	40	74	50	30	40
शाहावाद	25	10	77	20	20	40
शेओ	26	11	71	15	45	00
शेरगढ़ (जोधपुर)	26	25	72	21	40	36
शेरगढ़-झालावाड़	24	40	76	32	23	52
श्रीगंगानगर	29	49	73	50	34	40
श्रीडूंगरगढ़	28	06	74	01	33	56
श्रीमाधोपुरा	27	25	75	32	27	52
श्रीमोहनगढ़	27	17	71	12	45	12
सम	26	50	70	31	47	56
समदरी	25	49	72	35	39	40
सरदारशहर	28	27	74	30	32	00
सरवार	26	08	74	55	30	20
सरूपसर	29	22	73	37	35	32
सवाईमाधोपुर	25	58	76	30	24	00
सहारा	25	15	74	16	32	56
सागवाड़ा	23	41	74	01	33	56
सांगानेर	26	49	75	49	26	44

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर		नगर	अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर		नगर	अक्षांश (उत्तर)		रेखांश (पूर्व)		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अं.	क.	अं.	क.	मि.	से.		अं.	क.	अं.	क.	मि.	से.		अं.	क.	अं.	क.	मि.	से.
सांगोद	24	55	76	21	24	36	चण्डीमन्दिर-							बल्लभगढ़	28	21	77	19	20	44
सांचोर	24	40	71	50	42	40	(कैण्ट)	30	42	76	52	22	32	बहादुरगढ़	28	41	76	56	22	16
साम्भर	26	54	75	10	29	20	चरखी दादरी	28	37	76	18	24	48	बालसमन्द	29	05	75	29	28	04
सादूलपुर	28	38	75	24	28	24	चिलकाणा	29	12	76	59	22	04	बास	29	06	76	12	25	12
सिन्दरी	25	33	71	55	42	20	जगाधरी	30	10	77	18	20	48	बुटाणां	29	11	76	38	23	28
सिरोही	24	53	72	54	38	24	जारवल	29	48	75	50	26	40	भाणा	29	40	76	31	23	56
सिवाना	25	36	72	27	40	12	जींन्द	29	19	76	23	24	28	भिवानी	28	46	76	18	24	48
सींकर	27	36	75	15	29	00	झझर	28	27	76	39	23	24	मनसादेवी	30	43	76	51	22	36
सुजानगढ़	27	42	74	30	32	00	झांसा	30	07	76	44	23	04	मनीमाजरा	30	42	76	52	22	32
सूरतगढ़	29	19	73	57	34	12	टोहाना	29	42	75	54	26	24	महेन्द्रगढ़	28	13	76	09	25	24
सोजत	25	56	73	42	35	12	डोहा	27	40	76	56	22	16	मानपुर	27	59	77	17	20	52
हनुमानगढ़	29	35	74	21	32	36	तोशाम	28	52	75	54	26	24	माहम	28	57	76	18	24	48
हिन्दौन	26	43	77	01	21	56	थानावास	27	51	76	09	25	24	मोहाना	29	03	76	52	22	32
लक्षद्वीप (Lakshadweep)							थानेसर	29	58	76	49	22	44	यमुना नगर	30	07	77	18	20	48
(मिनिकाम एवं अमिनदिवि द्वीप समूह)							दादरी	28	34	77	33	19	48	रजावाद	29	34	75	32	27	52
अगत्ति	10	50	72	12	41	12	दुजाना	28	41	76	37	23	32	राओली	27	42	76	56	22	16
ऐण्ड्रोथ	10	50	73	41	35	16	धोलेरा	27	55	76	04	25	44	रादौर	30	01	77	08	21	28
कवरत्ती	10	33	72	38	39	28	नरवाणा	29	37	76	07	25	32	रायपुर राणी	30	36	77	02	21	52
किल्तान	11	29	73	00	38	00	नांगल चौधरी	27	53	76	07	25	32	रिवाड़ी	28	12	76	40	23	20
काल्पेनी	10	05	73	38	35	28	नांगल दुर्गु	27	53	76	03	25	48	रिंवासा	28	48	75	57	26	12
चेटलट	11	42	72	42	39	12	नाथुसिरी कलां	29	22	75	08	29	28	रोहतक	28	54	76	38	23	28
मिनिकॉय	8	17	73	02	37	52	नारनौल	28	03	76	14	25	04	लाडवा	29	59	77	05	21	40
सुहेली पार	10	03	72	17	40	52	नारायणगढ़	30	29	77	08	21	28	लोहारी	29	22	76	51	22	36
हरियाणा							नाहर	28	23	76	23	24	28	लोहारु	28	16	75	45	27	00
अगरोहा	29	21	75	38	27	28	नीलोखेड़ी	29	51	76	55	22	20	शादीपुर जुलाना	29	07	76	23	24	28
अम्बाला	30	21	76	52	22	32	नूरपुर	30	13	76	47	22	52	शाहाबाद	30	10	76	55	22	20
अलीपुर	29	08	75	53	26	28	नूह	28	07	77	01	21	56	साढौरा	30	23	77	13	21	08
उगाला	30	11	76	59	22	04	पंचकूला	30	42	76	52	22	32	सिरसा	29	32	75	07	29	32
करनाल	29	42	77	02	21	52	पटौदी	28	18	76	48	22	48	सिवानी	28	55	75	37	27	32
कलानौर	28	51	76	24	24	24	पलवल	28	09	77	20	20	40	सोनीपत	28	59	77	04	21	44
कालका	30	50	76	56	22	16	पानीपत	29	23	77	10	21	20	हसनपुर	27	58	77	30	20	00
कुरुक्षेत्र	29	59	76	50	22	40	पावरा	29	24	75	48	27	48	हांसी	29	06	76	00	26	00
केसरी	23	14	76	54	22	24	पिंजौर	30	50	76	54	22	24	हिसार	29	10	75	46	26	56
कैथल	29	48	76	26	24	16	पिपली	29	58	76	53	22	28	होडल	27	53	77	22	20	32
कैठ	28	41	75	52	26	32	पिहोवा	29	57	76	37	23	32	**हिमाचल प्रदेश**						
खतौली	30	36	76	58	22	08	पुंडरी	29	45	76	33	23	48	अम्ब	31	42	76	07	25	32
गुड़गांव	28	37	77	04	21	44	पूनाहाणा	27	52	77	12	21	12	अम्बोटा	31	39	76	04	25	44
गोरखपुर	29	26	75	40	27	20	फतेहाबाद	29	31	75	30	30	00	अर्की	31	09	76	58	22	08
गोहाना	29	08	76	42	23	12	फरीदाबाद	28	25	77	22	20	32	आनी	31	27	77	25	20	20
गीरोटा	27	56	77	25	20	20	फिरोज़पुरझिरखा	27	47	76	57	22	12	आराकोट	31	04	77	50	18	40
घरौण्डा	29	33	76	58	22	08	बड़ाउचाणा	29	27	76	11	25	16	इन्दौरा	32	07	75	40	27	28
घाटासेर	27	58	76	03	25	48	बरवाला	29	22	75	54	26	24	ऊना	31	29	76	17	24	52

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
औट	31 47	77 11	21 16	डलहौजी	32 32	75 59	26 04	बिलासपुर	31 19	76 50	22 40
कटराई	32 07	77 07	21 32	डाड़	32 07	76 31	23 56	बैजनाथ	32 04	76 37	23 32
कण्डाघाट	30 58	77 07	21 32	डेहरा गोपीपुर	31 54	76 13	25 08	भरमौर	32 27	76 32	23 52
कसौली	30 55	76 57	22 12	ढलियारा	31 51	76 12	25 12	भरवाई	31 48	76 07	25 32
कांगड़ा	32 05	76 18	24 48	तारादेवी	31 03	77 08	21 28	भून्तर	31 53	77 07	21 32
काला अम्ब	30 30	77 13	21 08	तीन्दी	32 45	76 27	24 12	मंगवाल	32 00	76 06	25 36
काल्पा	31 32	78 15	17 00	तीसा	32 49	76 08	25 28	मणिकर्ण	32 02	77 21	20 36
कियारीघाट	31 00	77 05	21 40	त्रिलोकनाथ	32 44	76 39	23 24	मण्डी	31 43	76 58	22 08
किलार	33 08	76 24	24 24	त्रिलोकपुर	30 34	77 09	21 24	मनाली	32 16	77 10	21 20
कुफरी	31 06	77 12	21 12	त्र्यूण्ड	32 17	76 22	24 32	मलाना	32 04	77 15	21 00
कुम्हारहट्टी	30 53	77 03	21 48	थरोट	32 42	76 48	22 48	मशोबरा	31 08	77 13	21 08
कुल्लू	31 58	77 06	21 36	थानेधार	31 20	77 34	19 44	मीनस	30 46	77 41	19 16
केलांग	32 37	77 05	21 40	दवेटी	30 57	77 03	21 48	मूरंग	31 37	78 28	16 08
कोटखाई	31 08	77 36	19 36	धर्मपुर	30 53	77 02	21 52	यान्थंग	31 53	78 38	15 28
कोटगढ़	31 19	77 29	20 04	धर्मशाला	32 13	76 19	24 44	खालसर	31 58	76 50	22 40
कोटला	32 13	76 04	25 44	धारा	31 50	77 15	21 00	राजगढ़	30 51	77 20	20 40
कौरिक	32 06	78 37	15 32	धौलाकुआं	30 30	77 29	20 04	राजवन	30 34	77 36	19 36
खजियार	32 32	76 04	25 44	नचर	31 33	77 56	18 16	रामपुर बुशहर	31 27	77 38	19 28
खड़ा पत्थर	31 06	77 34	19 44	नमनिया	31 49	78 39	15 24	रायसन	32 05	77 07	21 32
खदराला	31 16	77 37	19 32	नहुआ	30 48	77 06	21 36	लम्बा गराओं	31 54	76 33	23 48
खुण्डनेवाल	30 56	77 42	19 12	नादौन	31 48	76 21	24 36	शाहपुर	32 12	76 10	25 20
खोकसर	32 26	77 12	21 12	नारकण्डा	31 16	77 27	20 12	शिमला	31 06	77 10	21 20
गुम्मा	31 06	77 28	20 08	नालदेरा	31 11	77 11	21 16	शोघी	31 03	77 07	21 36
गोहर	31 34	77 02	21 52	नालागढ़	31 03	76 42	23 12	संगरा	30 43	77 22	20 32
घुमारवीं	31 26	76 43	23 08	नाहन	30 33	77 21	20 36	सन्तोखगढ़	31 21	76 21	24 36
चम्बा	32 34	76 08	25 28	निरमण्ड	31 27	77 34	19 44	सपाटू	30 59	76 59	22 04
चम्बी	32 09	76 15	25 00	नूरपुर	32 18	75 54	26 24	सरकाघाट	31 43	76 47	22 52
चांगो	31 59	78 37	15 32	नैनादेवी	31 19	76 30	24 00	सल्लाघाट	31 10	76 59	22 04
चामुण्डा जी	32 07	76 23	24 28	नोगली	31 24	77 38	19 28	सांगला	31 29	78 12	17 12
चिन्तपूरणी	31 49	76 07	25 32	परवाणू	30 50	76 37	22 12	सुन्दरनगर	31 32	76 53	22 28
चीड़गांव	31 15	77 53	18 28	पाऑंटा साहिब	30 27	77 37	19 32	सिहुन्ता	32 18	76 08	25 28
चौपाल	30 57	77 36	19 36	पालमपुर	32 07	76 33	23 48	सीमा	31 14	77 50	18 40
जतोग	31 06	77 07	21 32	बजौरा	31 51	77 08	21 28	सुन्नी	31 14	77 06	21 36
जवाली	32 07	76 02	25 52	बंजार	31 40	77 21	20 36	सैंज	31 49	77 19	20 44
जांगला	31 12	76 42	23 12	बद्दी	30 55	76 48	22 48	सोलन	30 55	77 09	21 24
जुब्बल	31 07	77 39	19 24	बड़सर	31 32	76 28	24 08	हडसर	32 22	76 33	23 48
जेगिन्दरनगर	31 59	76 46	22 56	बनीखेत	32 33	75 58	26 08	हमीरपुर	31 41	76 31	23 56
ज्वालामुखी	31 53	76 19	24 44	बरोट	32 02	76 50	22 40	हरसीपत्तन	31 53	76 39	23 24
टीहरा सुजानपुर	31 51	76 32	23 52	बरोटी वाला	30 56	76 49	22 44	हरिपुर	31 59	76 05	25 40
डगशई	30 53	77 03	21 48	बागी	31 15	77 33	19 48	हरिपुरधार	30 52	77 28	20 08
डंखरगोम्पा	32 06	78 12	17 12	बातल	32 22	77 36	19 36	हाँसी	32 27	77 50	18 40
डमटाल	32 12	75 40	27 20					हाटकोटी	31 08	77 45	19 00

रेखांश 82-30 से अधिक हो तो जन्म समय में रेखान्त (+) जोड़ना व कम होने पर (-) ऋण करना। सूर्योदय में विपरीत संस्कार करना।

वर-कन्या मेलापक विषयानुक्रमणिका

(वर-नक्षत्र अश्वनी से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	३	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२८	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	३	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	३४	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	१।।*	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२७।।	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१।।*	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	१८।।	त्या.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१।।	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२३।।	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१।।*	,,	,,	देव	,,	मध्य	२३।।	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२७	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१।।	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	१६	त्या.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	१६	त्या.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२१।।	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।	मेष	,,	,,	,,	मध्य	३०।।	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	३	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२५	ग्रा.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	३	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१६	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	३	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२५	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	१।।*	गौ	,,	,,	,,	आदि	१६।।	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१।।*	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	१३	त्या.
हस्त	१-४	,,	,,	१।।	महिषी	,,	देव	,,	आदि	११	त्या.
चित्रा	१-२	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	१३	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१।।*	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२२।।	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	१।।	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२८।।	त्या.
विशाखा	१-३	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२२।।	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१।।*	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१६।।	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२४।।	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	३	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	१२	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	३	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१२	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	३	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२७	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१।।*	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२५।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१।।*	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२८	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१।।	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२७	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२०	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	२०	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१।।	अश्व	,,	,,	,,	आदि	१५	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	१८	त्या.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१४।।	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२४।।	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	३	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२५	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *अश्वनी* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण ।
अश्वनी	१-४	गणना विपरीत चरण में बनेगी ।
भरणी	१-४	गणना उत्तमोत्तम है ।
कृत्तिका	१	गणना उत्तम है । एकाधिपत्य से गण दोष नहीं होता ।
कृत्तिका	२-४	गणना नहीं बनती । गण और द्विर्द्वादश दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
रोहिणी	१-४	गणना मध्यम वनती है । द्विर्द्वादश दोष वश्यैक्य से नहीं होता ।
मृगशिर	१-२	गणना मध्यम बनती है । द्विर्द्वादश दोष वश्यैक्य से नहीं होता ।
मृगशिर	३-४	गणना उत्तम है ।
आर्द्रा	१-४	नाड़ी दोष है अत्यावश्यकता में (विप्र जाति को वर्जित है) ग्रहण करें ।
पुनर्वसु	१-३	नाड़ी दोष है अत्यावश्यकता में (विप्र जाति को वर्जित है) ग्रहण करें ।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती । वर्ण, अशुभ-दशम-चतुर्थ नाड़ी दोष है ।
पुष्य	१-४	गणना उत्तम है शुभ दशम चतुर्थ है ।
आश्लेषा	१-४	गणना बनती है सद्कूट से वण व गणदोष नहीं होगा । शुभ दशम चतुर्थ है ।
मघा	१-४	गणना बनती है राशीश मैत्री से वश्य, गण और नव पंच दोष नहीं होगी ।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना बनती है राशीश मैत्री से वश्य और नव पंच दोष नहीं होगा ।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती । नवपंचम, वश्य एवं नाड़ी दोष है ।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना नहीं बनती । षडष्टक व नाड़ी दोष है ।
हस्त	१-४	गणना नहीं बनती । षडष्टक व नाड़ी दोष है ।
चित्रा	१-२	गणना नहीं बनती । गणऔर षडष्टक, दोष है ।
चित्रा	३-४	गणना नहीं बनती । गण व विषम सप्तक दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
स्वाती	१-४	गणना नहीं बनती । विषम सप्तक दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
विशाखा	१-३	गणना नहीं बनती । गण व विषम सप्तक दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
विशाखा	४	गणना बनेगी एकाधिपत्य से वर्ण, गण और षडष्टक दोष नहीं होगा ।
अनुराधा	१-४	गणना बनेगी । एकाधिपत्य, मित्र षडष्टक है ।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती हैं । वर्ण, गण, षडष्टक व नाड़ी दोष है ।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, नवपंच व नाड़ी दोष है ।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना उत्तम है शुभ नवपंच राशीश मैत्री है ।
उ.षाढ़ा	१	गणना उत्तम है शुभ नवपंच राशीश मैत्री है ।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना उत्तम है ।
श्रवण	१-४	गणना उत्तम है ।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती गण दोष है । नवांश कोष्ट से निर्णय करें ।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती गण दोष है । नवांश कोष्ट से निर्णय करें ।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती गण और नाड़ी दोष है ।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना नहीं बनती, नाड़ी दोष है ।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती, वर्ण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है ।
उ.भाद्र	१-४	गणना मध्यम बनती है । राशीश मैत्री से वर्ण, द्विर्द्वादश दोष नहीं होगा ।
रेवती	१-४	गणना मध्यम बनती है । राशीश मैत्री से वर्ण, द्विर्द्वादश दोष नहीं होगा ।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें ।

(वर-नक्षत्र भरणी से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	३	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	३३	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	३	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२८	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	३	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२६	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	३	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२०	त्या.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१।।*	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२३।।	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१।।	,,	,,	देव	,,	मध्य	१४।।	त्या.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१।।	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	१८	त्या.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१।।*	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२७	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१।।	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२६।।	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१।।	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२८।।	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।*	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२१।।	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२३।।	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	३	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१६	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	३	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१७	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	आदि	२५	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	३	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२१।।	त्या.
हस्त	१-४	,,	,,	१।।*	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२०	त्या.
चित्रा	१-२	,,	,,	१।।	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	६	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१।।	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	१५।।	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	१।।*	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२६।।	त्या.
विशाखा	१-३	,,	,,	१।।	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२३।।	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१।।	,,	मंगल	,,	वृशिच.	अन्त्य	१७।।	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।*	मृग	,,	देव	,,	मध्य	१४।।	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	१७।।	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	३	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२०	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	३	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२०	त्या.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	३	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२७	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	३	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२६।।	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१।।*	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२७	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१।।	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	११	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१।।	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	११	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१।।*	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२१	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१।।	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२५	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१।।	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	२१।।	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।*	गौ	,,	,,	,,	मध्य	१५।।	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२४।।	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *भरणी* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना उत्तमोत्तम है।
भरणी	१-४	एक नक्षत्र दोष है चरण भेद में गणना बनेगी।
कृत्तिका	१	गणना बनती है। एकाधिपत्य से गणदोष नहीं होगा।
कृत्तिका	२-४	गणना नहीं बनेगी। गण और द्विर्द्वादश दोष है। नवांश कोष्टक देखे।
रोहिणी	१-४	गणना बनती है। वश्यैक्य से द्विर्द्वादश दोष नहीं होगा।
मृगशिर	१-२	गणना नहीं बनेगी। द्विर्द्वादोष और नाड़ी दोष है।
मृगशिर	३-४	गणना नहीं बनेगी। नाड़ी दोष है।
आर्द्रा	१-४	गणना उत्तम है।
पुनर्वसु	१-३	गणना उत्तम है।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण या दशम चतुर्थ दोष है। नवांश कोष्टक देखें।
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और दशम चतुर्थ व नाड़ी दोष है।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती। वर्ण, गण, दशम चतुर्थ दोष है।
मघा	१-४	गणना बनती है। वश्य, गण व नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना वश्य नवपंचम और नाड़ी दोष से नहीं बनती।
उ.फाल्गु.	१	गणना मध्यम बनती है। वश्य, नवपंचम दोष राशीश की मैत्री से नहीं होगा।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना नहीं बनती षडष्टक दोष है। नवांश कोष्टक देखें।
हस्त	१-४	गणना नहीं बनेगी। मृत्यु षडष्टक है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
चित्रा	१-२	गणना गण, षडष्टक और नाड़ी दोष से नहीं बनती है।
चित्रा	३-४	गणना गण, विषम सप्तक और नाड़ी दोष से नहीं बनती है।
स्वाति	१-४	गणना नहीं बनेगी, विषमसप्तक योग है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
विशाखा	१-३	गणना नहीं बनेगी, विषमसप्तक दोष है। नवांश कोष्टक निर्णय करें।
विशाखा	४	गणना बनती है, एकाधिपत्य से वर्ण, गण और षडष्टक दोष नहीं होगा।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना बनती है। वर्ण और गण दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है। मित्र षडष्टक है।
मूल	१-४	गणना बनती है। गण और नवपंचम दोष राशीश की मैत्री से नहीं होगा।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना नहीं बनती है। नवपंचम और नाड़ी दोष है।
उ.षाढ़ा	१	गणना श्रेष्ठ बनती है। शुभ नवपंचम और राशीश की मैत्री है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना उत्तम बनती है।
श्रवण	१-४	गणना उत्तम बनती है।
धनिष्ठा	१-२	गणना योनि, गण, दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष से नहीं बनती है।
धनिष्ठा	३-४	गणना योनि, गण और नाड़ी दोष से नहीं बनती है।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण दोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना श्रेष्ठ बनती है। योनि दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना बनती है। वर्ण और योनि दोष राशीश की मैत्री से नहीं होता है।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
रेवती	१-४	गणना मध्यम बनती है। राशीश मैत्री से वर्ण और द्विर्द्वादश दोष नहीं होता है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

५ (वर-नक्षत्र कृत्तिका प्रथम चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१॥	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२८॥	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	३	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२६	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	३	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२८	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	३	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	१६	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	३	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	१२	त्या.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१॥*	,,	,,	देव	,,	मध्य	१६॥	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१॥*	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२३	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१॥	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२१	त्या.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१॥*	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२३	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१॥*	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२५॥	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	१॥	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२६॥	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१॥*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२२॥	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१॥	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१५॥	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	३	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१६	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	आदि	२०	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	३	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	१६॥	त्या.
हस्त	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	आदि	१७॥	त्या.
चित्रा	१-२	,,	,,	१॥*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	१६	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१॥*	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२८॥	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	१॥	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	१७॥	त्या.
विशाखा	१-३	,,	,,	१॥*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२०॥	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१॥*	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१४॥	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१॥	मृग	,,	देव	,,	मध्य	१६॥	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१॥*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२४॥	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१॥	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२४॥	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	३	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१६	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	३	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	१४	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	३	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	१६॥	त्या.
श्रवण	१-४	,,	जल.	३	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	१३॥	त्या.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१॥*	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२६	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१॥*	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	२६	ग्रा.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१॥	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२८	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१॥*	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२०	त्या.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१॥*	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१६॥	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१॥	गौ	,,	,,	,,	मध्य	१८॥	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	१॥*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	११॥	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *कृतिक* १ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण ।
अश्वनी	१ - ४	गणना उत्तम बनती है । एकाधिपत्य से गण दोष नहीं होगा ।
भरणी	१ - ४	गणना उत्तम बनती है । गण दोष को एकाधिपत्य हटाता है ।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती । नक्षत्र का एक चरण व एक नाड़ी है ।
कृत्तिका	२ - ४	चरण भेद है । अतः निर्दोष गणना बनती है ।
रोहिणी	१ - ४	गणना नहीं बनती है । गण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है ।
मृगशिर	१ - २	गणना द्विर्द्वादश एवं गण दोष के कारण नहीं बनती । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
मृगशिर	३ - ४	गणना बनती है, गणदोष सद्कूटसे नहीं होता है ।
आर्द्रा	१ - ४	गणना नहीं बनेगी गणदोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
पुनर्वसु	१ - ३	गणना बनती है । गण दोष राशि मैत्री से नहीं होता ।
पुनर्वसु	४	गणना बनेगी । वर्ण, दशम चतुर्थ और गण दोष मं०और चन्द्रमा सममित्र से न होगा।
पुष्य	१ - ४	गणना नहीं बनती है। वर्ण,दशमचतुर्थ और गणदोष है,नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
आश्लेषा	१ - ४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, दशम चतुर्थ और नाड़ी दोष है ।
मघा	१ - ४	गणना वश्य, नवपंचम और नाड़ी दोष से नहीं बनती है ।
पूर्वाफाल्गु.	१ - ४	गणना बनती है । राशीश मैत्री से वश्य, गण और नवपंचम दोष नहीं होगा ।
उ.फाल्गु.	१	गणना बनती है । राशीश मैत्री से वश्य, गण और नवपंच दोष नहीं होगा ।
उ.फाल्गु.	२ - ४	गणना नहीं बनती है । गण और षडष्टक दोष है ।
हस्त	१ - ४	गणना नहीं बनती है । गण और षडष्टक दोष है ।
चित्रा	१ - २	गणना नहीं बनती है । षडष्टक दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
चित्रा	३ - ४	गणना नहीं बनती है । विषमसप्तक दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
स्वाति	१ - ४	गणना नहीं बनती है । गण, विषमसप्तक और नाड़ी दोष है ।
विशाखा	१ - ३	गणना नहीं बनती है । विषमसप्तक और नाड़ी दोष है ।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
अनुराधा	१ - ४	गणना बनती है । एकाधिपत्य से वर्ण, गण और षडष्टक दोष नहीं होगा ।
ज्येष्ठा	१ - ४	गणना मध्यम बनती है । एकाधिपत्य से वर्ण और षडष्टक दोष नहीं होगा ।
मूल	१ - ४	गणना मध्यम बनती है । राशीश मैत्री व शुभ नवपंचम है ।
पूर्वाषाढ़ा	१ - ४	गणना निकृष्ट है । योनि, गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होगा।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है । गण, नाड़ी दोष है । शुभ नवपंचम ग्रह मैत्री है ।
उ.षाढ़ा	२ - ४	गणना नहीं बनती है । गण और नाड़ी दोष है ।
श्रवण	१ - ४	गणना नहीं बनती है । योनि, गण और नाड़ी दोष है ।
धनिष्ठा	१ - २	गणना उत्तम बनती है ।
धनिष्ठा	३ - ४	गणना उत्तम बनती है ।
शतभिषा	१ - ४	गणना उत्तम बनती है ।
पूर्वाभाद्र	१ - ३	गणना नहीं बनती है । गणदोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
पूर्वाभाद्र	४	गणना निन्द्य है । वर्ण, गण और द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होगा ।
उ.भाद्र	१ - ४	गणना निन्द्य है । वर्ण, गण दोष राशीश मैत्री से नहीं होगा शुभ द्विर्द्वादश है ।
रेवती	१ - ४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है ।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें ।

७ (वर-नक्षत्र कृत्तिका २-४ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	१८।।	त्या.
भरणी	१-४	,,	,,	३	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१६	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	३	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१८	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	३	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२८	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	३	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२१	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१।।*	,,	,,	देव	,,	मध्य	२८।।	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२०।।	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१।।	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	१८।।	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२०।।	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२२	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२३	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१६	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१६।।	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	३	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२०	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	आदि	२१	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	३	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२१	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२२	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२३।।	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१।।*	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२३।।	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	१।।	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	१२।।	त्या.
विशाखा	१-३	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१५।।	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१।।*	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१६।।	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२४।।	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२६।।	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१६	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	३	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१३।।	त्या.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	३	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	८।।	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	३	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	१४	त्या.
श्रवण	१-४	,,	जल.	३	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	११	त्या.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२३।।	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	३०।।	ग्रा.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१।।	अश्व	,,	,,	,,	आदि	३२।।	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२४।।	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१६	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२१	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	१४	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *कृतिका* २-४ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, द्विर्द्वादश एवं वर्ण दोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
भरणी	१-४	गणना बनती है। गणदोष शुभद्विर्द्वादश, वश्यैक्य, शुभतारा वर्णोत्तम से नहीं होगा।
कृत्तिका	१	गणना बनती है। चरण भेद है।
कृत्तिका	२-४	चरण भेद में गणना बनेगी।
रोहिणी	१-४	गणना बनती है। एक राशि भिन्न नक्षत्र में गण, नाड़ी दोष नहीं होता है।
मृगशिर	१-२	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य से गण दोष नहीं होता है।
मृगशिर	३-४	गणना मध्यम बनती है। गण, द्विर्द्वादश दोष रशीश मैत्री से नहीं होता है।
आर्द्रा	१-४	गणना बनती है। गण और द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री नहीं होता है।
पुनर्वसु	१-३	गणना बनती है। गण और द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री नहीं होता है।
पुनर्वसु	४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण और गणदोष राशीश वर्णोत्तम से नहीं होगा।
पुष्य	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण, गणदोष राशिमैत्री वर्णोत्तम से न होगा।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और नाड़ी दोष है।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य, दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य, गण और दशमचतुर्थ दोष हैं। नवांश कोष्टक देखें।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य, गण और दशमचतुर्थ दोष है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना बनती है। गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से हटता है।
हस्त	१-४	गणना मध्यम बनती है। गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से हटाता है।
चित्रा	१-२	गणना मध्यम बनती है। नवपंचम दोष राशीश की मैत्री से नहीं होता है।
चित्रा	३-४	गणना मध्यम बनती है। वश्य षडष्टक दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
स्वाति	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
विशाखा	१-३	गणना निन्द्य बनाती है। षडष्टक और नाड़ी दोष एकाधिपत्य से नहीं होगा।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और नाड़ी दोष है।
अनुराधा	१-४	गणना बनती है। वर्ण या गणदोष राशीश वर्णोत्तम औ सद्भकूट से नहीं होता।
ज्येष्ठा	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्ण दोष सद्भकूट से नहीं होता है।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण एवं शत्रु षडष्टक दोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
पूर्वापाढ़ा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, योनि, गण और षडष्टक दोष है।
उ.पाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
उ.पाढ़ा	२-४	गणना नहीं बनती है। गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
श्रवण	१-४	गणना नहीं बनती है। योनि, गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
धनिष्ठा	१-२	गणना मध्यम बनती है। शुभ नवपंचम एवं ग्रह मैत्री है।
धनिष्ठा	३-४	गणना उत्तम बनाती है।
शतभिषा	१-४	गणना उत्तम बनाती है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना श्रेष्ठ बनती है। राशीश मैत्री से गण दोष नहीं होता है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और गण दोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, दोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
रेवती	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, वर्ण और नाड़ी दोष है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

९ (वर-नक्षत्र रोहिणी से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।*	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२१।।	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	१।।	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२२।।	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	३	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	११	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	३	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२१	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	३	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२८	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	३	,,	,,	देव	,,	मध्य	३५	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२७	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१।।*	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२४।।	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१।।	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२३।।	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१।।	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२५	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।*	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२६	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१२	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।*	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	६।।	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१।।	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२३।।	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	आदि	२५	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	३	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२५	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२५	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२०	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	३	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२०	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	१।।*	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	१५।।	त्या.
विशाखा	१-३	,,	,,	१।।	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१०।।	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१।।	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१४।।	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।*	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२७	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२२।।	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।*	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१३	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१।।*	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२०	त्या.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	३	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	११।।	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	३	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	१७	त्या.
श्रवण	१-४	,,	जल.	३	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	१७	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	३	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२०	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	२७	ग्रा.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१।।*	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२५	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१।।	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	३१।।	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१।।	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	२६	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।*	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२५	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	१७	त्या.

*वंर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *रोहिणी* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना मध्यम बनती है। वर्ण, शुभ द्विर्द्वादश और राशीश वर्णोत्तम है।
भरणी	१-४	गणना मध्यम बनती है। वर्ण, शुभ द्विर्द्वादश और राशीश वर्णोत्तम है।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, नाड़ी और द्विर्द्वादश दोष है।
कृत्तिका	२-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। एकाधिपत्य से गण और नाड़ी दोष नहीं होता है।
रोहिणी	१-४	गणना उत्तम बनती है। रोहिणी में नाड़ी दोष नहीं होता है।
मृगशिर	१-२	गणना उत्तम बनती है।
मृगशिर	३-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। राशीश मैत्री से द्विर्द्वादश दोष नहीं होता है।
आर्द्रा	१-४	गणना मध्यम बनती है। राशीश मैत्री से द्विर्द्वादश दोष नहीं होता है।
पुनर्वसु	१-३	गणना मध्यम बनती है। राशीश मैत्री से द्विर्द्वादश दोष नहीं होता है।
पुनर्वसु	४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण दोष राशीश वर्णोत्तम से नहीं होता है।
पुष्य	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण दोष राशीश वर्णोत्तम से नहीं होता है।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, और नाड़ी दोष है।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य, गण, दशम चतुर्थ और नाड़ी दोष है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण,वश्य एवं दशमचतुर्थ दोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य एवं दशमचतुर्थ दोष है। नवांश कोष्टक देखें।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना मध्यम बनती है। नव पंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
हस्त	१-४	गणना मध्यम बनती है। नव पंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
चित्रा	१-२	गणना बनती है। गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
चित्रा	३-४	गणना बनती है। एकाधिपत्य से गणऔर षडष्टक दोष नहीं होता है।
स्वाति	१-४	गणना बनती है। एकाधिपत्य है। अति आवश्यक पर ग्रहण करें।
विशाखा	१-३	गणना नहीं बनती है। गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और नाड़ी दोष है।
अनुराधा	१-४	गणना उत्तम बनती है। राशीश वर्णोत्तम से वर्ण दोष नहीं होता है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और गण दोष है। नवांश कोष्ठक से निर्णय करें।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, और षडष्टक दोष है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और षडष्टक दोष है।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, योनि, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना नहीं बनती है। योनि, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
श्रवण	१-४	गणना बनती है। नवपंचम राशीश मैत्री से नाड़ी दोष रोहिणी-श्रवण में नहीं होगा।
धनिष्ठा	१-२	गणना बनती है। नवपंचम और गण दोष राशीश मैत्री से नहीं होता।
धनिष्ठा	३-४	गणना उत्तम बनती है। गण दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
शतभिषा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती हे। गण दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना उत्तम बनाती है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना उत्तम बनाती है। राशीश वर्णोत्तम से वर्ण दोष नहीं होता है।
उ.भाद्र	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। राशीश वर्णोत्तम से वर्ण दोष नहीं होता।
रेवती	१-४	गणना वर्ण और नाड़ी दोष से नहीं बनती है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

११ (वर-नक्षत्र मृगशिर १-२ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२२।।	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१४।।	त्या.
कृत्तिका	१	,,	,,	१।।	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१७।।	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१।।	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२७।।	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	३	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	३६	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	३	,,	,,	देव	,,	मध्य	२८	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२०	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	३	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२६	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२४।।	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२६	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।	मेष	,,	,,	,,	मध्य	१६	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२०	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१७।।	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१५।।	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	आदि	२३।।	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१।।	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२३।।	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२६	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	१२	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	३	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	१२	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२६	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१८।।	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१।।*	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	२२।।	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२०।।	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२२।।	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१३	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१।।*	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१२	त्या.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१।।	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	१८	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१।।	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२३।।	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	३	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२६	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	३	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	१२	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१६	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	३	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२७	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	३१।।	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	२६	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	मध्य	१७	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२६	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *मृगशिर* १-२ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण ।
अश्विनी	१-४	गणना मध्यम बनती है । वर्णदोष वश्यैक्य से नहीं होगा । शुभ द्विर्द्वादश है ।
भरणी	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, द्विर्द्वादश, नाड़ी दोष है ।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती है । वर्ण,द्विर्द्वादश और गण दोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
कृत्तिका	२-४	गणना उत्तम बनती है । एकाधिपत्य से गण दोष नहीं होता है ।
रोहिणी	१-४	गणना उत्तम बनती है ।
मृगशिर	१-२	गणना उत्तम बनती है । चरण भेद है ।
मृगशिर	३-४	गणना बनती है । चरण भेद है ।
आर्द्रा	१-४	गणना बनती है । द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है ।
पुनर्वसु	१-३	गणना मध्यम बनती है । द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है ।
पुनर्वसु	४	गणना उत्तम बनती है । वर्ण दोष राशीश वर्णोत्तम से नहीं होता है ।
पुष्य	१-४	गणना वर्ण और नाड़ी दोष से नहीं बनती है ।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और गण दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, वश्य, गण और दशमचतुर्थ दोष है ।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, वश्य, दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष है ।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है । वर्ण, वश्य और दशमचतुर्थ दोष है ।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना मध्यम बनती है । नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है ।
हस्त	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । नवपंचम दोष राशीश की मैत्री से नहीं होता है ।
चित्रा	१-२	गणना नहीं बनती है । गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है ।
चित्रा	३-४	गणना नहीं बनती है । गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
स्वाति	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । एकाधिपत्य और मित्र षडष्टक है ।
विशाखा	१-३	गणना नहीं बनती है । गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है । मित्र षडष्टक है ।
विशाखा	४	गणना बनती है । राशीश वर्णोत्तम से वर्ण और समसप्तक से गणदोष नहीं होगा ।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और नाड़ी दोष है ।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनेगी । वर्ण व गणदोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण और षडष्टक दोष है ।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है । वर्ण, योनि, षडष्टक दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना मध्यम बनती है । योनि दोष राशीश मैत्री से हटता है । शुभ नवपंचम है ।
श्रवण	१-४	गणना बनती है । शुभ नवपंचम राशीश मैत्री है ।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है । गण नवपंचम और नाड़ी दोष है ।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है । गण और नाड़ी दोष है ।
शतभिषा	१-४	गणना उत्तम बनती है । राशीश मैत्री से गण दोष नहीं होता ।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना उत्तम बनती है ।
पूर्वाभाद्र	४	गणना उत्तम बनती है । वर्ण दोष राशीश वर्णोत्तम से नहीं होता है ।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और नाड़ी दोष है ।
रेवती	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । वर्ण दोष राशीश वर्णोत्तम से नहीं होता है ।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें ।

१३ (वर-नक्षत्र मृगशिर ३-४ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२६	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१८	त्या.
कृत्तिका	१	,,	,,	१।।	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२१	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१।।	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	१८।।	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	३	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२७	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	३	,,	,,	देव	,,	मध्य	१६	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२८	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	३	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	३४	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	३२।।	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	१६	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।	मेष	,,	,,	,,	मध्य	१२	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१३	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	२१।।	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१६।।	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	आदि	२७।।	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१।।	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	३०।।	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	आदि	३३	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	१६	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	३	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	१३	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२७	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१६।।	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१।।*	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१३	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।	मृग	,,	देव	,,	मध्य	११	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	१३	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२१	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१।।*	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१८	त्या.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१।।	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२४	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१।।	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२०।।	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	३	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२३।।	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	३	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	६।।	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१२	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	३	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२०	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२४	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	२५।।	त्या.
उ.भाद्रं.	१-४	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	मंध्य	१६।।	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२५।।	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *मृगशिर* ३-४ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण ।
अश्वनी	१-४	गणना उत्तम बनती है । राशि मैत्री से वर्ण दोष नहीं होता है ।
भरणी	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और नाड़ी दोष दोष है ।
कृत्तिका	१	गणना बनती है । वर्णऔर गण दोष सद्भकूट से नहीं होता है ।
कृत्तिका	२-४	गणना निकृष्ट है । वर्ण, गण और द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है ।
रोहिणी	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । वर्ण दोष और शुभ द्विर्द्वादश राशीश मैत्री है ।
मृगशिर	१-२	गणना बनती है । चरण भेद है ।
मृगशिर	३-४	गणना चरण भेद में बनेगी ।
आर्द्रा	१-४	गणना उत्तम बनती है ।
पुनर्वसु	१-३	गणना उत्तम बनती है ।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है । वर्ण या द्विर्द्वादश दोष है ।
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, द्विर्द्वादश एवं नाड़ी दोष है ।
आश्लेषा	१-४	गणना वर्ण, द्विर्द्वादश और गण दोष से नहीं बनती है ।
मघा	१-४	गणना वर्ण, वश्य और गण दोष से नहीं बनती है ।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, वश्य और नाड़ी दोष है ।
उ.फाल्गु.	१	गणना उत्तम बनती है । वर्ण, वश्य दोष, बुध-सूर्य सम मित्र से नहीं होगा ।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना उत्तम बनती है । वर्ण, दोष राशीश मैत्री से नहीं होगा ।
हस्त	१-४	गणना उत्तम बनती है ।
चित्रा	१-२	गणना बनती है । वर्ण, गण और नाड़ी दोष एकाधिपत्य से नहीं होगा ।
चित्रा	३-४	गणना नहीं बनती है । गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है ।
स्वाति	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है ।
विशाखा	१-३	गणना बनती है । गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता ।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण और षडष्टक दोष है ।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण और षडष्टक दोष है ।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण और विषम सप्तक दोष है ।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, विषम सप्तक और नाड़ी दोष है ।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है । वर्ण, योनि और विषमसप्तक दोष है ।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना बनती है । वर्ण, योनि दोष बुध-शनि सममित्र से नहीं होगा । शुभषडष्टक है ।
श्रवण	१-४	गणना मध्यम बनती है । वर्णदोष राशीश सममित्र से न होगा मित्र षडष्टक है ।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है । षडष्टक, वर्ण और गण, नाड़ी दोष है ।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है । गण और नाड़ी दोष है । शुभ नवपंचम है ।
शतभिषा	१-४	गणना बनती है । गण दोष राशीश सममित्र होने से नहीं होगा । शुभ नवपंचम है ।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना मध्यम बनती है । शुभ नवपंचम है ।
पूर्वाभाद्र	४	गणना वर्ण और दशम चतुर्थ दोष से नहीं बनती है ।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष है ।
रेवती	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और दशमचतुर्थ दोष है ।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें ।

(वर-नक्षत्र आर्द्रा से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।*	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	१७	त्या.
भरणी	१-४	,,	,,	१।।	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२६	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	१।।*	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२०	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१।।*	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	१७।।	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१।।	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२३।।	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	३	,,	,,	देव	,,	मध्य	२४	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	३३	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	३	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२८	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	३	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२४	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	३	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	१०।।	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।*	मेष	,,	,,	,,	मध्य	१८	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१२	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।*	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	२१।।	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१।।	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२७।।	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	१।।*	गौ	,,	,,	,,	आदि	२०।।	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१।।*	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२३।।	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	१।।	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२२।।	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२६	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	३	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२०	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२६	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२०	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	३	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१३।।	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।*	मृग	,,	देव	,,	मध्य	१६	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	३	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।*	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१५	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१।।	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२६	त्या.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१।।*	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२६	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१।।*	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२२।।	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१।।	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२१	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	३	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	१६।।	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१९	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	३	अश्व	,,	,,	,,	आदि	१२	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	३	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	१७	त्या.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	३	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१८	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।*	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२५।।	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२४।।	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *आर्द्रा* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण ।
अश्वनी	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और नाड़ी दोष है।
भरणी	१-४	गणना बनती है। वर्ण दोष तृतीयैकादश से नहीं होता है।
कृत्तिका	१.	गणना मध्यम बनती है। सद्भकूट से वर्ण और गण दोष नहीं होता है।
कृत्तिका	२-४	गणना निकृष्ट बनती है। राशीशमैत्री से वर्ण, गणदोष नहीं होता, शुभ द्विर्द्वादश है।
रोहिणी	१-४	गणना मध्यम बनती है। राशीशमैत्री शुभद्विर्द्वादश से वर्ण दोष नहीं होगा।
मृगशिर	१-२	गणना मध्यम बनती है। वर्णदोष नहीं होगा शुभद्विर्द्वादश और राशीशमैत्री है।
मृगशिर	३-४	गणना उत्तम बनती है।
आर्द्रा	१-४	गणना बनती है। नाड़ी दोष आर्द्रा में नहीं होता है।
पुनर्वसु	१-३	गणना बनती है। एक राशि भिन्न नक्षत्र में नाड़ी दोष नहीं होता।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और द्विर्द्वादश दोष है।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और द्विर्द्वादश दोष है।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य और गणदोष है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना बनती है। वर्णऔर वश्य दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य और नाड़ी दोष है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना बनती है। वर्ण और नाड़ी दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
हस्त	१-४	गणना बनती है। वर्ण और नाड़ी दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
चित्रा	१-२	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण और गण दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
चित्रा	३-४	गणना बनती है। राशीश मैत्री से गण और नवपंचम दोष नहीं होता है।
स्वाति	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। राशीश मैत्री से नवपंचम दोष नहीं होता है।
विशाखा	१-३	गणना बनती है। गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और षडष्टक दोष है।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, योनि और षडष्टक दोष है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, योनि, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण विषमसप्तक और नाड़ी दोष है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, और विषमसप्तक नाड़ी दोष है।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण और विषम सप्तक दोष है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना मध्यम बनती है। वर्णदोष नहीं होगा। राशीश सममित्र और शुभ षडष्टक।
श्रवण	१-४	गणना मध्यम बनती है। वर्ण दोष नहीं होगा। राशीश, सममित्र और शुभ षडष्टक।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और षडष्टक दोष है।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है। गण और नवपंचम दोष है।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना नहीं बनती है। नवपंचम और नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष है।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और दशमचतुर्थ दोष है।
रेवती	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और दशमचतुर्थ दोष है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

 (वर-नक्षत्र पुनर्वसु १-४ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१॥	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	१९	त्या.
भरणी	१-४	,,	,,	१॥*	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२७	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	१॥	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२१	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१॥	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	१८॥	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१॥*	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२३॥	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१॥	,,	,,	देव	,,	मध्य	२३॥	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१॥	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२३॥	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	३	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२५॥	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	३	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२८	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	३	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	१४॥	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	३	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२१॥	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१॥*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१५	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१॥	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	२०॥	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१॥*	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२६॥	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	१॥	गौ	,,	,,	,,	आदि	२०॥	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१॥	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२३॥	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	१॥*	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२३॥	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	१॥	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२४॥	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१॥	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	१८॥	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२७	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२०	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	३	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१३॥	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	३	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२०॥	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१॥*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	५	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१॥	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१२	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१॥*	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२६	त्या.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१॥	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२६	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१॥	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२२॥	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१॥*	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२२	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१॥	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	१६	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१॥	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१९	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	३	अश्व	,,	,,	,,	आदि	१३	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	३	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	१८	त्या.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	३	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१९	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२७	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	१॥*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२६॥	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *पुनर्वसु* १-३ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, नाड़ी दोष है।
भरणी	१-४	गणना उत्तम बनती है। राशि मैत्री से वर्ण दोष नहीं होता है।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण व गणदोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
कृत्तिका	२-४	गणना निकृष्ट है। वर्ण, गण दोष राशीश मैत्री से नहीं होता शुभ द्विर्द्वादश है।
रोहिणी	१-४	गणना मध्यम बनती है। वर्णदोष राशीश मैत्री से नहीं होता शुभ द्विर्द्वादश है।
मृगशिर	१-२	गणना मध्यम बनती है। वर्ण दोष राशीश मैत्री से नहीं होता शुभ द्विर्द्वादश है।
मृगशिर	३-४	गणना उत्तम बनती है।
आर्द्रा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। एक राशि और भिन्न नक्षत्र में नाड़ी दोष नहीं होता।
पुनर्वसु	१-३	गणना चरण भेद में बनती है।
पुनर्वसु	४	गणना बनती है। चरण भेद है। आवश्यकता पर ग्राह्य।
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और द्विर्द्वादश दोष है।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और द्विर्द्वदश दोष है।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य, योनि और गण-दोष है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना बनेगी बु.व.सु. सममित्र से वर्ण, वश्य और योनि दोष नहीं होगा।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है, वर्ण, वश्य और नाड़ी दोष है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण और नाड़ी दोष एकाधिपत्य से हटना है।
हस्त	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। एकाधिपत्य है। वर्ण व नाड़ी दोष नहीं होगा।
चित्रा	१-२	गणना श्रेष्ठ बनती है। एकाधिपत्य से वर्ण और गणदोष नहीं होता है।
चित्रा	३-४	गणना बनती है। गणऔर नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
स्वाति	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। राशीश की मैत्री से नवपंचम दोष नहीं होता है।
विशाखा	१-३	गणना बनती है। गण और नवपंचम दोष राशीश की मैत्री से नहीं होता है।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और षडष्टक दोष है।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और षडष्टक दोष है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण षडष्टक और नाड़ी दोष है।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, और विषमसप्तक नाड़ी दोष है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, विषम सप्तक दोष है। विचारणीय।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, विषम सप्तक दोष है। विचारणीय।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण दोष राशीश सममित्र से न होगा। मित्र षडष्टक।
श्रवण	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण, दोष, राशीश सममित्र से न होगा। मित्र षडष्टक है।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और षडष्टक दोष है।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है। गण और नवपंचम दोष है।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना नहीं बनती है। नवपंचम और नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष है।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनता है। वर्ण, दशमचतुर्थ दोष है। विचारणीय।
रेवती	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और दशमचतुर्थ दोष है। विचारणीय।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

१९ (वर-नक्षत्र पुनर्वसु ४ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१ ।।	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२३ ।।	त्या.
भरणी	१-४	,,	,,	१ ।।*	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	३१ ।।	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	१ ।।	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२५ ।।	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१ ।।	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२२	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१ ।।*	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२७	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१ ।।	,,	,,	देव	,,	मध्य	२७	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१ ।।	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२०	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	३	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	१२ ।।	त्या.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	३	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	१५ ।।	त्या.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	३	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२८	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	३	मेष	,,	,,	,,	मध्य	३५	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१ ।।*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२८ ।।	ग्रा.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१ ।।	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१६ ।।	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१ ।।*	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२२ ।।	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	१ ।।	गौ	,,	,,	,,	आदि	१६ ।।	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१ ।।	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	१९	त्या.
हस्त	१-४	,,	,,	१ ।।*	महिषी	,,	देव	,,	आदि	१९	त्या.
चित्रा	१-२	,,	,,	१ ।।	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२०	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१ ।।	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	१९ ।।	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२८	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२१	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	३	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१८	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	३	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२५	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१ ।।*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	६ ।।	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१ ।।	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	८	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१ ।।*	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२३ ।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१ ।।	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२३ ।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१ ।।	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२७	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१ ।।*	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२८	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१ ।।	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२२	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१ ।।	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१३ ।।	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	३	अश्व	,,	,,	,,	आदि	८	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	३	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	१३	त्या.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	३	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१८	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२६	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	१ ।।*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२५ ।।	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *पुनर्वसु* ४ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्विनी	१-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
भरणी	१-४	गणना उत्तम बनती है। शुभ दशर्म चतुर्थ है।
कृत्तिका	१	गणना श्रेष्ठ बनती है। गण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
कृत्तिका	२-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। गणदोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
रोहिणी	१-४	गणना उत्तम बनती है।
मृगशिर	१-२	गणना उत्तम बनती है।
मृगशिर	३-४	गणना बनती है। शुभ द्विर्द्वादश है।
आर्द्रा	१-४	गणना नहीं बनती है। द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
पुनर्वसु	१-३	गणना बनती है। चरण भेद है। गुण कम है।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है। एक नाड़ी, एक चरण है।
पुष्य	१-४	गणना उत्तम बनती है।
आश्लेषा	१-४	गणना उत्तम बनती है। गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
मघा	१-४	गणना बनती है। योनि, गण और द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना मध्यम बनती है। द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है। द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
हस्त	१-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
चित्रा	१-२	गणना बनती है। गण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
चित्रा	३-४	गणना नहीं बनती है। गणदोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
स्वाति	१-४	गणना उत्तम बनती है।
विशाखा	१-३	गणना गणदोष से नहीं बनती है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है। गण और नवपंचम दोष है।
अनुराधा	१-४	गणना बनती है। नवपंचम दोष राशीश सममित्र होने से नहीं होता।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना मध्यम बनती है। मित्र षडष्टक है।
उ.षाढ़ा	१	गणना मध्यम बनती है। मित्र षडष्टक है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना उत्तम बनती है।
श्रवण	१-४	गणना उत्तम बनती है।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है। गण दोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है। गण और षडष्टक दोष है।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना नहीं बनती है। षडष्टक और नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है। नवपंचम और नाड़ी दोष है।
उ.भाद्र	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। शुभ नवपंचम है।
रेवती	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। शुभ नवपंचम है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

(वर-नक्षत्र पुष्य से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।*	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	३१।।	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	१।।	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२३।।	त्या.
कृत्तिका	१	,,	,,	१।।*	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२६।।	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१।।*	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२३	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१।।	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२८	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१।।*	,,	,,	देव	,,	मध्य	२०	त्या.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	१३	त्या.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१।।	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२०	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	३	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२२।।	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	३	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	३५	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	३	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२८	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	३	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२६	ग्रा.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।*	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१८।।	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१।।	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१६।।	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	१।।*	गौ	,,	,,	,,	आदि	२५।।	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१।।*	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२८	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	१।।	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२८	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	१२	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१।।*	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	११।।	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	१।।	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२७।।	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२१	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	३	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१८	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	३	मृग	,,	देव	,,	मध्य	१८	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	३	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२०	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।*	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१६	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१।।	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१३।।	त्या.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१।।*	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२४।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१।।*	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२८	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१।।	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२६	त्या.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	१३	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	४।।	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१।।	अश्व	,,	,,	,,	आदि	१४।।	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	३	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२०	त्या.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जलं.	३	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	२५	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	मध्य	१६	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	३	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२७	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *पुष्य* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण ।
अश्वनी	१-४	गणना उत्तम बनती है ।
भरणी	१-४	गणना नहीं बनती है । नाड़ी दोष है ।
कृत्तिका	१	गणना उत्तम बनती है। गण दोष योनि शुद्धि से नहीं होता है ।
कृत्तिका	२-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । गण दोष योनि शुद्धि से नहीं होता है ।
रोहिणी	१-४	गणना उत्तम बनती है ।
मृगशिर	१-२	गणना नहीं बनती है । नाड़ी दोष है ।
मृगशिर	३-४	गणना नहीं बनती है । नाड़ी दोष है । शुभ द्विर्द्वादश है ।
आर्द्रा	१-४	गणना बनती है । शुभ द्विर्द्वादश है ।
पुनर्वसु	१-३	गणना श्रेष्ठ बनती है । द्विर्द्वादश दोष शुभतारा से नहीं होता ।
पुनर्वसु	४	गणना उत्तमोत्तम है ।
पुष्य	१-४	गणना बनती है । पुष्य-पुष्य में नाड़ी दोष नहीं होता है ।
आश्लेषा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । गण दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है ।
मघा	१-४	गणना बनती है । गण दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है ।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है । द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है ।
उ.फाल्गु.	१	गणना श्रेष्ठ बनती है । द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है ।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना उत्तम बनती है ।
हस्त	१-४	गणना उत्तम बनती है ।
चित्रा	१-२	गणना नहीं बनती है । गण और नाड़ी दोष है ।
चित्रा	३-४	गणना नहीं बनती है । गण और नाड़ी दोष है ।
स्वाति	१-४	गणना उत्तम बनती है ।
विशाखा	१-३	गणना नहीं बनती है । गण दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है । गण और नवपंचम दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है । नवपंचम और नाड़ी दोष है ।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है । गण और नवपंचम दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
मूल	१-४	गणना बनती है । गणऔर षडष्टक दोष चं.-गु. सममित्र से नहीं होगा ।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना नहीं बनती है । योनि षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
उ.षाढ़ा	१	गणना मध्यम बनती है । मित्र षडष्टक है ।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना उत्तम बनती है ।
श्रवण	१-४	गणना नहीं बनती है । शनि-चन्द्र का समसप्तक ग्राह्य नहीं ।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है । गणऔर नाड़ी दोष है ।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है । गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है । गण, षडष्टक दोष है ।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना नहीं बनती है । मृत्यु षडष्टक है ।
पूर्वाभाद्र	४	गणना मध्यम बनती है । मित्र नवपंचम है ।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनती है । नवपंचम और नाड़ी दोष है ।
रेवती	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । शुभ नवपंचम है ।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें ।

 (वर-नक्षत्र आश्लेषा से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	३	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२८	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	१॥*	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२५॥	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	१॥	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२३॥	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१॥	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२०	त्या.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१॥*	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	१३	त्या.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१॥	,,	,,	देव	,,	मध्य	२२	त्या.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१॥	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	१५	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१॥*	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	१३	त्या.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१॥	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	१७	त्या.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१॥	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२६॥	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	३	मेष	,,	,,	,,	मध्य	३०	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	३	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२८	ग्रा.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	३	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१६	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१॥*	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१६॥	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	१॥	गौ	,,	,,	,,	आदि	१८॥	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१॥	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२१	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	१॥*	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२२	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	१॥	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२६	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१॥	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२५॥	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	१॥*	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	१३॥	त्या.
विशाखा	१-३	,,	,,	१॥	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१७॥	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१॥	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१४॥	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	३	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२०	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	३	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२५	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	३	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२३॥	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१॥*	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१७॥	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१॥	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	६॥	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१॥	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	१३	त्या.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१॥*	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	१५	त्या.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१॥	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२८	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१॥	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१६॥	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१॥*	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२०॥	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१॥	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	१३॥	त्या.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१॥	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१८॥	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२०	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	३	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	१४	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *आश्लेषा* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना बनेगी। चन्द्र-भौम सममित्र होने से गण दोष नहीं होगा।
भरणी	१-४	गणना बनेगी। चन्द्र-भौम सममित्र में गण दोष नहीं होगा।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
कृत्तिका	२-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
रोहिणी	१-४	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
मृगशिर	१-२	गणना नहीं बनती है। गण दोष है।
मृगशिर	३-४	गणना नहीं बनती है। द्विर्द्वादश और गण दोष है।
आर्द्रा	१-४	गणना नहीं बनती है। द्विर्द्वादश और गण दोष है।
पुनर्वसु	१-३	गणना नहीं बनती है। गण और द्विर्द्वादश दोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
पुनर्वसु	४	गणना उत्तम बनती है। गण दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
पुष्य	१-४	गणना उत्तम बनती है। गण दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
आश्लेषा	१-४	गणना चरण भेद में उत्तभ बनती है।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है। योनि, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना निकृष्ट है, योनि, गण, द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
उ.फाल्गु.	१	गणना बनती है। द्विर्द्वादश व गण दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना बनती है। गण दोष सद्राशिकूट से नहीं होता है।
हस्त	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। गणदोष सद्राशिकूट से नहीं होता है।
चित्रा	१-२	गणना उत्तम बनती है।
चित्रा	३-४	गणना उत्तम बनती है।
स्वाति	१-४	गणना नहीं बनती है। गण एवं नाड़ी दोष है।
विशाखा	१-३	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है। अशुभ नवपंचम व नाड़ी दोष है।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती, नवपंचम, गणदोष में नहीं बनेगी। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनेगी। अशुभ नवपंचम है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
मूल	१-४	गणना मध्यम बनती है। मित्र षडष्टक है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना चं.-गु. सममित्र में गण व षडष्टक दोष नहीं होने से बनेगी।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है। गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
श्रवण	१-४	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
धनिष्ठा	१-२	गणना उत्तम बनती है।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है। षडष्टक दोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है। षडष्टक दोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना नहीं बनती है। गण और मृत्यु षडष्टक दोष है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनेगी। नवपंचम व गणदोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनेगी। गण दोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
रेवती	१-४	गणना नहीं बनती है। गण नवपंचम और नाड़ी दोष है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

(वर-नक्षत्र मघा से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	३	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२१	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	३	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२०	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	११।*	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१४।।	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	११।*	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	१६।।	त्या.
रोहिणी	१-४	,,	,,	११।	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	१०।।	त्या.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	११।*	,,	,,	देव	,,	मध्य	१६।।	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	११।*	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२३।।	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	११।	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२२।।	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	११।*	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२२।।	ग्रा:
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	११।*	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	१६।।	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	११।	मेष	,,	,,	,,	मध्य	१७।।	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	३	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१५	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	३	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	२८	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	३	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	३०	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	११।*	गौ	,,	,,	,,	आदि	२६।।	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	११।*	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	१६।।	त्या.
हस्त	१-४	,,	,,	११।	महिषी	,,	देव	,,	आदि	१७	त्या.
चित्रा	१-२	,,	,,	११।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२२	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	११।*	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२५।।	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	११।	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	१२।।	त्या.
विशाखा	१-३	,,	,,	११।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१७।।	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	११।*	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	२१।।	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	११।	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२४।।	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	३	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	३१	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	३	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२४	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	३	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१६	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	११।*	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	६।।	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	११।*	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	४।।	त्या.
श्रवण	१-४	,,	जल.	११।	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	६।।	त्या.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	११।*	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	१८।।	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	११।*	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	२४।।	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	११।	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२६।।	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	११।*	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	१८।।	त्या.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	११।*	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१६।।	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	११।	गौ	,,	,,	,,	मध्य	१७।।	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	३	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	१३	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *मघा* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण ।
अश्वनी	१-४	गणना बनती है । वश्य, गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता ।
भरणी	१-४	गणना बनती है । वश्य, गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता ।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती है । वश्य, नवपंचम और नाड़ी दोष है ।
कृत्तिका	२-४	गणना नहीं बनती है । वश्य और नाड़ी दोष है ।
रोहिणी	१-४	गणना नहीं बनती है । वश्य, गण और नाड़ी दोष है ।
मृगशिर	१-२	गणना मध्यम बनती है । गणदोष राशि मैत्री से नहीं होता है ।
मृगशिर	३-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । वश्य, गणदोष राशि मैत्री से नहीं होता है ।
आर्द्रा	१-४	गणना बनती है । वश्य, गणदोष राशि मैत्री से नहीं होता ।
पुनर्वसु	१-३	गणना श्रेष्ठ बनती है । गण, वश्य, योनि दोष राशि मैत्री से नहीं होता है ।
पुनर्वसु	४	गणना निकृष्ट है । वर्ण, गण और योनि दोष राशिश मैत्री से नहीं होता शुभ द्विर्द्वादश।
पुष्य	१-४	गणना निकृष्ट है। वर्ण, गणदोष राशीश मैत्री से नहीं होता है, शुभ द्विर्द्वादश ।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, योनि, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है ।
मघा	१-४	गणना उत्तम बनती है । मघा-मघा में नाड़ी दोष नहीं होता है ।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना उत्तम बनती है । एकाधिपत्य से गण दोष नहीं होता है ।
उ.फाल्गु.	१	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य से गण दोष नहीं होता है ।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना नहीं बनती है । वश्य, गण और द्विर्द्वादश दोष है ।
हस्त	१-४	गणना नहीं बनती है । वश्य, गण और द्विर्द्वादश दोष है ।
चित्रा	१-२	गणना नहीं बनती है । वश्य और द्विर्द्वादश दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
चित्रा	३-४	गणना उत्तम बनती है । वश्य दोष राशि मैत्री से हटता है ।
स्वाति	१-४	गणना नहीं बनती है । वश्य, गण और नाड़ी दोष है ।
विशाखा	१-३	गणना बनती है । वश्य और नाड़ी दोष विशाखा मघा में नहीं होता है ।
विशाखा	४	गणना बनती है । वर्ण, वश्य व नाड़ी दोष राशीश मैत्री व मघा-विशाखा में नहीं होता।
अनुराधा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । वर्ण, वश्य और गणदोष राशीश मैत्री से नहीं होता ।
ज्येष्ठा	१-४	गणना उत्तम बनती है । वर्णऔर वश्य दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है ।
मूल	१-४	गणना बनती है । वश्य व नवपंचम दोष राशीश की मैत्री से नहीं होता ।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना बनती है । वश्य, गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता ।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है । वश्य, गण नवपंचम और नाड़ी दोष है ।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना नहीं बनती है । वश्य, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
श्रवण	१-४	गणना नहीं बनती है । वश्य, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है । षडष्टक से न बनेगी । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है । विषमसप्तक व वश्यदोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है । विषमसप्तक व वश्यदोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना नहीं बनती है । वश्य, गण और विषमसप्तक दोष है ।
पूर्वाभाद्र	४	गणना बनती है । वर्ण, गण और षडष्टक दोष राशीश मैत्री से नहीं होता ।
उ.भाद्र	१-४	गणना बनती है । वर्ण, गण और षडष्टक दोष राशीश मैत्री से नहीं होता ।
रेवती	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें ।

२७ (वर-नक्षत्र पूर्वा फाल्गुनी से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	३	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२५	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	३	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१८	त्या.
कृत्तिका	१	,,	,,	३	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१८	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	३	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२०	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१।।*	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२४।।	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१।।	,,	,,	देव	,,	मध्य	१५।।	त्या.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१।।	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	१६।।	त्या.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१।।*	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२८।।	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१।।	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२६।।	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१।।	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२०।।	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।*	मेष	,,	,,	,,	मध्य	१३।।	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१५।।	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	३	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	३०	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	३	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२८	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	आदि	३४	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	३	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२४	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	१।।*	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२१।।	त्या.
चित्रा	१-२	,,	,,	१।।	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	८।।	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१।।	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	११।।	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	१।।*	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२४।।	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	१।।	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१६।।	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१।।	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	२३।।	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।*	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२०।।	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२३।।	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	३	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१८	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	३	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१७	त्या.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	३	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२५	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	३	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२०	त्या.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१।।*	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	१८।।	त्या.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१।।	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	४।।	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१।।	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१०।।	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१।।*	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२०।।	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१।।	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२४।।	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१।।	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	२२।।	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।*	गौ	,,	,,	,,	मध्य	१५।।	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२३।।	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *पूर्वा फाल्गुनी* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। शुभ नवपंचम है।
भरणी	१-४	गणना नहीं बनती है। वश्य, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
कृत्तिका	१	गणना बनती है। वश्य, गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
कृत्तिका	२-४	गणना बनती है। वश्य, गण दोष सद्भकूट से हटता है।
रोहिणी	१-४	गणना श्रेष्ठ बनाती है। वश्यदोष सद्भकूट से हटता है।
मृगशिर	१-२	गणना नहीं बनती है। वश्य और नाड़ी दोष है।
मृगशिर	३-४	गणना नहीं बनती है। वश्य और नाड़ी दोष है।
आर्द्रा	१-४	गणना उत्तम बनती है। वश्यदोष शुभ राशीश से नहीं होगा।
पुनर्वसु	१-३	गणना श्रेष्ठ बनती है। राशि मैत्री से योनि, वश्य दोष नहीं होता।
पुनर्वसु	४	गणना मध्यम बनाती है। वर्ण, योनि और द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
आश्लेषा	१-४	गणना बनती है। वर्ण, योनि, गण और द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
मघा	१-४	गणना उत्तम बनती है। गण दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना चरण भेद में बनती है।
उ.फाल्गु.	१	गणना उत्तम बनती है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना बनती है। द्विर्द्वादश दोष शुभ तारा व सूर्य-बुध सममित्र से नहीं होगा।
हस्त	१-४	गणना बनती है। वश्य व द्विर्द्वादश दोष सूर्य-बूध सममित्र से नहीं होता है।
चित्रा	१-२	गणना नहीं बनती है। वश्य, गण अशुभ द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
चित्रा	३-४	गणना नहीं बनती है। वश्य, गण और नाड़ी दोष है।
स्वाति	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वश्यदोष सद्भकूट से नहीं होगा।
विशाखा	१-३	गणना नहीं बनती है। वश्य, व गण दोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
विशाखा	४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण, वश्य और गण दोष राशीश मैत्री से नहीं होता।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य और नाड़ी दोष है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण, वश्य और गणदोष राशीश मैत्री से नहीं होता।
मूल	१-४	गणना निकृष्ट बनाती है। वश्य, गण व नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना नहीं बनती है। वश्य, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
उ.षाढ़ा	१	गणना मध्यम बनती है। वश्य और नवपंचम दोष राशीशमैत्री से नहीं होता।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना नहीं बनती है। वश्य और षडष्टक दोष है।
श्रवण	१-४	गणना नहीं बनती है। वश्य और षडष्टक दोष है।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है। गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है। वश्य, गण, विषमसप्तक और नाड़ी दोष है।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है। वश्य, गण और विषमसप्तक दोष है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना श्रेष्ठ बनती है। वश्यदोष सद्भकूट से नहीं होता।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और षडष्टक दोष राशीशमैत्री से नहीं होता है।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
रेवती	१-४	गणना मध्यम बनती है। वर्ण और षडष्टक दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

२९ (वर-नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी १ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१ ।।	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	१५	त्या.
भरणी	१-४	,,	,,	३	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२६	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	३	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२०	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	३	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२२	त्या.
रोहिणी	१-४	,,	,,	३	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२६	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१ ।।*	,,	,,	देव	,,	मध्य	२३ ।।	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१ ।।*	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२७ ।।	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१ ।।	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२१ ।।	त्या.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१ ।।*	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२० ।।	त्या.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१ ।।*	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	१५ ।।	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	१ ।।	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२३ ।।	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१ ।।*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१७ ।।	ग्रा.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१ ।।	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	२६ ।।	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	३	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	३४	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	आदि	२८	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	३	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	१८	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	आदि	१६	त्या.
चित्रा	१-२	,,	,,	१ ।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	१४ ।।	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१ ।।*	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	१७ ।।	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	१ ।।	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२५ ।।	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	१ ।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१७ ।।	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१ ।।*	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	२१ ।।	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१ ।।	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२६ ।।	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१ ।।*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	१६ ।।	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१ ।।	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	६ ।।	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	३	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२५	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	३	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२६	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	३	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२१	त्या.
श्रवण	१-४	,,	जल.	३	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२०	त्या.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१ ।।*	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	१२ ।।	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१ ।।*	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१८ ।।	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१ ।।	अश्व	,,	,,	,,	आदि	१२ ।।	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१ ।।*	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	१६ ।।	त्या.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१ ।।*	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१४ ।।	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१ ।।	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२५ ।।	ग्रां.
रेवती	१-४	,,	,,	१ ।।*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२३ ।।	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र उ०फाल्गुनी १ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना नहीं बनती है। वश्य, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
भरणी	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वश्य और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
कृत्तिका	१	गणना बनती है। वश्य व गणदोष राशीश मैत्री से नहीं होता, शुभ नवपंचम है।
कृत्तिका	२-४	गणना नहीं बनती है। वश्य और गणदोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
रोहिणी	१-४	गणना उत्तम बताती है। राशि मैत्री से वश्य दोष नहीं होता है।
मृगशिर	१-२	गणना श्रेष्ठ बनती है। वश्य दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
मृगशिर	३-४	गणना उत्तम बनती है। राशि मैत्री से वश्य दोष नहीं होता है।
आर्द्रा	१-४	गणना नहीं बनती है। वश्य और नाड़ी दोष है।
पुनर्वसु	१-३	गणना नहीं बनती है। वश्य, और नाड़ी दोष है।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है। द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
पुष्य	१-४	गणना मध्यम बनती है, शुभ द्विर्द्वादश है, राशीश मैत्री से वर्णदोष नहीं होता।
आश्लेषा	१-४	गणना निकृष्ट है। वर्ण और द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं है।
मघा	१-४	गणना उत्तम बनती है। गण दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना उत्तम बनती है।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है। नक्षत्र का एक ही चरण है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना चरणभेद में बनेगी।
हस्त	१-४	गणना नहीं बनती है। वश्य, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
चित्रा	१-२	गणना नहीं बनती है। वश्य, योनि, गण और द्विर्द्वादश दोष है।
चित्रा	३-४	गणना नहीं बनती है। वश्य, योनि और गणदोष है।
स्वाति	१-४	गणना उत्तम बनती है। वश्य दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
विशाखा	१-३	गणना नहीं बनती है। वश्य, योनि और गण दोष है।
विशाखा	४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वश्य, योनि और गणदोष राशीश मैत्री से नहीं होता।
अनुराधा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण और वश्य दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य, गण और नाड़ी दोष है।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है। वश्य, गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना मध्यम बनती है। वश्य और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
उ.षाढ़ा	१	गणना श्रेष्ठ बनती है। वश्य और नवपंचम दोष राशीश मैत्री स नहीं होता है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना नहीं बनती है। वश्य और षडष्टक दोष है।
श्रवण	१-४	गणना नहीं बनती है। वश्य और षडष्टक दोष है।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है। गण और षडस्टक दोष है।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है। वश्य, गण और विषम सप्तक दोष है।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है। वश्य, गण विषम सप्तक और नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना नहीं बनती है। वश्य, विषम सप्तक और नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
उ.भाद्र	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण और षडष्टक दोष राशीश मैत्री से नहीं होता।
रेवती	१-४	गणना मध्यम बनती है। वर्ण और षडष्टक दोष राशीश मैत्री से नहीं होता।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

३१ (वर-नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी २-४ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	११	त्या.
भरणी	१-४	,,	,,	३	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२१।।	त्या.
कृत्तिका	१	,,	,,	३	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१५।।	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	३	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२१	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	३	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२५	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१।।*	,,	,,	देव	,,	मध्य	२२।।	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	३०।।	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१।।	श्वान्	,,	मनुष्य	,,	आदि	२४।।	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२३।।	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	१७	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२६	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२०	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१५।।	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	३	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२३	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	आदि	१७	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	३	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२८	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२६	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२४।।	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१।।*	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	१७।।	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	१।।	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२५।।	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१७।।	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१।।*	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१८	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२६	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	१३	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१३	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	३	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२७।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	३	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२८।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	३	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२६	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	३	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२३।।	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	१६	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१७।।	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१।।	अश्व	,,	,,	,,	आदि	११।।	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	१५।।	त्या.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१६।।	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२७।।	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२५।।	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र उ०फा० २-४ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
भरणी	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और षडष्टक दोष है।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और षडष्टक दोष है।
कृत्तिका	२-४	गणना बनती है। गण दोष राशीश मैत्री से नहीं होता शुभ नवपंचम है।
रोहिणी	१-४	गणना मध्यम बनती है। शुभ नवपंचम है।
मृगशिर	१-२	गणना मध्यम बनती है। शुभ नवपंचम है।
मृगशिर	३-४	गणना उत्तम बनती है।
आर्दा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। नाड़ी दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
पुनर्वसु	१-३	गणना श्रेष्ठ बनती है। नाड़ी दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और नाड़ी दोष है।
पुष्य	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्ण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण दोष है।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य, गण और द्विर्द्वादश दोष है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य और द्विर्द्वादश दोष है।
उ.फाल्गु.	१	गणना बनती है। चरण भेद है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना चरणभेद में बनेगी।
हस्त	१-४	गणना उत्तम बनती है। नाड़ी दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
चित्रा	१-२	गणना श्रेष्ठ बनती है। योनि और गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
चित्रा	३-४	गणना निकृष्ट बनती है। योनि, गण और द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं।
स्वाति	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
विशाखा	१-३	गणना निन्द्य बजती है। योनि, गण और द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, योनि और गणदोष है।
अनुराधा	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्ण दोष राशिमेत्री से नहीं होता है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और नाड़ी दोष है।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और नाड़ी दोष है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्ण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
उ.षाढ़ा	१	गणना उत्तम बनती है। वर्ण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना बनती है। नवपंचम दोष शुभ तारा व बु.-श. सममित्र से न होगा।
श्रवण	१-४	गणना बनती है। नवपंचम दोष शुभ तारा व बु.-श. सममित्र है।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है। गण और नवपचम दोष है।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है। गण और षडष्टक दोष है।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना नहीं बनती है। षडष्टक और नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और नाड़ी दोष है।
उ.भाद्र	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्णदोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
रेवती	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्ण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

(वर-नक्षत्र हस्त से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	११।*	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	१०	त्या.
भरणी	१-४	,,	,,	११।	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२०	त्या.
कृत्तिका	१	,,	,,	३	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१५।।	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	३	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२१	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	३	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२६	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	३	,,	,,	देव	,,	मध्य	२६	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	३४	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	११।*	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२४।।	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	११।	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२४।।	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	११।	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	१८	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	११।*	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२७	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	११।	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२०	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	११।*	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१५।।	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	११।	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२१।।	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	आदि	१६	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	३	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२७	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२८	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२७	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	३	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२०	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	११।*	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२७।।	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	११।	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१८।।	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	११।	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१९	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	११।*	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२६	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	११।	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	१२	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	११।*	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१३	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	११।	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२६	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	३	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२७।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	३	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२५	त्या.
श्रवण	१-४	,,	जल.	३	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२५	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	३	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	१९।।	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	२१	त्यां.
शतभिषा	१-४	,,	,,	११।*	अश्व	,,	,,	,,	आदि	९।।	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	११।	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	१७।।	त्या.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	११।	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१८	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	११।*	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२६।।	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	११।	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२६।।	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *हस्त* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण षडष्टक और नाड़ी दोष है।
भरणी	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और मृत्युषडष्टक है।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और षडष्टक दोष है।
कृत्तिका	२-४	गणना मध्यम बनती है। राशीश मैत्री से गण और नवपंचम दोष नहीं होता।
रोहिणी	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
मृगशिर	१-२	गणना श्रेष्ठ बनती है। शुभ नवपंचम और राशीश मैत्री है।
मृगशिर	३-४	गणना उत्तम बनती है।
आर्द्रा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। नाड़ी दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
पुनर्वसु	१-३	गणना श्रेष्ठ बनती है। नाड़ी दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है। वर्णऔर नाड़ी दोष है।
पुष्य	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्णदोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती, वर्ण, और गणदोष है।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य, गण और द्विर्द्वादश दोष है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना शूद्र (जाति) के लिए बन सकती है। शुभ द्विर्द्वादर्श है।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना उत्तम बनती है। नाड़ी दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
हस्त	१-४	गणना चरण भेद में बनेगी।
चित्रा	१-२	गणना उत्तम बनती है। गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
चित्रा	३-४	गणना निन्द्य बनती है। गण और द्विर्द्वादश दोश राशीश मैत्री से नहीं होता।
स्वाति	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
विशाखा	१-३	गणना निन्द्य बनती है। गणऔर द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और गण दोष है।
अनुराधा	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्णदोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और नाड़ी दोष है।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और नाड़ी दोष है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना बनती है। वर्ण दोष सद्भकूट से नहीं होगा।
उ.षाढ़ा	१	गणना बनती है। वर्ण दोष सद्भकूट से नहीं होगा।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना बनती है। नवपंचम दोष बु.श. सममित्र से नहीं होगा।
श्रवण	१-४	गणना बनती है। नवपंचम दोष बु.श. सममित्र से नहीं होगा।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है। गण और नवपंचम दोष है।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है। गण, षडष्टक दोष है।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना नहीं बनती है। षडष्टक और नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और नाड़ी दोष है।
उ.भाद्र	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्णदोष राशि मैत्री से नही होता है।
रेवती	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्णदोष राशि मैत्री से नहीं होता है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

३५ (वर-नक्षत्र चित्रा १-२ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	१३	त्या.
भरणी	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	५	त्या.
कृत्तिका	१	,,	,,	१।।	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१८	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१।।	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२३।।	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	३	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२०	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	३	,,	,,	देव	,,	मध्य	१३	त्या.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२१	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	३	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२७	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२६।।	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२०	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।	मेष	,,	,,	,,	मध्य	१२	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२५	ग्रा.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	२१।।	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	७।।	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	आदि	१३।।	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१।।	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२४।।	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२८	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२८	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	३	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२१	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२१	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२७।।	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१।।*	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	२८	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।	मृग	,,	देव	,,	मध्य	१२	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२५	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२६	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१।।*	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	११	त्या.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१।।	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२०	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१।।	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	१७।।	त्या.
श्रवण	१-४	,,	जल.	३	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	१८।।	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	३	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	१६।।	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१८	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	३	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२५	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	१८।।	त्या.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१६।।	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	मध्य	६।।	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२०।।	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *चित्रा* १-२ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण ।
अश्वनी	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और षडष्टक दोष है।
भरणी	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण षडष्टक और नाड़ी दोष है।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, और षडष्टक दोष है।
कृत्तिका	२-४	गणना मध्यम बनती है। शुभ नवपंचम तथा राशीश की मैत्री है।
रोहिणी	१-४	गणना बनती है। गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
मृगशिर	१-२	गणना नहीं बनती है। गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
मृगशिर	३-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। एकाधिपत्य से गण और नाड़ी दोष नहीं होता है।
आर्द्रा	१-४	गणना उत्तम बनती है। गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
पुनर्वसु	१-३	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य से गणदोष नहीं होता है।
पुनर्वसु	४	गणना मध्यम बनती है। वर्णदोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गणऔर नाड़ी दोष है।
आश्लेषा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
मघा	१-४	गणना सिर्फ शूद्र जाति के लिए बनती है। शुभ द्विर्द्वादश है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य, गण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य, योनि, गण और द्विर्द्वादश दोष है।
उ.फाल्गु,	२-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। योनि और गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
हस्त	१-४	गणना उत्तम बनती है। गण दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
चित्रा	१-२	गणना चरण भेद में बनती है।
चित्रा	३-४	गणना चरण भेद में बनती है।
स्वाति	१-४	गणना मध्यम बनती है। गण व द्विर्द्वादश दोष राशीशमैत्री से नहीं होता।
विशाखा	१-३	गणना श्रेष्ठ बनती है। द्विर्द्वादश दोष राशीशमैत्री से नहीं होता है।
विशाखा	४	गणना उत्तम बनती है। वर्णदोष योनि मैत्री से नहीं होता है।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और नाड़ी दोष है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना ज्येष्ठ बनती है। वर्ण, दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
मूल	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्ण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और नाड़ी दोष है।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण और गण दोष है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना नहीं बनती है। गण और नवपंचम दोष है।
श्रवण	१-४	गणना बनती है। गण और नवपंचम दोष बु.-शु. सममित्र से नहीं होगा।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है। नवपंचम और नाड़ी दोष है।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी और षडष्टक दोष है।
शतभिषा	१-४	गणना मध्यम बनती है। मित्र षडष्टक है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना नहीं बनती है। षडष्टक और गणदोष है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और गण दोष है।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, योनि, गण और नाड़ी दोष है।
रेवती	१-४	गणना मध्यम बनती है। वर्ण, गणदोष राशि मैत्री से नहीं होता है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

 (वर-नक्षत्र चित्रा ३-४ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२२।।	त्या.
भरणी	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२२।।	त्या.
कृत्तिका	१	,,	,,	१।।	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२७।।	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१।।	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२२।।	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	३	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	१९	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	३	,,	,,	देव	,,	मध्य	१२	त्या.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	१४	त्या.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	३	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२०	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	१९।।	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	१९।।	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।	मेष	,,	,,	,,	मध्य	११।।	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२४।।	ग्रा.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	२४।।	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१०।।	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	आदि	१६।।	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१।।	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	१६।।	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२०	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२०	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	३	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२८	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२८	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	३४।।	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१।।*	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	२३।।	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।	मृग	,,	देव	,,	मध्य	७।।	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२०।।	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२६	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१।।*	वानर	,,	मनुष्य	,, .	मध्य	१२	त्या.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१।।	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२०	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१।।	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२४।।	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	३	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२५	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	३	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२३।।	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१९।।	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	३	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२६	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	१९।।	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१२।।	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२।।	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	१३।।	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *चित्रा* ३-४ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना नहीं बनती है। गण और विषम सप्तकदोष है।
भरणी	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, विषमसप्तक और नाड़ी दोष है।
कृत्तिका	१	गणना उत्तम बनती है। वर्ण एवं विषय सप्तक दोष है।
कृत्तिका	२-४	गणना मध्यम बनती है। एकाधिपत्य से वर्ण और षडष्टक दोष नहीं होता है।
रोहिणी	१-४	गणना निकृष्ट बनती है। वर्ण, गण और षडष्टक दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
मृगशिर	१-२	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
मृगशिर	३-४	गणना नहीं बनती है। गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
आर्द्रा	१-४	गणना बनती है। गण और नवपंचम दोष राशीश की मैत्री से नहीं होता है।
पुनर्वसु	१-३	गणना साधारण बनती है। गण दोष राशीश की मैत्री से हटता है। शुभ नवपंचम है।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण एवं गण दोष है।
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और नाड़ी दोष है।
आश्लेषा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्णदोष राशीश वर्णोत्तम से नहीं होता है।
मघा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। राशीश वर्णोत्तम व राशिमैत्री से वर्ण, वश्यदोष नहीं होता।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य, गण और नाड़ी दोष है।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य, योनि, और गणदोष है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना साधारण बनती है। वर्ण योनि, गणदोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
हस्त	१-४	गणना बनती है। वर्ण, गण और द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
चित्रा	१-२	गणना बनती है। चरण भेद में।
चित्रा	३-४	गणना चरण भेद में बनेगी।
स्वाति	१-४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्या से गणदोष नहीं होता है।
विशाखा	१-३	गणना उत्तम बनती है।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और द्विर्द्वादश दोष है।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और द्विर्द्वादश दोष है।
मूल	१-४	गणना उत्तम बनती है। राशीश वर्णोत्तम से वर्ण दोष नहीं होता है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण औ नाड़ीदोष है।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण और गण दोष है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण और गणदोष राशीशमैत्री से नहीं होगा।
श्रवण	१-४	गणना उत्तम बनती। वर्ण, गण, दशमचतुर्थ दोष राशीश मैत्री से नहीं होगा।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है। वर्ण, दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष है।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है। नवपंचम और नाड़ी दोष है।
शतभिषा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। नवपंचम दोष राशीश की मैत्री से नहीं होता है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना निकृष्ट बनती है। गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गणऔर षडष्टक दोष है।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, योनि, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
रेवती	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और षडष्टक दोष है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

(वर-नक्षत्र स्वाति से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१॥*	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२७॥	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	१॥	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२६॥	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	१॥*	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१५॥	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१॥*	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	१०॥	त्या.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१॥	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	१५॥	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	३	,,	,,	देव	,,	मध्य	२५	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२७	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	३	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२७	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	३	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२७	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	३	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२७	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	१॥*	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२६॥	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१॥	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	११॥	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१॥*	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१०॥	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१॥	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२४॥	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	१॥*	गौ	,,	,,	,,	आदि	२५॥	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१॥*	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२५॥	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	१॥	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२६॥	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	१६	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	३	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२७	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२८	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१६॥	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	३	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	८	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१॥*	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२१॥	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१॥	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	१५॥	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१॥*	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२१	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१॥	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२६	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१॥*	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	१८	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१॥*	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२२॥	त्या.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१॥	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२२	त्या.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	३	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२६॥	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	२२	ग्रा.
शतभिषा	१-४	,,	,,	३	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२०	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	३	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२८	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	३	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	२१	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१॥*	गौ	,,	,,	,,	मध्य	१६॥	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	१॥	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	११॥	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र ***स्वाति*** से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण ।
अश्वनी	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण दोष विषमसप्तक दोष है ।
भरणी	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण दोष विषम सप्तक दोष है ।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण, विषमसप्तक और नाड़ी दोष है ।
कृत्तिका	२-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
रोहिणी	१-४	गणना निकृष्ट है । वर्ण और नाड़ी दोष एकाधिपत्य से नहीं होता मित्र षडष्टक ।
मृगशिर	१-२	गणना मध्यम बनती है । वर्ण और षडष्टक दोष एकाधिपत्य नहीं होता ।
मृगशिर	३-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । शुभ नवपंचम और राशीश की मैत्री है ।
आर्द्रा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । शुभ नवपंचम और राशीश की मैत्री है ।
पुनर्वसु	१-३	गणना श्रेष्ठ बनती है । शुभ नवपंचम और राशीश की मैत्री है ।
पुनर्वसु	४	गणना उत्तम बनती है । वर्ण दोष शुभ तारा से नहीं होता है ।
पुष्य	१-४	गणना उत्तम बनती है । वर्ण दोष राशीश वर्णोत्तम से नहीं होता है ।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती, वर्ण, गण और नाड़ी दोष है ।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, वश्य, गण और नाड़ी दोष है ।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । राशीश वर्णोत्तम व राशीश मैत्री से वर्ण, वश्य दोष नहीं होता ।
उ.फाल्गु.	१	गणना उत्तम बनती है । वर्णदोष राशीश वर्णोत्तम वश्यदोष राशीशमैत्री से नहीं होता ।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । राशीश मैत्री से वर्ण दोष नहीं होता शुभद्विर्द्वादश है ।
हस्त	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । वर्णदोष राशीशमैत्री से नहीं होता शुभद्विर्द्वादश है ।
चित्रा	१-२	गणना साधारण बनती है । वर्ण गणदोष राशीशमैत्री से नहीं होता शुभद्विर्द्वादश ।
चित्रा	३-४	गणना उत्तम बनती है । गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है ।
स्वाति	१-४	गणना बनती है । चरण भेद में बनती है ।
विशाखा	१-३	गणना मध्यम बनती है । गण और नाड़ी दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है ।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण, द्विर्द्वादश और नाड़ीदोष है ।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और द्विर्द्वादश दोष है ।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण और द्विर्द्वादश दोष है ।
मूल	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । राशीश वर्णोत्तम से वर्ण, सद्कूट से गणदोष नहीं होगा ।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना उत्तम बनती है । वश्यैक्य से वर्णदोष नहीं होता ।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है । वर्ण व नाड़ी दोष है ।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और नाड़ी दोष है ।
श्रवण	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष है ।
धनिष्ठा	१-२	गणना उत्तम बनती है । गण,दशमचतुर्थ और वर्णदोष राशीश मैत्री से होगा ।
धनिष्ठा	३-४	गणना मध्यम बनती है । गण व नवपंचम दोष राशीशमैत्री से नहीं होगा ।
शतभिषा	१-४	गणना बनती है । गण और नवपंचम दोष राशीशमैत्री से नहीं होगा ।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना श्रेष्ठ बनती है । नवपंचम दोष राशीश की मैत्री से नहीं होता है ।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और षडष्टक दोष है ।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और षडष्टक दोष है ।
रेवती	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, मृत्यु षडष्टक और नाड़ी दोष है ।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें ।

४१ (वर-नक्षत्र विशाखा १-३ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२२।।	त्या.
भरणी	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२२।।	त्या.
कृत्तिका	१	,,	,,	१।।	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१६।।	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१।।	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	१४।।	त्या.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१।।*	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	६।।	त्या.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१।।	,,	,,	देव	,,	मध्य	१८।।	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१।।	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२०।।	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	३	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२०	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	३	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२१	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	३	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२१	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	३	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२१	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१६।।	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१६।।	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१८।।	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	आदि	१६।।	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१।।	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	१६।।	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	१।।*	महिषी	,,	देव	,,	आदि	१८।।	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	१।।	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२६।।	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१।।	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	३४।।	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२०	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२८	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	३	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१७	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	३	मृग	,,	देव	,,	मध्य	१७	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२०।।	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२६	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१।।*	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२१	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१।।	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	१२	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१।।	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	१६।।	त्या.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१।।*	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	१६	त्या.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१।।	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	३०	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानवं	१।।	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	२५।।	ग्रा.
शतभिषा	१-४	,,	,,	३	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२६	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	३	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२१	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	३	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१४	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	मध्य	१२	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	५।।	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *विशाखा* १-३ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और गणदोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
भरणी	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और गणदोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण और नाड़ी दोष है।
कृत्तिका	२-४	गणना बनती है। एकाधिपत्य से वर्ण और नाड़ी दोष नहीं होता मित्र षडष्टक है।
रोहिणी	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
मृगशिर	१-२	गणना बनती है। वर्ण और गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता मित्र षडष्टक है।
मृगशिर	३-४	गणना मध्यम बनती है। गणदोष राशीश मैत्री से नहीं होता शुभ नवपंचम है।
आर्द्रा	१-४	गणना साधारण बनती है। गणदोश राशीश मैत्री से नहीं होता शुभ नवपंचम है।
पुनर्वसु	१-३	गणना मध्यम बनती है। गणदोष राशीश मैत्री से हटता शुभ नवपंचम है।
पुनर्वसु	४	गणना बनती है। वर्ण, गणदोष, राशीश, वर्णोत्तम सद्भकूट से नहीं होता।
पुष्य	१-४	गणना बनती है। वर्ण और गणदोष , शुभतारा और सद्भकूट से नहीं होता।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती, वर्ण, और नाड़ी दोष है।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य और नाड़ी दोष है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना बनती है। वर्ण, वश्य, गण दोष राशीश वर्णोत्तम व सद्भकूट से नहीं होगा।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है तो वर्ण, वश्य योनि और गणदोष है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना निन्द्य बनती है। राशीशमैत्री से वर्ण, योनि और गणदोष नहीं होता।
हस्त	१-४	गणना बनती है। राशीशमैत्री से वर्ण और गणदोष नहीं होता शुभ द्विर्द्वादश।
चित्रा	१-२	गणना श्रेष्ठ बनती है। राशीशमैत्री से वर्णदोष नहीं होता शुभ द्विर्द्वादश है।
चित्रा	३-४	गणना उत्तम बनती है।
स्वाति	१-४	गणना मध्यम बनती है। एकाधिपत्य से गण और नाड़ी दोष नहीं होता है।
विशाखा	१-३	गणना बनती है। चरण-भेद में बनेगी।
विशाखा	४	गणना बनती है। चरण भेद है।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और द्विर्द्वादश दोष है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, और द्विर्द्वादश दोष है।
मूल	१-४	गणना उत्तम बनती है। वश्यैक्य से वर्णदोष नहीं होता है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना मध्यम बनती है। राशीश वर्णोत्तम सद्भकूट से गण और वर्णदोष नहीं होता है।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और नाड़ी दोष है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष है।
श्रवण	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष है।
धनिष्ठा	१-२	गणना उत्तम बनती है। वर्णऔर दशमचतुर्थ दोष राशिशमैत्री से नहीं होगा।
धनिष्ठा	३-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। नवपंचम दोष राशीश की मैत्री से नहीं होता है।
शतभिषा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। नवपंचम दोष राशीश की मैत्री से नहीं होता है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना मध्यम बनती है। गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और षडष्टक दोष है।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण योनि, और षडष्टक दोष है।
रेवती	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण षडष्टक और नाड़ी दोष है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

 (वर-नक्षत्र विशाखा ४ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	१८।।	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१८।।	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	१।।	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१५।।	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१।।	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२०।।	त्या.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१।।*	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	१५।।	त्या.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१।।	,,	,,	देव	,,	मध्य	२४।।	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१।।	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	१५	त्या.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	३	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	१४।।	त्या.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	३	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	१५।।	त्या.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	३	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	१६	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	३	मेष	,,	,,	,,	मध्य	१६	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१४।।	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	२२।।	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२४।।	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	आदि	२२।।	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१।।	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	१६	त्या.
हस्त	१-४	,,	,,	१।।*	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२१	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	१।।	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२६	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१।।	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२४।।	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	१०	त्या.
विशाखा	१-३	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१८	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	३	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	२८	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	३	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२८	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	३१।।	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२३।।	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१।।*	वानर	,,.	मनुष्य	,,	मध्य	१७।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१।।	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	१०।।	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१।।	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	१३	त्या.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१।।*	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	१३	त्या.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१।।	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२७	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१।।	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	२७	ग्रा.
शतभिषा	१-४	,,	,,	३	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२७।।	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	३	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२२।।	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	३	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	२०	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	मध्य	१८	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	११।।	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *विशाखा* ४ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण ।
अश्वनी	१-४	गणना बनती है। गण और षडष्टक दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
भरणी	१-४	गणना बनती है। गण और षडष्टक दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
कृत्तिका	१	गणना बनती है। षडष्टक और नाड़ी दोष एकाधिपत्यसे नहीं होता है।
कृत्तिका	२-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
रोहिणी	१-४	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
मृगशिर	१-२	गणना श्रेष्ठ बनती है। सद्भकूट से गणदोष नहीं होता है।
मृगशिर	३-४	गणना नहीं बनती है। गणऔर षडष्टक दोष है।
आर्द्रा	१-४	गणना नहीं बनती है। गणऔर षडष्टक दोष है।
पुनर्वसु	१-३	गणना नहीं बनती है। गणऔर षडष्टक दोष है।
पुनर्वसु	४	गणना निकृष्ट बनती है। गणदोष मं.व.चं. सममित्र से नहीं होता शुभ नवपंचम।
पुष्य	१-४	गणना निकृष्ट बनती है। गणदोष मं.व.चं. सममित्र से नहीं होता शुभ नवपंचम।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है। नवपंचम और नाड़ी दोष है।
मघा	१-४	गणना बनती है। राशीश मैत्री से वश्य मघा-विशाखा में नाड़ी दोष नहीं होता।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वश्य और गणदोष राशीशमैत्री से नहीं होता है।
उ.फाल्गु.	१	गणना श्रेष्ठ बनती है। वश्य, योनि और गणदोष राशीशमैत्री से नहीं होता।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना नहीं बनती है। योनि और गणदोष है।
हस्त	१-४	गणना श्रेष्ठा बनती है। सद्भकूट से गणदोष नहीं होता है।
चित्रा	१-२	गणना उत्तम बनती है।
चित्रा	३-४	गणना मध्यम बनती है। शुभ द्विर्द्वादश है।
स्वाति	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
विशाखा	१-३	गणना बनती है। चरण-भेद में बनेगी।
विशाखा	४	गणना उत्तम बनती है। विशाखा-विशाखा होने से नाड़ी दोष नहीं होता है।
अनुराधा	१-४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य से गण दोष नहीं होता है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना उत्तम बनती है।
मूल	१-४	गणना मध्यम बनती है। राशीश की मैत्री से द्विर्द्वादश दोष नहीं होता।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना निकृष्ट बनती है। गण और द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है। गण, द्विर्द्वादश और नाड़ीदोष है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
श्रवण	१-४	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
धनिष्ठा	१-२	गणना उत्तम बनती है।
धनिष्ठा	३-४	गणना उत्तम बनती है।
शतभिषा	१-४	गणना उत्तम बनती है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना श्रेष्ठ बनती है। सद्भकूट व शुभतारा से गण दोष नहीं होता है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना बनती है। गणऔर नवपंचम दोष राशीशमैत्री से नहीं होता है।
उ.भाद्र	१-४	गणना निकृष्ट बनती है। योनि, गण, नवपंचम दोष राशीशमैत्री से नहीं होता।
रेवती	१-४	गणना नहीं बनती है। गण नवपंचम और नाड़ी दोष है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

(वर-नक्षत्र अनुराधा से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।*	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२५।।	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	१।।	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१६।।	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	१।।*	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१९।।	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१।।*	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२४।।	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१।।	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२९।।	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१।।*	,,	,,	देव	,,	मध्य	२१।।	त्या.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	१२	त्या.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१।।	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	१८	त्या.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	३	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२१।।	त्या.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	३	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२५	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	३	मेष	,,	,,	,,	मध्य	१८	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	३	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१९	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।*	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	२४।।	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१।।	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२२।।	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	१।।*	गौ	,,	,,	,,	आदि	३१।।	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१।।*	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२८	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	१।।	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२७	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	१३	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१।।*	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	८।।	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	१।।	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२२।।	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१८	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	३	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	२८	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	३	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२८	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	३	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	३०	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।*	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१६।।	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१।।	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१६।।	त्या.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१।।*	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२४।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१।।*	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२७	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१।।	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२७	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	१३	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१३	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१।।	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२२	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	३	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२८	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	३	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	२६	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	मध्य	१९	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	३	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२६	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *अनुराधा* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। षडष्टक दोष एकाधिपत्य से नहीं होता।
भरणी	१-४	गणना निकृष्ट बनती है। षडष्टक और नाड़ी दोष एकाधिपत्य से नहीं होता।
कृत्तिका	१	गणना बनती है। एकाधिपत्य से गण और षडष्टक दोष नहीं होता।
कृत्तिका	२-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। सद्भकूट से गणदोष नहीं होता।
रोहिणी	१-४	गणना उत्तम बनती है।
मृगशिर	१-२	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
मृगशिर	३-४	गणना नहीं बनती है। षडष्टक और नाड़ी दोष है।
आर्द्रा	१-४	गणना नहीं बनती है। योनि और षडष्टक दोष है।
पुनर्वसु	१-३	गणना नहीं बनती है। षडष्टक दोष है।
पुनर्वसु	४	गणना मध्यम बनती है। शुभ नवपंचम है।
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है। नवपंचम और नाड़ी दोष है।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण और नवपंचम दोष है।
मघा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वश्य और गणदोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है। वश्य और नाड़ी दोष है।
उ.फाल्गु.	१	गणना उत्तम बनती है। वश्य दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना उत्तम बनती है।
हस्त	१-४	गणना उत्तम बनती है।
चित्रा	१-२	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
चित्रा	३-४	गणना नहीं बनती है। गण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
स्वाति	१-४	गणना मध्यम बनती है। शुभ द्विर्द्वादश है।
विशाखा	१-३	गणना नहीं बनती है। गण और द्विर्द्वादश दोष है।
विशाखा	४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य से गणदोष नहीं होता।
अनुराधा	१-४	गणना चरण भेद में बनती है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य से गणदोष नहीं होता।
मूल	१-४	गणना निकृष्ट बनती है। योनि, गण द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना नहीं बनती है। द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
उ.षाढ़ा	१	गणना मध्यम बनती है। द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना उत्तम बनती है।
श्रवण	१-४	गणना उत्तम बनती है।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
शतभिषा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। सद्भकूट से गणदोष नहीं होता है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना उत्तम बनती,है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना श्रेष्ठ बनती है। राशीश मैत्री से नवपंचम दोष नहीं होता है।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनती है। नवपंचम और नाड़ी दोष है।
रेवती	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

 (वर-नक्षत्र ज्येष्ठा से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	३	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	१४	त्या.
भरणी	१-४	,,	,,	११।*	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१८।।	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	११।	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२५।।	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	११।	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	३०।।	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	११।*	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२३।।	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	११।	,,	,,	देव	,,	मध्य	२४।।	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	११।	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	१५	त्या.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	११।*	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	४	त्या.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	११।	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	७	त्या.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	११।	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	१०।।	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	३	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२१	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	३	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२५	ग्रा.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	३	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	३२	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	११।*	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२४।।	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	११।	गौ	,,	,,	,,	आदि	१७।।	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	११।	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	१४	त्या.
हस्त	१-४	,,	,,	११।*	महिषी	,,	देव	,,	आदि	१४	त्या.
चित्रा	१-२	,,	,,	११।	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२७	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	११।	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२२।।	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	११।*	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	१७।।	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	११।	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२२।।	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	११।	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	३२।।	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	३	मृग	,,	देव	,,	मध्य	३१	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	३	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२८	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	३	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१६	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	११।*	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१८।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	११।	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	१८।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	११।	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२१	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	११।*	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२२	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	११।	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२७	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	११।	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	२७	ग्रा.
शतभिषा	१-४	,,	,,	११।*	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२०	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	११।	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	१३	त्या.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	११।	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१०।।	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२१	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	३	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२१	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *ज्येष्ठा* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
भरणी	१-४	गणना बनती है। एकाधिपत्य से गण और षडष्टक दोष नहीं होता है।
कृत्तिका	१	गणना श्रेष्ठ बनती है। षडष्टक दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
कृत्तिका	२-४	गणना उत्तम बनती है।
रोहिणी	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। गणदोष सद्भकूट से नहीं होता है।
मृगशिर	१-२	गणना श्रेष्ठ बनती है। गणदाष सद्भकूट से नहीं होता है।
मृगशिर	३-४	गणना नहीं बनती है। गण और षडष्टक दोष है।
आर्द्रा	१-४	गणना नहीं बनती है। योनि, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
पुनर्वसु	१-३	गणना नहीं बनती है। गण षडष्टक और नाड़ी दोष है।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है। गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
पुष्य	१-४	गणना मध्यम बनती है। शुभ तारा से गणदोष न होगा। शुभ नवपंचम है।
आश्लेषा	१-४	गणना मध्यम बनती है। शुभ तारा से गणदोष न होगा। शुभ नवपंचम है।
मघा	१-४	गणना उत्तम बनती है। वश्य दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। राशीश मैत्री से वश्य और गणदोष नहीं होता है।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है। वश्य, गण, नाड़ी दोष है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
हस्त	१ ४	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
चित्रा	१-२	गणना उत्तम बनती है।
चित्रा	३-४	गणना मध्यम बनती है। शुभ द्विर्द्वादश है।
स्वाति	१-४	गणना निकृष्ट बनती है। स्वाति में गणदोष नहीं होगा। शुभ द्विर्द्वादश है।
विशाखा	१-३	गणना मध्यम बनती है। शुभ द्विर्द्वादश है।
विशाखा	४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य है।
अनुराधा	१-४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य से गणदोष नहीं होता है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना चरण-भेद में बनती है।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है। योनि, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना बनती है। गण और द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
उ.षाढ़ा	१	गणना बनती है। गण और द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। सद्भकूट से गणदोष नहीं होता है।
श्रवण	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। सद्भकूट से गणदोष नहीं होता है।
धनिष्ठा	१-२	गणना उत्तम बनती है।
धनिष्ठा	३-४	गणना उत्तम बनती है।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है। गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
उ.भाद्र	१-४	गणना मध्यम बनती है। गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता।
रेवती	१-४	गणना मध्यम बनती है। गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

 (वर-नक्षत्र मूल से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	३	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	१३	त्या.
भरणी	१-४	,,	,,	३	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२०	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	१।।*	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२४।।	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१।।*	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२०	त्या.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१।।	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	१४	त्या.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१।।*	,,	,,	देव	,,	मध्य	१५	त्या.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२३	त्या.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१।।	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	१६	त्या.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	१४	त्या.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	८	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।	मेष	,,	,,	,,	मध्य	१७	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	३	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२२।।	ग्रा.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	३	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	२४	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	३	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१८	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	१।।*	गौ	,,	,,	,,	आदि	६।।	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१।।*	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	१४	त्या.
हस्त	१-४	,,	,,	१।।	महिषी	,,	देव	,,	आदि	१५	त्या.
चित्रा	१-२	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२७	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१।।*	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२७	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	१।।	महिषी	,,	देव	,,.	अन्त्य	२३	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२७	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१।।*	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	२२।।	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।	मृग	,,	देव	,,	मध्य	१६।।	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	३	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	१५	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	३	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२८	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	३	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२७	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१।।*	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२५।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१।।*	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	१६।।	त्या.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१।।	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	१७।।	त्या.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२१	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	२६।।	ग्रा.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१।।	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२२।।	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	१५।।	त्या.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१५	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२४	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	३	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२६।।	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *मूल* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
भरणी	१-४	गणना बनती है। गण, नवपंचम दोष, राशीश मैत्री से हटता है।
कृत्तिका	१	गणना मध्यम बनती है। नवपंचम दोष राशीश मैत्री से हटता है।
कृत्तिका	२-४	गणना नहीं बनती है। मृत्यु षडष्टक दोष है।
रोहिणी	१-४	गणना नहीं बनती है। मृत्यु षडष्टक, गण दोष है।
मृगशिर	१-२	गणना नहीं बनती है। गण और षडष्टक दोष है।
मृगशिर	३-४	गणना नहीं बनती है। गण और विषमसप्तक दोष है।
आर्द्रा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण विषमसप्तक और नाड़ी दोष है।
पुनर्वसु	१-३	गणना नहीं बनती है। गण विषमसप्तक और नाड़ी दोष है।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और षडष्टक दोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
आश्लेषा	१-४	गणना मध्यम बनती है। वर्ण दोष, राशीश वर्णोत्तम से न होगा। मित्र षडष्टक है।
मघा	१-४	गणना मध्यम बनती है। वश्य दोष राशीश मैत्री से हटता है। शुभ नवपंचम।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना बनती है। वश्य, गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है। वश्य, गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना नहीं बनती है। गण, दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष है।
हस्त	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष है।
चित्रा	१-२	गणना उत्तम बनती है। शुभ दशमचतुर्थ है।
चित्रा	३-४	गणना उत्तम बनती है। तृतीयैकादश है।
स्वाति	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। राशि मैत्री से गणदोष नहीं होता।
विशाखा	१-३	गणना उत्तम बनती है।
विशाखा	४	गणना मध्यम बनती है। वर्ण दोष राशीश मैत्री से नहीं होता। शुभ द्विर्द्वादश है।
अनुराधा	१-४	गणना निकृष्ट बनती है। वर्ण, योनि,गण दोष राशीश मैत्री से नहीं होता शुभ द्विर्द्वादश है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, योनि, नाड़ी दोष, द्विर्द्वादश दोष है।
मूल	१-४	गणना चरण-भेद में बनती है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना उत्तम बनती है। गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
उ.षाढ़ा	१	गणना उत्तम बनती है। गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना नहीं बनती है। द्विर्द्वादश और गणदोष है।
श्रवण	१-४	गणना नहीं बनती है। गण और द्विर्द्वादश दोष है।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है। द्विर्द्वादश दोष है।
धनिष्ठा	३-४	गणना उत्तम बनती है।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और नाड़ी दोष है।
उ.भाद्र	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण, और गण दोष एकाधिपत्य से हट जाते है।
रेवती	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण, और गण दोष एकाधिपत्य से हट जाते है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

 (वर-नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	३	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२६	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	३	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२०	त्या.
कृत्तिका	१	,,	,,	३	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१६	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	३	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	१४॥	त्या.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१॥*	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२१	त्या.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१॥	,,	,,	देव	,,	मध्य	१२	त्या.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१॥	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	१८	त्या.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१॥*	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२७	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१॥	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२६	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१॥	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२१॥	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	१॥*	मेष	,,	,,	,,	मध्य	११॥	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१॥	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१६॥	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	३	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१६	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	३	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१७	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	आदि	२५	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	३	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२८॥	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	१॥*	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२६	त्या.
चित्रा	१-२	,,	,,	१॥	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	१२	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१॥	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	१२	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	१॥*	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२६	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	१॥	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२०	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१॥	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१६॥	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१॥*	मृग	,,	देव	,,	मध्य	१४॥	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१॥	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	१७॥	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	३	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२७	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	३	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२८	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	३	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	३५	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	३	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२६	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१॥*	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२३॥	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१॥	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	८॥	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१॥	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१५॥	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१॥*	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२३॥	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१॥	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२६॥	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१॥	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	३०॥	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१॥*	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२२॥	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	१॥	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२६॥	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

नं० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र ***पूर्वाषाढ़ा*** से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण
अश्वनी	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। नवपंचम दोष राशि मैत्री से नहीं होता।
भरणी	१-४	गणना नहीं बनती है। नवपंचम और नाड़ी दोष है।
कृत्तिका	१	गणना बनती है। योनि, गण और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता।
कृत्तिका	२-४	गणना नहीं बनती है। योनि, गण और षडष्टक दोष है।
रोहिणी	१-४	गणना नहीं बनती है। षडष्टक दोष है।
मृगशिर	१-२	गणना नहीं बनती है। षडष्टक और नाड़ी दोष है।
मृगशिर	३-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
आर्द्रा	१-४	गणना उत्तम बनती है।
पुनर्वसु	१-३	गणना उत्तम बनती है।
पुनर्वसु	४	गणना मध्यम बनती है। राशीश वर्णोत्तम से वर्ण दोष नहीं होता है। शुभ द्विर्द्वादश
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, योनि षडष्टक और नाड़ी दोष है।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और षडष्टक दोष है।
मघा	१-४	गणना बनती है। वश्य और गण दोष राशीश मैत्री से नहीं होता शुभ नवपंचम।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है। वश्य, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
उ.फाल्गु.	१	गणना बनती है। वश्य दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है। शुभ नवपंचम।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना बनती है। दशमचतुर्थ दोष शुभ तारा से नहीं होगा।
हस्त	१-४	गणना नहीं बनती है। दशमचतुर्थ दोष है। नवांश कोष्टक से निर्णय करें।
चित्रा	१-२	गणना नहीं बनती है। गण, दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष है।
चित्रा	३-४	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
स्वाति	१-४	गणना उत्तम बनती है।
विशाखा	१-३	गणना मध्यम बनती है। गणदोष तृतीयैकादश से नहीं होता।
विशाखा	४	गणना निकृष्ट बनती है। राशीश मैत्री से वर्ण, गण और द्विर्द्वादश दोष नहीं होता।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, द्विद्वादर्श और नाड़ी दोष है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना निकृष्ट बनती है। वर्ण और गणदोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
मूल	१-४	गणना उत्तम बनती है। गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना चरण-भेद में बनती है।
उ.षाढ़ा	१	गणना उत्तम बनती है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना बनती है। द्विर्द्वादश दोष वश्यैक एवं तारा शुभ से नहीं होता है।
श्रवण	१-४	गणना बनती है। द्विर्द्वादश दोष योनियैक्य से नहीं होगा।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है। गण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
शतभिषा	१-४	गणना बनती है। गणदोष सद्भकूट से नहीं होता है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना उत्तम बनती है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य से वर्ण दोष नहीं होता है।
उ.भाद्र	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। एकाधिपत्य से वर्ण और नाड़ी दोष नहीं होता है।
रेवती	१-४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य से वर्ण दोष नहीं होता है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

 (वर-नक्षत्र उत्तराषाढ़ा १ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२४।।	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	३	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२७	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	३	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१४	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	३	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	६।।	त्या.
रोहिणी	१-४	,,	,,	३	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	१२।।	त्या.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१।।*	,,	,,	देव	,,	मध्य	१८	त्या.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२४	त्या.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१।।	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२७	त्या.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२६	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२१।।	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२२।।	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	८।।	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	६।।	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	३	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२५	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	आदि	२६	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	३	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२६।।	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२७।।	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२१	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१।।*	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२१	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	१।।	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	१८	त्या.
विशाखा	१-३	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१३	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१।।*	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	६।।	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२२।।	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	१७।।	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२५।।	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	३	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	३४	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	३	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२८	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	३	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	१६	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	३	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	१५	त्या.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	१६।।	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	२३।।	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१।।	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२३।।	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२६।।	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	३०	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	मध्य	३१।।	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२१।।	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *उ०षाढ़ा १* चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण ।
अश्वनी	१-४	गणना मध्यम बनती है । नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता ।
भरणी	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता ।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती है । नवपंचम, गण एवं नाड़ी दोष है ।
कृत्तिका	२-४	गणना नहीं बनती है । गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
रोहिणी	१-४	गणना नहीं बनती है । योनि, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
मृगशिर	१-२	गणना नहीं बनती है । योनि और षडष्टक दोष है ।
मृगशिर	३-४	गणना नहीं बनती है । योनि और विषमसप्तक दोष है ।
आर्द्रा	१-४	गणना नहीं बनती है । विषम सप्तक दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
पुनर्वसु	१-३	गणना नहीं बनती है । विषम सप्तक दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
पुनर्वसु	४	गणना मध्यम बनती है । वर्णदोष राशीश सममित्र से नहीं होगा । शुभ षष्डटक
पुष्य	१-४	गणना मध्यम बनती है । राशीश वर्णोत्तम से वर्णदोष नहीं होता । शुभ षडष्टक
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है । वश्य, गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है ।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना मध्यम बनती है । वश्य दोष राशीशमैत्री से नहीं होता । शुभ षडष्टक
उ.फाल्गु.	१	गणना श्रेष्ठ बनती है । वश्य दोष राशीशमैत्री से नहीं होता । शुभ षडष्टक
उ.फाल्गु.	२-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । दशमचतुर्थ दोष शुभतारा से नहीं होगा ।
हस्त	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । दशमचतुर्थ दोष शुभतारा से नहीं होगा ।
चित्रा	१-२	गणना नहीं बनती है । गण और दशमचतुर्थ दोष है ।
चित्रा	३-४	गणना नहीं बनती है । गणदोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
स्वाति	१-४	गणना नहीं बनती है । नाड़ी .दोष है ।
विशाखा	१-३	गणना नहीं बनती है । गण और नाड़ी दोष है ।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है ।
अनुराधा	१-४	गणना मध्यम बनती है । वर्णदोष राशीशमैत्री से नहीं होता, शुभद्विर्द्वादश है ।
ज्येष्ठा	१-४	गणना निवृष्ट बनती है । वर्ण, गणदोष राशीश मैत्री से नहीं होता । शुभ द्विर्द्वादश है ।
मूल	१-४	गणना उत्तम बनती है । गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है ।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना उत्तम बनती है ।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है । एक नक्षत्र का एक ही चरण है ।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना बनती है । चरण-भेद है ।
श्रवण	१-४	गणना नहीं बनती है । द्विर्द्वादश और नाड़ी है ।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है । द्विर्द्वादश और नाड़ी है ।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है । गण दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है । गण दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना उत्तम बनती है ।
पूर्वाभाद्र	४	गणना उत्तम बनती है । वर्णदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है ।
उ.भाद्र	१-४	गणना उत्तम बनती है । वर्णदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है ।
रेवती	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । वर्ण और नाड़ी दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है ।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें ।

५५ (वर-नक्षत्र उत्तराषाढ़ा २-४ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२६	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	३	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२८।।	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	३	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१५।।	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	३	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	१४	त्या.
रोहिणी	१-४	,,	,,	३	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	१७	त्या.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१।।*	,,	,,	देव	,,	मध्य	२२।।	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२०।।	त्या.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१।।	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२३।।	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२२।।	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२५	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२६	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१२	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	३।।	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	३	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१६	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	आदि	२०	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	३	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२६	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२४	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	१७।।	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१।।*	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२५।।	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	१।।	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२२।।	त्या.
विशाखा	१-३	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१७।।	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१।।*	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१२	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२५	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२०	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१५।।	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	३	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२४	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	३	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	१८	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	३	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२८	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	३	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२४	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२५।।	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१।।*	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१८।।	ग्रा.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१।।	अश्व	,,	,,	,,	आदि	१८।।	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२४।।	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	२८।।	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२६।।	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	१६।।	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *उ०षाढ़ा* २-४ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण ।
अश्वनी	१-४	गणना उत्तम बनती है। वश्यैक्य से वर्णदोष नहीं होता।
भरणी	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्ण दोष वश्यैक्य से नहीं होता।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और नाड़ी दोष है।
कृत्तिका	२-४	गणना नहीं बनती है। गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
रोहिणी	१-४	गणना नहीं बनती है। योनि, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
मृगशिर	१-२	गणना मध्यम बनती है। योनि और नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता।
मृगशिर	३-४	गणना नहीं बनती है। योनि और षडष्टक दोष है।
आर्द्रा	१-४	गणना मध्यम बनती है। शुभ षडष्टक है।
पुनर्वसु	१-३	गणना मध्यम बनती है। शुभ षडष्टक है।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है। वर्णऔर अशुभ समसप्तक दोष है।
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और अशुभ समसप्तक दोष है।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और अशुभ समसप्तक और नाड़ी दोष है।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है। वश्य, वर्ण और षडष्टक दोष है।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य और षडष्टक दोष है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना मध्यम बनती है। शुभ नवपंचम है।
हस्त	१-४	गणना मध्यम बनती है। शुभ नवपंचम है।
चित्रा	१-२	गणना नहीं बनती है। गण और नवपंचम दोष है।
चित्रा	३-४	गणना उत्तम बनती है। गण दोष राशीश मैत्री से नहीं होता। शुभ दशमचतुर्थ है।
स्वाति	१-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी-दोष है।
विशाखा	१-३	गणना नहीं बनती है। गणदोष और नाड़ी दोष है।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ीं दोष है।
अनुराधा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। राशि मैत्री से वर्णदोष नहीं होता।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और गणदोष है।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और द्विर्द्वादश दोष है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना मध्यम बनती है। शुभ द्विर्द्वादश है। वर्णदोष शुभ तारा से हटता है।
उ.षाढ़ा	१	गणना बनती है। चरण-भेद है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना बनती है। चरण-भेद में।
श्रवण	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। नाड़ी दोष एकाधिपत्य से नहीं होता।
धनिष्ठा	१-२	गणना उत्तम बनती है। गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
धनिष्ठा	३-४	गणना बनती है। गण और द्विर्द्वादश दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
शतभिषा	१-४	गणना बनती है। गण और द्विर्द्वादश दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना मध्यम बनती है। द्विर्द्वादश दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना उत्तम बनती है। वर्ण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
उ.भाद्र	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्ण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
रेवती	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और नाड़ी दोष है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

(वर-नक्षत्र श्रवण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।*	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२६	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	१।।	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२६	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	३	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	११।।	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	३	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	१०	त्या.
रोहिणी	१-४	,,	,,	३	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	१८	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	३	,,	,,	देव	,,	मध्य	२६	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२४।।	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	१।।*	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२३	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१।।	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२३	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१।।	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२७	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।*	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२५	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१३	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।*	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	४।।	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१।।	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१८।।	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	आदि	२०	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	३	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२४।।	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२४।।	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	१७।।	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	३	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२५।।	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	१।।*	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२३	त्या.
विशाखा	१-३	,,	,,	१।।	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१६	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१।।	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	११	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।*	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२६	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२०	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।*	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१५	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१।।	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२३।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	३	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	१५	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	३	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२५	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	३	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२८	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	३	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२८	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१६।।	ग्रा.
शतभिषा	१-४	,,	,,	१।।*	अश्व	,,	,,	,,	आदि	१८	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१।।	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२४	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१।।	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	२६।।	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।*	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२६।।	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२१।।	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *श्रवण* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्णदोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
भरणी	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्णदोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, योनि गण और नाड़ी दोष है।
कृत्तिका	२-४	गणना नहीं बनती है। योनि, गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
रोहिणी	१-४	गणना बनती है। नवपंचम दोष राशि मैत्री से नाड़ी दोष श्रवण रोहिणी में नहीं होता है।
मृगशिर	१-२	गणना श्रेष्ठ बनती है। नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
मृगशिर	३-४	गणना मध्यम बनती है। मित्र षडष्टक है।
आर्द्रा	१-४	गणना मध्यम बनती है। मित्र षडष्टक है।
पुनर्वसु	१-३	गणना मध्यम बनती है। मित्र षडष्टक है।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है। वर्णऔर समसप्तक दोष है।
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, योनि और समसप्तक दोष है।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, समसप्तक और नाड़ी दोष है।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण षडष्टक और नाड़ी दोष है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, और षडष्टक दोष है।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण और षडष्टक दोष है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना मध्यम बनती है। शुभ नवपंचम है।
हस्त	१-४	गणना मध्यम बनती है। शुभ नवपंचम है।
चित्रा	१-२	गणना नहीं बनती है। गण और नवपंचम दोष है।
चित्रा	३-४	गणना उत्तम बनती है। गणदोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
स्वाति	१-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
विशाखा	१-३	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण गण और नाड़ी दोष है।
अनुराधा	१-४	गणना उत्तम बनती है। राशि मैत्री से वर्णदोष नहीं होता है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना मध्यम बनती है। वर्ण और गणदोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गणऔर द्विर्द्वादश दोष है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना मध्यम बनती है। वर्ण दोष योन्यैक्य से नहीं होता शुभ द्विर्द्वादश है।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य से नाड़ी दोष नहीं होता है।
श्रवण	१-४	गणना उत्तम बनती है। श्रवण में नाड़ी दोष नहीं होता है।
धनिष्ठा	१-२	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य से गणदोष नहीं होता है।
धनिष्ठा	३-४	गणना साधारण बनती है। एकाधिपत्य से गण और द्विर्द्वादश दोष नहीं होता है।
शतभिषा	१-४	गणना बनती है। गण और द्विर्द्वादश दोष एकाधिपत्य से नहीं होता।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना मध्यम बनती है। द्विर्द्वादश दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना उत्तम बनती है। वर्ण दोष राशि मैत्री से नहीं होता।
उ.भाद्र	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्ण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
रेवती	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और नाड़ी दोष है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

(वर-नक्षत्र धनिष्ठा १-२ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२०	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१०	त्या.
कृत्तिका	१	,,	,,	१।।	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२५	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१।।	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२३।।	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	३	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२०	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	३	,,	,,	देव	,,	मध्य	१३	त्या.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	११।।	त्या.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	३	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	१७।।	त्या.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	१८	त्या.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२२	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।	मेष	,,	,,	,,	मध्य	१३	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२७	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१७।।	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	३।।	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	आदि	११।।	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१।।	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	१६	त्या.
हस्त	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२०।।	त्या.
चित्रा	१-२	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	१६।।	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	३	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२४।।	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२८।।	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	१।।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	३१	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	१।।*	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	२६	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।	मृग	,,	देव	,,	मध्य	१३	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२६	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२०	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१।।*	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	८।।	त्या.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१।।	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	१५।।	त्या.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१।।	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२५।।	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	३	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	३०	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	३	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२८	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१८।।	ग्रा.
शतभिषा	१-४	,,	,,	३	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२४।।	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	१।।*	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२०	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	१।।*	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	२५।।	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	मध्य	१४।।	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२२।।	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *धनिष्ठा* १-२ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना मध्यम बनती है। वर्ण, गणदोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
भरणी	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, योनि, गण और नाड़ी दोष है।
कृत्तिका	१	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
कृत्तिका	२-४	गणना मध्यम बनती है। नवपंचम दोष राशीश की मैत्री से नहीं होता है।
रोहिणी	१-४	गणना बनती है। गण और नवपंचम दोष राशीश की मैत्री से नहीं होता है।
मृगशिर	१-२	गणना नहीं बनती है। गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
मृगशिर	३-४	गणना नहीं बनती है। गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
आर्द्रा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण और षडष्टक दोष है।
पुनर्वसु	१-३	गणना नहीं बनती है। गण और षडष्टक दोष है।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और समसप्तक दोष है।
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और समसप्तक नाड़ी दोष है।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और समसप्तक दोष है।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण और षडष्टक दोष है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और षडष्टक दोष है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना नहीं बनती है। गण और नवपंचम दोष है।
हस्त	१-४	गणना नहीं बनती है। गण और नवपंचम दोष है।
चित्रा	१-२	गणना नहीं बनती है। नवपंचम और नाड़ी दोष है।
चित्रा	३-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
स्वाति	१-४	गणना उत्तम बनती है। गणदोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
विशाखा	१-३	गणना उत्तम बनती है।
विशाखा	४	गणना उत्तम बनती है। वर्णदोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और नाड़ी दोष है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्ण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्णदोष और शुभ द्विर्द्वादश है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
उ.षाढ़ा	१	गणना नहीं बनती है। द्विर्द्वादश, वर्ण और गणदोष है
उ.षाढ़ा	२-४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य से गणदोष नहीं होता है।
श्रवण	१-४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य से गणदोष नहीं होता है।
धनिष्ठा	१-२	गणना चरण-भेद में बनती है।
धनिष्ठा	३-४	गणना बनती है। चरण-भेद में।
शतभिषा	१-४	गणना मध्यम बनती है। द्विर्द्वादश दोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना साधारण बनती है। गण और द्विर्द्वादश दोष एकाधिपत्य से नहीं हो होता।
पूर्वाभाद्र	४	गणना उत्तम बनती है। वर्णऔर गणदोश वश्यैक्य यौन्यैक्य नहीं होगा।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और नाड़ी दोष है।
रेवती	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण, योनि, गणदोष वश्यैक्य राशि मैत्री से नहीं होगा।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

 (वर-नक्षत्र धनिष्ठा ३-४ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	११।	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२०	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	११।*	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१०	त्या.
कृत्तिका	१	,,	,,	११।	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२५	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	११।	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२६।।	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	३	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२६	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	३	,,	,,	देव	,,	मध्य	१९	त्या.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	१२	त्या.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	३	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	१९	त्या.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	११।*	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	१९।।	त्या.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	११।*	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	१३।।	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	११।	मेष	,,	,,	,,	मध्य	४।।	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	११।*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१८।।	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	११।	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	२३।।	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	११।*	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	९।।	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	११।	गौ	,,	,,	,,	आदि	१७।।	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	११।	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	१६।।	त्या.
हस्त	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२१	त्या.
चित्रा	१-२	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	१७	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	३	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	१९	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२३	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	११।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२५।।	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	११।*	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	२६	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	११।	मृग	,,	देव	,,	मध्य	१३	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	११।*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२६	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	११।	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२८।।	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	११।*	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१६।।	त्या.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	३	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२२।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	३	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	१७।।	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	३	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२१	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	३	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	१८।।	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	२८	ग्रा.
शतभिषा	१-४	,,	,,	११।*	अश्व	,,	,,	,,	आदि	३३	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	११।	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२८।।	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	११।	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१७	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	११।*	गौ	,,	,,	,,	मध्य	६	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	११।	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	१४	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *धनिष्ठा* ३-४ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण ।
अश्वनी	१-४	गणना मध्यम बनती है । वर्ण और गणदोष राशि मैत्री से नहीं होता है ।
भरणी	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, योनि, गण और नाड़ी दोष है ।
कृत्तिका	१	गणना श्रेष्ठ बनती है । वर्ण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है ।
कृत्तिका	२-४	गणना उत्तम बनती है। वर्णदोष राशीशः मैत्री से नहीं होता है ।
रोहिणी	१-४	गणना उत्तम बनती है । वर्ण और गणदोष राशीश की मैत्री से नहीं होता है ।
मृगशिर	१-२	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण और नाड़ी दोष है ।
मृगशिर	३-४	गणना नहीं बनती है । गण नवपंचम और नाड़ी दोष है ।
आर्द्रा	१-४	गणना नहीं बनती है । गण,नवपंचम दोष वश्यैक्य व शुभ तारा से नहीं होगा ।
पुनर्वसु	१-३	गणना नहीं बनती है । गण, नवपंचम दोष वश्यैक्य व राशीश से सममित्र नहीं होगा ।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण और षडष्टक दोष है ।
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और षडष्टक दोष है ।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, वश्य और विषमसप्तक दोष है ।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, वश्य, गण, विषमसप्तक और नाड़ी दोष है ।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है । वर्ण, वश्य, गण और विषमसप्तम दोष है ।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गणऔर षडष्टक दोष है ।
हस्त	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण और षडष्टक दोष है ।
चित्रा	१-२	गणना नहीं बनती है । वर्ण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
चित्रा	३-४	गणना नहीं बनती है । नवपंचम और नाड़ी दोष है ।
स्वाति	१-४	गणना मध्यम बनती है । गणदोष राशीश मैत्री से नहीं होता शुभ नवपंचम है ।
विशाखा	१-३	गणना श्रेष्ठ बनती है । शुभ नवपंचम तथा राशीश मैत्री है ।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, वश्य और दशमचतुर्थ दोष है ।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण, दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष है ।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और दशमचतुर्थ दोष है ।
मूल	१-४	गणना उत्तम बनती है। वर्णदोष राशि मैत्री से नहीं होता है ।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण और नाड़ी दोष है ।
उ.षाढ़ा	१	गणना मध्यम बनती है । वर्ण और गणदोष राशि मैत्री से नहीं होता है ।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना बनती है । वर्ण, गण और द्विर्द्वादश दोष एकाधिपत्य से नहीं होता ।
श्रवण	१-४	गणना मध्यम बनती है । वर्ण, गण और द्विर्द्वादश दोष एकाधिपत्य से नहीं होता ।
धनिष्ठा	१-२	गणना बनती है । चरण-भेद में ।
धनिष्ठा	३-४	गणना चरण-भेद में बनती है ।
शतभिषा	१-४	गणना उत्तम बनती है ।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना उत्तम बनती है । गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता ।
पूर्वाभाद्र	४	गणदोष नहीं बनती है । वर्ण, गण और द्विर्द्वादश दोष है ।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है ।
रेवती	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, योनि, गण और द्विर्द्वादश दोष है ।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें ।

(वर-नक्षत्र शतभिषा से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।*	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	१५	त्या.
भरणी	१-४	,,	,,	१।।	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२०	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	१।।*	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२७	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१।।*	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	३१।।	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१।।	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२४।।	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	३	,,	,,	देव	,,	मध्य	२७	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२१	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	३	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	१२	त्या.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	३	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	१३	त्या.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	३	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	७	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	१।।*	मेष	,,	,,	,,	मध्य	१४।।	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१८।।	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।*	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	२४।।	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१।।	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१८।।	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	१।।*	गौ	,,	,,	,,	आदि	११।।	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१।।*	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	१०।।	त्या.
हस्त	१-४	,,	,,	१।।	महिषी	,,	देव	,,	आदि	६।।	त्या.
चित्रा	१-२	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२४	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	३	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	२६	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२१	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२६	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	३	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	२६।।	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	१।।*	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२२	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	१६	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।*	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२१।।	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१।।	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२२।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१।।*	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२२।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१।।*	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	१७।।	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१।।	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	१८	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	३	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२३।।	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	३	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	३३	ग्रा.
शतभिषा	१-४	,,	,,	३	अश्व	,,	,,	,,	आदि	२८	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	३	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	१६	ग्रा.
पूर्वाभाद्रं.	४	विप्र	जल.	३	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	७।।	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	१।।*	गौ	,,	,,	,,	मध्य	१६	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	१६	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *शतभिषा* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण
अश्वनी	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण गण और नाड़ी दोष है ।
भरणी	१-४	गणना मध्यम बनती है । वर्ण और गणदोष राशि मैत्री से नहीं होता है ।
कृत्तिका	१	गणना उत्तम बनती है । वर्ण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है ।
कृत्तिका	२-४	गणना उत्तम बनती है । राशीश मैत्री से वर्णदोष नहीं होता शुभ दशमचतुर्थ है ।
रोहिणी	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । वर्ण और गणदोष राशीश की मैत्री से नहीं होता है ।
मृगशिर	१-२	गणना उत्तम बनती है । वर्ण और गणदोष राशीश की मैत्री से नहीं होता है ।
मृगशिर	३-४	गणना बनती है । गण, नवपंचम दोष वश्यैक्य शुभतारा से नहीं होता ।
आर्द्रा	१-४	गणना नहीं बनती है । गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है ।
पुनर्वसु	१-३	गणना नहीं बनती है । गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है ।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण और षडष्टक दोष है ।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और षडष्टक दोष है ।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, वश्य और विषमसप्तक दोष है ।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, वश्य, गण और विषय सप्तक दोष है ।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है । वर्ण, वश्य, गण, विषमसप्तक और नाड़ी दोष है ।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
हस्त	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
चित्रा	१-२	गणना मध्यम बनती है । वर्ण दोष वश्यैक्य से नहीं होता है शुभ षडष्टक ।
चित्रा	३-४	गणना श्रेष्ठ बनती है । शुभ नवपंचम है ।
स्वाति	१-४	गणना मध्यम बनती है । गण, दोष, राशीश मैत्री से नहीं होता शुभ नवपंचम है ।
विशाखा	१-३	गणना श्रेष्ठ बनती है। शुभ नवपंचम तथा राशीश की मैत्री भी है ।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और दशमचतुर्थ है ।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण और दशमचतुर्थ दोष है ।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष है ।
मूल	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और नाड़ी दोष है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण और गणदोष राशि मैत्री से नहीं होता है ।
उ.षाढ़ा	१	गणना श्रेष्ठ बनती है। वर्ण और गणदोष राशि मैत्री से नहीं होता है ।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना साधारण बनती है । वर्ण, गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता शुभ द्विर्द्वादश है ।
श्रवण	१-४	गणना साधारण बनती है । वर्ण, गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता शुभ द्विर्द्वादश है ।
धनिष्ठा	१-२	गणना मध्यम बनती है । वर्ण और द्विर्द्वादश दोष एकाधिपत्य से नहीं होता ।
धनिष्ठा	३-४	गणना उत्तम बनती है । एकाधिपत्य है ।
शतभिषा	१-४	गणना चरण-भेद में बनती है ।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना मध्यम बनती है । गण और नाड़ीदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है ।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है ।
उ.भाद्र	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण और द्विर्द्वादश दोष है ।
रेवती	१-४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण और द्विर्द्वादश दोष है ।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें ।

६५ (वर-नक्षत्र पूर्वा भाद्रपद १-३ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१॥	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	१६	त्या.
भरणी	१-४	,,	,,	१॥*	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२४	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	१॥	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१६	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१॥	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२३॥	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१॥*	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	३०	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१॥	,,	,,	देव	,,	मध्य	२६॥	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१॥	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२३॥	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	३	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	१७	त्या.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	३	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	१७	त्या.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	३	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	११	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	३	मेष	,,	,,	,,	मध्य	१८	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१॥*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१२॥	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१॥	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१७॥	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१॥*	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२३॥	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	१॥	गौ	,,	,,	,,	आदि	१५॥	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१॥	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	१४॥	त्या.
हस्त	१-४	,,	,,	१॥*	महिषी	,,	देव	,,	आदि	१५॥	त्या.
चित्रा	१-२	,,	,,	१॥	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	१७॥	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१॥	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	१६॥	ग्रा.
स्वाति	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२७	ग्रा.
विशाखा	१-३	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२१	ग्रा.
विशाखा	४	विप्र	कीट	३	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	२१॥	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	३	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२६॥	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१॥*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	१२	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१॥	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१४॥	त्या.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१॥*	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२६॥	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१॥	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२८॥	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१॥	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२३॥	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१॥*	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२३	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१॥	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	१६	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१॥	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	२८॥	ग्रा.
शतभिषा	१-४	,,	,,	३	अश्व	,,	,,	,,	आदि	१६	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	३	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२८	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	३	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	१६॥	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२१॥	त्या.
रेवती	१-४	,,	,,	१॥*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	१८	त्या.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *पूर्वाभाद्रपद* १ - ३ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१ - ४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और नाड़ी दोष है ।
भरणी	१ - ४	गणना श्रेष्ठ बनती है । वर्ण और योनि दोष राशिमैत्री से नहीं होता है ।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती है । वर्ण और गणदोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
कृत्तिका	२ - ४	गणना श्रेष्ठ बनती है । वर्ण और गण दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है ।
रोहिणी	१ - ४	गणना उत्तम बनती है । वर्ण दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है ।
मृगशिर	१ - २	गणना उत्तम बनती है । राशीश की मैत्री से वर्ण दोष नहीं होता है ।
मृगशिर	३ - ४	गणना मध्यम बनती है । वश्यैक्य से नवपंचम दोष नहीं होता है।
आर्द्रा	१ - ४	गणना नहीं बनती है । नवपंचम एवं नाड़ी दोष है ।
पुनर्वसु	१ - ३	गणना नहीं बनती है । नवपंचम एवं नाड़ी दोष है ।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
पुष्य	१ - ४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, और षडष्टक दोष है ।
आश्लेषा	१ - ४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, गण, और षडष्टक दोष है ।
मघा	१ - ४	गणना नहीं बनती है। वर्ण, वश्य, गण और विषमसप्तक दोष है ।
पूर्वाफाल्गु.	१ - ४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, वश्य, और विषमसप्तक दोष है ।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है । वर्ण, वश्य, विषमसप्तक और नाड़ी दोष है ।
उ.फाल्गु.	२ - ४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, षडष्टक और नाड़ीदोष है ।
हस्त	१ - ४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, षडष्टक और नाड़ी दोष है ।
चित्रा	१ - २	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण और षडष्टक दोष है ।
चित्रा	३ - ४	गणना साधारण बनती है । गणदोष राशीश मैत्री से नहीं होता शुभ नवपंचम है ।
स्वाति	१ - ४	गणना श्रेष्ठ बनती है । राशीश की मैत्री है । नवपंचम शुभ है ।
विशाखा	१ - ३	गणना मध्यम बनती है । गणदोष राशीश मैत्री से नहीं होता शुभ नवपंचम है ।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण और दशमचतुर्थ दोष है ।
अनुराधा	१ - ४	गणना बनती है । वर्ण, दशमचतुर्थ दोष शुभ तारा व राशि मैत्री से न होगा ।
ज्येष्ठा	१ - ४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण, दशमचतुर्थ और नाड़ी दोष है ।
मूल	१ - ४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, गण और नाड़ी दोष है ।
पूर्वाषाढ़ा	१ - ४	गणना उत्तम बनती है । वर्ण दोष राशि मैत्री से नहीं होता है ।
उ.षाढ़ा	१	गणना उत्तम बनती है । राशि मैत्री से वर्णदोष नहीं होता है शुभ द्विर्द्वादश ।
उ.षाढ़ा	२ - ४	गणना मध्यम बनती है । एकाधिपत्य से वर्णदोष नहीं होता है शुभ द्विर्द्वादश।
श्रवण	१ - ४	गणना मध्यम बनती है । एकाधिपत्य से वर्णदोष नहीं होता है शुभ द्विर्द्वादश।
धनिष्ठा	१ - २	गणना बनती है । एकाधिपत्य से वर्ण और गणदोष नहीं होता है ।
धनिष्ठा	३ - ४	गणना उत्तम बनती है । गण दोषएकाधिपत्य से नहीं होता ।
शतभिषा	१ - ४	गणना बनती है । राशि एक और नक्षत्र भिन्नता होने से कई दोष नहीं है ।
पूर्वाभाद्र	१ - ३	गणना चरण भेद में बनती है ।
पूर्वाभाद्र	४	गणना बनती है । चरण भेद है ।
उ.भाद्रपद	१ - ४	गणना नहीं बनती है । वर्ण और द्विर्द्वादश दोष है । नवांश कोष्टक से निर्णय करें ।
रेवती	१ - ४	गणना नहीं बनती है । वर्ण, योनि, और द्विर्द्वादश दोष है ।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें ।

६७ (वर-नक्षत्र पूर्वा भाद्रपद ४ चरण से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	१।।	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	१४।।	त्या.
भरणी	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२२।।	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	१।।	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१७।।	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	१।।	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२०	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	१।।*	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२७	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	१।।	,,	,,	देव	,,	मध्य	२६	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	१।।	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२५।।	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	३	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	१६	त्या.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	३	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	१६	त्या.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	३	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	१७	त्या.
पुष्य	१-४	,,	,,	३	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२४	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	१।।*	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१८।।	ग्रा.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	१।।	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१७।।	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२३।।	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	१।।	गौ	,,	,,	,,	आदि	१५।।	त्या.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	१।।	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	१७।।	त्या.
हस्त	१-४	,,	,,	१।।*	महिषी	,,	देव	,,	आदि	१८।।	त्या.
चित्रा	१-२	,,	,,	१।।	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२०।।	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	१।।	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	१३।।	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	३	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	२१	त्या.
विशाखा	१-३	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१५	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	३	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	२०	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	३	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२५	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	१।।*	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	१०	त्या.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	१।।	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	१६	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	१।।*	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	३२।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	१।।	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	३१।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	१।।	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२६।।	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	१।।*	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	३०।।	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	१।।	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२६।।	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	१।।	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१८	ग्रा.
शतभिषा	१-४	,,	,,	३	अश्व	,,	,,	,,	आदि	८।।	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	३	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	१७।।	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	३	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	२८	त्या.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	मध्य	३३	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	१।।*	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२६।।	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र ***पूर्वाभाद्रपद*** ४ चरण से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण।
अश्वनी	१-४	गणना नहीं बनती है। द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
भरणी	१-४	गणना मध्यम बनती है। योनिदोष राशीश मैत्री से नहीं होता शुभ द्विर्द्वादश है।
कृत्तिका	१	गणना बनती है। योनि और गणदोष राशीश की मैत्री से नहीं होता शुभ द्विर्द्वादश है।
कृत्तिका	२-४	गणना मध्यम बनती है। राशि मैत्री से गण दोष नहीं होता शुभ द्विर्द्वादश है।
रोहिणी	१-४	गणना उत्तम बनती है।
मृगशिर	१-२	गणना उत्तम बनती है।
मृगशिर	३-४	गणना उत्तम बनती है।
आर्द्रा	१-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
पुनर्वसु	१-३	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
पुनर्वसु	४	गणना नहीं बनती है। नवपंचम और नाड़ी दोष है।
पुष्य	१-४	गणना मध्यम बनती है। वश्यैक्य व शुभतारा से नवपंचम दोष नहीं होता है।
आश्लेषा	१-४	गणना बनती है। गु.चं.सममित्र व वश्यैक्य से गण, नवपंचम दोष न होगा।
मघा	१-४	गणना निकृष्ट बनती है। राशीश मैत्री से गण और षडष्टक दोष नहीं होता।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना मध्यम बनती है। राशीश मैत्री से षडष्ट दोष नहीं होता है।
उ.फाल्गु.	१	गणना नहीं बनती है। षडष्टक और नाड़ी दोष है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
हस्त	१-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
चित्रा	१-२	गणना श्रेष्ठ बनती है। समसप्तक से गणदोष नहीं होता है।
चित्रा	३-४	गणना नहीं बनती है। गण और षडष्टक दोष है।
स्वाति	१-४	गणना नहीं बनती है। षडष्टक दोष है।
विशाखा	१-३	गणना नहीं बनती है। गणओर षडष्टक दोष है।
विशाखा	४	गणना मध्यम बनती है। गण, षडष्टक दोष राशिशमैत्री से नहीं होता है।
अनुराधा	१-४	गणना मध्यम बनती है। शुभनवपंचम और राशिशमैत्री है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, नवपंचम और नाडी दोष है।
मूल	१-४	गणना निकृष्ट बनती है। एकाधिपत्य से गण, नाड़ी दोष हटता है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य है।
उ.षाढ़ा	१	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना उत्तम बनती है।
श्रवण	१-४	गणना उत्तम बनती है।
धनिष्ठा	१-२	गणना उत्तम बनती है। गणदोष, वश्य-योन्यैक्य से नहीं होता है।
धनिष्ठा	३-४	गणना बनती है। यौन्यैक्य से गण दोष नहीं होता है। शुभ द्विर्द्वादश।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना बनती है। चरण भेद है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना नहीं बनती है। नक्षत्र का एक चरण एक नाड़ी दोष है।
उ.भाद्र	१-४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य है।
रेवती	१-४	गणना उत्तम बनती है। योनिदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

 (वर-नक्षत्र उत्तरा भाद्रपद से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	११।*	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२४।।	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	११।।	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१७।।	त्या.
कृत्तिका	१	,,	,,	११।*	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१६।।	ग्रा.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	११।*	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	२२	ग्रा.
रोहिणी	१-४	,,	,,	११।।	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	२६	ग्रा.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	११।*	,,	,,	देव	,,	मध्य	१७	त्या.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	११।*	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	१६।।	त्या.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	११।।	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२६।।	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	३	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२७	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	३	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२५	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	३	मेष	,,	,,	,,	मध्य	१८	त्या.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	३	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	२०	ग्रा.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	११।*	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१८।।	ग्रा.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	११।।	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	१६।।	त्या.
उ.फा.	१	,,	,,	११।*	गौ	,,	,,	,,	आदि	२६।।	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	११।*	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२८।।	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	११।।	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२६।।	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	११।*	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	१०।।	त्या.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	११।*	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	३।।	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	११।।	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	१६।।	त्या.
विशाखा	१-३	,,	,,	३	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१३	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	३	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१८	ग्रा.
अनुराधा	१-४	,,	,,	३	मृग	,,	देव	,,	मध्य	१८	त्या.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	३	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२५	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	११।*	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२५	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	११।।	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२३।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	११।*	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	३२।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	११।*	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	३०।।	ग्रा.
श्रवण	१-४	,,	जल.	११।।	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२६।।	ग्रा.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	११।*	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	१५।।	त्या.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानव	११।*	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	७	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	११।।	अश्व	,,	,,	,,	आदि	१७	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	३	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२२।।	ग्रा.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	३	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	३३	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	मध्य	२८	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	३	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	३४	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *उत्तराभाद्रपद* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण ।
अश्वनी	१-४	गणना मध्यम बनती है। राशिश मैत्री से द्विर्द्वादश दोष नहीं होता।
भरणी	१-४	गणना नहीं बनती है।। द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
कृत्तिका	१	गणना साधारण बनती है। गण, द्विर्द्वादश दोष राशीश मैत्री से नहीं होता।
कृत्तिका	२-४	गणना श्रेष्ठ नहीं बनती है। गण दोष राशि की मैत्री से नहीं होता है।
रोहिणी	१-४	गणना उत्तम बनती है।
मृगशिर	१-२	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
मृगशिर	३-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
आर्द्रा	१-४	गणना उत्तम बनती है।
पुनर्वसु	१-३	गणना उत्तम बनती है।
पुनर्वसु	४	गणना मध्यम बनती है। वश्यैक्य और शुभ तारा से नवपंचम नहीं होता।
पुष्य	१-४	गणना नहीं बनती है। नवपंचम और नाड़ी दोष है।
आश्लेषा	१-४	गणना बनती है। वश्यैक्य, शुभतारा से गण और नवपंचम दोष नहीं है।
मघा	१-४	गणना निकृष्ट बनती है। गणदोष राशिशमैत्री से नहीं होता है शुभ षडष्टक।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना नहीं बनती है। षडष्टक और नाड़ी दोष है।
उ.फाल्गु.	१	गणना श्रेष्ठ बनती है। राशिशमैत्री और मित्र षडष्टक है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना उत्तम बनती है।
हस्त	१-४	गणना उत्तम बनती है।
चित्रा	१-२	ग०.ना नहीं बनती है। योनि, गण, और नाड़ी दोष है।
चित्रा	३-४	गणना नहीं बनती है। योनि, गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
स्वाति	१-४	गणना नहीं बनती है। षडष्टक दोष है।
विशाखा	१-३	गणना नहीं बनती है। योनि, गण और षडष्टक दोष है।
विशाखा	४	गणना निकृष्ट बनती है। राशीश मैत्री से योनि, गणदोष नहीं होता शुभ नवपंचम।
अनुराधा	१-४	गणना नहीं बनती है। नवपंचम और नाड़ी दोष है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना मध्यम बनती है। गणऔर नवपंचम दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
मूल	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना श्रेष्ठब नती है। एकाधिपत्य से नाड़ी दोष नहीं होता है।
उ.षाढ़ा	१	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना उत्तम बनती है।
श्रवण	१-४	गणना उत्तम बनती है।
धनिष्ठा	१-२	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है। गण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण और द्विर्द्वादश दोष है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना मध्यम बनती है। शुभ द्विर्द्वादश है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य है।
उ.भाद्र	१-४	गणना उत्तम बनती है। उत्तराभाद्र में नाड़ी दोष नहीं होता है।
रेवती	१-४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

(वर-नक्षत्र रेवती से सभी नक्षत्रों का मिलापक)

न०कन्या	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रह	गण	राशि	नाड़ी	गुण	निर्णय
अश्वनी	१-४	क्षत्रिय	चतु.	३	अश्व	मंगल	देव	मेष	आदि	२६	ग्रा.
भरणी	१-४	,,	,,	११।*	गज	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२६।।	ग्रा.
कृत्तिका	१	,,	,,	११।	मेष	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	११।।	त्या.
कृत्तिका	२-४	वैश्य	,,	११।	मेष	शुक्र	,,	वृष	अन्त्य	१४	त्या.
रोहिणी	१-४	,,	,,	११।*	सर्प	,,	मनुष्य	,,	अन्त्य	१६	त्या.
मृगशिरा	१-२	,,	,,	११।	,,	,,	देव	,,	मध्य	२७	ग्रा.
मृगशिरा	३-४	शुद्र	मानव	११।	,,	बुध	,,	मिथुन	मध्य	२६।।	ग्रा.
आर्द्रा	१-४	,,	,,	११।*	श्वान	,,	मनुष्य	,,	आदि	२६।।	ग्रा.
पुनर्वसु	१-३	,,	,,	११।	मार्जार	,,	देव	,,	आदि	२६।।	ग्रा.
पुनर्वसु	४	विप्र	जल.	११।	,,	चन्द्र	,,	कर्क	आदि	२४।।	ग्रा.
पुष्य	१-४	,,	,,	३	मेष	,,	,,	,,	मध्य	२७	ग्रा.
आश्लेषा	१-४	,,	,,	३	मार्जार	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	१२	त्या.
मघा	१-४	क्षत्रिय	वन.	३	मूषक	रवि	,,	सिंह	अन्त्य	१२	त्या.
पूर्वा फा.	१-४	,,	,,	११।*	,,	,,	मनुष्य	,,	मध्य	२४।।	ग्रा.
उ.फा.	१	,,	,,	११।	गौ	,,	,,	,,	आदि	२४।।	ग्रा.
उ.फा.	२-४	वैश्य	मानव	११।	,,	बुध	,,	कन्या	आदि	२६।।	ग्रा.
हस्त	१-४	,,	,,	११।*	महिषी	,,	देव	,,	आदि	२७।।	ग्रा.
चित्रा	१-२	,,	,,	११।	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	मध्य	२०	ग्रा.
चित्रा	३-४	शुद्र	,,	११।	,,	शुक्र	,,	तुला	मध्य	१३	त्या.
स्वाति	१-४	,,	,,	११।*	महिषी	,,	देव	,,	अन्त्य	१२।।	त्या.
विशाखा	१-३	,,	,,	११।	व्याघ्र	,,	राक्षस	,,	अन्त्य	५।।	त्या.
विशाखा	४	विप्र	कीट	११।	,,	मंगल	,,	वृश्चि.	अन्त्य	१०।।	त्या.
अनुराधा	१-४	,,	,,	३	मृग	,,	देव	,,	मध्य	२६।।	ग्रा.
ज्येष्ठा	१-४	,,	,,	३	,,	,,	राक्षस	,,	आदि	२०।।	ग्रा.
मूल	१-४	क्षत्रिय	मानव	३	श्वान	गुरु	,,	धनु	आदि	२६।।	ग्रा.
पूर्वाषाढ़ा	१-४	,,	चतु.	११।*	वानर	,,	मनुष्य	,,	मध्य	३२।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	१	,,	,,	११।	नकुल	,,	,,	,,	अन्त्य	२३।।	ग्रा.
उ.षाढ़ा	२-४	वैश्य	,,	११।	,,	शनि	,,	मकर	अन्त्य	२१।।	त्या.
श्रवण	१-४	,,	जल.	११।*	वानर	,,	देव	,,	अन्त्य	२३।।	त्या.
धनिष्ठा	१-२	,,	,,	११।	सिंह	,,	राक्षस	,,	मध्य	२२।।	ग्रा.
धनिष्ठा	३-४	शुद्र	मानवं	११।	,,	,,	,,	कुंभ	मध्य	१४	त्या.
शतभिषा	१-४	,,	,,	११।*	अश्व	,,	,,	,,	आदि	१६	त्या.
पूर्वाभाद्र.	१-३	,,	,,	११।	सिंह	,,	मनुष्य	,,	आदि	२०	त्या.
पूर्वाभाद्र.	४	विप्र	जल.	११।	,,	गुरु	,,	मीन	आदि	३०।।	ग्रा.
उ.भाद्र.	१-४	,,	,,	३	गौ	,,	,,	,,	मध्य	३४	ग्रा.
रेवती	१-४	,,	,,	३	गज	,,	देव	,,	अन्त्य	२८	ग्रा.

*वर की तारा अशुभ है। (३,५,७)

न० कन्या	चरण	वर-नक्षत्र *रेवती* से सभी नक्षत्रों का विश्लेषण ।
अश्वनी	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। शुभ द्विर्द्वादश और राशिश मैत्री है।
भरणी	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। शुभ द्विर्द्वादश और राशिश मैत्री है।
कृत्तिका	१	गणना नहीं बनती है। गण, द्विर्द्वादश और नाड़ी दोष है।
कृत्तिका	२-४	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
रोहिणी	१-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
मृगशिर	१-२	गणना उत्तम बनती है।
मृगशिर	३-४	गणना उत्तम बनती है।
आर्द्रा	१-४	गणना उत्तम बनती है।
पुनर्वसु	१-३	गणना उत्तम बनती है।
पुनर्वसु	४	गणना मध्यम बनती है। वश्यैक्य से नवपंचम दोष नहीं होता है।
पुष्य	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। नवपंचम दोष वश्यैक्य, शुभतारा से नहीं होता है।
आश्लेषा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
मघा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण, नवपंचम और नाड़ी दोष है।
पूर्वाफाल्गु.	१-४	गणना मध्यम बनती है। राशीश मैत्री से षडष्टक दोष नहीं होता है।
उ.फाल्गु.	१	गणना मध्यम बनती है। षडष्टक दोष राशीश मैत्री से नहीं होता है।
उ.फाल्गु.	२-४	गणना उत्तम बनती है।
हस्त	१-४	गणना उत्तम बनती है।
चित्रा	१-२	गणना श्रेष्ठ बनती है। सद्भकूट से गणदोष नहीं होता है।
चित्रा	३-४	गणना नहीं बनती है। गण और षडष्टक दोष है।
स्वाति	१-४	गणना नहीं बनती है। गण और नाड़ी दोष है।
विशाखा	१-३	गणना नहीं बनती है। गण, षडष्टक और नाड़ी दोष है।
विशाखा	४	गणना नहीं बनती है। गण नवपंचम और नाड़ी दोष है।
अनुराधा	१-४	गणना श्रेष्ठ बनती है। राशीश मैत्री और शुभनवपंचम है।
ज्येष्ठा	१-४	गणना साधारण बनती है। गणदोष राशशी मैत्री से नहीं होता शुभनवपंचम है।
मूल	१-४	गणना उत्तम बनती है। गणदोष एकाधिपत्य से नहीं होता है।
पूर्वाषाढ़ा	१-४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य है।
उ.षाढ़ा	१	गणना श्रेष्ठ बनती है। एकाधिपत्य से नाड़ी दोष नहीं होता है।
उ.षाढ़ा	२-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
श्रवण	१-४	गणना नहीं बनती है। नाड़ी दोष है।
धनिष्ठा	१-२	गणना श्रेष्ठ बनती है। योनि व गणदोष वश्यैक्य से नहीं होता।
धनिष्ठा	३-४	गणना नहीं बनती है। योनि, गण और द्विर्द्वादश दोष है।
शतभिषा	१-४	गणना नहीं बनती है। गण और द्विर्द्वादश दोष है।
पूर्वाभाद्र	१-३	गणना नहीं बनती है। योनि और द्विर्द्वादश दोष है।
पूर्वाभाद्र	४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य से योनि दोष नहीं होता है।
उ.भाद्र	१-४	गणना उत्तम बनती है। एकाधिपत्य है।
रेवती	१-४	गणना उत्तम बनती है। रेवती-रेवती में नाड़ी दोष नहीं होता है।

नोट- २० से अधिक गुण प्राप्त हों, गणना न बनने पर नवांश कोष्टक अष्टभकूट परिहार में देखें।

वर-कन्या मेलापक व्यवस्था विषयानुक्रमणिका

॥ गं गणपतयै नमः ॥

वर-कन्या नक्षत्र मेलापक व्यवस्था

मंगला चरण

विघ्नौघ - शान्त्यर्थ - मचिन्त्यरूपं,
तेजश्चयं भास्वर - भानुमाद्यम्।

खगेश्वरं पद्मनिविष्ट - रूपं,
नमामि तं भास्कर - पादपद्मजम्॥१॥

विषय प्रवेश–

सोलह संस्कारों में जन्मनाम (नक्षत्र राशिनाम) की प्रधानता है। विवाह (नक्षत्र) मेलापक में वर और कन्या के जन्म नक्षत्रों का ही प्रयोग करना चाहिये। ऐसा वसिष्ठ का मत है–

कुर्यात् षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते।
सर्वाण्यन्यानि कार्याणि नाम राशौ बलान्विते॥२॥

यदि जन्म नक्षत्र ज्ञात न हो तो वर एवं कन्या के पुकारने के नामों से गणना देखनी चाहिये। ऐसा कथन है–

जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम्॥३॥
अज्ञात जन्मनां नृणां नामभे परिकल्पयेत्।
तेनैव चिन्तयेत्सर्वं राशिकूटादि जन्मवत्॥४॥वसिष्ठः

पुनर्विवाह में पुकारने के नाम से ही गणना देखनी चाहिये। ऐसा मुहूर्तगणपति में लिखा है–

पुनर्भूमेलने ज्ञेया नामराशेः प्रधानता।
अतोऽन्यत्र विवाहादौ प्रधान्यं जन्मभस्य हि॥५॥

जिस कन्या या वर के राशि नाम ज्ञात न हों और पुकार नाम कई हों तो पीछे जो नाम रखा गया है उससे मेलापक करना चाहिये–

बहूनि यस्य नामानि वरस्य स्युः कथञ्चन।
तस्य पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः॥६॥

विन्ध्य के उत्तर भाग में अष्टकूट की प्रधानता है। जो क्रमशः-१ वर्ण, २ वश्य, ३ तारा, ४-योनि, ५-ग्रहमैत्री, ६-गणमैत्री, ७-भकूट (राशिकूट), ८-नाड़ी, इनके क्रमांकानुसार गुण भी होते है जो योग में ३६ हैं।

वर्णश्च वश्यश्च मिथश्च तारा योनिश्च मैत्री खगयोर्गणश्च।
भमेलके नाडिक शुद्धिरेते यथोत्तरं स्युर्बलिनोऽष्टभेदाः॥७॥पटलसार

कहीं-कहीं नव, दश एवं अष्टादश (१८) भेद भी देखे जाते है।

वर्णश्च वश्यश्च नृदूरतारा योनिर्गणः खेटसुहृत्वमेव।
राशिश्च नाडी नव भेदकं स्यादसद्-भकूटे च विलोकनीयम्॥८॥

वर्ण, वश्य, तारा, नृदूर, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट और नाड़ी यह नव विधि मेलापक भी देखा जाता है। इसमें पैतालिस गुण होते हैं।

वर्णो वश्यं नृदूरं च बल्लभत्वं च तारकाः।
योनिर्मित्रं गणो राशिर्नाडिकेति क्रमाद्दश।।९।।

इसमें पूर्व श्लोकानुसार वर्णित नवकूट के अतिरिक्त वल्लभ कूट अधिक है।

विप्राणां दश कूटं स्यात् क्षत्रियाणां तथाष्टकम्।
वैश्यानामपि षड्भेदं शूद्राणां च चतुष्टयम्।।१०।।

ब्राह्मणों के लिए दश कूट का विधान है। क्षत्रियों के लिए अष्टकूट का विधान है। वैश्यों के लिए षट्कूटों का विधान है। शूद्रों के लिए चार कूटों का विधान है।

नाडी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये।
गणदोषस्तु वैश्येषु योनि-दोषस्तु पादजे।।११।।

ब्राह्मणों को नाडी दोष, क्षत्रियों को वर्ण दोष, वैश्यों को गग दोष तथा शूद्रों को योनि दोष विशेषरूप से देखना चाहिये। मतभेदानुसार कहीं-कहीं ब्राह्मणों के लिए नाड़ी और गहमैत्री, क्षत्रियों के लिए वर्ण और गण, वैश्यों के लिए तारा और भकूट तथा शूद्रों के लिए नृदूर और वर्ण का विचार करना चाहिये।

गणना की उत्तमोत्तमादि संज्ञा ज्ञान–

गुणैः षोडशभिर्निन्द्या मध्यमा विंशकैस्तथा।
श्रेष्ठं त्रिंशद्गुणं यावत् परतस्तूत्तमोत्तमा।।१२।।

राशिकूट (भकूट) शुभ होने पर गुणों की गणना १६ निन्द्य है। २० गुण होने पर मध्यम, ३० गुण तक श्रेष्ठ (उत्तम), तदुपरान्त उत्तमोत्तम गणना कही जायेगी।

सद्भकूटे इतिज्ञेया दुष्टकूटेऽथ कथ्यते।
निन्द्यं गुणैर्विंशतिभिर्मध्यमा पञ्चभिस्तथा।।१३।।
तत्परैः पञ्चभिः श्रेष्ठं ततः श्रेष्ठतरं गुणैः।

राशिकूट (भकूट) अशुभ होने पर गुणों की गणना २० निन्द्य है। २५ गुण होने पर मध्यम इसके आगे ३० तक उत्तम है। तदुपरान्त उत्तमोत्तम गणना की संज्ञा होगी।

वर्ण विचार–

एकवर्णौ भवेच्छ्रेष्ठौ मध्यमौ विप्र-क्षत्रियौ।
अधमौ विप्रवैश्यौ च विप्रशूद्रौ विवर्जयेत्।।१४।।
नोत्तमामुद्वहेद् कन्यां ब्राह्मणीं च विशेषतः।
म्रियेत हीन वर्णोहि ब्रह्मणा रक्षितो यदि।।१५।।

वर एवं कन्या दोनों एक वर्ण हों तो श्रेष्ठ, ब्राह्मण वर्ण की कन्या और क्षत्रिय वर्ण का लड़का हो तो मध्यम। ब्राह्मण वर्ण की कन्या और वैश्य वर्ण का लड़का हो तो अधम। ब्राह्मण वर्ण लड़की और शूद्र वर्ण लड़के का विवाह होना निषिद्ध है। *विशेषः*-(कन्या का विवाह उत्तम वर्ण वाले वर के साथ करना चाहिये, अन्यथा वर के जीवन की हानि होती है)।

वश्य का विचार–

स्वभाव मैत्री सरिवता स्वपत्योर्वशित्व-मन्योऽन्य-भयोनिशुद्धिः।
परः परः पूर्वगमेगवेष्यो हरते त्रिवर्गी युगपद् युतिश्चेत्।।१६।।

स्वभाव मैत्री (समसप्तवादी भकूट वशुद्धि), राशीश मैत्री, राशि मैत्री, नक्षत्र-योनि शुद्धि, इनमें से एक भी शुभ हो तो वर्ण-वश्य दोष नहीं होगा। यदि चारों (वर्ण, वश्य, योनि और राशि मैत्री) शुद्ध हो तो त्रिवर्ग की प्राप्ति होगी।

सख्यं वैरं च भक्ष्यं च वश्यमाहुस्त्रिविधा बुधाः।
वैरभक्ष्ये गुणाभावो द्वयोः सख्ये गुणद्वयम्।।१७।।
वश्यवैरे गुणस्त्वेको वश्यभक्ष्ये गुणार्धकम्।

सख्य (मैत्री) वैर और भक्ष्य से वश्य के तीन भेद है। यदि वर-कन्या की राशि में परस्पर वैर-भक्ष्य हो तो शून्य गुण, दोनों में मैत्री हो तो दो गुण तथा वैर हो तो एक गुण यदि वश्य भक्ष्य हो तो आधा (।।) गुण होता है।

तारा विचार–

जन्माख्य-सम्पद्-विपदः क्षेम-प्रत्यरि-साधकाः।
वध-मैत्रा-तिमैत्राख्याः तारा नाम सदृक्फलाः।।१८।।

जन्म, सम्पत्, विपत्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मित्र और अधिमित्र ये नव तारायें होती है। (इनका फल नाम तुल्य होता है।)

कन्यर्क्षाद् वरभं यावत् कन्याभं वरभादपि।
गणयेन्नवहृच्छेषे त्रीष्वद्रिभमसत् स्मृतम्।।१९।।

कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक और वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर पृथक-पृथक ९ का भाग देने से क्रमशः ३, ५, ७, बचे तो अशुभ तारा हुई जिसका गुण शून्य है इसके अतिरिक्त १, २, ४, ६, ८, ९, शेष बचे तो शुभ तारा होती है। इनको १।। गुण प्राप्त होता है।

योनि विचार–

एकयोनिषु सम्पत्यै दम्पत्योः संगमः सदा।
भिन्नयोनिषु मध्यः स्यादरिभावो न चेत्तयोः।।२०।।

वर-कन्या का एक योनि में विवाह होने से सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। अलग-अलग योनि हो तो मध्यम सुख प्राप्त होता है। यदि वर कन्या की वैर योनि हो तो आपस में शत्रुता होती है।

महावैरे च वैरे च समे चैव यथाक्रमम्।
मैत्रे चैवातिमैत्रे च खैकद्वित्रि चतुर्गुणाः।।१।।

वर कन्या की योनियों में यदि परस्पर महावैर हो तो शून्य (०), यदि वैर हो (१), सम हो तो (२), मैत्री हो तो (३), अतिमैत्री हो तो (४) गुण होते है।

ग्रह मैत्री विचार–

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	ग्रह
सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मिथुन कन्या	धनु मीन	वृषभ तुला	मकर कुम्भ	राशि
चं.मं.वृ.	सू.बु.	सू.चं.वृ.	सू.शु.	सू.चं.मं.	बु.श.	शु.बु.	मित्र
बु.	मं.वृ.शु.श.	शु.श.	मं.वृ.श.	श.	वृ.शं	वृ.	सम
शु.श.	०	बु.	चं.	शु.बु.	सू.चं.	सू.चं.मं.	शत्रु

जन्मलग्नमिदमङ्गमङ्गिनां मेनिरे मन इतीन्दुमन्दिरम्।
सौहृदं हि मनसोर्न देहयोर्मेलकस्तदयमिन्दुगेहयो।।२२।।
शरीरं लग्नवशात् सुख-दुःखं मानसं शशी वशात्।।२३।।

अन्योन्यमित्रं शस्तं स्यात् सममित्रं तु मध्यमम्।
उदासीनं कनिष्ठं स्यान्मृतिदं शात्रवं स्मृतम्।।२४।।

शत्रुमित्रं च विज्ञेयं दम्पत्योः कलहप्रदम्।
अन्योन्यं समशत्रुत्वं दम्पत्योर्निधन-प्रदम्।।२५।।

ग्रहमैत्रं सप्तविधं गुणाः पञ्च प्रकीर्तिताः।
तत्रैकाधिपतित्वे तु मित्रत्वे गुणपञ्चकम्।।२६।।

चत्वारः सममित्रत्वे द्वयोः साम्ये त्रयो गुणाः।
मित्रवैरे गुणश्चैकः समवैरे गुणार्धकम्।।२७।।

परस्परं खेटवैरे गुणं शून्यं विनिर्दिशेत्।
असद्भे सममित्रादौ व्येका ग्राह्या यथोदिताः।।२८।।

वर एवं कन्या की जन्म राशि से ग्रहमैत्री का विचार होता है न कि जन्मलग्न से। जन्मलग्न शरीर धारियों की देह है। चन्द्र लग्न मन है, मित्रता मन से होती है, न कि देह से, अतएव चन्द्रलग्न अर्थात् जन्मराशि के साथ मेलापक किया जाता है। शरीर के सुख-दुःख का विचार लग्न से किया जाता है, मानसिक सुख-दुःख का विचार चन्द्रमा से किया जाता है। यदि राशीश परस्पर मित्र हों तो शुभ है। एक सम और अन्य मित्र हो तो मध्यम है। दोनो ओर सम हों तो अधम है। दोनों ओर शत्रु हो तो मृत्युदायक है। शत्रु-मित्र हो तो स्त्री पुरुष के बीच में कलह हो, सम-शत्रु होने पर स्त्री पुरुष की मृत्यु हो। एकाधिपत्य अत्यन्त शुभफल को देता है। ग्रह मैत्री सात प्रकार की होती है, गुण पांच होते है। सम और मित्र में (४) चार गुण मिलते है। दोनों के सम होने पर (३) तीन गुण होते हैं। मित्र एवं वैर में (१) एक गुण मिलता है। सम-वैर में (।।) आधा गुण मिलता है। परस्पर ग्रहों के वैर होने पर (०) शून्य गुण मिलता है। आपस में मित्र होने पर भी दुष्ट भकूट होने पर प्राप्त गुण में (१) एक गुण कम हो जायेगा।।१-७।।

गणमैत्री विचार–

स्वगणे परमा-प्रीतिर्मध्यमा नरदेवयोः।
नर-राक्षसयोर्मृत्युः कलहो देव-रक्षसोः।।२९।।

स्वगणे षड्गुणाः प्रोक्ताः पञ्च देव-मनुष्ययोः।
देव-राक्षसयोश्चैकः शून्यं मनुज-रक्षसोः।।३०।।

अपने गण (दोनों गण एक हों) में उत्तम प्रीति होती है। देव-मनुष्य गण में मध्यम प्रीति होती है। नर-राक्षस गण में मृत्यु होती है और देव-राक्षस गण में कलह होती है।

दोनों के एक ही गण होने पर (६) छः गुण होते है, देव-नर के होने पर (५) पांच गुण होते है, देव-राक्षस के होने पर (१) एक गुण होता है, नर-राक्षस होने पर शून्य गुण होता है।

भकूट विचार–

विषमात् कन्यकाराशेः षष्ठं षष्ठाष्टकं न सत्।
समात् षष्ठं शुभं ज्ञेयं विपरितं न शोभनम्।।३१।।

मीनालिभ्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संयुते।
मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवपञ्चमे।।३२।।

द्विर्द्वादशं शुभं प्रोक्तं मीनादौ युग्मराशिषु।
मेषादौ युग्मराशौ तु निर्धनत्वं न संशयः।।३३।।

पुंसो गृहात् सुतगृहे सुतहा च कन्या,
धर्मे स्थिता धनवती पतिवल्लभा च।
द्विर्द्वादशे धनगृहे धनहा च कन्या,
रिष्फे स्थिता धनवती पतिवल्लभा च।।३४।।

मृगङ्कुलीरेण घटेन सिंहो वैर प्रदः स्यात्समसप्तकोऽयम्।
तुला वृषेणाथ वृषेण सिंहो मेषेण कीटो मिथुनेन मीनः।।३५।।
चापेन कन्या घटभेन चालिदौर्भाग्य दैन्ये दश-तुर्यकेऽस्मिन्।।३६।।

श्लोकों का अर्थ निम्न *भकूट ग्राह्य-त्याज्य कोष्ठक में देखें–*

खडाष्टक		दशम-चतुर्थ		नवम-पंचम		द्विर्द्वादश		सम-विषम-सप्तक	
ग्राह्य	त्याज्य	ग्राह्य	त्याज्य	ग्राह्य	त्याज्य	ग्राह्य	त्याज्य	ग्राह्य	त्याज्य
८-१	१-६	१-४	२-५	१-५	८-४	१-१२	१-२	२-८	१-७
५-१२	५-१०	११-२	१२-३	३-७	११-३	२-३	३-४	६-१२	१०-४
४-९	९-२	३-६	६-९	७-११	१२-४	४-५	७-८		११-५
१०-३	३-८	५-८	८-११	९-१		६-७	९-१०		३-९
२-७	७-१२	७-१०	१०-१	२-६		८-९	११-१२		
६-११	११-४	९-१२	४-७	५-९		१०-११	५-६		
				१०-६					
				८-१२					
				१०-२					

सौभाग्य-पुत्र-धन-लाभ-कृदैक-राशौ प्रीत्यर्थ-भोग-सुखदः समसप्तकेषु।
त्र्याये चतुर्थ-दशमेऽपि च राशि कूटे प्रीत्यर्थ-सौख्य-कुल-वृद्धि-करो विवाहः।।३७।।

मृत्युः षट्काष्टके ज्ञेयोऽपत्य हानिर्नवात्मजे।
द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत्।।३८।।

वर कन्या की एक ही राशि हो तो सौभाग्य, पुत्र, धन आदि का लाभ होता है। समसप्तक (सम राशियों में सप्तक हो) में प्रीति, अर्थ, भोग एवं सुख की प्राप्ति होती है। तृतीय एकादश तथा चतुर्थ-दशम में प्रीति, अर्थ, सौख्य एवं कुल की वृद्धि होती है।

वर-कन्या की राशि परस्पर छठी आठवीं हो तो मृत्यु होती है। नवम-पंचम में सन्तान की हानि, द्विर्द्वादश हो तो निर्धनता प्राप्त होती है। अन्य प्रकारों में शुभ होता है।

नाड़ी विचार–

आदि नाड़ी पतिं हन्ति मध्य नाडी च कन्यका।
अन्त्यनाडी द्वयोर्हन्त्री नाडी वेधं विर्वजयेत्।।३९।।

नाडी कूटस्तु संग्राह्यः कूटानान्तु शिरोमणिः।
ब्रह्मणा कन्याका कण्ठे सूत्रत्वेन विनिर्मितः।।४०।।
नाडी भेदेऽष्टौ गुणाः नाड्यैक्यं संर्वथा त्यजेत्।

आदि नाड़ी पति को मृत्यु देती है, मध्य नाड़ी कन्या को मृत्यु देती है, अन्त्य नाड़ी दोनों के लिए मृत्यु कारक होती है। अतएव नाड़ी वेध का सर्वथा त्याग करना चाहिये। नाड़ी वेध सभी कूटों में उत्कृष्ट है। बह्मा जी ने कन्या के कण्ठ में

सूत्र रूप बनाया है।वर-कन्या की नाड़ी पृथक-पृथक होने पर आठ गुण प्राप्त होते हैं।अन्यथा एक नाड़ी सर्वथा त्याज्य है।

श्री नारद संहिता के अनुसार वर्णादि सातों कूटों के गुण प्राप्त हों किन्तु नाड़ी एक हो तो विवाह नहीं करना चाहिये। यथा–

एक नाड़ी विवाहश्च गुणैः सर्वैः समन्वितः।
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योर्निधन-प्रदः।।४१।।

विवाह कुतूहल के अनुसार शुक्र, बृहस्पति एवं बुध में से कोई एक ग्रह ही यदि वर और कन्या दोनों के राशीश्वर हों तो नाड़ी दोष नहीं होता है। यथा-

शुक्रे जीवे तथा सौम्य एक राशीश्वरे यदि।
नाडी दोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः।।४२।।
रोहिण्या-मृगैन्द्राग्निक-पुष्य-श्रवण-पौष्णभम् ।
अहि-र्बुध्न्यर्क्ष-मतेषां नाड़ीदोषो न विद्यते।।४३।। भृगुः

रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, विशाखा, पुष्य, श्रवण, रेवती, उत्तराभाद्रपद इन नक्षत्रों को आपस में नाडी वैध नहीं होता है।

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये।
गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पादजे।।४४।।

ब्राह्मणों को नाडी दोष, क्षत्रियों को वर्ण दोष, वैश्यों को गण दोष और शूद्रो को योनि दोष विशेषतः वर्जित है।

नृदूर विचार– सुगमज्योतिष (संस्काराध्यायः ५)

कन्याया जन्मर्क्षाद् द्वादशायनवमरन्ध्रेषु। वरराशिस्तत् कन्यादूरं ज्ञेयं विपर्यये पुंसाम्।।४५।।
स्त्री राशेर्वरभं दूरं कन्यादूरं शुभावहम्। व्यस्तान्नृदूरमशुभम्

कन्या की जन्म-राशि से १२,११,९ तथा ८वीं वर की राशि हो तो कन्या दूर कहलाता है। इसके विपरीत नृदूर कहलाता है। (अर्थात जब वर की राशि से कन्या की राशि १२,११,९ तथा ८वीं हो) कन्या की राशि पूर्वोक्त स्थानों पर हो तो कन्या दूर होता है। जो कि शुभ होता है। इसके विपरीत नृ-दूर हो तो अशुभ होता है। ब्रह्मयामले-

भामिनी जन्मनक्षत्राद् द्वितीयं पतिजन्मभम्।
न शुभं भर्तृनाशाय कथितं ब्रह्मयामले।।४६।।

कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो शुभ नहीं होता है, क्यों कि यह पति के लिए घातक होता है।

दारहा योग–

चन्द्रः पापेन संयुक्तश्चन्द्रो वा पाप मध्यमः।
चन्द्रात् सप्तमगः पापो जातको दारहा भवेत्।।४७।।

चन्द्रमा पाप ग्रह से युक्त हो, या पापग्रहों के मध्य हों, अथवा चन्द्रमा से सप्तम स्थान में पापग्रह स्थित हों तो दारहा योग होता है।।१।

विषकन्या (विषाङ्गना) दोष-

भौजङ्गे कृत्तिकायां शतभिषजिस्थिते सूर्यमन्दारवारे।
भद्रासंज्ञो तिथौ या किल जननमियात् सा कुमारी विषाख्या।।४८।।
मन्दाश्लेषा द्वितीया यदि तदनुकुजे सप्तमी वारुणर्क्षे।
द्वादश्यां च द्विदैवं दिनमणिदिवसे यज्जनिः सा विषाख्या।।४९।।

'विषकन्या' योग भी वैधव्य कारक होता है। यह योग, तिथि, नक्षत्र, वार से होता है। विषकन्या योग निम्नलिखित प्रकारों से होता है–

क्र.	तिथि	वार	नक्षत्र	क्र.	तिथि	वार	नक्षत्र
१.	२	रवि	शतभिषा	७.	७	शनि	कृत्तिका
२.	२	शनि	आश्लेषा	८.	१२	शनि	कृत्तिका
३.	२	रवि	आश्लेषा	९.	१२	रवि	कृत्तिका
४.	७	मंगल	आश्लेषा	१०.	१२	रवि	शतभिषा
५.	७	मंगल	शतभिषा	११.	१२	मंगल	शतभिषा
६.	७	मंगल	विशाखा	१२.	१२	रवि	विशाखा

लग्नाद् विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च।
द्युनस्थिते हन्त्यनपत्य दोषं व दोषं च विषाङ्गनाख्यम्।।५०।। वशिष्टः

लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम भाव में शुभग्रह या सप्तमेश स्थित हो तो अनपत्य, वैधव्य और विषाङ्गना दोष का परिहार होता है।

अपवाद परिहार– (मंगली परिहार)

भौम तुल्यो यदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत्।
अथवा गुण-बाहुल्ये न दोषो मंगली भवेत्।।५१।।

यदि वर-कन्या दोनों की जन्म पत्रिका में मंगली हो, अथवा मंगली कारक स्थानों में पापग्रह स्थित हों तो, अथवा गुण बाहुल्य (२८ गुणों से अधिक) हो तो मंगली दोष नहीं होता है।

यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
नवमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते।।५२।।
शनिर्भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष-विनाशकृतं।।५३।।
लग्ने चेत्तदा राहुर्हिबुके चाष्टमेऽपि वा।
यामित्रे द्वादशे चैव भौमदोष-विनाशकः।।५४।।

यदि सप्तम भाव में, लग्न में या चतुर्थ भाव में अथवा नवम एवं द्वादश भाव में शनि हो तो मंगली दोष नहीं होता है (यदि वर या कन्या की पत्रिका मंगली हो तो द्वितीय पत्रिका में इस प्रकार का योग हो तो मंगली का दोष नहीं होता)। शनि, मंगल अथवा अन्य कोई पापग्रह मंगलीकारक स्थान में स्थित हो तो मंगली दोष नहीं होता। लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में राहु ग्रह स्थित हो तो मंगली दोष का परिहार होता है।।२-४।।

स्वगृहे स्वोच्चगे भौमे वर्गोत्तम-गतेऽपि वा।
बलाढ्योपचयस्थाने भौमस्तस्य न दोषकृत्।।५५।।

अजेलग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजः।
द्यूने मृगे कर्कीरन्ध्रे भौम-दोषो न विद्यते।।५६।।

मंगल स्वक्षेत्री हो, अपनी उच्चराशिस्थ हो, वर्गोत्तमस्थ हो अथवा बलवान होकर उपचय (३.६,१०,११) में स्थित हो तो मंगली दोष नहीं होता। लग्न में मेष का, द्वादश में धनु का, चतुर्थ में वृश्चिक का, सप्तम में मकर का, अष्टम में कर्क का यदि भौम हो तो मंगली दोष नहीं होता।

अस्तगे नीचभे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।
कुजाष्टमोद्भवो दोषो न कश्चिदपि विद्यते।।५७।।

सप्तमस्थो यदा भौमो गुरुणा च निरीक्षतः।
तदा तु सर्व-सौख्यं स्यान्मंगली दोष-नाशकृत्।।५८।।

कुजजीव-समायुक्तो युक्तो वा कुज-चन्द्रमाः।
चन्द्रः केन्द्रगतोयस्य तस्य दोषो न मंगली।।५९।।

न मंगली चन्द्रभृगू द्वितीये न मंगली पश्यति वागधीशः।
न मंगली चन्द्रगतश्च केन्द्रे न मंगली मंगल-राहुयोगे।।६०।।

अष्टम स्थान में मंगल हो किन्तु अस्त हो या नीच राशि का हो, शत्रुक्षेत्री हो तो मंगली दोष नहीं होगा। सप्तम भावस्थ मंगल यदि गुरू से पूर्ण दृष्ट हो तो मंगली दोष नहीं होता। मंगल बृहस्पति या मंगल चन्द्रमा साथ हों अथवा मंगल से चन्द्रमा केन्द्र में हो तो मंगली दोष नहीं होता। जन्म पत्रिका में यदि द्वितीय भाव में चन्द्र शुक्र कि युति हो, मंगल पर गुरु की पूर्ण दृष्टी हो, चन्द्रमा केन्द्र में स्थित हो अथवा मंगल राहु की युति हो तो मंगली दोष नहीं होता।।१-४।।

पाताले मदने लग्ने व्यये निधन-मन्दिरे।
विवाहे विधवा नारी गुरुयोगेक्षणं विना।।६१।।

४,७,१,१२,८ इन भावों में मंगल यदि गुरु के साथ स्थित हो तो यदि इन्हीं स्थानों में स्थित मंगल को बृहस्पृति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मंगली दोष नहीं होता है।

षष्ठे च भवने भौमः सप्तमे राहुसम्भवः।
अष्टे शनैश्चरं विद्यात् तस्य भार्या न जीवति।।६२।।

परुष की पत्रिका में छठे मंगल, सप्तमस्थ राहु और अष्टम में शनि स्थित हो उसकी भार्या जीवित नहीं रहती।

शुक्रः खलान्तर्गतः सखलः सिताद्वा।
पापाः सुखास्तमृतिगा रमणीहराः स्युः।।६३।।

लग्न-व्ययाम्बुनिधनाप्तकुजो मिथोघ्नः।
स्त्रीणां मदाष्टमखगो विधवात्वकारी।।६४।।

पुरुप की पत्रिका में यदि शुक्र दो पापग्रहों के मध्य में स्थित हो अथवा शुक्र पापग्रह सहित हो अथवा शुक्र से ४,७,८, स्थानों में पापग्रह हों तो स्त्री का नाश होता है। १,१२,४,८,७ स्थानों में मंगल दोनों का नाश करता है। स्त्रियों के ७,८ स्थानों में स्थित ग्रह वैधव्य करता है।

केन्द्रे कोणे शुभाः सर्वे त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा।।६५।।

वैधव्य-योगजनिता-वनिता-विवाहो। दारघ्नयोगज-कुमारवरेण कार्यः।।६६।।

यदि केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों और ३,६,११ स्थानों में पापग्रह हों तथा सप्तम में सप्तमेश हो तो मंगल का दोष नहीं होता। जो कन्या वैधव्य योग में उत्पन्न हुयी है। उसका विवाह दारहा योग में उत्पन्न वर के साथ करना चाहिये।

विशेष– १. जन्म लग्न व चन्द्रलग्न का सप्तमेश ६,८,१२ वां हो तो पापाक्रांत हो तो भी मंगल का दोप हटता है।
२. यदि सप्तमेश शुभग्रह हो और सप्तम भाव में ही स्थित हो तो मंगली दोष समाप्त होता है।
३. लग्न से चन्द्रमा और शुक्र दूसरे स्थान में हों तो मंगल का दोष दूर होता है।
४. लग्न से पंचम स्थान में पापग्रह नीच राशिस्थ हो और शत्रु दृष्ट हो तो मंगल का दोष नहीं हटता है।

नक्षत्र दोष एवं परिहार (अपवाद) –

श्वश्रूविनाशमहिजौ सुतरां विधत्तः।
कन्यासुतौ निर्ऋतिजौ श्वसुरं हतश्च।।
ज्येष्ठाभजाततनया स्वधवाग्रजं च।
शक्राग्निजा भवति देवरनाशकर्त्री।।६७।। मु.चि.वि.

मूल में में जन्मा हुआ लड़का लड़की श्वशुर की हानि करते है। आश्लेषा में जन्मे हुये सास की हानि करते है। लड़का ज्येष्ठा में जन्मा हुआ बड़े शाले की हानि करता है और लड़की ज्येष्ठ (मैसुर) की हानि करती है। विशाखा में जन्मे हुये देवर तथा छोटे शाले की हानि करते है। ऐसा मुहर्त चिन्तामणि में लिखा है–

द्वीशाद्यपादत्रयजा कन्या देवरसौख्यदा।
मूलान्त्यपादसार्पाद्यपादजातो तयोः शुभे।।६८।। मु.चि.वि.

विशाखा के प्रथम तीन चरणों में उत्पन्न हुये वर कन्या देवर व छोटे साले को सुख देने वाले होते है और मूल के अंतिम चरण में उत्पन्न होने वाले वर-कन्या श्वसुर को और श्लेषा के प्रथम चरण में उत्पन्न वर-कन्या सास को सुख देने वाले होते हैं।

मार्गफाल्गुनवैशाखज्येष्ठे मूलं रसातले।
माघाश्विननभस्येषु शुचौ मूलं सुरालये।।६९।।
पौषश्रावणचैत्रेषु कात्तिकि भूमि संस्थितम्।
भूमिष्ठंदोषबहुलं स्वल्पमन्यत्र संस्थितम्।।७०।। ज्योतिषार्णवे

अगहन, फाल्गुन, वैशाख और ज्येष्ठ में मूल का वास पाताल में होता है। आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन और माघ में मूल का वास स्वर्ग में होता है। श्रावण, कार्तिक, पौष और चैत्र में मूल का वास पृथ्वी पर होता है। स्वंग व पाताल में मूल के रहने पर साधारण दोष होता है। पृथ्वी पर जब मूल का वास होता है तो विशेष हानिकारक होता है।

वृषालिसिंहेषु घटे च मूलं दिविस्थितं युग्मतुलाङ्गनान्त्ये।
पातालगं मेषधनुः कुलीरनक्रेषु मृत्याविति संस्मरन्ति।।७१।।
स्वर्गे मूले भवेद्राज्यं पाताले च धनागमः।
मृत्युलोके यदा मूलं तदा शून्यं समादिशेत्।।७२।। ज्योतिषरत्ने

वृष, वृश्चिक, सिंह और कुम्भ संक्रान्ति में स्वर्ग में रहने पर राज्य प्राप्त होता है। मिथुन, तुला, कन्या, मीन की संक्रान्ति में मूल पाताल में रहने पर धनागमन होता है। मेष, धनु, कर्क, मकर संक्रान्ति में पृथ्वी में रहने पर जो भी पूर्वार्जित है वह सब नष्ट हो जाता है।

तिथ्यादीनां सन्धिदोषं तथा गण्डान्तसंज्ञकम्।
दौष्ट्यं हन्ति लाभगतश्चन्द्रः केन्द्रगा वा शुभग्रहाः।।७३।। च्यवनः

चंद्रमा लग्न से लाभ भाव में स्थित हो और सौम्य ग्रह केन्द्र में हों तो तिथि संध्या गण्डान्त दोष नहीं होता है।

कुमारी का बाल वैधव्य हटाने के लिए कुम्भ विवाह, सुवर्णमयी विष्णु मूर्ति तथा पिप्पल (पीपल वृक्ष) के साथ विवाह करके ही वर के साथ विवाह करना चाहिये। यथा–

बाल वैधव्य योगे तु कुम्भेषु प्रतिमादिभिः।
कृत्वा लग्नं ततः पश्चात्कन्योद्वाह्येति चापरे।।७४।।

कुम्भादि विवाह करने से पुनर्भू दोष (वैधव्य) नहीं होगा। विधानखण्ड में लिखा है–

स्वर्णाम्बु-पिप्लानां च प्रतिमा विष्णुरूपिणी।
तया सह विवाहे तु पुनर्भूत्वं न जायते।।७५।।

सोना, जलघट (जलपूरित कुम्भ) पीपल इनकी प्रतिमा के साथ विवाह करने पर (वैधव्य) पुनर्भूदोष नहीं होता। क्योंकि ये सब विष्णु रूप है।

अष्टकूट परिहार–

शुक्रं जीवे तथा सौम्य एकराशीश्वरे यदि।
नाडी दोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः।।७६।। विवाह कुतुहले

बुध, गुरु, शुक्र का एकाधिपत्य (वर-कन्या दोनों का राशीश एक हो) हो तो नाडी दोष नहीं होता है।

वर्णवैरं योनिवैरं गणवैरं नृदूरकम्।
दुष्टकूटभवं सर्वं ग्रहमैत्रेण नश्यति।।७७।।

न वर्ग वर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशं चैव षडष्टकं वा।
वरेऽपि दूरे नवपञ्चमं वा मैत्री यदा स्याच्छुभदो विवाहः।।७८।।

यदि वर कन्या के राशीश मित्र हों तो वर्ग, वर्ण, गण, योनि, भकूट (द्विर्द्वादश नव-पञ्च और षडाष्टक) तथा नृदूर दोष नहीं होता है।

राश्यैके चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशि युग्मं तथैव।
नाडी दोषो नो गणानां च दोषो, नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्।।७९।।
मैत्र्यां राशिस्वामिनो-रंशनाथा-द्वंद्वस्यापि स्याद्गणानां न दोषः।
खेटारित्वं नाशयेत् सद्भकूटं, खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम्।।८०।।मु.चि.वि

यदि वर-कन्या की राशि एक हो और नक्षत्र भिन्न हो अथवा नक्षत्र एक हो और राशि भिन्न हो तो नाडी दोष एवं गणदोष नहीं होता है। यदि एक नक्षत्र हो तो पाद भेद होने से शुभ होता है।।१।।

वर-कन्या के राशि के स्वामियों की अथवा नवांश के स्वामियों की मित्रता हो तो गण का दोष नहीं होता है। शुभ भकूट शत्रूता के दोष को नष्ट करता है। यदि ग्रह मैत्री हो तो दुष्ट भकूट के दोष को दूर करता है।।२।।

ग्रहमैत्रं शुभा तारा राशिवश्यं त्रिभिः शुभम्।
षडष्टकं बुधाः प्राहुर्द्वाभ्यां द्वयर्कं त्रिकोणकम्।।८१।। (इति गर्गः)

ग्रह मैत्री, शुभतारा, राशिवश्य तीनों शुभ हों तो षडष्टक दोष नहीं होता। इनमें से दो शुभ हो तो द्विर्द्वादश व नवपंचम का दोष नहीं होता है।

नक्षत्रमेकं यदि भिन्न राश्यो-रभिन्न राश्योर्यदि भिन्नमृक्षम्।
प्रीतिस्तदानीं निविडा नृनार्योश्चेत्कृत्तिका रोहिणीवन्ननाड़ी।।८२।। (इति केशवः)

स्त्री-पुरुष की राशि प्रथक-प्रथक हो और नक्षत्र एक हो अथवा राशि एक हो और नक्षत्र पृथक-पृथक हो तो दोनों में बहुत प्रेम होगा। इसमें गण-नाड़ी का दोष नहीं होगा। कृत्तिका, रोहिणी में एक नाड़ी व राक्षस-मनुष्य गण का दोष नहीं होता।

विशाखिकार्द्राश्रवण-प्रजेश-तिष्यान्त्य तत्पूर्व-मघा प्रशस्ता।
स्त्रीपुंस-तारैक्य-परिग्रहेऽपि शेषा विवर्ज्या इति संगिरन्ते।।८३।। (कालनिर्णयेः)

विशाखा, आर्द्रा, श्रवण, रोहिणी, पुष्य, रेवती, उत्तराभाद्रपद तथा मघा इन नक्षत्रों में एक नाडी का दोष नहीं होता है।

धराम्बुनोरग्नि समीरयोश्च वर्गे सुहृत्वं परतोऽरिभावः।
चापान्त्यभागस्य चतुष्पदत्वंज्ञेयं मृगान्त्यस्य जलेचरत्वम्।।८४।।

पृथ्वी तत्व (वृष-कन्या-मकर) जल तत्व (कर्क-वृश्चिक-मीन) राशियों तथा अग्नी तत्व (मेष-सिंह-धनु) और वायुतत्व (मिथुन-तुला-कुंभ) राशियों में परस्पर मित्रता होती है। पृथ्वी (वृष-कन्या-मकर) और वायु तत्व (मिथुन-तुला-कुंभ) एवं अग्नी (मेष-सिंह-धनु) और जलतत्व (कर्क-वृश्चिक-मीन) राशियों में परस्पर शत्रुता होती है। धनु का उत्तरार्ध (पृथ्वी तत्व) मकर का उत्तरार्ध जलतत्व समझना चाहिये।

विशेषः– *जिन-जिन राशियों में मित्रता और शत्रुता कही गयी है, उनसे भिन्न तत्वों की राशियों में उदासीनता समझना चाहिये। इनका पिता-पुत्र, वर-कन्या, स्वामी-नौकर आदि में विचार करना चाहिये। (डा० सीताराम झा)*

राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे चांशनाथयो।
गणादिदौष्टयेप्युद्वाहः पुत्र पौत्र विवर्धनः।।८५।।

यदि वर-कन्या का मेलापक गण एवं भकूट दोष से न बनता हो तो दोनों के नक्षत्र का नवांशेष मित्र हो या एक (एकाधिपत्य) ही हो तो गण एवं भकूट का दोष परिहार होता है।

नक्षत्र चरणानुसार नवांश कोष्टक

नक्षत्राणि	अश्वनी, रोहिणी, पुर्नवसु मघा, हस्त, विशाखा मूल, श्रवण, पूर्वा भाद्रपद				भरणी, मृगशिर, पुष्य पू०फाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, उ० भाद्रपद				कृत्तिका, आर्द्रा, ऽश्लेषा उत्तराफाल्गुनी, स्वाती, ज्येष्ठा उत्तराषाढ़ा, शतभिषा, रेवती			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
नवांश राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुंभ	मीन
नवाशेश	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरू	शनि	शनि	गुरू

नवांश कोष्टक देखने की विधि- वर-कन्या का जन्म जिस-जिस नक्षत्र के जिस चरण में जन्म हुआ है उस नक्षत्र के कोष्टक में जो ग्रह है वह उसका नवांशेश है यदि दोनों के नवांशेश एक हो या मित्र हो तो परिहार होता है।

गणना मिलाने से पूर्व जन्म पत्रिका का ग्रह स्थिति विवेचना करना चाहिये। पत्रिका के विवेचना से पूर्व पत्रिका की गणित शुद्धि की परख अच्छी प्रकार कर लेनी चाहिये। यदि ग्रह स्थिति अनुकूल हो तभी वर-कन्या के नक्षत्रों पर विचार करना समीचीन होगा। यदि ग्रह स्थिति या नक्षत्र मेलापक किसी एक में भी स्थिति में अनुकूलता न हो तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिये। नक्षत्र ज्ञान के लिए चक्र–

शतपदचक्रानुसार नक्षत्र चरण––

	चरण					चरण					चरण					चरण			
नक्षत्र	१	२	३	४	नक्षत्र	१	२	३	४	नक्षत्र	१	२	३	४	नक्षत्र	१	२	३	४
अश्वनी	चू	चे	चो	ला	पुष्य	हू	हे	हो	हा	स्वाती	रू	रे	रो	ता	अभिजित	जू	जे	जो	खा
भरणी	ली	लू	ले	लो	ऽश्लेषा	डी	डू	डे	डो	विशाखा	ती	तू	ते	तो	श्रवण	खी	खू	खे	खो
कृत्तिका	अ	ई	ऊ	ए	मघा	मा	मी	मू	मे	अनुराधा	ना	नी	नू	ने	धनिष्ठा	गा	गी	गू	गे
रोहिणी	ओ	वा	वी	वू	पूर्वा.फा.	मो	टा	टी	टू	ज्येष्ठा	नो	या	यी	यू	शतभिषा	गो	सा	सी	सू
मृगशिर	वे	वो	का	की	उ.फाल्गु.	टे	टो	पा	पी	मूल	ये	या	भा	भी	पूर्वा.भाद्र.	से	सो	दा	दी
आर्द्रा	कू	घ	ङ	च	हस्त	पू	ष	ण	ठ	पूर्वाषाढ़ा	भू	धा	फा	ढा	उ.भाद्र.	दू	थ	झ	ञ
पुनर्वसु	के	को	हा	ही	चित्रा	पे	पो	रा	री	उ.षाढ़ा	भे	भो	जा	जी	रेवती	दे	दो	चा	ची

वर-कन्या नक्षत्र मेलापक में प्रथक् अभिजित का स्थान नहीं है। उत्तराषाढ़ का उत्तरांश और श्रवण का पूर्वांश में समाहित है। अन्य संस्कारों में विचार होता है।

यदि नाम्नि भवेद्वर्णः संयुक्ताक्षरलक्षणः।
ग्राह्यस्तदादिमो वर्ण इत्युक्तं ब्रह्मयामले।।८६।।

यदि नाम के आदि में संयुक्ताक्षर हो तो उनमे प्रथम वर्ण का ग्रहण करना चाहिये।। उदाहरण– जैसे–'श्रीपति' नाम के आदि में संयुक्त वर्ण 'श्र' का प्रथम वर्ण 'श' कार है इसलिए श्रीपति का नक्षत्र शतभिषा द्वितीय चरण हुआ।

अनुक्तत्वादृकारस्य रेफो ग्राह्यो विचक्षणैः।
ऋद्धिनाथस्य नक्षत्रं यथा चित्राख्यमेव हि।।८७।।

शतपद चक्र में ऋकार नहीं कहा गया है, इसलिए ऋकार के स्थान में रेफ (र) ग्रहण करना चाहिये।। जैसे 'ऋद्धिनाथ' नाम के आदि अक्षर 'ऋ' कार के स्थान में 'र' ग्रहण करके चित्रा नक्षत्र का तृतीय चरण सिद्ध हुआ ।। तथा च–

अ आ, इ ई, उ ऊ, ए ऐ, ओ औ, द्वौ द्वौ मिथः समौ।
ब-वौ, श-सौ तथैवात्र ज्ञेयौ दैवविदां सदा।।८८।।

शतपदचक्र में अ-आ, इ-ई, उ-ऊ, ए-ऐ, ओ-औ, ब-व और श-स ये दो दो अक्षर तुल्य समझना चाहिये। जैसे 'अमरनाथ' और आदित्यप्रसाद दोनों का एक ही (कृत्तिका) नक्षत्र का प्रथम चरण हुआ, ऐसे ही 'शक्तिनाथ' और सन्तलाल शतभिषा नक्षत्र का द्वितीय चरण हुआ। ऐसे ही और भी समझना है।

नक्षत्रानुसार राशि विवेक–

अश्वनी भरणी पद निःशेष, कृत्तिका एक चरण है मेष।
कृत्तिका तीन रोहिणी चार, दो पदमृगशिर वृषभ उचार।।
मृगशिर दोपद आर्द्राचार, तीन पुनर्वसु मिथुन विचार।
एक पुनर्वसु पुष्यश्लेष, जानो कर्कट राशि विशेष।।
मघा पूर्व उत्तर पद एक, सिंह राशि का करो विवेक।
उत्तर तीन सकल पद हस्त, दो चित्रा कन्या परशस्त।।
दो चित्रा स्वाती समतूल, तीन विशाखा पद है तूल।
एक विशाखा पद अनुराध, ज्येष्ठा है वृश्चिक निर्बाध।।
मूल पूर्व उत्तरपद एक, धनुष राशि पर करो विवेक।
उत्तर तीन श्रवण पद वेद दोय धनिष्ठा मकर विभेद।।
दोय धनिष्ठा शतभिषचार, पूर्वा तीन कुम्भ निर्धार।
पूर्वा एक उत्तराचार, सकल रेवती मीन विचार।।

(इनका अर्थ कवर पर दिये चक्र से स्पष्ट है)

पत्रिकाओं से विचारणीय विषय (वर-कन्या पत्रिका द्वारा)––

प्रायः आजकल देखा जाता है कि वर-कन्या के अविभावक पंडितों से विवाह निश्चित करने के लिए पूछते हैं। वर-कन्या की पत्रिकाएं होने पर भी केवल गुण के विषय में ही मात्र जानकारी करते हैं। मेरे विचार से दोनों की पत्रिकाओं में स्थित ग्रहों के अनुसार सुख-सौभाग्य, लाभ-हानि, सन्तति, परिजनों के प्रति भी विचार करना चाहिये ऐसा शास्त्रकारों का सिद्धांत है, यथा–

श्वश्रूः सितोऽर्कः श्वशुरस्तनुस्तनूर्जामित्रपः स्याद्दयितो मनः शशी।
एतद्बलं सम्प्रतिभाव्य तान्त्रिकस्तेषां फलं सम्प्रवदेद्विवाहतः।।८९।। मु.चि.वि.

सूर्यात्पतिः स्त्री चविधोरत्तथाराद्वित्तं सुतो ज्ञाच्च सुखं गुरोश्च।
धर्मः सितादर्कसुताच्च वेश्म ब्रूयात्समुद्वाहविधौ स्वयुक्त्या।।९०।।

१. शुक्र से सास, सूर्य से ससुर, लग्न से शरीर, सप्तमेश से पति, चन्द्रमा से चित्त का विचार करना चाहिये। विवाह के समय इनका बल अच्छी प्रकार से विचार कर ज्योतिषी फल को कहे।

२. विवाह के सगय सूर्य से पति, चन्द्रमा से स्त्री, मंगल से घन, बुध से पुत्र, बृहस्पति से सुख, धर्म, शनि से घर का विचार करना चाहिये।

वैधव्यं निधने चिन्त्यं शरीरं जन्मलग्नभाक्।
सप्तमे पतिसौभाग्यं पञ्चमे प्रसवस्तथा।।९१।।
स्त्रीपुंसोस्तु फलं तुल्यं जातके किन्तु सप्तमे।
सौभाग्यं चन्द्रलग्नाच्च वपुराकृतिरुच्यते।।९२।।
लग्नं देहो भृगुः श्वश्रूः श्वशुरोऽर्को मनः शशी।
भर्ता कान्ता कलत्रेशस्तद्‌बलात्तत्सुखं वदेत्।।९३।।

३. अष्टम स्थान से वैधव्य का, जन्म लग्न से शरीर का, सप्तम स्थान से पति-सौभाग्य, पञ्चम स्थान से सन्तान का विचार करना चाहिये।

४. जातक ग्रन्थों में स्त्री पुरुष दोनों का फल समान है, परन्तु स्त्री की जन्म-पत्री में सप्तम स्थान से सौभाग्य का, चन्द्रमा से शरीर का, लग्न से आकृति का विचार करना चाहिये।

५. लग्न से शरीर का, शुक्र से सास का, सूर्य से श्वसुर का, चन्द्रमा से मन का, सप्तमेश से पति अथवा स्त्री का विचार करना चाहिये। पूर्वोक्त ग्रहों के विचार से पूर्वोक्त स्थानों का सुखःदुख जानना चाहिये।

पतिं सूर्याद्विधोः कान्तां धनं भौमात्सुतं बुधात्।
सुखं जीवाद्भृगोर्धर्म वेश्मार्केर्युक्तितो वदेत्।।९४।।
सुखं स्वोच्चादिके ज्ञेयं दुःखं नीचास्तगारिभिः।
(स्वामिसद्‌दृष्टियोगात्तेषां सुखं तंद्‌बलैर्व्यत्ययेऽन्यत्)।।९५।।
एभिरुच्चोपगैरेषां शुभं नीचारिगैरसत्।
स्वगृहोच्च त्रिकोणस्थैः शुभमेषां यथोदितम्।।९६।।

६. सूर्य से पति का, चन्द्रमा से स्त्री का, मंगल से धन का, बुध से पुत्र का, बृहस्पति से सुख का, शुक्र से धर्म का, शनि से घर का विचार युक्ति पूर्वक करें।

७. यदि ग्रह अपने उच्च आदि स्थान के हों तो सुख जानना चाहिये। यदि नीच, अस्त, शत्रुक्षेत्री हों तो दुःख जानना चाहिये। यदि पूर्वोक्त स्थानों पर भावेश अथवा शुभ-ग्रह बैठा हो अथवा उसकी दृष्टि हो तो शुभ-फल होता है अन्यथा अशुभ फल होता है।

८. यदि पूर्वोक्त ग्रह उच्च, स्वक्षेत्री अथवा त्रिकोण में हों तो शुभ होता है यदि नीच आदि के हों तो अशुभ होता है।

बृहस्पति-चन्द्र-सूर्य-भौम-बलविचारः—

जीवो जीवप्रदाता च जन्मदाता च चन्द्रमाः।
तेजोदाता भवेत्सूर्यो भूमिदाता महीसुतः।।९७।।
जीवहीना मृता कन्या सूर्यहीनो मृतो वरः।
चन्द्रेहीने गता लक्ष्मी स्थानहानिः कुजं विना।।९८।।

१. बृहस्पति जीवन प्रदान करने वाला है, चन्द्रमा जन्मप्रदान करने वाला है, सूर्य तेज का प्रदान करने वाला है, मंगल भूमि का प्रदान करने वाला है।

२. जिस कन्या का बृहस्पति हीन बली हो, वह नहीं जीती है। जिस वर का सूर्य हीन हो, नहीं जीता है। चन्द्रमा हीनबली होने पर लक्ष्मी नहीं रहती है। मंगल के हीन बली होने पर स्थान हानि होती है।

विशेष– *इसका विचार ग्रह साम्य तथा लग्न-निश्चय में करना चाहिये। (मानलो कि दोनों का कर्क का मंगल नीच का है तो स्थानहानि होगी। ग्रहसाम्य करने के समय यह विचारना चाहिये कि दोनों का मंगल खराब न हो; यदि एक का खराब हो तो देखना चाहिये कि दूसरे का अच्छा है कि नहीं; यदि दोनों का खराब हो तो ग्रहसाम्य ठीक न समझना चाहिये क्योंकि दोनों का खराब होने से स्थानहानि होगी और उन्हें सुख न मिलेगा। यदि दोनों में से एक का भी अच्छा हो तो दूसरे के खराब मंगल का फल कम हो जायेगा। इस विचार में यह न समझना चाहिये कि "भौमतुल्यो यदा भौमः"। यह बात "लग्ने व्यये च पाताले" इत्यादि विचार के लिए है। एवं चन्द्रमा का विचार भी चाहिये। 'चन्द्र हीने गता लक्ष्मीः" दोनों का विचारना चाहिये। इसी प्रकार धनस्थान; पुत्रस्थान आदि का भी विचार करना चाहिये। एक का खराब हो तो दूसरे का अच्छा होना चाहिये। दोनों के खराब होने से खराब फल अधिक हो जावेगा)।*

स्त्रीणां जन्मनि गुरुफलम्–

नष्टात्मजा धनवती विधवा कुशीला,
पुत्रन्विता हतधवा सुभगा विपुत्रा।
स्वामिप्रिया विगतपुत्रधवा धनाढ्या,
वन्ध्या भवेत्सुरगुरोः क्रमशोऽभिजन्म।।९९।।

स्त्रियो की जन्म-कुण्डली में बृहस्पति का फल यथाक्रम यह हैः– (१) लग्न में हो तो सन्तान का नाश होता है। (२) दूसरे स्थान में हो तो धनवती होती है। (३) तीसरे स्थान में हो तो विधवा होती है। (४) कुत्सित स्वभाव वाली, (५) पुत्र-युक्त, (६) पति-हीन, (७) सौभाग्यवती, (८) पुत्र-हीन, (९) पति की प्यारी, (१०) पुत्रपति से रहित, (११) धनाढ्य, (१२) बन्ध्या अर्थात् बांझ।

लोकाचार महत्वम्–

लोकाचारस्तावदादौ विचिन्त्यो देशे-देशे या स्थितिः सैव कार्या।
लोके दुष्टं पण्डिता वर्जयन्ति दवैज्ञोऽतो लोकमार्गेण यायात्।।१००।।

यस्मिन् देशे य आचारः पारम्पर्य क्रमागतः।
वर्णानां किल सर्वेषां सदाचारः स उच्यते।।१०१।।

जिस देश में जो रीति चल रही हो उस देश में उसी रीति के अनुसार लोकाचार करना चाहिये। जिस कार्य से लोकाचार में विरोध उत्पन्न होता हो उसे विद्वान् लोग वर्जित करते है। अतः दैवज्ञ को चाहिये कि समाज में जो मार्ग प्रचलित है उसके अनुसार चले। जिस देश में एवं समाज में जो आचार परम्परा से चला आ रहा है उसे ही विद्वान् लोग सदाचार कहते हैं।

आचार्य पं. सीताराम (झा) शर्मा संग्रहित

अतिवृहत् अवकहड़ाचक्रम्

अर्थात्

ज्योतिःशास्त्रसोपान

तत्कृत हि[illegible] भाषा टीका सहित

श्रीनव[illegible] स्तोत्र संग्रह

सम्पादक [illegible] पं. रामजन्म मिश्र

[illegible] टीका

ग्रहभावप्रकाशः (प्रश्न ग्रन्थ)

आचार्य सिंहतिलकसूरिकृत

भुवनदीपकाख्यया (वार्तिकः) विवृत्या समलंकृता

तथा च भाषानुवाद कवस्तृत टिप्पणिभिः युतः

बाल बोध ज्योतिषम्

वर-कन्या नक्षत्र मेलापक व व्यवस्था सहित

सम्पादक व संकलन पं. श्री हरि हरदत्त दीक्षित

हमारे यहाँ जन्मपत्र बनाने की पुस्तिका व फार्म भी प्राप्त है।

जन्माक्षर	५X७ ॥
साधारण जन्म-पत्रिका छोटी	५X७ ॥
साधारण जन्म-पत्रिका बड़ी	५X७ ॥
षडवर्गी जन्म-पत्रिका	५॥X९
सप्तवर्गी जन्म-पत्रिका	५॥X९

जन्म-पत्रिका टिप्पणी फार्म २५, ५०, की पुस्तिका व

जन्म-पत्रिका कुण्डली-फार्म (आदि-मध्य-अन्त)

प्राप्ति स्थान :

वाणी विलास प्रकाशन

सी.के. 25/14, कचौड़ीगली, वाराणसी - 221001

मूल्य : १५०.००